इकाई-1

इतिहास विषयवस्तु संगठन, इतिहास आधारभूत संप्रत्यय एवं भावी परिप्रेक्ष्य

(Structure of Content Area, History, Basic, Conceptual Schemes and Futures perspectives)

इकाई की सरंचना)Structure of Unit)

1.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य)Aims and objectives)
1.1 इतिहास की उत्पत्ति)Origin of History)
1.2 इतिहास का अर्थ एवं परिभाषा)Meaning and Definition of History)
1.3 इतिहास की विभिन्न अवधारणाएं)Different Concepts of History)
1.4 इतिहास विज्ञान या कला? (History, is Science or Arts?)
1.5 सारांश)Summary)
1.6 संदर्भ ग्रंथ)Reference)

1.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर आप जान सकेंगे कि-

1. इतिहास की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के क्या विचार है?
2. इतिहास का अर्थ क्या है? इसकी सर्वमान्य परिभाषा क्या है?
3. इतिहास के संबंध में पारस्परिक एवं आधुनिक अवधारणाएं क्या है?
4. इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों है?

1.1 इतिहास की उत्पत्ति (Origin of History)-

शाब्दिक दृष्टि से देखें तो हम पाते हैं कि इतिहास को अंग्रेजी भाषा में History कहते है, इसकी उत्पत्ति यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' (Historia) से हुई है, जिसका अर्थ जानना या ज्ञात करना या सत्यान्वेषण (सत्य का अन्वेषण) करना है। यूनानी इतिहासकार हिरोडोटस इतिहास का जनक कहलाता है। उसने अन्वेषण के आधार पर विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन किया और इन्हें इतिहास का नाम दिया। अत: कथात्मक इतिहास की उत्पत्ति की। हिरोडोटस का काल 500 ई. पूर्व रहा है तथा थ्युसोडाइडोज हिरोडोटस के समकालीन थे किन्तु उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों के शिक्षात्मक पहलू पर बल दिया है। हेनरी जॉनसन ने लिखा है कि "उसने जो कुछ भी लिखा है, वह उपदेशात्मक या प्रबोधक इतिहास है।" थ्युसोडाइडोज ने तथ्यों की उपयोगिता को अपना पथ प्रदर्शक बनाया था। 19वीं शताब्दी में जर्मनी के विचारक लियो पालट्र वॉन रानके ने इतिहास लेखन की वैज्ञानिक विधि को विकसित किया।

अपनी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि घटना को उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना ही इतिहास है। इतिहास के वैज्ञानिक स्वरूप के उद्गम के लिये विश्व इस जर्मन विचारक का सदैव ऋणी रहेगा।

1.2 इतिहास का अर्थ व परिभाषा (Meaning and Definition of History)

वर्तमान समय में किसी भी विषय, घटना, वस्तु जीव आदि का वैज्ञानिक जीवन आदि का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने की अनेक विधियाँ विकसित हो चुकी है। इन विधियों में एक विधि "ऐतिहासिक अध्ययन विधि है"। इस विधि के द्वारा हम संबंधित समस्या का ऐतिहासिक विवेचन कर उसका उपचार तलाशते है। इस विधि के कारण हम आज विविध प्रकार के इतिहास देखते है, जैसे पर्वतइतिहास-, भौगोलिक इतिहास, आर्थिक इतिहास इत्यादि। यहां हम जिस इतिहास की बात कर रहे है वह केवल मानव द्वारा की गयी क्रियाओं तथा घटनाओं से संबंधित है।

इतिहास का शाब्दिक अर्थ)Etymological Meaning of History) -इतिहास का अर्थ पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि हिस्ट्री शब्द की उत्पत्ति हिस्टोरिया)Historia) से मानी जाती है, जो यूनानी शब्द है और जिसका अभिप्राय "जानना", "ज्ञात करना' या ."सत्यान्वेषण करना" इतिहास शब्द का अर्थ भी उपरोक्त अर्थ से समता रखता है। इतिहास शब्द को लेते है तो पाते है कि इतिहास तीन शब्दों का मेल है आस। जिसका अर्थ है ऐसा ही हुआ अर्थात् इस + ह + इति - पृथ्वी पर जो कुछ घटित हुआ है वह शब्द इतिहास की परिधि में आता है।

"इतिहास" शब्द के अलावा भारत में "तवारीख" शब्द भी प्रचलित है किन्तु ये शब्द इतिहास के वास्तविक अर्थ का बोध कराने में असफल रहा है क्योंकि "तवारीख" "तारीख' का बहुवचन है। केवल मात्र तिथियों या तारीखों का संग्रह इतिहास नहीं हैं।

इतिहास की परिभाषा (Definition of History) - चूंकि इतिहास इतना व्यापक एवं विस्तृत है कि उसे किसी सुव्यवस्थित परिभाषा में पिरोना कठिन है। कई इतिहासकारों ने तो इतिहास के महत्व और उसकी उपयोगिता को स्वीकार नहीं किया है। इनमें हरबार्ट स्पेन्सर तथा नेपोलियन विशेष रूप से है। इसके विपरीत क्रामवेल ने इतिहास को ईश्वरी रूप प्रदान किया है। इससे यह तो अवश्य सिद्ध हो जाता है कि इतिहास की सर्वमान्य परिभाषा निर्धारित करना संभव नहीं है लेकिन इसके अलावा भी इतिहासकारों, एवं विचारकों ने इसे परिभाषा में बांधने का प्रयास किया है, जिनका यहां उल्लेख करना न्यायसंगत होगा।

1. वी.डी. घाटे ने तो "इतिहास हमारे संपूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा ज्ञात प्रमाण है स्वीकार किया है।" घाटे ने लिखा है कि इतिहास को काल और देश की सीमाओं में बांधा जा सकता है क्योंकि "पृथ्वी पर मानव जीवन के विकास का अध्ययन ही इतिहास है।"
   "It is scientific study and record of our complete past" **-V.D. Ghate**
2. डॉ0 राधाकृष्णन ने इतिहास को राष्ट्र की स्मरण शक्ति माना है।
   'History is the memory of the nation."- **Dr.Radhakrishanan**

3. रैपसन के अनुसार "इतिहास विचारों की अभिव्यक्ति अथवा घटनाक्रमों का संबंधित विवरण है।"

"History is a connected account of the course of events or progress of ideas." **Rapson**

उपरोक्त परिभाषाओ से स्पष्ट है कि इतिहास मानव द्वारा अतीत में किये गये कार्यो, विचारों तथा कथनों का वैज्ञानिक सत्यान्वेषण है। इसके आधार पर हम अपने अतीत की सभ्यता, संस्कृति तथा घटनाओं का अध्ययन करते है। यह मानव विकास का स्वरूप है, जो अतीत से लगातार अभी तक चला आ रहा है। इतिहास अपने प्रारम्भ से ही अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा करता आ रहा है और ये कार्य वो आज भी कर रहा है। इस प्रकार इतिहास अतीत का वैज्ञानिक कलैण्डर है जो हमें अतीत के संबंध में कब, कहां तथा क्यों का उत्तर देने का प्रयास करता है।

1.3 इतिहास की विभिन्न अवधारणाएं (Different Concepts of History)

इतिहास आज अपने जिस स्वरूप में स्थित है, उसे प्राप्त करने के लिये एक लंबी विचार-श्रृंखला विकास की विभिन्न कड़ियों से निर्मित है। इतिहास का विकास किस प्रकार हुआ और किस प्रकार मानव ने अपनी वर्तमान स्थिति और उसके प्राचीनतम रूप के बीच समन्वय स्थापित किया होगा-यही इतिहास के स्वरूप को स्पष्ट करता है। इतिहास के स्वरूप से संबंधित विरोधात्मक मतों से एक महत्वपूर्ण तथ्य यह दिखाई देता है कि सभी विचारक इतिहास के स्पष्टत: एक ही अर्थ नहीं लेते है। मानव जाति की निरन्तर परिवर्तित होती हुयी स्थिति के अनुसार इतिहास की धारणाओं में भी परिवर्तन होता रहा है।

1.3.1 इतिहास के संबंध में पुरानी अवधारणा (Old concept related to History) -11वीं शताब्दी से पहले इतिहास केवल साहित्य एवं वीरगाथाओं से संबंधित था। यह गद्य अथवा पद्य में एक कथा के रूप में था। एक अच्छी कथा बनाने के लिये वैज्ञानिक अथवा यथार्थ होना नहीं वरन् रोचक व मनोरंजक होना आवश्यक था। लेखन कला का आविष्कार नहीं होने से इतिहास को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक परम्परा के रूप में पहुंचाया जाता था, जिसमें सत्य का अंश अवश्य होता था किन्तु वह अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक होता था। परिणामत: इतिहास के विषय में विभिन्न प्रकार की अवधारणाएं प्रचलित हो गयी। कुछ लोग इतिहास को कपोल कल्पित कहानियों तथा असत्य तथ्यों का संकलन मात्र समझने लगे। अपने वैज्ञानिक स्वरूप को प्राप्त करने के पहले इतिहास उपन्यास माना जाता था। नेपोलियन इतिहास को सर्वसम्मत काल्पनिक कहानियाँ कहा करता था। हरबार्ट स्पेन्सर इतिहास को पथ प्रदर्शन के लिये महत्वहीन एवं अनुपयुक्त मानता था। इतिहास के संबंध में इस प्रकार की विचारधाराएं 11वीं शताब्दी से पूर्व विश्व में विद्यमान थी। धीरे-धीरे लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और वैज्ञानिक प्रगति का प्रार्दुभाव हुआ जिसने शिक्षा जगत में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। परिणामस्वरूप अब इतिहास को मानव जीवन के क्रमिक विकास की अविरल कहानी माना जाने लगा। भौतिक

विज्ञानों की उन्नति ने अन्वेषण की वैज्ञानिक प्रणालियों द्वारा 11वीं शताब्दी में इतिहास के अध्ययन को नवीन आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया।

1.3.2 इतिहास की आधुनिक अवधारणा (Modern concept of History) - इतिहास के स्वरूप निर्धारण का श्रेय जिस प्रकार यूनानी लेखकों को है, ठीक उसी प्रकार इतिहास को कहानी एवं शिक्षात्मक विधि के प्रस्तुतीकरण से निकालकर उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का श्रेय जर्मन लेखकों को है। 11वीं शताब्दी में इतिहास के आयामों का ही विस्तार नहीं हुआ वरन् उसके संबंध में अवधारणा को भी स्पष्ट किया गया तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा। यदपि इस समय भी इतिहास की प्रकृति को लेकर विद्वानों में विवाद बना हुआ था। कुछ विद्वानों ने इतिहास से कारण तथा कार्यकारण भाव को अलग-अलग निकालने पर बल दिया तो कुछ ने इनके कारण इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा। वर्तमान में कोई भी इतिहास को दैवी शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित नहीं मानता है। अब यह स्पष्ट अवधारणा बन गयी है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है जिनका प्रयोग भौतिक एवं सामाजिक वैज्ञानिक करते है। आज का इतिहासकार वैज्ञानिक विधि द्वारा मानव समाज की विवेचना कर किन्हीं ठोस एवं सर्वमान्य निष्कर्ष पर पहुंचता है। वह इतिहास से संबंधित तथ्यों का संकलन, सत्यापन एवं वर्गीकरण करता है। तथ्यों का विश्लेषण करता है और तत्पश्चात सामान्य सिद्धान्त का निर्धारण करता है।

1.3.3 इतिहास का महत्व (Importance of History) - इतिहास अतीत काल में घटित घटनाओं का वर्णन मात्र नहीं है न ही यह केवल किस्से-कहानियों तक सीमित है। यह जीवन की एक कला है जो हमारे जीवन को उन्नत तथा समृद्ध बनाती है। इतिहास हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। यह हमें हमारी भूलो तथा असफलताओं का ज्ञान कराकर जीवन को उन्नत बनाने में हमारी सहायता करता है। इतिहास हमें नये-नये अनुभव प्रदान करता है तथा उन अनुभवों के आधार पर हम जीवन में नवीनता लाकर नये उत्साह से जीवन के नवीन मार्ग पर अग्रसित होते है। इतिहास हमें हमारी अमूल्य धरोहरों का न केवल ज्ञान ही कराता है अपितु उनका प्रत्यक्ष प्रमाण भी देता है इस प्रकार हम पाते है कि इतिहास पढ़ने से हमें अनेक लाभ है जो कि निम्नांकित है -

1. **धरोहरों का ज्ञान -** इतिहास हमें हमारी विभिन्न धरोहरों का ज्ञान करने का सशक्त माध्यम है। इनमें हम अपने पूर्वजों के संबंध में विभिन्न प्रकार की जानकारियां प्राप्त कर सकते है।
2. **सांस्कृतिक उद्भव स्त्रोत** - हमारे पूर्वजों तथा महापुरुषों ने जो आदर्श हमारे लिये स्थापित किये है ये ही समग्र रूप से संस्कृति कहलाती है। इतिहास पूर्वजों के आदर्शो का ज्ञान कराकर समाज की संस्कृति का आधार स्त्रोत बनता है।
3. **ज्ञानवर्द्धन -** इतिहास के अध्ययन में हमने अपने पूर्वजों के द्वारा जो असफलता एवं सफलता प्राप्त की उनसे अनुभव प्राप्त असफलताओं को अपनाते है तथा उनकी असफलताओं का विश्लेषण कर उनसे बचा जा सकता है।

4. **एकता की भावनाओं का इतिहास** - इतिहास एक प्रजाति, जाति तथा राष्ट्र के नियमों को एकता के सूत्र में बांधने में भी हमारी सहायता करता है। अपने महान इतिहास के कारण ही एक प्रजाति, एक समाज तथा एक राष्ट्र के व्यक्ति एकता के बंधन में बंधे रहते है।
5. **जिज्ञासा की संतुष्टि -** हम अपने विकास को प्रमाणित करने वाले विभिन्न कारणों की जानकारी चाहते है। इतिहास में विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर हमारी जिज्ञासा शांत होती है।
6. **विकास-क्रम का ज्ञान** - इतिहास मानव उसकी कृतियों, सभ्यताओं आदि के विकास क्रम का ज्ञान देकर उसके भविष्य की संभावनाओं का अनुभव लगाकर हमें सफल बनाती है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

नीचे लिखे गये कथनों में सही कथन के आगे (✓) का निशान तथा गलत कथन के आगे (×)निशान लगाइये :-

1. इतिहास मानव द्वारा अतीत में किये गये कार्यो एवं विचारों का वैज्ञानिक सत्यान्वेषण है। [ ]
2. हिस्ट्री शब्द की उत्पत्ति युनानी शब्द हिस्टोरिया से हुई है। [ ]
3. इतिहास का अर्थ है- सत्यान्वेषण करना। [ ]
4. इतिहास के अनुसार इतिहास कपोल कल्पित कहानियों एवं तथ्यों का संकलन मात्र है। [ ]

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. इतिहास से संबंधित कोई दो परिभाषाएं लिखिये ।
2. इतिहास से संबंधित पुरानी एवं आधुनिक अवधारणा से आप क्या समझते है?
3. इतिहास के शाब्दिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

1.4 इतिहास विज्ञान या कला (History: Science or Art)

यह प्रश्न विवाद का विषय बना हुआ है कि इतिहास विज्ञान है या कला? अथवा विज्ञान एवं कला दोनों ही? हरबार्ट स्पेन्सर जैसे विद्वान इतिहास को विज्ञान मानने से सहमत नहीं है। उनका विश्वास है कि इतिहास के तथ्य पूर्णत: सत्य नहीं होते है। साथ ही वैज्ञानिक निरीक्षण एवं परीक्षण के लिये ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध नहीं होते है। अत: यहां इतिहास की वैज्ञानिकता प्रमाणित करने से पूर्व यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि "विज्ञान क्या" है?

1.4.1 विज्ञान की अवधारणा (Concept Of Science) - "प्रकृति के किसी विभाग के कार्यकारण संबंध में ज्ञान के क्रमबद्ध संग्रह को विज्ञान कहते है।" अर्थात् विज्ञान ज्ञान का वह भंडार है जिसमें निरीक्षण, परीक्षण एवं प्रयोगों द्वारा प्रकृति की समानता का अध्ययन किया जाता है। एम. पाईनकेयर ने केवल तथ्यों के एकीकरण को विज्ञान मानने से इंकार किया है। उनका अभिप्राय है कि वही ज्ञान की श्रेणी में रखा जा सकता है जो क्रमबद्ध हो तथा तर्क एवं

प्रमाणयुक्त हो। हक्सले भी इसी विचार का अनुमोदन करते हुए कहते है कि मैं उस ज्ञान को विज्ञान मानता हूं जो तर्क तथा प्रमाणों पर आधारित है। संक्षेप में विज्ञान प्रयोगात्मक एवं निरीक्षणात्मक विधि से प्राप्त किया गया वह क्रमबद्ध ज्ञान है जिसके द्वारा सत्य की खोज होती है।

1.4.2 क्या इतिहास विज्ञान है? (Is History Science?) - इतिहास को विज्ञान न मानने वालों का कहना है कि-

1. प्राकृतिक तथ्यों का स्पष्ट अवलोकन किया जा सकता है, किन्तु इतिहास के तथ्यों का नहीं। ऐतिहासिक तथ्यों को अप्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।
2. ऐतिहासिक तथ्य संश्लेषण की भांति नहीं होता है। इसका संबंध केवल उन्हीं लोगों के साथ होता है। जो किसी विशिष्ट समय में किसी विशिष्ट स्थान पर रहते है, जबकि विज्ञान में किसी भी समय एवं स्थान के लोगों को चर्चा का विषय नहीं बनाया जा सकता है।
3. ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग वैज्ञानिक तथ्यों की भांति नहीं किया जा सकता है क्योंकि प्राचीन घटनाऐं फिर से घटित नहीं की जा सकती है।
4. इतिहास का संबंध मनुष्य के विचारों एवं कार्यो से होता है। जिन पर विज्ञान की भांति प्रयोग नहीं किये जा सकते है।
5. वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से इतिहास में किसी भी विषय पर दो इतिहासकार एक ही निष्कर्ष पर नहीं पहुचते है, जबकि विज्ञान में इसके विपरीत देखने में मिलता है।
6. इतिहास किसी निश्चित सिद्धान्त अथवा आदर्श पर आधारित नहीं है। विज्ञान की भांति हम इसमें किसी निश्चित सिद्धान्त या नियम पर नहीं पहुंच सकते। जो प्रत्येक देश, काल एवं परिस्थितियों में सत्य प्रमाणित हों। उदाहरणार्थ 2 + 2 = 4 ही होंगे यह गणित का अटल सिद्धान्त है।

अत: उपरोक्त तथ्यों के आधार पर इतिहास विज्ञान की कोटि में नहीं रखा जा सकता है। इतिहास की वैज्ञानिकता के विपरीत जो विज्ञान मानते है उन्हें व्यर्थ या निराधार नहीं कहा जा सकता। यह सत्य है कि इतिहास भौतिक विज्ञानों की तरह एक विज्ञान नहीं है, किन्तु निष्पक्ष विवेचन करने पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि इतिहास एक प्राकृतिक विज्ञान न होकर सामाजिक विज्ञान है। हरबार्ट स्पेनसर ने विज्ञान को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है -

1. **सूक्ष्म विज्ञान (Abstract Science) -** इसमें तर्कशास्त्र और गणित को सम्मिलित किया है।
2. **सूक्ष्म स्थूल विज्ञान (Abstract-Concrete Science)-** इसमें उन्होंने भौतिक तथा रासायनिक विज्ञान को शामिल किया है।
3. **स्थूल विज्ञान (Concrete Science) -** इसमें जीवन विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र को रखा है तथा इतिहास समाज शास्त्र के अंतर्गत आता है।

1.4.3 इतिहास एक विज्ञान है (History is Science) - अत: हम उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर यह कह सकते है कि इतिहास विज्ञान है। प्रो. घाटे के अनुसार इतिहास एक आलोचनात्मक विज्ञान है जिसके द्वारा किसी तथ्य, किसी घटना अथवा किसी वस्तु की छानबीन करते हुए वास्तविक एवं सत्य निर्णय पर पहुंचते है। इतिहास की वैज्ञानिकता के समर्थन में कहा जा सकता है कि :-

1. इतिहास सामाजिक विज्ञान है।
2. इसमें तथ्यों का संकलन प्रामाणित स्त्रोतों से किया जाता है।
3. तथ्यों का तर्क निष्पक्ष विश्लेषण से होता हैं।
4. घटनाओं में क्रमबद्धता होती है।
5. तुलनात्मक निरीक्षण द्वारा सत्य पर पहुंचा जाता है।
6. इतिहास मे दृष्टिकोण वैज्ञानिक होता हैं।
7. उसके अन्वेषण की विधियां भी वैज्ञानिक होती है।

हक्सले एवं कोटिल्य ने भी इतिहास को विज्ञान माना है और उपरोक्त सभी बातें इतिहास को विज्ञान की श्रेणी में लाती है।

1.4.4 इतिहास एक कला है (History is an Art) - कुछ लोग इतिहास को विज्ञान के अलावा कला मानते है। उनका तर्क यह है कि अपनी प्राम्म्भिक अवस्था में इतिहास साहित्य का एक अंग ही था। गीतों, आख्यानों तथा सम्राटों की प्रशस्तिया यह सब इतिहास का ही रूप था। इतिहासकार घाटे के कथानुसार "इतिहास सजीव नर-नारियों का स्पष्ट रिकार्ड होना चाहिये। इसमें साहित्य गुणों का अवश्य समावेश होना चाहिये। अत: यह एक कलाकृति के रूप में होना चाहिये।" अत: अपने विवरणात्मक रूप में इतिहास कला है। इतिहासकार केवल तथ्यों को संकलन एवं विश्लेषण ही नहीं करता है वरन् तथ्यों को सुंदर एवं सरल भाषा में वर्णन भी करता है। इस प्रकार अभिव्यक्ति के रूप में इतिहास कला है।

1.4.5 इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों ही है (History is both Science and Art) - अत: हम निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों का समन्वय है। जब वह सत्य की खोज करता है, तथ्यों का क्रमबद्ध संकलन करता है तब वह विज्ञान है इन्हीं तथ्यों को सरस एवं सुन्दर वर्णन करते समय वह कला होता है तथा इतिहास लेखन कला के अन्तर्गत आता है।

अर्वाचीन युग के इतिहासकारों के विनायक दामोदर सावरकर की कृतियों में इतिहास के दोनों पक्षों का बडा सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। इतिहास के अध्यापक को इतिहास पढाते समय उसके वैज्ञानिक एवं कलात्मक दोनों ही पक्षों का ध्यान रखना पडेगा। वैज्ञानिकता पर अत्यधिक बल देने से इतिहास तारीखों का संकलन मात्र बनकर रह जायेगा और विद्यार्थियों में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न नहीं करेगा। इसके विपरीत इतिहास के कलात्मक पक्ष को प्रमुखता प्रदान करने से ऐतिहासिक तथ्यों के विकृत होने की संभावना उत्पन्न हो सकती है। जिससे छात्रों के मन में अतीत के प्रति भ्रांति भी उत्पन्न हो सकती है। अत: शिक्षक को अति से बचना होगा और इतिहास के वैज्ञानिक एवं कलात्मक रूप को स्वीकार करके समन्वय को अपनाना होगा।

जीवन के जिस-जिस क्षेत्र में मनुष्य अपने ज्ञान को विकसित करता जायेगा वह इतिहास बनता जायेगा। किसी भी विषय का गहन अध्ययन करने के लिये मनुष्य को उस विषय के इतिहास को जानना पडता है जैसे भाषा के अध्ययन के लिये भाषा के इतिहास को परिणामत: मानव के पास कई विषयों के इतिहास उपलब्ध है जैसे भूगोल का इतिहास, धर्म का इतिहास, समाजशास्त्र का इतिहास, राजनीतिशास्त्र का इतिहास इत्यादि। इतिहास का क्षेत्र अत्यन्त ही व्यापक है। जब से इस पृथ्वी पर मानव का प्रादुर्भाव हुआ तब ही से इतिहास का प्रारम्भ हुआ। टैगोर के अनुसार "केवल एक ही इतिहास है और वह है मानव का इतिहास।" अत: इतिहास मानव के विकास की कहानी है, जो निरन्तर गतिशील रहती है। अत: इतिहास का क्षेत्र किसी ग्राम, नगर, प्रान्त या राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है वरन् यह अन्तर्राष्ट्रीय है। मनुष्य में जब जहां-जहां जो कुछ भी सोचा या किया वह इतिहास के क्षेत्र में आता है। अत: इतिहास केवल एक विषय के रूप में पढने के लिये पाठ्य वस्तु ही उपलब्ध नहीं कराती वरन् बालकों को मानसिक तथा सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

1.5 सारांश (Summary)

1. इतिहास मानव के विकास की कहानी है।
2. इतिहास की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है।
3. इतिहास का अर्थ सत्यान्वेषण करना है।
4. हिस्ट्री शब्द की उत्पत्ति युनानी शब्द हिस्टोरिया से हुई है।
5. इतिहास की पुरातन धारणा के अनुसार इतिहास कपोल एवं कल्पित कहानियों के अलावा और कुछ हीं है।
6. 11वीं सदी के बाद इतिहास को वैज्ञानिक आधार मिला। आज इतिहास को एक सामाजिक विज्ञान रूप में स्वीकार किया गया है।
7. इतिहास को विज्ञान न मानने वालों का कहना है कि इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग प्राकृतिक विज्ञानों की भांति नहीं करता हैं।
8. इतिहास एक सामाजिक विज्ञान है। इसमें तथ्यों का संकलन प्रामाणिक स्त्रोतों से होता है।
9. अपने लेखन रूप में इतिहास कला है।
10. इतिहास का क्षेत्र संपूर्ण मानव जाति के उत्थान-पतन की कहानी से संबंधित है।

प्रगति का मूल्यांकन :-

1. **नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर में सही विकल्प का चयन कीजिए -**

   Choose correct answer ऑफ question given below-

   1. **"इतिहास राष्ट्र की स्मृति है।" यह परिभाषा निम्न में से किसकी है-**

      History is the memory of the nation. This Definition is given by -

अ. रेपसन (Raphson) ब. डॉ. राधाकृष्णन (Dr. Radhakrishnan)

स. मेटलैण्ड (Metland) द. डॉ. जाकिर हुसैन (Dr. Zakir Hussain)

2. **विज्ञान से तात्पर्य है -** Meaning of Science is-

(अ) खोज करना (To Discover)

(ब) ज्ञान का विस्तार करना (To Extend the Knowledge)

(स) तथ्यों का एकीकरण करना (Integration of facts)

(द) प्रयोगात्मक एवं निरीक्षणात्मक विधि से प्राप्त ज्ञान (Knowledge achieved by experiment and observation method)

2. लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. इतिहास की आधुनिक अवधारणा से आप क्या समझते है।
   What do you mean by modern concept of history?
2. सूक्ष्म विज्ञान एवं स्थूल विज्ञान में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
   Distinguish between abstract Science and concrete Science.

3. निबंधात्मक प्रश्न–

1. इतिहास का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा इसकी आधुनिक अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
   Explain the meaning of History and its modern concepts.
2. "इतिहास हमारे संपूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
   History is the record and scientific study of total past. Explain this statement.
3. स्पष्ट कीजिए की इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों है।
   History is both Science and Art. Explain it.

1.6 संदर्भ (Reference)

1. कोचर एस. के. टीचिंग ऑफ हिस्ट्री स्टर्लिग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली 1975
2. चौधरी, के.पी. इफेक्टिव टीचिंग ऑफ हिस्ट्री इन इण्डिया एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 1975
3. बुद्ध प्रकाश द मॉडर्न एप्रोच टू हिस्ट्री जालंधर यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स 1963
4. त्यागी गुरसनदास इतिहास शिक्षण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. अरोरा के.एल. टीचिंग ऑफ हिस्ट्री प्रकाश ब्रदर्स, एजुकेशनल पब्लिशर्स, लुधियाना,1978
6. सिंह, आर.पी. इतिहास शिक्षण आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

इकाई-2

शिक्षण के भविष्योन्मुखी उद्देश्य (Objectives of Teaching With Futuristic Vision)

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

2.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

2.1 लक्ष्य क्या है? (What is Aim?)

2.2 उद्देश्य क्या हैं? (What is Objective?)

2.3 इतिहास शिक्षण के लक्ष्य (Aims of History Teaching)

2.4 इतिहास शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of History Teaching)

2.5 संदर्भ ग्रन्थ (Reference)

2.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर विद्यार्थी -

1. इतिहास शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
2. इतिहास शिक्षण उद्देश्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
3. इतिहास शिक्षण के लक्ष्यों का निर्धारण कर सकेंगे।
4. इतिहास के कार्यो का अवबोधन कर उनका क्रियात्मक पक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे।
5. इतिहास शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य तथा इतिहास के कार्यो की रूपरेखा के विषय में समीक्षात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिये लक्ष्य का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि लक्ष्य कार्य को निश्चित दिशा एवं व्यवस्था प्रदान करते है। वह कार्य व्यर्थ होता है, जिसमें उत्साह एवं रूचि न हो और उत्साह तथा रूचि के लिये कार्य का लक्ष्य एवं पूर्ण होना अनिवार्य है, लक्ष्यविहीन कार्य से समय एवं शक्ति का दुरूपयोग होता है, जबकि लक्ष्यपूर्ण कार्य में समय व शक्ति का सदुपयोग होता है। किसी भी कार्य को करने के पश्चात् व्यक्ति जानना चाहता है कि उसे कहां तक सफलता मिली और यह तभी संभव हो सकता है जबकि उसके द्वारा किये गये कार्य का निश्चित लक्ष्य हो। इस संबंध में बी0डी0 भाटिया ने ठीक लिखा है कि लक्ष्य ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जो अपने साध्य या मंजिल को नहीं जानता और बालक उस पतवार विहिन नौका के समान है जो लहरो के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।

2.1 लक्ष्य क्या है? (What is Aim)

लक्ष्य का अर्थ है लक्षित करना, अर्थात् जो दिखाई दे वह लक्ष्य की परिधि में आता है। साधारण भाषा में जिसे हम लक्ष्य भेदन कहते है उसका अर्थ होता है कि जो दृष्टिगत हो रहा है।

2.2 उद्देश्य क्या है?

(What is Objective?)

उद्देश्य शब्द की उत्पत्ति तीन शब्दों से हुई हैं - उत्-दिस-य। उत् से अभिप्राय है ऊपर तथा दिस का अर्थ दिशा एवं य से अभिप्राय है निर्दिष्ट अथवा बोध। इस प्रकार उद्देश्य का अभिप्राय हुआ ऊपर की ओर दिशा का बोध कराना।

अत: सामान्यत: लक्ष्य व्यापक होते है जबकि उद्देश्य सीमित होते है। लक्ष्य में व्यक्तिनिष्ठता होती है जबकि उद्देश्य में वस्तुनिष्ठता होती है। लक्ष्य की परिधि विस्तृत होती है जबकि उद्देश्य की परिधि सीमित होती है। लक्ष्य पूर्व-निर्धारित साध्य होता है जो किसी क्रिया का मार्ग निर्दिष्ट करता है जबकि उद्देश्य वह स्तर अथवा मानदंड है जिसे विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में किसी क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है। अत: लक्ष्य तथा उद्देश्य में निम्नांकित अन्तर किया जा सकता है।

	लक्ष्य (Aims)		**उद्देश्य (Objectives)**
1.	लक्ष्य का क्षेत्र व्यापक होता है।	1.	उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है।
2.	लक्ष्य एक सामान्य कथन है।	2.	उद्देश्य एक निश्चित कथन है।
3.	लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विध्यालय कार्यक्रम समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	3.	उद्देश्य की छोटी छोटी शाखायें होती है और इनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ विशेष की विषय वस्तु पर होता है।
4.	यह अनिर्दिष्ट (Vague) होता है।	4.	यह विशिष्ट (specific) होता है।
5.	लक्ष्य मे आदर्शवादिता होती है।	5.	इसमे व्यवहारिकता होती है।
6.	लक्ष्य की प्राप्ति मे अधिक समय लगता है।	6.	उद्देश्य की प्राप्ति मे अधिक समय नहीं लगता है।
7.	यह सीखने वालों को स्पष्ट शिक्षा-निर्देशन नहीं प्रदान करता।	7.	यह सीखने वालों को निश्चित एवं स्पष्ट निर्देश प्रदान करता।

सारणी संख्या :2.1

2.3 इतिहास शिक्षण के लक्ष्य

(Aims of Teaching History)

इतिहास के अध्यापक को इतिहास शिक्षण के लक्ष्य की स्पष्टता अत्यन्त आवश्यक है। यदि अध्यापक उद्देश्यों के प्रति सजग है तो उसका शिक्षण सुनियोजित, व्यवस्थित एवं सार्थक होगा। इतिहास शिक्षण को सप्रयोजन बनाने के लिये इतिहास शिक्षण के लक्ष्यों का अध्ययन आवश्यक है।

2.3.1 इतिहास के प्रति रूचि उत्पन्न करना (To create interest for History) - विभिन्न विद्वानों ने इतिहास शिक्षण का लक्ष्य छात्रों में इतिहास के लिये रूचि उत्पन्न करना

माना है। इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों में इतिहास के प्रति रूचि जागृत करें।

2.3.2 वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the present) - इतिहास के अभाव में सामाजिक वातावरण का कोई अर्थ नहीं हैं। अत: बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिये अपने सामाजिक वातावरण या अपनी प्रचलित परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। अत: अतीत के द्वारा इस सामाजिक वातावरण को अर्थपूर्ण बनाया जाता है। इसी कारण इतिहास शिक्षण का लक्ष्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

2.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Sceintific Attitude) - विद्वानों का मत है कि इतिहास शिक्षण का एक लक्ष्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिये। अत: इसके लिये इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाये जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिये उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्कशक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है।

2.3.4 लोकतांत्रिक समस्याओं के समाधान का लक्ष्य (Aims of Solution of Democratic problems)-लोकतंत्र एक जीवनशैली है। इस जीवनशैली की यथार्थता को स्वीकार करना इतना सरल नहीं है जितना सैद्धान्तिक रूप से लगता हैं। लोकतंत्र का सबल पक्ष क्रियात्मक पक्ष है। अत: लोकतांत्रिक मूल्यों को स्वीकार करना स्वयं में एक बहुत बडी तपस्या हैं लोकतंत्र हमें स्वतंत्रता प्रदान करता है और इसी स्वतंत्रता को व्यक्ति स्वच्छन्द समझ बैठता है तथा यही से लोकतांत्रिक समस्याओं का प्रारम्भ होता हैं। इतिहास शिक्षण हमें इन समस्याओं के प्रति जागरूक करता है और यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि व्यक्तित्व का विकास केवल लोकतांत्रिक जीवनशैली में ही संभव है, तानाशाही अथवा राजतंत्र में नहीं।

2.3.5 राष्ट्रीयता की भावना का विकास (To Develop the feeling of Nationality) - इतिहास शिक्षण द्वारा राष्ट्र प्रेम उत्पन्न किया जाना आवश्यक है। हमारी जाति, धर्म, वर्ग अनेक हो सकते है परन्तु हमारा राष्ट्र एक है जो सर्वोपरि है। विद्यार्थियों को यह समझाना नितान्त आवश्यक है कि हम प्रगति के मार्ग पर तभी अग्रसर हो सकते है जब हम स्वयं में राष्ट्र चरित्र को विकासित कर सकें। आज की परिस्थितियों में वह कौने-कौनसे घटक हैं जो राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने में बाधक बने हुये हैं? आज क्या कारण है कि अन्य देशों की तुलना में हम इतनी प्रगति नहीं कर पाये हैं जितनी वांछनीय थी? इन सभी पक्षों का उत्तर हमे इतिहास द्वारा प्राप्त होता है और इतिहास अतीत की भूलों के प्रति जागरूक करता हुआ हमें अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित करता हैं।

2.3.6 अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास (To Develop the feeling of Internationalism)-इतिहास शिक्षण वसुधैव कुटुम्बकम की भावनाओं को विकसित करता है। इतिहास विद्यार्थियों के मस्तिष्क में वह मानचित्र बनाता है जिसके माध्यम से राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता का आभास होता है। इतिहास यह स्पष्ट करता है कि विश्व की विभिन्न सांस्कृतियों ने पारस्परिक रूप से किस प्रकार प्रभावित किया और मानवता के विकास की कहानी

को क्या स्वरूप प्रदान किया? मानव जाति के इन्हीं संबंधों द्वारा विद्यार्थियों में अन्र्तराष्ट्रीय सदभाव की भावना का विकास करना इतिहास शिक्षण का लक्ष्य है।

2.3.7 विभिन्न स्तरों पर इतिहास के उद्देश्य (Objectives of History Teaching at Different Stages) - संपूर्ण भारत में प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर तथा माध्यग्मिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास का शिक्षण किया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य है-

1. उच्च प्राथमिक स्तर (Upper Primary Stage)- उच्च प्राथमिक स्तर में कक्षा छठी से आठवीं तक को सम्मिलित करते हैं। उनके शैक्षिक स्तर में मनो-शारीरिक स्तर को ध्यान में रखते हुए इनके लिए इतिहास शिक्षण के नीचे लिखे उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं

अ. इतिहास शिक्षण में रूचि उत्पन्न करना, यह तभी संभव है, जब वे इतिहास से प्रेम करने लगेगे। अत: इस स्तर पर इतिहास के प्रति छात्रों में रूचि तथा प्रेम जागृत करना चाहिये-

ब. छात्रों में आलोचनात्मक योग्यता का विकास करना, इसमें वे ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा करना सीख जायेंगे। इस योग्यता के आधार पर अपने अतीत को निष्पक्ष भाव से समझने की योग्यता उनमें जागृत होगी।

स. मानसिक शक्तियों का विकास करना, जिससे कि बालक में तर्क शक्ति, विवेचन शक्ति, विश्लेषण शक्ति एवं चिन्तन शक्ति आदि का इतिहास शिक्षण के द्वारा सरलता से विकास किया जा सकता हैं।

द. समय-ज्ञान का विकास करना, इस स्तर पर समय ज्ञान के विकास के लिये स्थूल साधनों के साथ ही अमूर्त साधनों आदि का इतिहास शिक्षण के द्वारा सरलता से विकास किया जा सकता है।

य. देश-प्रेम तथा विश्व-बंधुत्व की भावना का विकास करना, इतिहास शिक्षण के द्वारा बालकों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सकता है तथा साथ ही साथ विश्व-बंधुत्व तथा मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास भी किया जाना चाहिये।

र. वर्तमान एवं भविष्य के निर्माण की योग्यता का विकास करना, इतिहास शिक्षण की सहायता से छात्रों को इस योग्य बनाने के प्रयास करने चाहिये कि वे अतीत के आधार पर अपने वर्तमान तथा भविष्य का निर्माण कर सकें।

2. माध्यमिक स्तर (Secondary Stage) - माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिये-

अ. अतीत से संबंधित घटनाओं, तथ्यों, विचारों, समस्याओं, व्यक्तियों आदि का ज्ञान करना।

ब. छात्रों को इतिहास से संबंधित तथ्यों, घटनाओं आदि का इस प्रकार बोध करना कि वे इनमें अन्तर 'कर सके,' तुलना कर सके या कारण परिणाम में संबंध स्थापित कर सकें।

स. इतिहास विषय में वास्तविक रूचि जागृत करना जिससे वह इतिहास से संबंधित साहित्य तथा साधनों में इतिहास जानने के लिए और अधिक रूचि लें।

द. छात्रों में समय-रेखा, घटना-रेखा, चार्ट, प्रतिरूप आदि बनाने की योग्यता का विकास करना।

य. छात्रों के दृष्टिकोण में उदारता एवं व्यापकता का विकास करना।

र. अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने तथा वर्तमान की समस्यायें सुलझाने की योग्यता का विकास करना।

ल. सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों के संबंध में स्वस्थ्य दृष्टिकोण का विकास करना।

द. अतीत के आधार पर वर्तमान तथा भविष्य का बोध कर सकने की योग्यता का विकास करना।

श. विश्व की विविध सभ्यताओं व संस्कृति की विशेषताओं का उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना।

ह. राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा आर्थिक समस्याओं से अवगत कराना।

2.4 इतिहास शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching History)

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जिन विभिन्न चरणों को दृष्टिगत किया जाता है। उसे उद्देश्य कहते हैं। गुड के अनुसार उद्देश्य वह स्तर अथवा साध्य है जो छात्र द्वारा विद्यालय की क्रिया पूर्ण करने के पश्चात् किया जाता है।

"Objective is standard or goal to be achieve by the people when the work in the school activity is completed."-C.V.Good

"गुड के मतानुसार उद्देश्य छात्र में वह व्यावहारिक परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा निर्देशित अनुभव से प्राप्त होता है।

"Objective is a desired change in the behavior of a people as a result of experience directed by the school"-C.V.Good

आधुनिक शिक्षाशास्त्र में विषयों के शिक्षण के उद्देश्यो को व्यवहार परिणामों (Behavioural outcomes) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह इस मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है कि सीखने का अर्थ है व्यवहार में परिवर्तन होना। यदि कोई चीज सीखी गयी है तो हमें उसका प्रमाण उसके द्वारा लाये विद्यार्थी या सीखने वाले के व्यवहार में दिखलाई देने चाहिये। इसलिए आजकल सभी विषयों के शिक्षण उद्देश्यों को 6 भागों में व्यवहार परिवर्तनों के लक्षणों के रूप में रखा जाता है -

1. ज्ञान (Knowledge)
2. अवबोध (Understanding)
3. प्रयोग (Application)
4. कौशल (Skill)
5. रूचि (Interest)

6. अभिवृत्ति (Attitude)

व्यावहारात्मक रूप में इतिहास शिक्षण के निर्देशात्मक उद्देश्य (Instructional objectives of History Teaching in behavioral terms) -शिक्षण या निर्देशात्मक उद्देश्यों का संबंध विद्यार्थी के ज्ञान, कुशलताओ, योग्यताओं, रूचियों तथा अभिवृत्तियों में परिवर्तन करने से होता है। इस उद्देश्यों का स्पष्टीकरण विद्यार्थी के व्यवहार संदर्भ में किया जाता है। इतिहास शिक्षण में निर्देशात्मक उद्देश्य क्या है और इनमें कि प्रकार व्यवहार-परिवर्तन आते है, इसके बारे में नीचे विवरण दिया जा रहा है -

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य (Knowledge) -** इसके अन्तर्गत तथ्यों, घटनाओं एवं सिद्धान्तों को समाहित किया जाता है। ज्ञानात्मक उद्देश्य के तीन विशिष्टिकरण होते हैं -

अ. प्रत्यास्मरण (Recall)

ब. पुन: पहचान (Recognization)

स. पुनर्कथन (Retelling)

2. **अवबोधात्मक उद्देश्य (Understanding) -** इसके अन्तर्गत घटनाओं, तथ्यों एवं सिद्धान्तों आदि का अवबोधन किया जाता है इसके विशिष्टिकरण निम्नांकित है -

अ भेद करना

ब. वर्गीकरण करना

स तुलना करना

द. कारण व परिणाम में संबंध स्थापित करना

य. अन्तर करना

र. कारण बताना

ल. उदाहरण देना

व. व्याख्या/स्पष्टीकरण करना

श अशुद्धि पहचानना

स अशुद्धि दूर करना

3. **प्रयोगात्मक उद्देश्य (Application) -** इसके अन्तर्गत तथ्यों, घटनाओं, सिद्धान्तों आदि का प्रयोग किया जाता है। इसके विशिष्टिकरण निम्नांकित है -

अ. विश्लेषण करना

ब. अनुमान लगाना

स. सामान्यीकरण के आधार पर नियम बनाना

द. निष्कर्ष निकालना

य. परीक्षण करना

4. **कौशलात्मक उद्देश्य (Skill) -** मानचित्रों, चार्टो, समय-रेखा आदि को बनाने का कौशल विकसित करना, आंगिक गति का संचालन आदि।

5. **अभिरूच्यातमक उद्देश्य (Interest) -** छात्रों में ऐतिहासिक घटनाओं एवं व्यक्तित्व के विषय में अभिरूचि विकसित करना। इसके अतिरिक्त प्राचीन एवं मध्यकालीन स्त्रोतों के खोज करने की रूचि विकसित करना एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करना।

6. **अभिवृतियात्मक उद्देश्य (Attitude)** - छात्रों में संस्कृतियों के प्रति, अतीत के अनुभवों के प्रति, ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के प्रति अभिवृत्ति विकसित करना, व्यक्ति, वस्तु और स्थान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों की प्राप्ति बहुत बड़ी मात्रा में 'अध्यापक के प्रभावी तथा उद्देश्यपरक शिक्षण पर ही निर्भर है। यदि अध्यापक इतिहास शिक्षण तथा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रति सजग है तो उसे सफलता मिल सकती है और वह छात्रों में वांछित परिवर्तन ला सकता है।

प्रगति का मूल्यांकन:-

1. **निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए**

   1. **निम्न में से कौनसा इतिहास शिक्षण का लक्ष्य है -**

      Which is the aim of History in the following-

      अ. वर्तमान की व्याख्या करना। (Explanation of Present)

      ब. उचित दृष्टिकोण का विकास करना। (To develop appropriate attitude)

      स. राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।(To develop the feelings of Nationality)

      द. अन्र्तराष्ट्रीय सद्भाव का विकास करना।(To Develop international understanding)

      य. उपर्युक्त सभी। (All the above) ( )

   2. **अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाभावना के विकास के लिये निम्नांकित में से किसे महत्वपूर्ण माना जाता है।**

      Which is important to develop international understanding from following-

      अ. शिक्षा (Education)

      ब. रेडियों एवं सिनेमा (Radio and Film)

      स फिल्म एवं टेलीविजन (Film and Television)

      द. समाचार पत्र (Newspaper) ( )

2. **लघुउत्तरात्मक प्रश्न -**

   1. लक्ष्य एवं उद्देश्य में-अन्तर स्पष्ट कीजिए।

      Distinguish between aims and objectives.

   2. माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के लक्ष्यों को संक्षिप्त में लिखिए ।

      Write in brief the aim of history teaching at Secondary level.

3. **निबंधात्मक प्रश्न**

   1. उद्देश्यों का अर्थ स्पष्ट करते हुए भारत की वर्तमान परिस्थितियों में इतिहास शिक्षण के क्या लक्ष्य होने चाहिए? स्पष्ट कीजिये।

      What do you mean by aims and what should be the aims of teaching of History in present situation?

2.5 संदर्भ ग्रंथ
(Reference)

1. Bringing & Binning – Teaching the Social Studies in Secondary Schools, McGraw Hill Book Co., New York, Toronto
2. Govt. of India – The Contents of History in Indian Schools,Ministry of Education, Pamphlet No. 9 New Delhi
3. Hill, C.P – Suggestion of the Teaching of History, U.N.E.S.C.O, Printed in France.
4. त्यागी गुरु शरणदास – इतिहास शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. अरोड़ा, के.एल. – टीचिंग ऑफ हिस्ट्री, प्रकाश ब्रदर्स एज्यूकेशन पब्लिशर्स, लुधियाना।

इकाई-3

विद्यालयी पाठयक्रम में इतिहास का स्थान, पाठ्यक्रम में एकीकृत/विशिष्टीकृत उपागम तथा इतिहास का अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध

Place of History in the School Curriculum, Unified/Specialised approaches to curriculum. Correlation of History with other subjects.

इकाई की संरचना (Structure of Units)

3.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

3.1 विद्यालयी पाठ्यक्रम में इतिहास विषय का स्थान विभिन्न विचारकों के मत (Place of History in School Curriculum)

- 3.1.1 भूमिका (introduction)
- 3.1.2 विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्व (Importance of History in School Curriculum)
- 3.1.3 जीवन में इतिहास की उपयोगिता (Utility of History in life)

3.2 इतिहास का पाठयक्रम (History Curriculum)

- 3.2.1 पाठ्यक्रम का अर्थ (Meaning of Curriculum)
- 3.2.2 पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में अन्तर (Difference between Curriculum and syllabus)
- 3.2.3 पाठ्यक्रम के मूल तत्व (Basic Element of Curriculum)
- 3.2.4 पाठ्यक्रम की आवश्यकता (Need of Curriculum)
- 3.3.5 पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत (Principles of Curriculum Construction)
- 3.2.6 पाठ्यक्रम मे नवाचार (Innovations in Curriculum)
- 3.2.7 पाठ्यक्रम निर्माण के लाभ (Advantages of Curriculum Construction)
- 3.2.8 तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञनिक आधार (Psychological Basis of Selection of Facts)
  - 3.2.8.1 सांस्कृतिक युग सिद्धांत (Culture Epoch Theory)
  - 3.2.8.2 जीवन गाथा सिद्धांत (Biographical Theory)
- 3.2.9 तथ्यों का सगठंन (Organization of Facts)

3.2.9.1 एक समान केन्द्र विधि (Cancentric Methods)

3.2.9.2 कालक्रम विधि (Chronological Methods)

3.2.9.3 प्रकरण विधि (Topical Methods)

3.2.9.4 परार्वतन विधि (Regressive Method)

3.2.10 विभिन्न स्तरों पर इतिहास शिक्षण के पाठ्यक्रम का प्रारूप

3.2.11 इतिहास के वर्तमान पाठयक्रम की आलोचना (A Critical appraisal of recent curriculum of History)

3.2.12 सारांश (Summary)

3.3 इतिहास का विभिन्न विषयों कें साथ सहसम्बन्ध (Correlation of History with Other School Subjects)

3.3.1 सह संम्बध का अर्थ (Meaning of Correlation)

3.3.2 सह संम्बध का महत्व (Importance of Correlation)

3.3.3 सह संम्बध का उद्देश्य (Aims of Correlation)

3.3.4 सह संम्बध के प्रकार (Kinds of Correlation)

3.3.5 इतिहास का अन्य स्कूल विषयों से संहसम्बंन्ध (Correlation of History with Other School Subjects)

3.3.5.1 इतिहास और नागरिक शास्त्र (History with Civics)

3.3.5.2 इतिहास और अर्थशास्त्र (History with Economics)

3.3.5.3 इतिहास और सामान्य विज्ञान (History and General Science)

3.3.5.4 इतिहास और भूगोल (History and Geography)

3.3.5.5 इतिहास और साहित्य (History and Literature)

3.3.5.6 सारांश (Summary)

3.4 सन्दर्भ ग्रंथ (Reference)

3.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की संप्राप्ति पर विद्यार्थी -

(1) इतिहास विषय का वि. पाठ्यक्रम में स्थान के संबंध में विभिन्न विचारकों के विचार बता सकेंगे।

(2) जीवन में इतिहास की उपयोगिता बता सकेंगे।

(3) पाठ्यक्रम शब्द की व्युत्पत्ति का बोध कर सकेंगे।

(4) पाठ्यक्रम की परिभाषाओं को आत्मसात कर सकेंगे।

(5) पाठ्यक्रम का स्वरूप निश्चित कर सकेंगे।

(6) पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्तों का प्रत्यास्मरण, पहिचान कर सकेंगे।

(7) वर्तमान पाठ्यक्रम के दोषों का अवबोधन कर सकेंगे।

(8) विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम निर्माण कर सकने के कौशल का विकास कर सकेंगे।

(9) पाठ्यक्रम के अर्थ निर्माण के सिद्धान्त, दोष एवं विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा के विषय में समीक्षात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

(10) समन्वय का अर्थ, परिभाषा, प्रकार, महत्व बता सकेंगे।

(11) विभिन्न विषयों के साथ संबंध बता सकेंगे।

3.1 विद्यालयी पाठ्यक्रम मे इतिहास का स्थान

Place of History in the School Curriculum.

"India Has Rich cultural heritage, History provides a window to get a glimpse of them." A hand book for History Teacher: NCERT

3.1.1 भूमिका (Intoduction):-भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत इतिहास शिक्षण का शिक्षालय विषय के रूप में सूत्रपात किया गया। इस पद्धति में इतिहास को ब्रिटिश विद्यालयों का अनुकरण करके भारतीय विद्यालयों में परीक्षा विषय के रूप में सम्मिलित किया गया। उस समय इसका परीक्षा के दृष्टिकोण के अतिरिक्त और कोई महत्व नहीं था और न इसके उद्देश्यों एवं प्रयोजनों की ओर कोई ध्यान दिया गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय विद्यालयों में इतिहास सबसे अनुपयुक्त विषय माना जाता था जिसका व्यावहारिक जीवन में कोई महत्व नहीं था।

इस प्रकार की स्थिति के बहुत से कारण थे। परन्तु सबसे प्रमुख कारण यह था कि भारतीय विद्यालयों में इतिहास का अर्थ भारतीय इतिहास के साथ प्रत्येक स्तर पर इंग्लैण्ड के इतिहास से लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त भारतीय इतिहास को केवल राजाओं के बीच हुए युद्धों तथा साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन तक ही सीमित करके पढाया जाता था। इतिहास को भारतीय समाज के विकास की कहानी के रूप में कभी ग्रहण नहीं किया गया। आधुनिक परिस्थितियों में इतिहास के अध्ययन को एक मुख्य परीक्षा विषय के रूप में ग्रहण किया जा सका क्योंकि आज की सामाजिक प्रवृत्ति ने इतिहास के महत्व को बहुत बढा दिया है।

3.1.2 विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्व (Importance of History in the School Curriculum) - विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्व को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विचारकों एवं लेखकों के मतों को नीचे दिया जा रहा है :-

(1) **चौधरी के.पी. (Choudhary K.P) का मत** - इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। "यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। "यद्यपि इतिहास अधिकांशत: अतीत से संबंधित है, परन्तु यह वर्तमान पर भी बल देता है, जिससे आज के समाज का अतीत के प्रकाश में अध्ययन किया जा सकें। इस प्रकार इतिहास उस सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालता है, जिसमें बालक रहता और जीवन यापन करता है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न

ही भविष्य का आकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया जाता है।

- **अतीत के लिए प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यकता (Necessary to develop love towards the past) -** आज आधुनिकता की चकाचौंध में नवयुवक अपने अतीत को तुच्छ मानते हैं और उसे समझने योग्य नहीं मानते। इसका प्रमुख कारण पाश्चात्य प्रणाली के अनुसार शिक्षित होना है। परन्तु भारतीय इतिहास के अध्ययन से उन्हें उनके अतीत से अवगत कराया जाना चाहिए तथा उन्हें इस योग्य बनाया जाना चाहिए जिससे वे अपने अतीत का वर्तमान की दृष्टि से विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकें। 'इससे उनके हृदय में अपने अतीत के लिए प्रेम एवं गौरव भावना उत्पन्न हो सके। अत: देश के प्रति प्रेम जागत करने हेतु इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान देना आवश्यक है।"

- **भारतीय जीवन के ढंग से अवगत कराने के लिए आवश्यक (Necessary to introduce the Indain way of Living) -** इतिहास का अध्ययन भारतीय विद्यालयों में अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि इसके अध्ययन से बालक 'भारतीय जीवन के ढंग' (Indian way of Life) के विकास को समझने में समर्थ हो सकेंगे। जीवन के ढग को समझकर सामाजिक एकता को स्थापित किया जा सकता है। "इसके ज्ञान से जाति, धर्म, भाषा आदि के बंधनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता को स्थापित किया जा सकता हैं।"

- **सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु (To eradicate the Social evils) -** इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान में बहुत सहायक होता है। इस प्रकार के अध्ययन से भाषा तथा साम्प्रदायिक संबंधों को दृढ़ एवं मधुर बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से भी इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

(2) **ग्राण्ट रॉबर्टसन (Grant Robertson) -** "इतिहास के माध्यम से छात्रों को ज्ञान का भंडार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भंडार है, जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते है", इसके द्वारा बालकों का पथ प्रदर्शित किया जाता है। इसके द्वारा छात्रों की जिज्ञासा को संतुष्ट किया जाता है। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों, व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं प्रयासों तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इससे वे अपनी ज्ञान-पिपासा को शांत कर सकते हैं।

(3) **घोष के.डी (Ghosh K.D) का मत -** "इतिहास के द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो कि विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है। "इसमें संदेह नहीं कि इतिहास में बालकों को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पडता है। बालक को जो कुछ वह इतिहास में पढता है उनको स्मरण करने के लिए स्मरण शक्ति का उपयोग करना पडता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न समस्याओं एवं संस्कृतियों व संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्रदान करता है तब उसकी कल्पना शक्ति के विकसित होने के बहुत अवसर प्राप्त होते है। इन सबसे प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इन तथ्यों को वह तार्किक रूप से नियोजित करना जान जाता है।

इसके अतिरिक्त जब वह ऐतिहासिक चरित्रों के विषय में अध्ययन करता है तब उसकी निर्णय शक्ति का विकास पर्याप्त रूप से होता है। घोष महोदय ने अपने कथन की पुष्टि हैपोल्ड के इन शब्दों से की है - "बालक इतिहास के अध्ययन से बहुत से धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक विवादास्पद प्रश्नों तथा समस्याओं के विषय में अपना मस्तिष्क स्थिर करना सीख जाता है, अर्थात् उनको सुलझाने की उसमें क्षमता विकसित हो जाती है। "इस प्रकार इतिहास द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिसके द्वारा बालक अपने जीवन की प्रतिदिन की समस्याओं का हल करने में सफल होता है। इस दृष्टिकोण से उसके तथ्यों का संकलन, उनके परीक्षण एवं उनके आधार पर अपना निष्पक्ष निर्णय देने की योग्यता आ जाती है। इस प्रकार वह सत्य की खोज का प्रेमी बन जाता है।

इतिहास 'बालक के मानसिक क्षैतिज (Mental Horizon) को विस्तृत करता है जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य, देश प्रेम के साथ-साथ विश्व बंधुत्व की भावना भी विकसित होती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उनका यह कार्य नहीं कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, तथा तिथियों के विषयों में प्रस्तुत करें। अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विशद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। हम तभी अपना सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते है। जबकि हम अपने जीवन की सम-सामयिक समस्याओं को पूर्ण रूप से समझ सकें। इन समस्याओं को समझने एवं समझाने में इतिहास हमारी सहायता करता है। इतिहास शिक्षा की हम इसलिए ही व्यवस्था करते है। इसके अतिरिक्त उसका कार्य एक पग और आगे है वह यह है कि उरगके द्वारा बालकों में भविष्य के संबंध में सोचने की प्रवृति जागृत की जाती है।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास का महत्व (Importance of History From National Point of view) - भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण मांग है, जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। आज भारत में जिनकी सर्वाधिक आवश्यकता है वह भावात्मक एकता ही है, जिसके फलस्वरूप आन्तरिक कलह एवं संघर्ष देश की प्रगति पर घातक प्रभाव न डाल सकें। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। इसके अध्ययन से बालकों में विभिन्न अवधारणाएं (Concepts) विकसित की जा सकती है, जो भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के लिए आधारशिला का कार्य करेगी वे अवधारणाएं निम्नलिखित है :-

1. विभिन्न समुदायों तथा अल्पसंख्यकों के योगदान का सम्मान करना।
2. अपनी संस्कृति में निहित एकता को परखना।
3. बालकों को इस संबंध में ज्ञान प्राप्तकरना कि देश में जो भी उन्नति हुई, वह विभिन्न जातियों एवं समुदायों के लोगों के परस्पर मैत्रीपूर्ण संबंधों का ही परिणाम है।

4. छात्रों को अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना और इस बात को परखने के लिए तत्पर बनाना कि वे एकीकृत संस्कृति के अधिकारी हैं
5. राष्ट्रीय संस्कृति के लिए लोगों ने योगदान दिया है चाहे वे विभिन्न क्षेत्रों के क्यों न हो उनको आदर प्रदान करना।
6. बालकों में विभिन्न वातावरणों की अन्योन्याश्रितता को समझने की चेतना का विकास करना।

3.1.3 जीवन में इतिहास की उपादेयता (Utility of History in life)- सामान्यत:लोग यह पूछते है कि वास्तविक जीवन में इतिहास की क्या उपादेयता है? इस प्रकार का प्रश्न पूछने में उनका अभिप्राय यह है कि क्या बालक इतिहास के अध्ययन से भविष्य में अपना जीवन निर्वाह कर सकता है। यह सत्य है कि इतिहास गणित, विज्ञान जैसे विषयों की भांति जीवन निर्वाह में प्रत्येक रूप से सहायता नहीं करता है। परन्तु यहां स्वत: ही यह प्रश्न उठता है कि क्या शिक्षा प्राप्ति का एक मात्र उद्देश्य जीविका प्राप्ति ही है? यदि मान भी लिया जाय कि जीविका निर्वाह ही सर्वस्व है तो हम कह सकते है कि इतिहास भी अन्य विषयों की भांति बालकों को अपने पैरों पर खडा होने योग्य बना सकता है। मानव जीवन के कुछ ऐसे कार्य क्षेत्र हैं जिनमें इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। उदाहरणार्थ - शिक्षण, उच्च शासकीय सेवाएं, पत्रकारिता, विदेश विभाग के कर्मचारियों हेतू कूटनीतिज्ञता आदि यदि सरकारी कर्मचारीजनता के सेवक है तो उन्हें जन-जीवन की विविध गतिविधियों से परिचित होना आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में वे सफल सेवक नहीं बन सकते। इन गतिविधियों की जानकारी के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है।

यदि हम अपनी वर्तमानकालीन सामाजिक, नैतिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं का समाधान चाहते हैं, तो सभ्यता के विकास की दृष्टि से भौतिक विज्ञान विशेष रूप से सहायक नहीं हो सकेंगे। इनके समाधान के लिए मानव को मानव के स्वरूप को पहचानना पडेगा और मानव के स्वरूप को पहचानने में इतिहास हमारी पर्याप्त सहायता करता है। इसके अतिरिक्त मानव के स्वरूप को पहचानने के परिणामस्वरूप ही मनुष्य अपना सच्चा विकास कर सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सफल जीवन के लिए इतिहास का अपना एक विशेष महत्व है और यही उसकी जीवन के लिए महत्वपूर्ण उपादेयता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. Why has History been placed as one of the Subjects in the Curriculum? How far can History develop the attitude of love and respect among pupils?
   इतिहास विषय को पाठ्यक्रम मे क्यों रखा गया है? इतिहास द्वारा छात्रों मे प्रेम तथा आदर की भावना का किस सीमा तक संभव है?
2. Write Short note on 'Significance of History' in School Curriculum?
   विद्यालय पाठ्यक्रम मे इतिहास का महत्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

3. What is the importance of History in School Curriculum? How can you inculculate the feelings of patriotism by teaching History? Discuss.
स्कूल पाठ्यक्रम मे इतिहास का क्या महत्व है? इतिहास शिक्षण से आप देश प्रेम की भावना का समावेश कैसे कर सकते है ? विवेचना कीजिये।

3.2 इतिहास का पाठयक्रम (History Curriculum)

"The ideal of the teaching should be so to plan historical course as to give pupils a broad sweep of histrorical development and not drill them in details of any one of the course of history"

3.2.1 पाठयक्रम का अर्थ (Meaning of Curriculum) - अर्थ (Meaning) - किसी भी शिक्षा संगठन में किसी स्तर पर विषयों का निर्धारण उस स्तर के लिए निर्धारित किए गए शिक्षा उद्देश्यों पर निर्भर करता है और शिक्षा की इन उपलब्दियों की प्राप्ति हेतु ही पाठ्यक्रम को निर्धारित किया जाता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक का सर्वागीण विकास करने का प्रयास किया जाता है। विद्यालय की समस्त शिक्षण क्रियाओं का आधार बिन्दु पाठ्य-वस्तु या विषय-वस्तु होती है और विषय वस्तु के प्रारूप को ही पाठ्यक्रम कहते है। पाठ्यक्रम का अर्थ व स्वरूप बदलता रहता है।

अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम के लिए 'करिक्युलम' (Curriculum) शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'करीक्यूलम' लेटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता' है - 'दौड का मैदान' और शिक्षा में इसका अर्थ है 'छात्रों का कार्यक्षेत्र अथवा छात्रों के दौड़ का मैदान। इससे शिक्षा में पाठ्यक्रम का अर्थ हुआ शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक साधन, एक मार्ग। हार्नी महोदय कहते है कि यदि पाठ्यक्रम को शैक्षिक दौड के मैदान के रूप में ले तो कहा जा सकता है कि शिक्षार्थी दौड़ने वाला व्यक्ति है: पाठ्यक्रम वह मार्ग है, जिसके अनुसार उसे दौडना है, शैक्षिक वातावरण मार्ग में खड़े दर्शक है जो बालक को प्रोत्साहित करते है तथा शिक्षक पथ प्रदर्शक है। अत: पाठ्यक्रम एक दिशा एवं साधन है, जिसका अनुसरण करके बालक क्षिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। पाठ्यवस्तु के व्यवस्थित रूप को ही पाठ्यक्रम की संज्ञा दी जाती है, जो छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तैयार किया जाता है। शिक्षा का अर्थ बदलने के साथ-साथ पाठ्यक्रम का अर्थ भी बदलता रहा है। आज पाठ्यक्रम संकुचित अर्थ में प्रयुक्त ना किया जाकर व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, जिसका अर्थ ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं है बल्कि भावी जीवन हेतु तैयार भी करना है।

पाठ्यक्रम की परिभाषाएं (Definition of Curriculum)-

1. **कनिंघम** -"कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियो (विद्यालय) में ढाल सके।"

“It (Curriculum) is a tool in the hand of the artist (teacher) to mould his material (pupil) according to this ideal objectives in his studio (School).”

- Cunningham

2. **मुनरो -** "पाठ्यक्रम में वे सब अनुभव निहित हैं जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लिया जाता है।"

“Curriculum embodies all the experience which are utilized by the school to attain the aims of education.”

- Munro

3. **फ्रोबेल -** "पाठ्यक्रम को मानव जाति के संपूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए।"

“Curriculum should be conceived as on epitome of the rounded whole of the knowledge and experience of the human race”.

- Frebel

4. **हार्न -** "पाठ्यक्रम वह है जो बालकों को पढ़ाया जाता है। यह शांतिपूर्ण पढ़ने या सीखने से अधिक है इसमें उद्योग व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास और क्रियाएं सम्मिलित है।

“Curriculum is that which is taught to the students. It is more than reading and writing. It includes practice, industry, vocation and acquiring knowledge.”

- Horn

5. **जॉन एफ, कीर के अनुसार -** "विद्यालय द्वारा सभी प्रकार के अधिगमतथा निर्देशन का आयोजन किया जाता है चाहे वह व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप में विद्यालय के अंदर या बाहर व्यवस्थित की जाये, वे सभी पाठ्यक्रम प्रारूप होती है।"

“All the learning which is planned as guided by the school, whether it is carried with groups or individually, inside or outside the school, is known as curriculum”.

-John F. Keer

6. **फिलिक एच. टेलर के शब्दों में -** "पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, पाठ्य वस्तु शिक्षण विधियों तथा उद्देश्यों को सम्मिलित किया जाता है तथा इन क्रियाओं को कैसे आरंभ किया जाए। इन तीनों पक्षों की अन्त: प्रक्रिया को पाठ्यक्रम कहते हैं।"

“Curriculum consists of contents, teaching methods and purpose may be in its rough and ready may ba a sufficient definition with which to start. These three dimensions interacting are operational curriculum”.

- Philip H. Taylor

7. **माध्यमिक शिक्षा आयोग -** "पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परन्तु उसके अंदर वे सभी क्रिया कलाप आ जाते है, जो बालकों का कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।"

"Curriculum does not mean the academic subject taught in the school but it includes total experiences that a chid receives at a school".

-Secondary Education Commission

3.2.2 पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में अन्तर (Difference between Curriculum and syllabus)

क्र.सं	**पाठयक्रम (Curriculum)**	**पाठ्य-वस्तु (Syllabus)**
1.	पाठ्यक्रम का स्वरूप व्यापक होता है।	पाठ्यवस्तु का स्वरूप सुनिशिचत होता है।
2.	उद्देश्यों के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण होता है।	पाठ्यक्रम मे ही पाठ्यवस्तु सम्मिलित होती है।
3.	बालक के सम्पूर्ण विकास से संबन्धित होता है।	शिक्षण विकास की रूपरेखा से संबन्धित है।
4.	केंद्रीय स्तर पर इसका निर्माण होता है।	विद्यालयी स्तर पर इसका निर्माण होता है।

सारणी संख्या : 3.1

3.2.3 पाठ्यक्रम के मूल तत्व (Basic elements of Curriculum) - शिक्षक का मुख्य कार्य शिक्षण करना होता है। कक्षा शिक्षण हेतु शिक्षक जब योजना बनाता है तो प्रमुखत: चार तत्वों का वह ध्यान रखता है - 1. उद्देश्य 2. पाठ्य-वस्तु 3. शिक्षण विधियों, 4. मूल्यांकन। सर्वप्रथम शिक्षण हेतु उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं और उद्देश्यों की दृष्टि से पाठ्य-वस्तु व शिक्षण विधियों को नियोजित किया जाता है। कई उद्देश्य एक ही पाठ्य-वस्तु से प्राप्त किए जा सकते है। इन चारों तत्वों मे गहन संबंध होता है।

- **उद्देश्य (Objectives) -** शिक्षण उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए ही पाठ्यवस्तु शिक्षण विधियों तथा परीक्षणों का नियोजन किया जाता है । अधिगम परिस्थितियों के दौरान ही इन्हें प्राप्त किया जाता है ।
- **पाठ्यवस्तु (Content) -** अधिगम परिस्थितियां इसके स्वरूप का निर्धारण करती है। अत: इसका स्वरूप सूक्ष्म ना होकर व्यापक होता है।
- **शिक्षण विधियों (Teaching Methods)** - उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। इनका संबंध पाठ्यवस्तु से होता है । इन विधियों के माध्यम से अधिगम सृदृढ किया जाता है। जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन किए जाते है । जो पाठ्यवस्तु के स्वरूप को सुनिश्चित करते हैं।
- **मूल्यांकन (Evaluation) -** बालकों को अधिगम स्थिति को सुनिश्चित मूल्यांकन करता है ।मूल्यांकन द्वारा ही ज्ञात होता है कि जिन उद्देश्यों को लेकर पाठ्यवस्तु निर्धारित की गई थी, शिक्षण विधियों का उपयोग किया गया था, उसकी जानकारी मूल्यांकन द्वारा ही होती है ।

3.2.4 पाठ्यक्रम की आवश्यकता (Needs of Curriculum) - जिस प्रकार बालक को शिक्षा की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शिक्षा को पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है परन्तु समय के अनुसार इन आवश्यकताओं में परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान में पाठ्यक्रम की आवश्यकता निम्नानुसार है -

1. छात्रों में शैक्षिक रूचियां उत्पन्न करना।
2. बालकों की क्षमताओं के अनुरूप विकास करना।
3. देश के लिये सुनागरिक का निर्माण करना।
4. व्यावसायिक क्षमता उत्पन्न करना।
5. मानवीय गुणों को विकसित करना।
6. वर्तमान परिस्थितियों से अवगत करना।
7. भावी जीवन हेतु तैयार करना।
8. विभिन्न सामाजिक क्षमताओं को विकसित करना।

3.2.5 पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त (Principles of Curriculum Construction) -पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त हैं, जिन्हें ध्यान में रखकर इतिहास के पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए- पाठ्यक्रम निर्माण के सामान्य सिद्धान्त

1. **अभिरूचि का सिद्धान्त (Principle of Interest) -** पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय बालक की रूचि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। उसमें ऐसी सामग्री का चयन किया जाये जो बालक की इतिहास के प्रति रूचि जाग्रत कर सकें। हर स्तर के बालकों की रूचि के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्धारण किया जाए। प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर कहानी, अभिनय आदि का मिश्रण किया जाए। माध्यमिक स्तर पर बालकों को महापुरूषों की जीवनियां आदि को शामिल किया जाए। इससे बालक त्याग, देशप्रेम, कर्तव्य परायणता आदि का पाठ पढ़ सकेंगे तथा जीवन में इन गुणों को अपनाने का प्रयास करेंगे।

2. **प्रेरणा का सिद्धान्त (Principle of Inspiration) -** पाठ्यक्रम प्रेरणादायक होना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम बालकों को कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता तो यह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अत: बालकों को प्रेरणा प्रदान करने के लिये यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय बालकों की इच्छा, क्षमता, योग्यता आदि का ध्यान रखा जाए। यदि पाठ्यक्रम प्रेरणास्पद नहीं होगा तो बालक कभी भी कक्षा शिक्षण में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेगा।

3. **शैक्षिक सिद्धान्त (Principle of Education) -** इतिहास के पाठ्यक्रम का निर्माण शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। शिक्षा प्रदान करते समय एक से अधिक लक्ष्य निर्धारित किये जाते है, ये लक्ष्य वैयक्तिक भी हो सकते है और सामाजिक भी। अत: पाठ्यक्रम निर्माण के समय इनका ध्यान रखना आवश्यक होता है। बालक को मूल्यों की शिक्षा देने के लिए पाठ्यक्रम में सामाजिक व शैक्षिक मूल्यों को भी सम्मिलित करना चाहिए ताकि बालक इनका सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ आचरण में भी ला सकें।

4. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Activity) -** पाठ्यक्रम निर्माण करते समय क्रियाशीलता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। जिस ज्ञान को बालक स्वयं करके सीखता है, वह ज्ञान अधिक स्थायी व प्रभावी होता है। चूंकि बालक की प्रवृत्ति क्रियाशीलता की होती है और इस प्रवृति का अधिकतम उपयोग करने के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम में ऐसी विषय-वस्तु का चयन किया जाना चाहिए जिससे बालक को अधिक से अधिक क्रिया द्वारा सीखने के अवसर प्राप्त हो सके। इसके लिए इतिहास में रचनात्मक कार्यो जैसे - मॉडल, चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, समय रेखा आदि को स्थान दिया जाना चाहिए।

5. **वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त (Principle of Individual Differences)-** वर्तमान में शिक्षा बाल केन्द्रित हो गयी है। अत: पाठ्यक्रम भी बाल केन्द्रित होना चाहिए। कक्षा में इतिहास की विषय-वस्तु का संकलन भी वैयक्तिक विभिन्नता के आधार पर होना चाहिए ताकि सभी बालक समान रूप से ज्ञान अर्जित कर सके। पाठ्यक्रम में उस सामग्री को स्थान दिया जाए जो बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो सकें।

6. **उपयोगिता का सिद्धान्त (Principle of Utility) -** पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय उपयोगिता के सिद्धान्त को ध्यान में रखना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम जीवनोपयोगी है तो बालक की रूचि व प्रेरणा जाग्रत करने में सक्षम नहीं हो सकता। पाठ्यक्रम में ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जो उनके जीवन में उपयोगी तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करें। यदि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को उपयोग ना किया जाए तो वह व्यर्थ सिद्ध होता है।

7. **समन्वय का सिद्धान्त (Principle of Co-Relation) -** इतिहास विषय का अन्य विषयों से सहसंबंध स्थापित करने के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण समन्वय के सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए। इस सहसंबंध से विभिन्न विषयों को एक-दूसरे से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। इससे सभी विषयों का ज्ञान तो प्राप्त होता ही है साथ ही बालकों का दृष्टिकोण भी विस्तृत होता है।

8. **विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धान्त (Principle of Variety and Flexibility) -** इतिहास के पाठ्यक्रम निर्माण के समय विविधता व लचीलेपन का भी ध्यान रखना चाहिये। इसके अनुसार ही विषय-वस्तु का समायोजन इतिहास में किया जाना चाहिए ताकि पाठ्यक्रम में विविधता व लचीलपन बना रहे। समयानुसार नवीन तथ्यों व घटनाओं को भी सम्मिलित नहीं किया जा सके तथा समयानुसार अनावश्यक तथ्यों को हटाया भी जा सकें। माध्यमिकशिक्षा आयोग ने कहा है - "वैयक्तिक विभिन्नताओं को स्वीकार करने और वैयक्तिक आवश्यकताओं एव रूचियों का अनुकूलन करने के लिए पाठ्यक्रम में पर्याप्त विभिन्नता व लचीलापन होना चाहिए।"

9. **परीक्षा अनुरूपता का सिद्धान्त (Principle of Examination)** - वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परीक्षा का विशेष महत्व है तथा शिक्षा परीक्षा केन्द्रित है। अत: पाठ्यक्रम निर्माण व वि.वि. की परीक्षाओं को विशेष महत्व दिया जाता है। बालकों की वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखकर तथा विभिन्न परीक्षाओं द्वारा ही पाठ्यक्रम का निरूपण किया जाता है।

10. **उपयुक्त समय का सिद्धान्त (Principle of appropriate time)** - यह सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्षभर में कितनी विषय सामग्री बालकों को दी जा सकती है। इसका

ध्यान रखते हुए ही पाठ्यक्रम निर्माण किया जाना चाहिए ताकि निर्धारित समय में पाठ्यक्रम पूर्ण किया।

3.2.6 पाठ्यक्रम में नवाचार (Innovation in Curriculum) - सन् 1960 ई. के बाद में पाठ्यक्रम विकास पर पुनर्विचार किया गया। इस क्षेत्र में ब्रूनर, हर्ड आदि विचारकों ने उल्लेखनीय कार्य किया। हर्ड (1969) ने पाठ्यचर्या में नवाचारों (Innovations) को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है -

1. पाठ्यचर्या का निर्माण-कार्य स्थानीय स्तर पर न किया जाय वरन् यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर हों।
2. विषय-वस्तुओं के चयन के लिए अवधारणा (Concept) योजना को आधार बनाया जाये।
3. विषय-वस्तु का चयन विशेषज्ञों अथवा अन्वेषकों द्वारा किया जाये।
4. शिक्षण छात्र-केन्द्रित हो तथा सीखने के लिए प्रयोगशाला का प्रयोग किया जाये।

'लर्निंग टू बी' (Learning to be) नामक प्रकाशन द्वारा पाठ्यचर्चा में निम्नलिखित तत्वों पर बल बदया गया है-

1. विषय-वस्तु का चयन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए।
2. भिन्न-भिन्न विषयों का एकीकरण होना चाहिए।
3. पाठ्यचर्चा द्वारा छात्रों के सामाजिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक पक्षों के विकास पर बल दिया जाना चाहिए।
4. विद्यालयी पाठ्यचर्चा वास्तविकता लिये हो।

उपयुक्त नवाचारों द्वारा पाठ्यचर्या में अनेक परिवर्तन संभव बन पडे है तथा सीखने और शिक्षण की विधियों में नवीन-परिवर्तनों को स्थान मिल रहा है। साथ ही पाठ्यचर्चा मॉडल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे शिक्षा प्रभावी बन सकें।

3.2.7 पाठ्यक्रम निर्धारण के लाभ (Advantage of Curriculum Construction) - इतिहास का पाठ्यक्रम निर्धारित करने से निम्नलिखित लाभों की प्राप्ति की जा सकती है -

1. कार्य की विस्तृत योजना निर्धारित करने से कार्य सुचारू रूप से चलता है । उससे नियमहीनता को दूर किया जा सकता है।
2. इसके द्वारा कार्य की पुनरावृत्ति को समाप्त किया जा सकता है। हमारे विद्यालयों में बालक स्कूल छोडने से पूर्व भारतीय इतिहास की कई बार पुनरावृत्ति करता है। इसका कारण इतिहास के पाठ्यक्रम के संबंध में पूर्व-निश्चित योजना का अभाव है।
3. इसके द्वारा बालक की प्रगति की भी परीक्षा होती है कि विद्यार्थी ने कितना ग्रहण कर लिया है और कितना ग्रहण करना शेष है।
4. यह कार्य - कुशलता का पोषक तत्व है तथा इसके द्वारा परीक्षा के प्रश्न-पत्रों के बनाने में भी सहायता मिलती है।

इतिहास शिक्षण में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

3.2.8 तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञानिक आधार)Pychological Basis of the Selection of Facts)- मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार इतिहासशिक्षा की व्यवस्था अभी - अवस्थाओं की क्षमता का ज्ञान प्राप्त करना और उसके विद्यालयों में नहीं हो पायी है। विभिन्न पश्चात् यह पता लगाना कि प्रत्येक अवस्था पर किन तथ्यों की शिक्षा दीं जानी चाहिए, यह बडा जटिल कार्य है। बालकों की शिक्षा उनके मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए। इतिहास के अध्यापकों तथा पाठ्यक्रम के निर्धारकों का यह मुख्य कर्तव्य है कि विभिन्न अवस्था के विद्यार्थी समूहों के लिए इतिहास की शिक्षा की व्यवस्था करें। शिक्षाशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों ने इस समस्या को मनोवैज्ञानिकरूप प्रदान करने का प्रयत्न किया है। इस आधार के अनुसार पाठ्यक्रम बनाने के दो प्रयास किये गये हैं, जिनका विवेचन आगे किया जा रहा है -

3.2.8.1 सांस्कृतिक युग सिद्धान्त (Culture Epoch Theory) - सांस्कृतिक-युग सिद्धान्त या पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के प्रवर्तक अमरीका के डी. स्टेनले हाल (Staneley Hall) है। इन्होंने मानव-जीवन के प्रांरभिक काल से लेकर वर्तमान कल के विकास पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और मनुष्य के क्रमिक विकास का अध्ययन कर यह निश्चय किया कि मनुष्य अपने जीवन-काल में ही मानव-विकास के संपूर्ण क्रमों की पुनरावृत्ति करता है। डा. स्टेनले हाल का कथन है कि प्राणी खेल में ही अपनी जाति के विकास की सीढियों को पार करता है। सभ्यता के आदिकाल में मनुष्य की मानसिक स्थिति कदाचित आज के बालकों के समान थी। बालक अपने पूर्वजों के सभी अनुभवोंका उत्तराधिकारी होता हैं वह सूक्ष्म रूप में उनके समस्त संस्कार लेकर उत्पन्न होता है। इन संस्कारों की अभिव्यक्ति वह अपने खेलों द्वारा करता है। पर इस अभिव्यक्ति की आवश्यकता क्या है इसका उत्तर मां के उदर में स्थित भ्रूण की विभिन्न अवस्थाओं से मिल सकता है। शरीर-विज्ञानशास्त्रियों का मत है कि भ्रूण अपनी मां के उदर में सभी प्रधान जीवों की मूल अवस्था को पार करने के पश्चात् मानव-जाति के आकार में आता है इस सिद्धान्त के अनुसार मानव और जाति के विकास में समानता होती है। इसका अर्थ यह है कि जिन अवस्थाओं में होकर मानव-जाति का सांस्कृतिक विकास हुआ है व्यक्ति भी अपने जीवन में उन्हीं अवस्थाओं की पुनरावृत्ति करता है अर्थात उन्हीं अवस्थाओं में होकर उसका विकास होता है। दूसरे शब्दों में बालक अपनी बाल्यावस्था के कुछ वर्षो में अपने पूर्वजों की उन सब महत्वपूर्ण क्रियाओं को दोहराता है, जिन्होने आदिकाल से लेकर अब तक मानव-जाति के सांस्कृतिक विकास में योग प्रदान किया है। इसलिए बालक के लिए इतिहास की सामग्री जाति के सांस्कृतिक विकास की उस अवस्था से लेनी चाहिए जिस अवस्था में होकर बालक गुजर रहा है। इसका अर्थ यह है कि बालक छोटी अवस्था में हो तो उसे जाति के यौवनकाल का इतिहास पढने को देना चाहिए। इस दृष्टि से इतिहास के पाठ्यक्रम के तथ्यों का चुनाव होना चाहिए।

इस सिद्धान्त के प्रवर्तकों का विश्वास है कि बालक सर्वप्रथम स्वार्थी तथ असभ्य होता है। जो वस्तु उसके हाथ में आती है, वह उसको नष्ट-भ्रष्ट कर देता हैं उसके पश्चात् उसे साहसिक कार्यो से पूर्ण कहानियां सुनना रूचिकर होता है। इन्हीं बातों के आधार पर इतिहास के तथ्यों का निर्णय करना चाहिए। मानव-जाति की शिशु अवस्था का इतिहास शिशुओं के लिए उपयुक्त है। बाल्यावस्था का इतिहास बालकों को पढाना चाहिए और मानव-जाति के इतिहास का अन्तिम

चरण प्रौढों के लिए उपयुक्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम इतिहास शिक्षा की निम्नलिखित रूप से व्यवस्था कर सकते है-

1. प्राचीनकाल का इतिहास (प्राइमरी स्तर पर)
2. मध्यकाल का इतिहास (जूनियर-स्कूल स्तर पर),
3. वर्तमान काल का इतिहास (हाई स्कूल कक्षाओं के लिए),
4. वर्तमान काल का आलोचनात्मक इतिहास (उच्च कक्षाओं के लिए)

सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त के विपक्ष में तर्क (Arguments against Culture Epoch Theory) - इसके विपक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जाते है -

1. वैज्ञानिकता की कसौटी पर यह सिद्धान्त खरा नहीं उतरता है। इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक विवेचन नहीं हो सकता है और यह सिद्धान्त बहुत कुछ कल्पना के आधार पर निर्मित हुआ है। इसका मूल सिद्धान्त यह है कि बालक स्वत: बर्बर तथा असभ्य है। यह भ्रमात्मक असत्य प्रतीत होता है, क्योंकि बालक बर्बर तथा असभ्य नहीं होता है, बालक का विकास वंशानुगत परम्पराओं तथा वातावरण के अनुसार होता है, जबकि एक बर्बर मनुष्य अपनी वंश परंपरा तथा वातावरण विशेष की परिस्थिति के अनुसार पूर्ण विकसित होता है।

2. पाठ्यक्रम में लचिलापन होना चाहिए, न कि दृढ़ता। इसमें ऐतिहासिक अन्वेषणों तथा समय के परिवर्तनों को स्थान मिलना चाहिए। इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम में नवीन खोजों तथा परिवर्तनों को स्थान नहीं दिया जा सकता है।

3. इस सिद्धान्त के समर्थकों का कहना है कि व्यक्ति तथा जाति के विकास में समानता होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाल्यावस्था के स्तर पर दोनों में समानता दृष्टिगोचर होती है, परन्तु उसके पश्चात् जब ऐतिहासिक काल आता है, तब उसमें तथा बालक के विकास काल में कोई समानता नहीं दिखायी पडती है। इस काल में बालक का विकास तीव्र गति से होता है और बालक के शारीरिक विकास तथा बौद्धिक विकास में संतुलन स्थापित नहीं हो पाता।

4. इस सिद्धान्त के विपक्ष में एक तर्क यह दिया जाता है कि समस्त जातियों ने अपने विकास में एक ही मार्ग को नहीं अपनाया, अर्थात् उनका किसी एक ही नियम के अनुसार क्रमिक विकास नहीं हुआ। संसार में ऐसी अनेक जातियां है जो सभ्यता की दौड में दूसरों की अपेक्षा बहुत आगे बढ गई है । कुछ जातियां ऐसी है जो सभ्यता की दौड में दूसरों की अपेक्षा बहुत आगे बढ गई है। कुछ जातिय ऐसी है जो बहुत ही पिछडी हुई है। संभव है कि अनेक ऐसी जातियां भी हैं, जिन्हें विकास में उतनी कठिनाई का अनुभव न हुआ हो जितनी कठिनाई का अनुभव अन्य जातियों को हुआ हो।

3.2.8.2 जीवन-गाथा सिद्धान्त (Biographical Theory)- यह सिद्धान्त भी मनोविज्ञान पर आधारित है। इसका मुख्य प्रवर्तक कारलाइल (Carlyle) है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि इतिहास के तथ्यों का निर्णय जीवन-गाथाओं के अनुसार हो सकता है। उनका विचार है कि महापुरूष अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: उनकी जीवन-गाथाओ को इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए अर्थात् इन महापुरूषों की जीवन-गाथओं द्वारा इतिहास की शिक्षा प्रदान की जाये। कारलाइल का विचार है कि **"सामान्य पुरूष भेड़ों के**

झुण्ड के समान हैं और महापुरूष उन शिकारी कुत्तों के समान हैं जो भेड़ों की रक्षा करते हैं।" इसके समर्थक का कथन है कि निश्चित क्रम तथा काल के अनुसार इन महापुरूषों के जीवन का क्रमिक इतिहास निर्मित करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा है कि इतिहास कालक्रम के अनुसार महापुरूषों की जीवन-गाथाओं की एक लड़ी है। विश्व इतिहास भी इसी प्रकार महापुरूषों की जीवन गाथाओं की एक श्रंखला है। जैसा ऊपर कहा गया है कि महापुरूष काल-विशेष के प्रतिनिधि होते है, उनके जीवन का अध्ययन करने से उनके समय का पूरा ज्ञान हो जाता है। इन्हीं महापुरूषों द्वारा ऐतिहासिक आदोलन प्रभावित होते हैं तथा चलाये जाते है। इस सिद्धान्त के परिणमस्वरूप ही इतिहास में वीर-पूजा की उत्पत्ति हुई हैं ये महापुरूष मानवता के ऐसे सजग प्रहरी होते हैं जो अपनी प्रजा का सदा नेतृत्व करते हैं और साधारण जनता उनका अनुकरण करती रहती है। जनता में न तो स्वयं इतनी शक्ति है और न इतनी बुद्धि कि वह अपना पथ स्वत: निर्धारित कर सकें।

जीवन-गाथा सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of Biographical Theory) - जीवन गाथा सिद्धान्त की आलोचना निम्न प्रकार है -

1. यह सिद्धान्त प्रजातंत्र का विरोधी है, यह अधिनायकवाद पर बल देता है और समाजवाद के लिए मार्ग प्रशस्त नहीं करता। इसके अतिरिक्त यह साधारण मनुष्य के विषय में कुछ नहीं कहता है।

2. महापुरूष अपने काल विशेष के प्रतिनिधि होते है। वे सदैव अपने समय से ऊपर रहते हैं और साधारण समाज से स्पष्टत: पृथक रहते हैं वे अपने समय के क्रांतिकारी तथा विद्रोही होते हैं वे सदा अपने समय की व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह करते हैं। वे महापुरूष अपने क्षेत्र में महान् होते हैं वे सदा अपने समय की व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह करते है। वे महापुरूष अपने क्षेत्र में महान् भले ही हों, परन्तु वे संपूर्ण मानव-जीवन की प्रतिभा अथवा विकास का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

उपर्युक्त आलोचना में समता का आभास है, फिर भी इस सिद्धान्त से हमें तथ्यों के चयन में पर्याप्त सहायता मिलती है। इतिहास-शिक्षक को इस सिद्धान्त का उपयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. कोई भी महापुरूष अपने काल-विशेष का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। अत: विभिन्न स्तरों के व्यक्तियों की गाथाओं का चयन होना चाहिए। इस प्रकार के चयन का परिणाम यह होगा कि हमारे सम्मुख इतिहस का सर्वागीण रूप उपस्थित होगा। उसमें शांति के पुजारी तथा युद्ध के संचालक दोनों का स्पष्ट चरित्र उपस्थित हो सकेगा।

2. किसी एक महापुरूष की जीवन-गाथा के चयन से तब तक कोई लाभ न होगा, जब तक उसकी जीवन - गाथा के साथ ही साथ उसके मानवीय सिद्धान्तों, शिष्यों, समर्थकों तथा उनकी गतिविधियों का पूरा चित्र न उपस्थित किया जाये। इसके अतिरिक्त विचारों की प्रतिक्रिया पर भी ध्यान देना होगा। यदि हम बौद्ध धर्म के विषय में अध्यापन कर रहे हैं तोकेवल गौतम बुद्ध के चरित्र के विषय में बताने से कोई लाभ न होगा, जब तक कि हम उनके शिष्यों, समर्थकों, प्रचारकों तथा विरोधियों के विषय में ज्ञान नहीं देते, अर्थात् हमें अशोक, कनिष्क, हर्ष, कुमारिल भट्ट तथा शंकराचार्य के विषय में भी ज्ञान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनका विभिन्न व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पडा वह भी बताना नितान्त आवश्यक है।

3. इस बात का प्रयत्न होना चाहिए कि इनकी ऐतिहासिकता या ऐतिहासिक आधार समाप्त न हो जाये अर्थात् वे कल्पित कहानी न बन जाये।

4. जिस जीवन-गाथा को चुना जाये, उसको इन बातों की कसौटी पर कस लेना अनिवार्य है। वह जीवन-गाथा या घटना किस काल का इतिहास बताती है तथा इस कथा का वास्तविक उपयोग क्या है, इन बातों को ध्यान में रखकर यदि गाथा का चयन किया जाय तो प्रारंभिक अवस्था के लिए इतिहास की शिक्षा की व्यवस्था हो सकती हैं।

3.2.9 तथ्यों का संगठन (Organization of Facts) - इस प्रकार तथ्यों के निर्णायक सिद्धान्तों की विवेचना करने के पश्चात् हमारे सम्मुख यह प्रश्न उठता है कि इन चयन किये हुए तथ्यों को प्रस्तुतीकरण के लिए किस रीति से संगठित किया जाये 'कक्षा के सम्मुख इस पाठ्य-सामग्री को रखने से पूर्व ही हमें इसका उचित रूप से संगठन करना होगा। इसके संगठन के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों को अपनाया जा सकता है-

3.2.9.1 एक समान केन्द्र विधि (Concentric Method) - इस विधि के विकास का श्रेय पेस्टालॉजी (Pestalozzi) को है, जो भिखारियों को उद्यमी मनुष्य बनाना चाहते थे। उसका विचार था कि इतिहास के शिक्षण द्वारा समाज की पुनर्रचना की जा सकती हैं यह विधि जर्मनी में इतिहास-शिक्षण के लिए प्रयोग में लायी गयी, जो बहुत ही प्रभावशाली तथा सफल हुई और इसका प्रभाव यूरोप के अन्य देशों पर भी पडा। इस योजना के अनुसार इतिहास की संपूर्ण बातें प्रत्येक वर्ष पढाई जाती हैं पीठिका समान रहती है, अर्थात् हम भारत का इतिहास समस्त स्तरों पर पढाना चाहते हैं तो इसकी रूपरेखा समान रहेगी। केवल पाठ्यक्रम में संक्षिप्त समस्त स्तरों पर पढाना चाहते हैं तो इसकी रूपरेखा समान रहेगी। केवल पाठ्यक्रम में संक्षिप्त तथा विस्तृत होने का ही भेद रहेगा। प्रत्येक वर्ष उन रूपरेखाओं को विस्तृत बनाया जायेगा। सर्वप्रथम केवल रूपरेखायें ही दी जायेंगी, तत्पश्चात् प्रतिवर्ष उनके क्षेत्र में वृद्धि होती जायेगी इस प्रकार इसमें ज्ञान की पीठिका समान रहती है पर ज्ञान के व्रत्तों का आयाम निरंतर बढता चलता हैं यह पुनरावृति हर बार नये आयामों के साथ प्रस्तुत की जाती है।

एक-समान केन्द्र विधि की आलोचना (Criticism of Concentric Method) - यद्यपि यह विधि बहुत लाभदायक है, यद्यपि इसमें कतिपय न्यूनताएं है, जो अग्रलिखित है -

1. इसके विपक्ष में एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त तर्क यह दिया जाता है कि इस विधि द्वारा तथ्यों की आवृत्ति होती है जिससे इतिहास के प्रतिपादन में कोई रोचकता नहीं आ पाती है और जिसके कारण छात्रों में नीरसता आती है तथा वे इन तथ्यों को सुनने तथा पढने में कोई रूचि नहीं लेते। परन्तु इसके समर्थकों का कहना है कि विषय की रोचकता का श्रेय उसके अध्यापक पर निर्भर है । नीरस से नीरस विषय को अध्यापक की कला रोचक बना सकती है, इस तर्क में पर्याप्त सत्यता है।

2. दूसरा तर्क यह दिया जाता है कि यह विधि मनोवैज्ञानिक ढंग पर आधारित नहीं है । यह मनोवैज्ञानिक सूत्रों, जैसे - सरल से कठिन की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर आदि का अनुसरण नहीं करती हैं।

3. इस सिद्धान्त के अनुसार तीन-चार वर्षो के अन्दर ही दो-तीन सहस्त्र वर्षो का इतिहास पढ़ाने का यत्न किया जाता है । अतः छात्रों को समय तथा काल का वास्तविक बोध नहीं हो पाता है और विभिन्न चरित्रों तथा समय की विशेषताओं को समझ सकना विद्‌यार्थी के लिए कठिन हो जाता हैं, क्योंकिं प्रत्येक समय छात्र को काल संबंधी एक दीर्घ मार्ग पार करना पडता है, जिसमें अनेक कठिनाइयां आती है । वह इसी को तय करने में लगा रहता है । उसे उतना अवकाश ही नहीं मिल पाता है कि वह कालक्रम तथा समय विशेषताओं को समझ सके ।

4. इसके विरूद्ध एक तर्क भी उपस्थित किया जा सकता है कि किसी भी स्तर पर बालक को इतिहास का पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता, क्योंकि उसके वृत्त की प्रत्येक स्तर या कक्षा पर वृद्धि होती रहती है। अतः बालक किसी वर्ष में इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता।

इन आलोचनाओं से अध्यापक को दुःखी नहीं होना चाहिए। इस विधि का प्रयोग यदि सतर्कता के साथ किया जाए तो यह अत्यन्त हितकारी सिद्ध होगी। प्रो. घाटे का विचार है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में ऐतिहासिक चरित्रों का चयन और उच्च कक्षाओं में आलोचनात्मक तथा प्रकरणात्मक अध्ययन किया जाय तो इसके पर्याप्त दोषों का निराकरण किया जा सकता हैं।

3.2.9.2 कालक्रम विधि (Chronological Method) - इस सिद्धान्त के लिए हमें पेस्टालॉजी की ओर ध्यान देना पड़ेगा। पेस्टालॉजी ने इस विधि का कक्षा-कक्ष में प्रयोग किया। उसने इस विधि को रूसों के शिक्षा प्रकृति के अनुसार दी जाये सिद्धान्त पर आधारित किया। रूसों ने कहा था कि - **"हर एक प्रकार के शिक्षण के लिए एक विशिष्ट समय होता है, जिसका पालन हमें विधिवत् करना चाहिए, अर्थात् हमें उसी के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए। "** अपने गुरू के इन शब्दों के अनुसार पेस्टालॉजी ने कहा है कि - **"प्रत्येक बालक को उसी प्रकार पढाना चाहिए जैसी उसकी प्रकृति की मांग हो । इसके विपरीत, दूसरी विधि हानिकारक सिद्ध होगी।"** इस प्राकृतिक प्रस्तुतीकरण को इतिहास में उसने अपनाया और कहा कि समस्त इतिहास को विभिन्न स्तरों पर बांट देना चाहिए और प्रत्येक स्तर की विषय सूची भिन्न होनी चाहिए। यह विधि सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त से भी सहायता प्राप्त कर सकती है। यदि हम इतिहास को इस विधि के अनुसार विभिन्न स्तरों पर रखें तो हमको प्रत्येक स्तर पर एक काल का इतिहास रखना पडेगा। परन्तु यह विवरण कालक्रम के अनुसार होगा, उदाहरणार्थ - हम भारतीय इतिहास को विभिन्न स्तरों के लिए निम्न प्रकार से निर्धारित कर सकते है-

1. प्राचीनकाल - कक्षा 6 के लिए।
2. राजपूत तथा सल्लनत काल - कक्षा 7 के लिए।
3. मुगल काल - कक्षा 8 के लिए।
4. ब्रिटिश काल - कक्षा 9 के लिए।
5. आधुनिक काल (स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् का काल) कक्षा 10 के लिए।

इतिहास के शिक्षक को इन कालों का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1. प्रत्येक काल अपनी कुछ विशेषताएं रखता है। उसका चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उस काल की मुख्य विशेषताओं का परित्याग तो नहीं हो गया था उनका संबंध विच्छेद तो नहीं हो गया है।

2. प्रत्येक काल की एककेन्द्रीय समस्या होनी चहिए जिसके चारों ओर विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं तथा व्यक्तियों का होना आवश्यक है, उदाहरणार्थ यदि हम मराठा - काल का चयन करते हैं तो उसक काल की सबसे प्रमुख समस्या स्वराज्य प्राप्ति थी और उसको प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयत्न किये गये ह जो कि ऐतिहासिक घटनाएं हैं, जैसे-शिवाजी की आगरा यात्रा, पानीपत, का युद्ध (सर देसाई के अनुसार) आदि। इसमें बहु त से व्यक्तियों ने कार्य किया; जैसे - शाहजी, शिवाजी, बाजीराव प्रथम, बाजीराव, दत्ताजी, भाऊ, विश्वासराव आदि ।

3. जो काल चुना जाय, वह महापुरूषों की क्रियाओं से संपूर्ण होना चाहिए। क्योंकि बालक गुरू नानक, कबीर तथा चैतन्य आदि के कार्यो में रूचि नहीं रखते है वरन् नैपोलियन, राणाप्रताप तथा सिकन्दर के कार्यो में रूचि रखते है।

कालक्रम - विधि की आलोचना (Criticism of Chronological Methods) -

1. इस सिद्धान्त द्वारा मनोविज्ञान तथा शिक्षण-सूत्रों का उल्लंघन किया जाता है। जब हम इतिहास को कालों में विभाजित करते हैं तब एक काल ऐसा भी हो सकता है जो बहु त सरल तथा दूसरा जटिल हो। यदि हम कालक्रम के अनुसार उनको लें तो हो सकता है कि पहले जटिल आयें और उसके पश्चात् सरल। उस समय सरल से जटिल की ओर वाले सूत्र का उल्लंघन करते हैं।

2. इस सिद्धान्त के अनुसार काल की घटनाओं के भूलने की संभावना है, क्योंकि जो काल एक स्तर पर पढ़ाया जा चुका है, उसकी आवृत्ति का कोई अवसर दूसरे स्तर पर नहीं मिलता है।

3. यदि इतिहास का शिक्षक इतिहास का विभाजन सास्कृतिक युग-सिद्धान्त के अनुसार करता है तो पहले प्राचीन काल का इतिहास ही बालकों को पढ़ाया जायेगा। अत: उसे सरलातिसरल रूप में रखना पडेगा और उस काल के इतिहास का विस्तृत तथा गंभीर अध्ययन करने का अवसर ही नहीं मिलेगा। वे अपने प्राचीनकाल के इतिहास की सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की बातों का अध्ययन नहीं कर पायेंगे ।इस प्रकार प्राचीनकाल काइतिहास कुछ कहानियों तथा गाथाओं तक ही सीमित रह जायेगा। इससे यह स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त प्राचीनकाल के इतिहास के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर पाता, जो कि इस सिद्धान्त की सबसे बडी दुर्बलता है।

कालक्रम तथा एक-समान केन्द्र विधियों में सामंजस्य (Co-ordination between Concentric and Chronological Method) - इन दोनों विधियों के गुण-दोषों को देखने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि इन दोनों विधियों में किसी प्रकार समन्वय स्थापित किया जाय, क्योंकि एक विधि सर्वागरूप से संपूर्ण नहीं हो सकती। इन दोनों विधियों के समन्वय से संगठन का प्रश्न पर्याप्त सीमा तक निम्नलिखित प्रकार से सुलझाया जा सकता है -

(i) **प्रारम्भिक स्तर -** प्राथमिक स्तर पर हम जीवन गाथा सिद्धान्त को ग्रहण कर सकते हैं। इस स्तर पर हमारा ध्येय-स्थूल तथा सरल सामग्री देने का है। वे कहानियाँ चुनी जायें, जो समस्त पाठ्यक्रम को पूरा करती हों, परन्तु ये कहानियाँ कालक्रम के अनुासर हों।

(ii) **माध्यमिक स्तर -** जूनियर हाईस्कूल स्तर पर हम कालक्रम विधि को ग्रहण कर सकते हैं और इसके द्वारा पाठ्यक्रम में संपूर्ण इतिहास को स्थान प्रदान कर सकते हैं। छठी कक्षा में प्राचीन भारत का इतिहास, सातवीं तथा आठवीं कक्षा में मध्यकालीन तथा आधुनिक भारत का इतिहास रख सकते हैं।

(iii) **उच्चतर मानसिक स्तर -** इस स्तर पर हमारे पास 5 वर्ष का समय है, उसमें एक समान विधि को ग्रहण कर सकते हैं। परन्तु यहां हमारा दृष्टिकोण तथ्यात्मक न होकर आलोचनात्मक होना चाहिए। मुख्य सिद्धान्तों तथ समस्याओं पर अधिक बल देना चाहिए और गौण घटनाओं तथा व्यक्तियों को हटाया जाना चाहिए। यदि हमारे पास एक वर्ष का समय है, तो एक काल में विशेषता प्राप्त करना मुख्य ध्येय होगा। इस प्रकार इस योजना में इतिहास की तीन बार पुनरावृत्ति हो जायेगी और दोनों विधियों के लाभ प्राप्त किये जा सकेंगे।

3.2.9.3 प्रकरण विधि (Topical Method) - प्रकरण विधि कालक्रम विधि को प्रयोग में लाने के लिए एक मार्ग है। कालक्रम के अनुसार समस्त इतिहास को विभिन्न कालों में विभाजित कर दिया जाता है तथा इन कालों को छोटे-छोटे विभिन्न भागों में बांट दिया जाता है और इन विभागों को 'प्रकरण' के नाम से पुकारा जाता है। प्रकरण एक काल का छोटा समुदाय खंड नहीं है, जैसा कि काल है, प्रकरण इतिहास में एक विचार या आदोलन होता है। इसके द्वारा ऐतिहासिक श्रंखला को गति प्राप्त होती है। इसका संबंध मुख्य धारा से पृथक नहीं होता है । इस विधि को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रधानता दी गई है। प्रकरण से तात्पर्य एक पृथक घटना से नहीं है वरन् उससे है जो किसी कारण का प्रतिनिधित्व करें और इतिहास की मुख्य घटना को प्रभावित करें उदाहरणार्थ -इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति, फ्रांस की क्रांति, होम-रूल बिल आदि। भारतीय इतिहास को हम विभिन्न प्रकरणों में विभाजित कर सकते है, जैसे - भारत में आर्यो का आगमन, आर्यो द्वारा अपनी संस्कृति का प्रचार, मौर्यो का प्रभावशाली साम्राज्य, गुप्तवंश का शासनकाल, राजपूतों का उत्थान, तुर्क साम्राज्य की स्थापना, भारत में मुगलों का उत्कर्ष, मराठों का उत्कर्ष, अंग्रेजों का व्यापारियों के रूप में आगमन, सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता युद्ध, सन् 1942 का 'भारत छोडो' आदोलन आदि, ये ऐसे प्रकरण नहीं है, जिनका एक ही व्यक्ति से संबंध रहा हो। ये एक प्रकार के आदोलन है - इनमें अनेक व्यक्तियों ने भाग लिया था। जब एक व्यक्ति किसी भावना विशेष का प्रवर्तक होता है, तब वह भी एक प्रकरण हो सकता है; क्योंकि उसकी भावना का अनेक व्यक्ति समर्थन करते है; उदाहरणार्थ - गौतम बुद्ध, अशोक, नेपोलियन, मेजनी, रूसों, बिस्मार्क, कॉमवेल, चार्ज वाशिंगटन, महात्मा गांधी, लेनिन, कार्ल मार्क्स आदि व्यक्ति एक-एक प्रकरण हो सकते हैं।

प्रकरण विधि के गुण (Merits of Topical Method) -

1. इस विधि के द्वारा इतिहास का विस्तृत रूप से विवेचन संभव है ।
2. इसके द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है; अर्थात् इसके द्वारा तथ्यों को सरल बनाया जाता है जिससे वे सफलतापूर्वक ग्रहण किये जा सकें ।
3. कालक्रम विधि के अनुसार का संगठन तभी संभव है, जब इस विधि को अपनाया जाय।
4. इसके द्वारा बालकों में सुगमता से समय-ज्ञान विकसित किया जा सकता हैं

5. यह विधि अध्यापक के लिए अत्यन्त हितकारी है । इसके द्वारा वह अपनी पाठ्य-सामग्री का प्रस्तुतीकरण सरलता से कर सकता है तथा अपने छात्रों को प्रकरण छांटने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है ।

3.2.9.4 परावर्तन विधि (Regressive Method) - यदि इतिहास का उद्देश्य - वर्तमान का स्पष्टीकरण करना है तो हमको वर्तमान के साथ प्रारम्भ करके पीछे की ओर, अर्थात् अतीत की ओर जाना पडेगा। वर्तमान काल अतीत की देन है, अर्थात् इसका आधार अतीत है। परन्तु इस विधि के समर्थकों का कहना है कि कुछ समय के पूर्व के भूतकाल से हमको प्रारम्भ करना चाहिए, क्योंकि आज जो हम परिवर्तित दशाएं देख रहे हैं उनमें से बहु त कुछ समय के पूर्व भूत से प्रारम्भ करके धीरे-धीरे अतीत को देखना चाहिए, तभी हम वर्तमान के विकास का आधार प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि यह विधि तर्कपूर्ण नहीं है, तथापि मनोवैज्ञानिकता पर आधारित है, क्योंकि इसके अनुसार हम वर्तमान से प्रारम्भ करते हैं - जो स्थूल तथा सरल है। उसके द्वारा पीछे की ओर देखते हैं और वर्तमान काल की जड़ों की खोज अतीत में करते हैं। इस प्रकार हम अत्यन्त महत्वपूर्ण सूत्र ज्ञात से अज्ञात की ओर का अनुसरण करते हैं।

इसके द्वारा किसी समस्या का पहले परिचयात्मक रूप दिया जाता है, फिर इतिहास-शिक्षक छात्रों के सम्मुख यह समझाने का प्रयत्न करता है कि किन कारकों तथा किन बातों के परिणामस्वरूप आज की दशाएं हमारे सम्मुख उपस्थित हुई है। तत्पश्चात् वर्तमान समय की समस्या पर विस्तृत रूप से विचार करता है। वर्तमान का उपयोग भूत का परिचय प्राप्त करने के लिए किया जाता है, परन्तु इसका पुन: परावर्तन नहीं होता।

प्रो. घाटे ने इस विधि को 'लोलक विधि' (Pendulum Method) का नाम दिया है। यदि अध्यापक मध्यकाल का इतिहास पढा रहा है तो उसे कभी प्राचीन की ओर जाना पडता है और कभी आधुनिक की ओर।

इतिहास के पाठ्यक्रम के विषय (Contents of History Syllabus) - तथ्यों के निर्णय के सिद्धान्तों तथा संगठन की विधियों का अवलोकन करने के पश्चात् स्वत: ही प्रश्न उठता है कि पाठ्यक्रम में किन-किन तथ्यों को स्थान मिलना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न परिस्थितियो तथा वातावरण और राष्ट्रों के अनुसार पृथक-पृथक हो सकता है परन्तु हमारे राष्ट्र में जो नमूना अपनाया गया है, उनके अनुसार विभिन्न विषयों को स्थान दिया गया है जो कि निम्नलिखित है -

(1) **प्राचीन काल की संस्कृतियों की रूपरेखा (Outline of Ancient Cultures) -** साधारण रूप से हम भारतीय इतिहास का अध्ययन आर्यो के आगमन से या उनसे पूर्व के इतिहास से प्रारम्भ करते है। परन्तु अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह कर लिया गया है कि भारतीय इतिहास का अध्ययन मानव-जाति के विकास के इतिहास से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। इसके लिए जैसा **के.डी. घोष** ने सुझाव दिया है - **"हम पाठ्यक्रम में सुमेरिया, ग्रीस, रोम. बेबीलोनिया, मिस्त्र आदि देशों की प्राचीन संस्कृतियों की कहानी रखनी चाहिए । इसके द्वारा बालक क्रम को समझने में समर्थ होगे; परन्तु ये कहानियां सरल तथा रूपरेखा के रूप में होगी ।"**

(2) **राष्ट्रीय इतिहास (National History) -** राष्ट्रीय इतिहास, इतिहास के पाठ्यक्रम का केन्द्र होना चाहिए। बालकों को देश में आने वाली जातियों, उनके उत्थान तथा पतन का भी ज्ञान दिया जाय। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि बालकों को राष्ट्रीय इतिहास के अंगों का पूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए।

(3) **स्थानीय इतिहास (Local History) -** पाठ्यक्रम के लिए स्थानीय इतिहास से भी तथ्य लिये जायें।

(4) **विश्व इतिहास (World History) -** जारविस (Jarvis) ने कहा कि इतिहास एक संपूर्ण एकता है। यह विश्व-इतिहास के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। हम इसके ज्ञान के बिना अपने राष्ट्र का इतिहास प्रस्तुत नहीं कर सकते, क्योंकि कोई राष्ट्र अकेला नहीं रह सकता, अर्थात् उसका अस्तित्व अकेलेपन में संभव नहीं है, इसलिए हमें विश्व-इतिहास से तथ्यों का चयन करके पाठ्यक्रम में रखना चाहिए। विश्व-इतिहास का पाठ्यक्रम हम प्रारम्भिक कक्षाओं में कहानियों के रूप में तथ उच्च कक्षाओं में इसका उन्नतम पाठ्यक्रम निर्धारित कर सकते हैं।

विश्व-इतिहास के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तथ्य होने चाहिए -

1. शिकारी मानव
2. भेड़ों को पालने वाला मानव
3. किसान के रूप में मानव
4. मिस्त्र के मनुष्य, जिन्होंने अनाज पैदा किया
5. बेबलोनिया के मनुष्य - (नहरों के द्वारा सिंचाई, लेखन कला की उत्पत्ति)
6. मोहनजोदड़ो की सभ्यता
7. भारतीय आर्य
8. फोनोसियन जाति
9. ग्रीस की सभ्यता - (स्वतंत्र मनुष्य, घोडों का प्रयोग, व्यायाम तथा खेल आदि)
10. रोमन सभ्यता।

इसके अतिरिक्त उच्च कक्षाओं के लिए विश्व-इतिहास का उन्नतम पाठ्यक्रम होगा, जिसमें प्राचीन देशों को ही स्थान नहीं दिया जायेगा वरन् प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक संस्कृतियों को भी स्थान मिलेगा। इसके अतिरिक्त उन आदोलनों का समावेश किया जाना चाहिए जिन्होंने समस्त विश्व को प्रभावित किया है।

(5) **प्रान्तीय इतिहास (Provincial History) -** इससे भी कहानियाँ ली जानी चाहिए। भारत के प्रान्त स्वयं अपना एक पृथक इतिहास रखते हैं। जो छात्र जिस प्रान्त का निवासी है, उसको उसके इतिहास की कहानियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त समस्त प्रान्तों का इतिहास राष्ट्र के इतिहास के साथ-साथ चलता रहें। इनका अलग कोई महत्व नहीं है। वरन् राष्ट्रीय इतिहास को सफल बनाने में इन्होंने जो कार्य किए है, उनका वर्णन किया जाना चाहिए।

(6) **सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक इतिहास (Social, Cultural and Economic History) -** इससे भी विषय लिये जाने चाहिए।

(7) प्रचलित या वर्तमान परिस्थितियों का ज्ञान (Knowledge of Culture affairs) - वे विषय भी रखे जायें, जिनके द्वारा छात्र वर्तमान परिस्थितियों से परिचित हो सकें।

3.2.1.0 विभिन्न स्तरों पर इतिहास शिक्षण के पाठ्यक्रम का प्रारूप - पाठ्यक्रम निर्धारण के सिद्धान्तों के बाद अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर इतिहास का पाठ्यक्रम क्या हों? किस स्तर के लिए इतिहास की कौनसी विषयवस्तु दी जा सकती है ताकि वह अधिक से अधिक सरल रूप में इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर सकें । अत: इतिहास के निम्न स्तरों पर पाठ्यक्रम के प्रारूप का निर्धारण किया जा सकता है - 1. प्राथमिक स्तर, 2. उच्च प्राथमिक स्तर, 3. माध्यमिक व उच्च मा. स्तर

1. **प्राथमिक स्तर (Primary Level) -** इस स्तर पर बालक जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है तथा रोचक विषयवस्तु में उसकी रूचि होती है अत: उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण प्राचीन समय के राजाओं की कहानियां, गाथाओं को विशेष महत्व दिया जाएं तथा इसका शिक्षण कहानी विधि के माध्यम से किया जाए। इनमें राम, कृष्ण, बुद्ध, अशोक, चन्द्रगुप्त, पृथ्वीराज, महाराणा प्रताप, कबीर, शिवाजी, झांसी की रानी, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री आदि के बारे में ज्ञान दिया जा सकता है। इनके अतिरिक्त बालकों को लोक संस्कृति व स्थानीय तथा लोक कहानियों का ज्ञान भी दिया जा सकता है। कई ऐतिहासिक स्थानों जैसे ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद, शहीद स्मारकों की कहानियों को सम्मिलत किया जाए। साथ ही साथ अजायबघर, ऐतिहासिक संग्रहालयों, स्थानीय ऐतिहासिक स्थानों के पर्यटन की व्यवस्था की जाए क्योंकि इस स्तर पर बालकों को वस्तुओं को देखने, छूने की जिज्ञासा अधिक होती है तथा इस जिज्ञासा वृत्ति की शान्ति इन स्थानों पर ले जाकर करायी जा सकती है ताकि बालक को दिया जाने वाला ज्ञान स्थायी व प्रभावी हो सकें ।

2. **उच्च प्राथमिक स्तर (Upper Primary Level) -** इस स्तर पर कक्षा 6, 7 व 8 को सम्मिलित करते हैं। कक्षा 6 तक आते-आते बालक विषयवस्तु का प्रारूप समझने लगता है तथा स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने की मनोवृत्ति का विकास होने लगता है। अत: इस स्तर पर विभिन्न कक्षाओं के आधार पर विषयवस्तु का चयन किया जाना चाहिए।

कक्षा 6 पर 1 पूर्व, मध्य तथा नवपाषाण काल, 2. विश्व तथा भारत की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताएं, 3. वैदिक काल, 4. जैन व बौद्ध प्रमुख धर्म, 5. मौर्य साम्राज्य, 6. गुप्त वंश, 7. वर्धन काल, 8. दक्षिण भारत का इतिहास, इस्लाम का आगमन तथा सातवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक के प्रमुख वंशों का ज्ञान दिया जा सकता है, साथ ही इस स्तर पर अनेक क्रियात्मक कार्य चित्र, रेखाचित्रों का निर्माण, मॉडल व समय रेखा बनाना, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, ऐतिहासिक घटनाओं को अभिनय द्वारा प्रस्तुत करना आदि कार्य किए जा सकते है।

कक्षा 7 पर भारत में बाबर के आक्रमण के साथ मुगल साम्राज्य की स्थापना, प्रमुख मुगल शासक हुमायूं अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब आदि तथा मुगलकालीन सभ्यता व संसकृति, मराठों का आगमन तथा मुगल मराठा संघर्ष, यूरोपियन जाति का आगमन तथा ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार, सिक्खो का संघर्ष, ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

तथा ब्रिटिश कम्पनी काल में संस्कृति, शिक्षा, धार्मिक व सामाजिक सुधार आदि की शिक्षा दी जा सकती हैं।

इस स्तर पर कक्षा 6 के समान ही विभिन्न व्यावहारिक प्रयोगिक कार्य भी कराये जा सकते है।

कक्षा 8 पर आधुनिक भारत के इतिहास का शिक्षण प्रारम्भ किया जा सकता है। इसमें भारतीय संविधान का इतिहास, आधुनिक शासन प्रबंधकीय इतिहास, स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास, स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भारतीय नेताओं का संघर्ष व बलिदान, शिक्षा के विकास का इतिहास, स्थानीय स्वशासन, आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक इतिहास, स्वतत्रता पश्चात् का विकसित भारत के इतिहास का ज्ञान दिया जा सकता हैं।

क्रियात्मक कार्य कक्षा 6 व 7 के समान ही कराये जा सकते है । इस स्तर पर सूत्र पद्धति का प्रयोग कर सकते है।

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर (Secondary & Higher Secondary Level) - इस स्तर पर कक्षा 9,10 व 11 शामिल की जाती है। इस स्तर पर बालक किशोरावस्था में आ जाते है अत: निम्न पाठ्यक्रम प्रस्तावित किया जा सकता है। भारतीय इतिहास का आलोचनात्मक अध्ययन, विश्व की प्रमुख क्रान्तियां, पश्चिमी सभ्यता के प्रमुख आदोलन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा विज्ञान का विकास, दक्षिण व पूर्वी प्रमुख देशों का इतिहास जैसे चीन, अफगानिस्तान, जापान, इण्डोनेशिया आदि।

वर्तमान भारत की प्रमुख समस्याएं - शिक्षा, उद्योग, विज्ञान, भाषा, सामाजिक, कृषि संबंधी, आधुनिक भारत में समाजवाद व प्रजातंत्र तथा स्वतंत्रता उपरांत का भारत आदि विषयवस्तु का ज्ञान देकर छात्रों को लाभान्वित किया जा सकता है। इस स्तर पर तत्कालीन घटनाओं व समस्याओं पर विशेष महत्व दिया जाए। इसके लिए छात्रों को समाचार-पत्रों, पत्रिकाएं जनरल आदि का अध्ययन करना चाहिए।

3.2.11 इतिहास के वर्तमान पाठ्यक्रम की समालोचना (A Critical appraisal of recent curriculum of History) - निम्न माध्यमिक स्तर-इस स्तर पर पाठ्यक्रम की निम्न विशेषताएं दृष्टिगोचर होती है -

- इस स्तर पर इतिहास के तीनों कालो का ज्ञान दिया गया है ।
- इतिहास के तीन काल प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक दशा का ज्ञान दिया गया है ।
- मनोविज्ञान का सहारा लेकर विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है ।
- कालक्रम के अनुसार विधिवत् विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण किया गया है, जो समय-ज्ञान का भाव देने के लिये पर्याप्त है ।
- छात्रों द्वारा अवकाश का उपयोग करने के लिए पर्याप्त विषय सामग्रीका समावेश है ।

इस स्तर पर पाठ्यक्रम में निम्न दोष हैं -

- इस स्तर पर विश्व इतिहास को स्थान नहीं दिया गया है ।

- इस स्तर पर कई अनावश्यक विषय सामग्री को सम्मिलित किया गया है, जो उपयोगी नहीं है।
- छात्रों की रूचि व योग्यतानुसार नहीं है ।
- इस स्तर के बालकों में राष्ट्रीयता व देशभक्ति की भावना उत्पन्न नहीं कर सकता ।

सुधार हेतु सुझाव-

- विषयवस्तु का चयन बालकों की रूचि व योग्यतानुसार किया जाना चाहिए ।
- शिक्षण सूत्र ज्ञात से अज्ञात, सरल से कठिन आदि का ध्यान रखते हुए विषयवस्तु का चयन करना चाहिए ।
- क्रियात्मक कार्यो को अधिक अवसर देना चाहिए ।
- वैयक्तिक विभिन्नता के सिद्धान्त को ध्यान में रखना चाहिए ।
- राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित करने वाले तथ्यों का समावेश होना चाहिए ।

माध्यमिक स्तर (Secondary Level) - माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम की निम्न विशेषताएं है-

- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्ता के आधार पर विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण किया गया है।
- प्राचीन समय से लेकर अब तक के भारतीय समाज के विकास का ज्ञान कराया गया है।
- बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।
- इस स्तर के पाठ्यक्रम से बालकों को संकीर्ण भावनाओं से बाहर निकालकर सभी धर्मो के प्रति समान आदरभाव तथा राष्ट्रीय एकता को बल मिल रहा है ।
- विषयवस्तु की पुनरावृत्ति व्यवस्था भी इस' पाठ्यक्रम में है ताकि पूर्व में प्राप्त ज्ञान स्थायी रूप ले सकें।

दोष (Drawbacks) - प्रस्तुत विशेषताओं के साथ-साथ कुछ दोष भी पाठ्यक्रम में दृष्टिगोचर होते है ,जो निम्न है -

- पाठ्यक्रम विस्तृत होने के साथ-साथ स्तरानुकूल नहीं है ।
- ऐतिहासिक ज्ञान देने के लिए अनावश्यक विषयवस्तु का समावेश कर दिया गया है ।
- पाठ्यक्रम विस्तृत होने के कारण उबाऊ व बोझिल हो गया है ।
- मानवीय मूल्यों का विकास करने में सक्षम नहीं है ।
- बालकों में आदर्श चरित्र का निर्माण करने में भी सफल नहीं हो पा रहा है ।

सुधार हेतु सुझाव -

- ऐसी विषयवस्तु चयनित करनी चाहिए जो बालकों का सर्वागीण विकास करने में सक्षम हों।
- आवश्यक तथा उपयोगी सामग्री ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित करनी चाहिए ।
- भारत के अतिरिक्त विश्व की अन्य सभ्यताओं की जानकारी भी सम्मिलित करनी चाहिए ताकि बालकों में विश्व बंधुत्व की भावना का विकास हो सकें ।
- विद्यालय के अन्य विषयों के साथ सहसंबंध स्थापित करते हुए पाठ्यवस्तु प्रस्तुत की जानी चाहिए ।

- पाठ्यक्रम निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होना चाहिए ।
- इस स्तर पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास करने वाले तथ्यों को समाहित करना चाहिए ।

  इतिहास में पाठ्यक्रम के सुधार के संबंध में निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं -
- पाठ्यक्रम इस प्रकार से नियोजित किया जाए कि वह विद्यालयों की आवश्यकताओं की
- पूर्ति कर सके।
- पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार से किया जाए जिससे अन्य विषयों से उसका सहसंबंध स्थापित किया जा सकें ।
- बालकों की रूचि व योग्यतानुसार विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाए ।
- पाठ्यक्रम में नवीनत प्रयोग करने तथा नवाचार को स्थान देने हेतु लचीलापन होना चाहिए ।
- इतिहास का पाठ्यक्रम सदैव सामाजिक पुनर्जीवन के निर्माण के लिए एक साधन के रूप में कार्य करना चाहिए ।
- प्राथमिक स्तर पर एक केन्द्रीय विचार बिन्दु का चयन कर इसके चारों ओर की रूपरेखा का निर्माण करना चाहिए और पाठ्यक्रम उसी केन्द्रीय विचार के विकास को ऐतिहासिक क्रम में प्रस्तुत करें ।
- उन तथ्यों का चयन करना चाहिए जो मानव विकास अथवा उन्नति संबंधी योजनानुरूप हो तथा जिनकी व्याख्या हो सकें ।
- उन तथ्यों को चुना जाए जो वर्तमान विश्व को किसी ना किसी रूप में प्रस्तुत कर ज्ञान को महत्वपूर्ण व अर्थपूर्ण बना सकें ।

3.2.12 सारांश (Summary) - इस अध्याय में इतिहास विषय के महत्व एंव पाठयकम में उसके स्थान के विषय में विचार किया गया हैं। इतिहास का महत्व अग्रांकित कारणों से सिद्ध होता हैं-

(1) पृथ्वी मनुष्य का निवास स्थान हैं अत: अपने जीवन के विभिन्न काल के विकास की जिज्ञासा स्वाभाविक है।

(2) राष्ट्रीयता एंव अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना भी विकसित होती हैं।

इतिहास के महत्वपूर्ण विषय होने के कारण ही इसका पाठयक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रहता हैं। हाई स्कूल तक की कक्षाओं में इसके विषय-वस्तु का शिक्षण अनिवार्य रूप से किया जाता हैं, चाहें वह स्वतंत्र विषय के रूप में हों या 'सामाजिक अध्ययन' अथवा ;सामाजिक विज्ञान' के अन्तर्गत हो। उच्च कक्षाओं में इसें अनिवार्य विषय न रखकर ऐच्छिक विषय के रूप में रखा जाता हैं। यह उचित हैं।

इतिहास विषय के शिक्षक के लिए अपने शिक्षक के लिए अपने शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की दृष्टि से पाठ्य विवरण की जानकारी होनी चाहिए। पाठ्य विवरण के निर्माण हेतु बताये जाते हैं।

सामान्य रूप से स्कूली शिक्षा को तीन स्तरों में विभक्त किया जाता हैं। विद्यार्थीयों की कक्षा और अनुमानित आयु के अनुसार प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों की विशेषताओं में अन्तर हो जाता है, के परिप्रेक्ष्य में प्रत्येक स्तर हेतु इतिहास का पाठ्य विवरण निर्धारित किया जाता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. Discuss the comparative merits and demerits of 'Topical' and Chronological' methods of history. Illustrate your answer with examples.
   प्रकरणत्मक तथा कालक्रम विधियों के गुण दोषो का तुलनात्मक विवेचन कीजिये। अपने उत्तर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये।
2. Give a critical comment on the history syllabus of senior secondary classes of your state. What changes would you suggest in it?
   अपने राज्य की उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास के पाठ्यवस्तु की आलोचनात्मक विवेचना कीजिये।आप उसमे परिवर्तन लाने के लिए क्या सुझाव देंगे?
3. What principles would you bear in mind while framing curriculum in history for the senior Secondary Classes?
   आप उचत्तर मध्यमिक कक्षाओ के इतिहास का पाठ्यक्रम बनाते समय किन सिद्धांतों को ध्यान मे रखेंगे।
4. What principles should guide the teacher in framing the syllabus of history for class VIII?
   कक्षा 8 के लिए इतिहास का पाठ्यवस्तु बनाते समय शिक्षक को किन सिद्धांतों को ध्यान मे रखना चाहिए.
5. Distinguish between 'Concentric' and 'Chronological' methods of organizing history syllabus, clearly bringing out the comparison between the two.
   इतिहास पाठ्यक्रम की प्रकरणत्मक तथा कालक्रम विधियों के गुणो दोषो का तुलनात्मक विवेचना कीजिये । अपने उत्तर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये।
6. Examine critically the current syllabus of history for the High School Classes and suggest modifications.
   हाईस्कूल कक्षाओं के इतिहास के प्रचलित पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन कीजिये और उसके सुधार के लिए सुझाव दीजिये।
7. What place stories occupy in teaching history? Draw a list of 12 stories that you will teach, in a session, to class V.
   इतिहास शिक्षण मे कहानियो का क्या स्थान है? 12 कहानियो की एक सूची प्रस्तुत कीजिये जिन्हे आप विद्यालय के एक कक्षा पंचम को पढ़ाएंगे।
   उन सिद्धांतों की विवेचना कीजिये जो आपको इतिहास की विषय वस्तु का चयन करने मे दिग्गदर्शन करेंगे।

3.3 इतिहास का विभिन्न विषयो के साथ सहसंबंध (जुड़ाव) Correlation of History with other School Subjects

शिक्षा जगत में सह संबध की नींव डालने का श्रेय प्रसिद्ध जर्मन शिक्षा शास्त्री जे.एफ हरबार्ट (Johana Freidrich Herbal 1776-1841) को है, जिसमें आत्मबोध के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके स्पष्ट किया था कि समस्त ज्ञान का विकास तब ही संभव हो सकता है, जबकि विषयों को संबंधित करके पढ़ाया जाये। हरबर्ड के शिष्य जिलर टी. (Ziller T.) ने हरबार्ट के सिद्धान्त को संशोधित करके केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त के अनुसार एक विषय को शिक्षण का केन्द्र बिन्दु मानकर अन्य विषयों का शिक्षण उस विषय के आधार पर किया जाना चाहिए। जिलर इतिहास को केन्द्रीय विषय बनाना चाहते थे इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि भूगोल के शिक्षण में ऐतिहासिक स्थानों का उल्लेख किया जावे। साहित्य के शिक्षण में नाटक उपन्यास, कहानी कविता आदि ऐतिहासिक रचनाओं का उपयोग किया जावे। कला के शिक्षण में ऐतिहासिक दुर्ग, इमारतें, प्राचीन काल के वस्त्रों एवं आभूषणों आदि के चित्र बनायें जायें। गणित एवं विज्ञान के शिक्षण में ऐतिहासिक युद्धों, युद्ध-योजनाओं के विवरण तथा सेनाओं के विवरण लिए जावें। जिल्लर के अनुभव से यह ज्ञात होता है कि इतिहास के सफल शिक्षण के लिए इतिहास शिक्षक के विषयों के उदाहरण प्रस्तुत करके इतिहास से उनका सह संबंध स्थापित कर सकता है और अपने शिक्षण को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बना सकता है।

20 वीं सदी के मनोविज्ञान के विकास ने भी इस मत की पुष्टि की है कि मस्तिष्क की संपूर्ण शक्तियां एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपना अस्तित्व रखकर कार्य करती है। अनेक बुद्धि परीक्षणों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि बालक का मस्तिष्क पृथक-पृथक शक्तियों का मिश्रण नहीं है वरन् अविभाज्य है। अत: बालक को विभिन्न विषयों का पृथक-पृथक ज्ञान प्रदान करना अमनोवैज्ञानिक एवं अव्यावहारिक है। क्योंकि संपूर्ण ज्ञान एक अविभाज्य है। यही सह संबंध का प्रमुख आधार है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने आधुनिक पाठ्यक्रम की आलोचना करते हुए लिखा है कि "पाठ्यक्रम में विषयों को एक दूसरे से अलग रखा गया है। विविध विषयों में जो पारस्परिक संबंध होता है उनका भी ध्यान नहीं दिया गया है। प्रत्येक विषय को एक-दूसरे से अलग करके पढ़ाया जाता है”

3.3.1 सह संबंध का अर्थ (Meaning of Correlation) - सह संबंध का शाब्दिक अर्थ परस्पर संबंध स्थापित करना है। शिक्षा में समन्वय का शाब्दिक अर्थ है - विषयों को पृथक-पृथक करके न पढ़ाना वरन् उनमें पारस्परिक संबंध किया जायें। दूसरे शब्दों में विभिन्न विषयों को परस्पर संबंधित करके पढाना ही समन्वय / सह संबंध कहलाता है।

जैसा कि समन्वय के अर्थ से स्पष्ट होता है कि पाठ्यवस्तु को बोधगम्य बनाने के लिए समन्वय की आवश्यकता होती है। ज्ञान अखण्ड और अविभाज्य होता है। अत: ज्ञान की अखंडता की रक्षा हेतु ज्ञानार्जन की प्रक्रिया भी ऐसी होनी चाहिए कि जिसमें सुविधा की दृष्टि से विभाजित ज्ञान के ये विभिन्न अंग अथवा विषय मात्र संकुचित बंद कटघरे न बन जाये वरन् एक विषय को समझकर अन्य संबंध विषयों से सहज सह संबंध स्थापित किया जायें। इस प्रक्रिया से विभिन्न

विषय समवायिक होकर जीवनोपयोगी ज्ञान के विकास में सहायक हो जाते है। बालक अपनी अनुभूत आवश्यकताओं के आधार पर किसी एक विषय को समझने के लिए अन्य विषयों से उसके सहसंबंध द्वारा अपने ज्ञानार्जन को सरल, रोचक एवं स्थायी बना लेते हैं।

हरबार्ट ने सह-संबंध के बारे में लिखा है कि ""पाठ्यक्रम के विषयों को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए कि जिससे एक विषय के शिक्षण से दूसरे विषय के ज्ञान में सहायता मिल सकें।"

बरनार्ड के अनुसार - "सह संबंध विद्यालय के विभिन्न विषयों को यथा संभव एक दूसरे से संबंधित करने का प्रयास करता है।"

प्रो. घाटे ने लिखा है कि - "विभिन्न विषयों को पृथक संकुचित क्षेत्रों में रख कर नहीं बल्कि उन्हें अन्य विषयों से संबंधित करके पढ़ाया जाना चाहिए ।

डमविल के अनुसार - "एक विषय को दूसरे विषय के अधीन करने से सिद्धान्त या साधारणतया सह संबंध के नाम से उल्लेख किया जाता है। "

3.3.2 सह संबंध का महत्व (Importance of Correlation) - इतिहास शिक्षण के सह- संबंध की आवश्यकता एवं महत्व निम्नलिखित है -

1. सह संबंध पाठ्यवस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाने में सहायक है।
2. ज्ञान अखंड है। सुविधा की दृष्टि से उसे पृथक-पृथक विषयों में विभाजित किया जाता है। अत: विभिन्न विषयों में सह-संबंध स्थापित करके ही ज्ञान को समग्र रूप में छात्र को दिया जाना लाभप्रद है।
3. इतिहास की विषयवस्तु को समझने के लिए भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि से सह संबंध स्थापित कर ज्ञान प्राप्ति सरल है।
4. सह संबंध स्थापित करने से विषय वस्तु रोचक बन जाती है और उसका प्रभाव स्थाई होता है।
5. इतिहास समाज में घटित विवरणों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है जिनका संबंध संपूर्ण समाज या राष्ट्र से होता है। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक घटनायें इतिहास का अभिन्न अंग होती है। अतं: इतिहास के साथ भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र विषयों का सह-संबंध स्थापित करना अपरिहार्य हो जाता है ।

सह संबंध स्थापित करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सह संबंध स्वाभाविक एवं सहज रूप से हो, थोपा हुआ नहीं होना चाहिए।

3.3.3 सह संबंध के उद्देश्य (Aims of Correlation) - सह-संबंध के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है-

1. छात्रों के लिए पाठ्यक्रम के भार को कम करना।
2. संकीर्ण विशिष्टीकरण के दोषों को दूर करना।
3. छात्रों को ज्ञान के समग्र रूप से परिचित कराना।
4. छात्रों के श्रम, शक्ति एवं समय की बचत करना।
5. पाठ को रोचक, आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण बनाना।

6. छात्रों को व्यावसायिक ज्ञान देना।
7. छात्रों को इतिहास के साथ-साथ अन्य विषयों का भी ज्ञान देना।
8. छात्रों को इतिहास विषय की महत्ता बताना तथा अन्य विषयों हेतु इतिहास विषय की विषय-वस्तु की आवश्यकता का बोध कराना।

3.3.4 सह संबंध के प्रकार (Kinds of Correlation)-

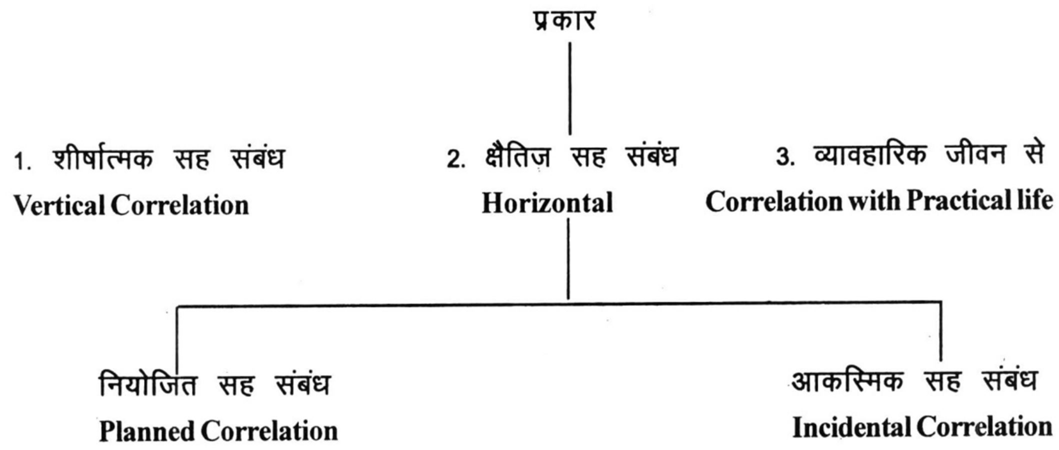

चित्र संख्या : 31

(1) **शीर्षात्मक सह संबंध (Vertical Correlation) -** जब एक ही विषय के विभिन्न अंशों तथा खंडों में सह संबंध स्थापित किया जाता है तो उसे शीर्षस्थ समन्वय कहते है। इसके अंतर्गत एक ही विषय के विभिन्न भागों या तथ्यों में संबंध स्थापित करके पढ़ाया जाता है। उदाहरणार्थ कक्षा 7 में हल्दीघाटी के युद्ध के प्रसंग को पढते समय विगत कक्षाओं में पठित महाराणा प्रताप से संबंधित इतिहास के अंश अथवा हिन्दी के किसी संबद्ध कविता अथवा पाठ के पूर्वज्ञान के रूप में इसका समन्वय करना और आगामी कक्षा 9 में अध्याय सामग्री से सह संबंध स्थापित करना। इस प्रकार के समन्वय के संबंध के द्वारा पूर्व ज्ञान की पुनरावृत्ति में समय नष्ट नहीं होता तथा ऐतिहासिक तथ्यों को याद रखने तथा उनका आलोचनात्मक अध्ययन करने में सहायता मिलती है।

(2) **क्षैतिज सह संबंध (Horizontal Correlation) -** किसी एक कक्षा के किसी एक विषय का उसी कक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य विषयों से सह संबंध स्थापित किया जाता है। जैसे इतिहास का भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि के ज्ञान को सह संबंध स्थापित करना इस प्रकार के सह संबंध को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :-

- पूर्व व्यवस्थित सह संबंध (Pre-Planned Correlation) - इसमें शिक्षक इतिहास विषय का अन्य विषयों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए विषयवस्तु का पूर्व में ही नियोजन कर लेता है और विषय-वस्तु की समुचित तैयारी एवं शिक्षण सामग्री की भी समुचित व्यवस्था कर लेता है। जैसे पानीपत का युद्ध, हल्दीघाटी का युद्ध, पढ़ाने के लिए पानीपत स्थान को दर्शाना, हल्दीघाटी का युद्ध पढ़ाने के लिए राजस्थान के मानचित्र की एवं भौगोलिक परिस्थिति की जानकारी लेता है। इसी प्रकार पृथ्वीराज को पढ़ाने के लिए हिन्दी विषय के कवियों की कल्पना को आधार बनाता है ।

- **आकस्मिक सह संबंध (Incidental Correlation) -** इसमें इतिहास शिक्षक यह संबंध की कोई पूर्व योजना नहीं बनाता वरन् किसी प्रकरण के शिक्षण में किसी एक ऐसे बिन्दु पर आ जाता है जहां वह बडी सरलता सेविषय को अन्य विषय से जोड़ देता है। इसके लिए शिक्षक की पूर्व धारणा यह नहीं है कि उसे अशोक का धर्म पढाते-पढाते अकबर का धर्म भी पढाना है। अपितु विषय को सरल, रोचक एवं प्रभावी बनाने के लिये शिक्षक संयोगवश इस तरह के सह संबंध स्थापित कर देता है, जिसे हम आकस्मिक सह संबंध की संज्ञा दे सकते है।

व्यावहारिक जीवन से सह संबंध (Correlation with Practical Life) - इस प्रकरण के संबंध में कक्षा में अध्ययन किए जाने वाले विषयों का जीवन दैनिक अनुभवों से संबंध स्थापित किया जाता है। इस संबंध से दो लाभ होते है: (1) विभिन्न विषयों को वास्तविक जीवन से संबंधित करने से बालक उनको सुगमता से समझ जाता है। और (2) बालक के सैद्धान्तिक ज्ञान का वास्तविक जीवन से संबध स्थापित हो जाता है फलस्वरूप वह अपने भावी जीवन की समस्याओं का समाधन करने में सफल होता है।

इस प्रकार सह संबंध इतिहास विषय का एक अपरिहार्य और महत्वपूर्ण तथ्य हैं । इसे विषय की प्रासंगिकता मानकर यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि इतिहास को हम किन विषयों से जोड़कर पढ़ा सकते हैं। इस विषय पर विचार करने के बाद इतिहास का निम्न विषयों से सह संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

3.3.5 इतिहास का अन्य स्कूल (विद्यालय) विषयों से सह संबंध (Correlation of History With Other School Subjects) - इतिहास एक ऐसा विषय है, जिसमें विस्तृत रूप से सभी विषयों का समावेश हो जाता है। लेकिन विद्यालयों में इतिहास को अध्यापन के रूप में एक विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है। लेकिन इतिहास में ऐतिहासिक कहानियां, ऐतिहासिक नाटक, ऐतिहासिक काव्य, ऐतिहासिक उपन्यास आदि के अध्ययन के माध्यम से भाषा और साहित्य का अध्ययन किया जाता है। ऐतिहासिक भवनों के निर्माण, सैनिको की संख्या, कर्मचारियों के वेतन, मुद्रा एवं विज्ञान आदि के अध्ययन से गणित का और ऐतिहासिक किलो व भवनों आदि के माध्यम से कला का अध्ययन काराया जाता है। विभिन्न कालों की शासन प्रणालियों और नागरिक जीवन के अध्ययन द्वारा नागरिक शास्त्र का और विभिन्न स्थलों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति का अध्ययन करने के कारण समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र व नीतिशास्त्र का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि इतिहास का अन्य विद्यालय विषयों से घनिष्ठता का सम्बन्ध है। इन संबंधो को हम प्रमुख रूप से इस प्रकार से देख सकते।

इतिहास और नागरिक शास्त्र का सहसंबंध (Correlation of History With Civics) - इतिहास और नागरिक शास्त्र में बहु त घनिष्ठता का संबंध है। यह कहा जा सकता है कि इतिहास यदि बीज है तो नागरिक शास्त्र उसका फल है। इतिहास और नागरिक शास्त्र दोनों एक दूसरे के सहायक और पूरक है। दोनों से संबंधों की घनिष्ठता इस प्रकार है :-

(1) इतिहास भूतकालीन सामाजिक घटनाओं और अनुभवों का कोष है। नागरिक शास्त्र इन अनुभवों के आधार पर समाज को सुखी बनाने वाले नियमों को खोजता है। इतिहास

नागरिक शास्त्र के विद्यार्थी को वर्तमान समस्याओं को समझने में सहायता देता है। आधुनिक सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप को भली प्रकार समझने के लिए हम इतिहास पर दृष्टिपात करते है। इतिहास नागरिक शास्त्र के अध्ययन को यथार्थवादी बनाता हैं

(2) इतिहास नागरिकों में देशभक्ति का संचार करता है। इस प्रकार इतिहास द्वारा आदर्श नागरिक के निर्माण में सहायता मिलती है, जो नागरिक शास्त्र का एक लक्ष्य है।

(3) नागरिक शास्त्र का अध्ययन उत्तम इतिहास के निर्माण का आधार है। नागरिक शास्त्र का लक्ष्य आदर्श नागरिक का निर्माण होता है और आदर्श नागरिक ही उज्ज्वल इतिहास का निर्माण करता है।

इतिहास और नागरिक शास्त्र में अंतर (Difference between History and Civics)- इतिहास और नागरिक शास्त्र में बहुत अधिक घनिष्ठता के बावजूद भी आधारभूत अंतर हैं इन दोनों विषयों में आधारभूत अंतर निम्नलिखित है :-

(1) नागरिक शास्त्र अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों की नागरिकता का अध्ययन करता है, जबकि इतिहास का संबंध केवल मात्र भूतकाल से ही है ।

(2) इतिहास वर्णनात्मक है, जबकि नागरिक शास्त्र मुख्य रूप से विचारात्मक विषय है । इतिहास घटनाओं का यथावत् वर्णन करता है अर्थात् इतिहासकार अपने विचार, सुझाव या टिप्पणी नहीं देता, लेकिन नागरिक शास्त्र में विद्वान अपने विचार आलोचनात्मक रूप से रखता है।

(3) नागरिक शास्त्र में सिद्धान्तों का निर्माण होता है लेकिन इतिहास में किसी प्रकार के सिद्धान्त नहीं बनाए जाते है।

(4) इतिहास और नागरिक शास्त्र में क्षेत्र की दृष्टि से भी अंतर है। इतिहास की सभी घटनाएं नागरिक शास्त्र के क्षेत्र में नहीं आती। इतिहास में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कला आदि सभी प्रकार की स्थितियों को देखा जाता है, लेकिन नागरिक शास्त्र का मुख्य केन्द्र नागरिक व राजनीति है।

इतिहास और समाज शास्त्र (History and Sociology) - इतिहास राजनीतिक कार्यो का विश्लेषण है। इतिहास न केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन करता है वरन् समाज की धारा का भी चित्रण करता है। वह अद्वितीय घटनाओं का विश्लेषण और उनकी व्याख्या केवल इसी उद्देश्य से करता है । जिससे सामाजिक जीवन की धारा को समझने में सहायता मिल सके। वर्तमान युग के इतिहासकार समाज का समग्र रूप से अध्ययन करते हैं, इससे आधुनिक समाज के व्यवहार को समझने में विशेष सहायता मिलती है । **पालबर्थ** के अनुसार संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास, समाजशास्त्र को समझने और उसकी सामग्री जुटाने में सहायक होता है। **आरनोल्ड टायनबी की 'पुस्तक अ स्टडी ऑफ हिस्ट्री'** समाजशास्त्र में बड़ी सहायक सिद्ध हो रही है। आजकल समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी इतिहास का अध्ययन किया जा रहा है। इतिहासकार समाजशास्त्र द्वारा दिए गए सामाजिक संगठन के सिद्धान्त पर अपनी सामग्री सजाते हैं और उन सिद्धान्तों के आधार पर ऐतिहासिक काल की विवेचना करते हैं। इतिहास दर्शन तो समाजशास्त्र के लिए बड़ा ही

उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास ओर समाजशास्त्र में बहुत ही अधिक घनिष्ठता का संबंध है।

इतिहास और समाज शास्त्र में अंतर (Difference between History and Sociology) - जहां इतिहास अतीत की घटनाओं का अध्ययन करता है, वहां समाजशास्त्र सामान्यत: वर्तमान समाज से संबंधित है। समाजशास्त्र अतीत की घटनाओं में वही तक रूचि रखता है, जहां तक उन घटनाओं से वर्तमान समाज को समझने में सहायता मिल सकें।

इतिहास व्युक्ति के कार्यो पर बल देता है, वहां समाजशास्त्र के अध्ययन की इकाई मानव समूह है। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्र मे वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग होता है, जबकि इतिहास मैं एतिहासिक पद्ति का। समाजशास्त्र विशेषकर प्रयोगात्मक है जबकि इतिहास निश्चयात्मक है। समाजशास्त्र विश्लेषण के साथ-साथ समस्याओं को सुलझाने के सुझाव देता है, जबकि इतिहास केवल यथा तथ्य वर्णन करता है, सुझाव नहीं देता।

इतिहास और अर्थशास्त्र (History and Economics) - अर्थशास्त्र और इतिहास दोनों विषयों में भी बहुत घनिष्ठ संबंध है। अर्थशास्त्र के अंतर्गत हम आर्थिक विचारों का इतिहास और विभिन्न देशों के आर्थिक इतिहास का अध्ययन करते हैं। आर्थिक विचारों के इतिहास में प्राचीन आर्थिक सिद्धान्तों की पुष्टि अथवा खंडन तथा नवीन सिद्धान्तों की खोज से संबंधित अध्ययन आता है तथा देश के आर्थिक इतिहास के समय-समय पर घटित आर्थिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। इतिहास की प्रमुख घटनाओं के परिणामस्वरूप अर्थशास्त्र में अनेक सिद्धान्तों का निर्माण हुआ है।

इसी प्रकार, अर्थशास्त्र भी इतिहास का ऋणी है। आर्थिक सिद्धान्तों के नाम के बिना इतिहास का ज्ञान अपूर्ण ही रहा है। इतिहास में विभिन्न शासन कालों की आर्थिक दशाओं का वर्णन मिलता है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। सर जॉन सीले का यह कथन सत्य ही है कि "अर्थशास्त्र बिना इतिहास के नींव रहित है, इतिहास बिना अर्थशास्त्र के फलहीन है।'' इस प्रकार अर्थशास्त्र और इतिहास दोनों विषयों में बहुत घनिष्ठता का संबंध है।

इतिहास और अर्थशास्त्र में अंतर (Difference between History and Economics)- इतिहास और अर्थशास्त्र दोनों विषयों में घनिष्ठता होते हुए भी आधारभूत अंतर है। इतिहास में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन किया जाता है लेकिन अर्थशास्त्र का अध्ययन केन्द्र आर्थिक ही है। इतिहास वर्णनात्मक है जबकि अर्थशास्त्र विचारात्मक। इतिहास घटनाओं का यथावत् वर्णन करता है, लेकिन अर्थशास्त्र में सुझावात्मक व विचारात्मक अध्ययन किया जाता है। इतिहास के अध्ययन का संबंध केवल भूतकाल से है, जबकि अर्थशास्त्र भूत, वर्तमान व भविष्य तीनों कालों का आर्थिक स्थिति का अध्ययन करता है। इतिहास में ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग होता है, लेकिन अर्थशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग होता है। इस प्रकार अर्थशास्त्र व इतिहास में घनिष्ठता व अन्तर दोनों ही है।

इतिहास और हस्तशिल्प (History and Handicraft) - इतिहास और हस्तशिल्प में भी बहुत घनिष्ठता का संबंध है। हस्तशिल्प के माध्यम से प्रारम्भिक व माध्यमिक स्तर के

बालकों के लिए इतिहास को रोचक बनाया जा सकता है। इतिहास को रूचिकर बनाने के लिए छात्रों को छोटी-छोटी आकृतियां चित्र, रेखाचित्र पुराने शास्त्रों, दुर्गो व व्यक्तियों के चित्र बनाने को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके अलावा छात्रों से गत्ते, मिट्टी, मिट्टी-कुट्टी आदि के प्रारूप बनवाकर इतिहास के प्रति रूचि बनाई जा सकती है। छात्रों से व्यंग्य चित्र बनवाये जा सकते है। इस कार्य में इतिहास अध्यापक अपने साथी कला अध्यापक की सहायता ले सकता है। अतः इतिहास और कला व हस्तशिल्प दोनों विषयों में बहु त घनिष्ठता का संबंध है।

इतिहास और गणित (History and Maths) - इतिहास और गणित दोनों विषयों का भी घनिष्ठता का संबंध है। इतिहास का अध्यापन कराते समय गणित का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। गणित के आधार पर ही ऐतिहासिक काल क्रम का लेखा रखा जाता है। ऐतिहासिक मानचित्र, ग्राफ आदि गणित के ज्ञान के अभाव में नहीं बन सकते। छात्रों को इतिहास के विभिन्न कालों की वंशावलियों और उनके काल का अंतर भी संख्यात्मक रूप से ही दर्शाया जाता है। अतः इतिहास और गणित दोनों विषयों में सह संबंध स्थापित करके इतिहास का अध्ययन अच्छी प्रकार से किया जा सकता है।

इतिहास और सामान्य विज्ञान (History and General Science) - सभी देशों का इतिहास वैज्ञानिक उन्नति व आविष्कारों से प्रभावित हु आ है। अर्थात् प्रत्येक देश का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन विज्ञान से प्रभावित हु ए बिना नहीं रहा। मानव जीवन के सभी पदों पर विज्ञान के प्रभाव के कारण इतिहास की बातों पर भी विज्ञान का प्रभाव पडा है। उदाहरणार्थ - इंग्लैण्ड व अन्य यूरोपीय देशों में विज्ञान के कारण ओद्योगिक क्रान्ति हु ई और इस क्रान्ति का इतिहास में बहु त बडा महत्व है वैज्ञानिक विकास के कारण युद्ध के क्षेत्र में नये आविष्कार हु ए और इन आविष्कारों का भी इतिहास पर बहुत प्रभाव पडा। अतः इतिहास के अध्ययन को इतिहास के अध्यापन के साथ-साथ विज्ञान के प्रभाव का उल्लेख भी करना चाहिए।

इतिहास और भूगोल (History and Geography) - इतिहास का भूगोल से घनिष्ठ संबंध है। प्राचीन काल में वैज्ञानिक पद्धति के अभाव के कारण प्राकृतिक परिस्थितियों का खिलौना बना हु आ था। नदी घाटी सभ्यताओं का विकास इस बात को स्पष्ट करता है कि नदियों के किनारे ही बडे नगर बसे है। नदी पहाड और अन्य प्राकृतिक साधन देश की सुरक्षा करते थे। जैसे भारत की रक्षा हिमालय पर्वत और हिन्द महासागर करता था। भूगोल और इतिहास की घनिष्ठता का कारण यह है कि इतिहास में भूगोल के और भूगोल में इतिहास के तत्व निहित है। प्रो. घाटे के शब्दों में - "मानव को अपनी भूमिका का अभिनय करंने के लिये भूगोल एक रंगमंच प्रस्तुत करता है।"

इतिहास का अध्ययन कराते समय मानचित्र, ग्लोब, चित्र, रेखाचित्र आदि की सहायता लेने को रोचक बनाया जा सकता है। चित्र, मानचित्र आदि हाथ से तैयार किए जाए तो अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं। इतिहास अतीत से संबंध रखता है और भूगोल वर्तमान से संबंध रखता है, अतीत और वर्तमान विरोधी होते हु ए भी दोनों विषय अन्योन्याश्रित है। सहज एवं स्वाभाविक अवसरों पर सह संबंध स्थापित करके अध्ययन कराना चाहिए। उदाहरण के लिए शिवाजी की विजय का कारण वहां की भौगोलिक परिस्थितियां ही बहु त अधिक जिम्मेदार थी। शिवाजी की रणनीति 'छापामार युद्ध प्रणाली' भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ही थी। 1971 में बांग्लादेश की

स्वतंत्रता का कारण वहां की भौगोलिक परिस्थितियां ही रही है। यह हिस्सा पाकिस्तान से दूर था। इमैनुअल काण्ट के शब्दों में - "काल के अनुसार वर्णन करना इतिहास है, स्थान के अनुसार वर्णन करना भूगोल तथा साहित्य से किस प्रकार सह-संबंध किया जा सकता हैं?

3.3.6 सारांश (Summary) - ज्ञान एक समस्त इकाई हैं, अत: शिक्षण में सहसम्बन्ध आवश्यक होता हैं। यह सहसम्बन्ध विद्‌यार्थी के बाहा वातावरण उसी विषय के अन्य प्रकरणों तथा पाठयक्रम के अन्य विषयों से किया जा सकता है। सह सम्बन्ध का उद्देश्य विद्‌यार्थी को ज्ञान की समग्रता का आभास कराना विषय में रूचि उत्पन्न करना आदि होता हैं। सह सम्बन्ध से शिक्षण में बहुत लाभ होता हैं।

इतिहास शिक्षण में सह सम्बन्ध स्थापित करने में विशेष सावधानी रखनी चाहिए, अन्यथा इतिहास का अध्यापित प्रकरण गौण हों जायेगा और जिससे सहसम्बन्ध स्थापित किया जा रहा हैं वह प्रमुख हो जायेगा। सहसम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण करना इतिहास के शिक्षण एवं विधार्थी दोनों के लिए आवश्यक सिद्ध होता हैं।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. What do you understand by Correlation? What is the importance of Correlation in teaching History?
   सह संबंध से आप क्या समझते है? इतिहास शिक्षण से सह संबंध का क्या महत्व है?
2. What is Correlation between History and Geography? Give three illustrations in support of your arguments?
   इतिहास एवं भूगोल में पारस्परिक क्या संबंध हैं? अपने कथन की पुष्टि में तीन स्पषटीकरण दीजिये?
3. History is correlated with civics. Prove this statement with suitable examples?
   इतिहास नागरिक शास्त्र से सह संबंधित है । उचित उदाहरण देकर इस कथन को सिद्ध कीजिए।
4. Show with examples how teaching of history can be correlated with the teaching of Economics, Art and Literature.
   उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए कि इतिहास-शिक्षण का अर्थशास्त्र कला तथा साहित्य से किस प्रकार सह-संबंध किया जा सकता हैं?

3.4 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

(1) फॉस्टर वाटसन : वाइस ऑफ एज्यूकेशन - (कैम्बिज यूप्रे.)
(2) डा. जॉहन्सन: टीचिंग ऑफ हिस्ट्री - (मैकमिलन कं. न्यूयार्क, 1963)
(3) कोठारी शिक्षा आयोग - (1964-66)
(4) हेत सिंह बघेला व उपेन्द्रनाथ दीक्षित - इतिहास शिक्षण
(5) डा. मथुरेश्वर पारीक : इतिहास शिक्षण
(6) बी.डी. शैदा व साहब सिंह: इतिहास शिक्षण गुरूचरण दास त्यागी : इतिहास शिक्षण
(7) बी.डी. घार्टे : इतिहास शिक्षण
(8) R-Vrijeswari - A Hand book for History Teaching
(9) S.K Kochar - The Teaching of History

इकाई-4

इतिहास में पाठ्यचर्या तत्व एवं संकल्पनाओं का मानचित्रण
Cognitive Map of Concept and Curricular Element in History

इकाई की संरचना (structure of unit)

4.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

4.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा (Concept of Curriculum)

4.2 पाठ्यचर्या तत्व (Curriculum Elements)

4.3 इतिहास में संकल्पनाओं का ज्ञानात्मक मानचित्रण (Cognitive map of concepts in History)

4.4 सारांश (Summary)

4.5 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

4.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की अध्ययन की सम्प्राप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि :-

1. पाठ्यचर्या की अवधारणा स्पष्ट कर सकें।
2. पाठ्यचर्या तत्वों की व्याख्या कर सकें।
3. इतिहास विषय में संकल्पनाओं का ज्ञानात्मक मानचित्रण कर सकें।
4. संकल्पनाओं के ज्ञानात्मक मानचित्रण के तत्वों के बीच संबंध स्थापित कर सके।

4.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा (Concept of Curriculum)

शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षार्थी को सिखायी जाने वाली विषय वस्तु का व्यापक एवं विस्तृत रूप जिसमें पाठ्यक्रम के साथ-साथ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वे समस्त अनुभव जो अधिगमकर्ता के व्यवहार को निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के परिप्रेक्ष्य (Context) में पर्याप्त हो। इन समस्त अनुभवों के संग्रह को पाठ्यचर्या के रूप में निर्देशित किया जाता है, इसके द्वारा न केवल उद्देश्यों की प्राप्ति होती है वरन् इसके द्वारा अधिगम परिस्थिति के निर्माण क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन में भी सहायक होती है। पाठ्यचर्या का सामान्य अर्थ है वह समस्त प्रक्रियायें जो विद्यालय में अथवा विद्यालय के बाहर बालकों के विकास के लिये स्कूल के द्वारा आयोजित किया जाता है।

मूलत: पाठ्यचर्या में वे समस्त सम्प्रत्यय कौशल मूल्य सम्मिलित होते हैं जो समाज द्वारा अपेक्षित होते है। पाठ्यचर्या आवश्यकता आधारित तथा जीवन केन्द्रित होती है। जिसमें समस्त मूल्य मान्यतायें, विश्वास, तथ्य तथा चिन्तन प्रविधियां सम्मिलित हैं जो समाज द्वारा स्वीकारी जाती है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न
1. पाठ्यचर्या की अवधारणा स्पष्ट कीजिये?

4.2 पाठ्यक्रम तत्व (Curriculum Element)

शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया (Tripolar Process) है, जिसके तीन प्रमुख चर होते हैं - शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम । पाठ्यक्रम जो कि पाठ्यचर्या का भाग होता है, मिश्रित व आश्रित चर (Depended Variable) के रूप में कार्य करता है, इसके अतिरिक्त उद्देश्य की कसौटी होती है - विषय वस्तु के साथ सार्थक संबंध। विषय वस्तु के आकर व प्रकार में परिवर्तन होते हैं जो सीखने वाले की आवश्यकता, रूचि, क्षमता तथा उद्देश्यों के सन्दर्भ में पढ़ायी या सिखायी जाने वाली विषय वस्तु (Contents) का चयन, निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण व प्रयोग पाठ्यचर्या तत्वों तथा आरंभिक आवश्यकता के रूप में किया जाता है। पाठ्यचर्या तत्वों तथा आरंभिक आवश्यकता के रूप में तत्वों के द्वारा किया जाता है। व्हीलर (Wheeler) ने इसे चित्र द्वारा प्रस्तुत किया है -

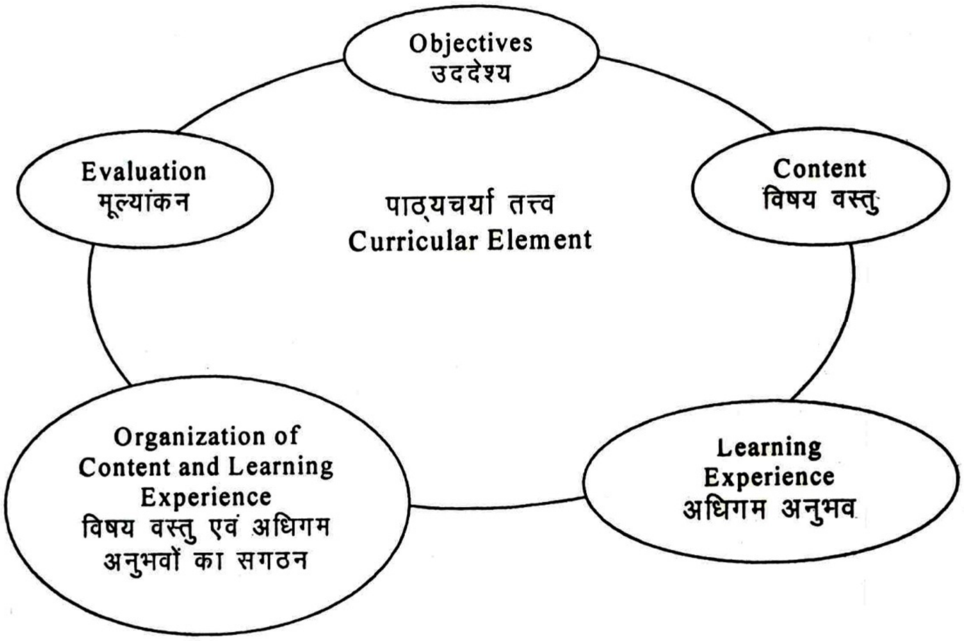

चित्र संख्या : 4.1

किसी विषय के शिक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्य क्या है? इसका निर्धारण लक्ष्यों द्वारा किया जाता है और उसकी प्राप्ति के लिए विषय वस्तु का चयन, विश्लेषण एवं निर्माण किया जाता है। इस विषय वस्तु का उद्देश्यों के साथ सार्थक संबंध स्थापित कर अधिगम अनुभव प्रदान किये जाते हैं। शिक्षक-शिक्षार्थी की अन्तः क्रिया के द्वारा अधिगम अनुभव एवं विषय वस्तु का संगठन किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति का पता लगाने के लिए व्यवहार परिवर्तन की साक्षियों का संकलन के रूप में मूल्यांकन किया जाता है।

इन पाठ्यचर्या तत्वों द्वारा ही संकल्पनाओं (Concepts) का मानचित्रण (Mapping) किया जाता है जो शिक्षण एवं अधिगम के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा बौद्धिक स्तर बढ़ाया जाता है और जटिल व अमूर्त ज्ञान को सरल व मूर्त बनाया जाता है।

एडविन टॉपलर ने "सीखा कैसे जाए" पर विचार इंगित करते हुये इसे शिक्षा व्यवस्था के मूल उद्देश्य के रूप में माना है। विभिन्न समितियों व शिक्षाविदों ने भी इस विषय पर बल । भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में रटने की परम्परा अधिक प्रचलित है जिसमें छात्र का ज्ञान पूर्व ज्ञान से नहीं जुड़ता है। रटने की परम्परा तथ्यों को याद करने पर बल देती है । लेकिन अर्थपूर्ण अधिगम (Meaningful Learning) या सम्प्रत्यात्मक बोध को प्रोत्साहित नहीं करती। यह स्पष्ट है कि संकल्पना मानचित्रण द्वारा पाठ्यचर्या विकास तथा नियोजन अधिगम का सरलीकरण संभव है। संकल्पना मानचित्रण द्वारा छात्रों में सम्प्रत्यय निर्माण में सुधार संभव है। संकल्पना मानचित्र द्वारा छात्र मूर्त दृश्य सहायता के रूप में ज्ञान का संगठन कर सकते हैं।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इतिहास मे पाठ्यक्रम तत्वों को लिखिए?
   Write Curriculum Elements in History?

4.3 इतिहास मे संकल्पनाओं का मानचित्रण (Cognitive map of Concepts in History)

संकल्पना का अर्थ (Meaning of Concepts) - संकल्पना किसी समूह अथवा वर्ग के विचार, परिस्थिति, घटना अथवा वस्तु की धारणा का प्रतिनिधित्व करता है। जब तथ्यों को संचित किया जाता है तो वे निश्चित संबंध तथा आदर्श नमूना दर्शाने लगते हैं और इन नमूनों की स्पष्ट रूप से व्याख्या करना ही संकल्पना है। करौल (Carroll) ने 1964 में अनुभवों की श्रृंखला को उद्देश्य अथवा घटना के सार के रूप में परिभाषित किया जाता है।

इसी प्रकार ड्रेसेल (Dressel) ने 1960 में संकल्पना को उद्देश्य तथा घटनाओं की छोटी संख्या की श्रेणियों को अनुभवों की श्रृंखला के रूप में परिभाषित किया।

संकल्पना की विशेषतायें (Characteristics of Concepts) - संकल्पना प्रमुख विचार है जिसकी निम्नलिखित विशेषतायें हैं -

1. संकल्पना सामान्य विचार है।
2. संकल्पना सरल से जटिल, भिन्न-भिन्न होती है।

3. संकल्पना की परिभाषा होती है।
4. संकल्पना अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित होती है ।
5. संकल्पना अधिगम (Learning) तथा स्मरण से भी अधिक है इसकी प्राप्ति अनुभव तथा क्रिया पर निर्भर करती है।
6. संकल्पना वातावरण में मानसिक को वर्गीकृत करने के लिये जरूरी है।
7. संकल्पना सार विचारों का आधार है।
8. संकल्पना अधिक व्यवस्थित तथा सामूहिक रूप में ज्ञान को ज्यादा मात्रा में प्रदर्शित करती है।
9. संकल्पना भविष्य की खोज के आधार के रूप में कार्य है।
10. संकल्पना से भविष्यवाणी करना संभव है।
11. संकल्पना ना तो सही होती है और ना गलत। ये या तो समुचित व पर्याप्त होते हैं या फिर असमुचित या अपर्याप्त।

संकल्पना का इतिहास में उदाहरण (Example of Concepts in History)-

1.(Activities) → (Facts) तथ्य
क्रिया (Facts) तथ्य
(Facts) तथ्य
} (Concepts) संकल्पना

	अतीत को जाने →	1. पुरातात्विक	इतिहास को जानने
1A.	लेख, शिलालेख, चित्र	2. साहित्यिक	के साधन
	मूर्तियाँ ,मोहरें, सिक्के	3. पुरालेखन व यात्रियों	(स्रोत)
	भवन, मंदिर, साहित्य,	के वर्णन	
	विदेशी यात्रियों द्वारा वर्णन आदि।		
2.	(Observation) →	(Concepts) →	(Observation)
	निरीक्षण	संकल्पना	निरीक्षण
2A	खुदाई से प्राप्त खण्डर →	इतिहास के →	पुराने अवशेषों से प्राप्त
	सिक्के,बर्तन,पत्थर,धातु	स्रोत	सामग्री को देखना
	औज़ार, मूर्तियां तथा पूर्वजों		
	द्वारा उपयोग लायी जाने		
	वाली वस्तुएं		
3.	(Process) →	(Concepts) →	(Processes)
	प्रक्रियाएँ	संकल्पनाएँ	प्रक्रियाएँ
		इतिहास को	
	पुरातात्विक	जानने के साधन	मनुष्य का जन्म से लेकर लिपि
	साहित्यिक →	(स्रोत) →	के विकास तक का वर्णन,
	पुरालेख एवं विदेशी		उसका जीवन, जीवन यापन के

यात्रियों के वर्णन से प्राप्त का परिचय	साधन, खान-पान. रहन-सहन भवन इत्यादि की विस्तृत जानकारी प्राप्त करना

संकल्पना मानचित्रण का अर्थ एवं विधि (Meaning and Method of Concept Mapping) - संकल्पना मानचित्रण एक द्विआयामी (Bi-dimensional) लेखाचित्र है, जो विभिन्न संप्रत्ययों के सहसंबंधों पर बल देता है (जेटिज, अन्डरसन, इनमान-1992) नोवाक (1977, 1984) ने संकल्पना मानचित्रण की विधि को विकसित करते हुए छात्रों के प्रायोगिक कार्य में संप्रत्ययात्मक सहसंबंधों को जोड़ने में सहायता की है। इस प्रक्रिया में छात्र सक्रिय रहते हैं क्योंकि वे संकल्पना मानचित्रण की संरचना करते हैं। संकल्पना मानचित्रण प्रविधि में पियाजे, आसूबेल एवं वान ग्लेसरफील्ड के सैद्धान्तिक विचारों का प्रयोग होता है, जिनसे संप्रत्ययात्मक अधिगम संभव है।

संकल्पना मानचित्र किसी विषय अथवा किसी ज्ञान के लेखाचित्रीय मानचित्र है, जिनसे विभिन्न संप्रत्ययों का संबंध स्पष्ट होता है। संकल्पना मानचित्र मुख्य विचारों का दृश्य उदाहरण स्पष्ट करते है। एक संकल्पना मानचित्रण विविध अधीनस्थ (Sub ordivates), संप्रत्ययों का अनुक्रमिक (Orderly) संबंध प्रमुख संप्रत्यय से दिखाते है। इतिहास में इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

पुरा ऐतिहासिक काल का मानव जीवन

1. आदि मानव सीखा - आग जलाना, पहिया बनाना, खेती करना, पशु-पालन, कपड़े बुनना, झोंपड़ी बनाकर स्थाई रहना ।
2. आदि मानव ने खोजा - तांबा, जस्ता, शीशा ।
3. आदि मानव ने बनाये - पत्थर और धातु के औजार, मिट्टी के बर्तन और मूर्तियां ।

इस प्रकार संकल्पना मानचित्र वैयक्तिक छात्र (individual Student) द्वारा रचित ज्ञान की संरचनाएं हैं। संकल्पना मानचित्र एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न संप्रत्ययों के सह संबंध को मानचित्र के रूप में प्रदर्शित किया जाता है । इस प्रक्रिया को संकेतार्थ जाल भी कहते हैं ।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. सम्प्रत्यय किसे कहते हैं?What do you mean by Concept?
2. सम्प्रत्यय मानचित्र किसे कहते हैं?What is Concept Mapping?

संकल्पना मानचित्र को विकसित करने के सोपान)Steps to develop Concept Mapping(– संकल्पना मानचित्र सम्पूर्ण विषय, इकाई अथवा पाठ के लिए विकसित किया जाता है । इस प्रक्रिया में संकल्पना को विकसित करने के लिए अधिगमकर्ता को सक्रिय होकर केन्द्रीय विचार को पहचानना पड़ता है । यह केन्द्रीय विचार अन्य संप्रत्ययों के अर्थपूर्ण ढंग से संबंधित है।

संकल्पना मानचित्र विकसित करने के लिए केलहेन तथा क्लार्क (1990) ने निम्न सोपान सुझाए-

(1) सर्वप्रथम सामान्य क्षेत्र के समस्त सम्प्रत्ययों के नाम लिखें । यहाँ पर मात्र नाम ही लिखने हैं।

(2) इन सम्प्रत्ययों के अलावा यदि कोई विशिष्ट तथ्य (उदाहरण) जो छात्रों के सीखने के लिए अनिवार्य है, उसे भी लिखें ।

(3) चयनित सम्प्रत्ययों की तालिका में से अधीनस्थ (प्रमुख) संप्रत्यय को पहचानें और उसे सबसे ऊपर लिखें ।

(4) अधीनस्थ प्रमुख (super ordinate) संप्रत्यय के नीचे प्रथम स्तर के अधीनस्थ (Sub ordinate) संप्रत्ययों को व्यवस्थित करें। इस स्तर पर संयोजन (Preposition) अथवा योजक (Connecting) शब्द जैसे - देता है, प्रकार, इसमें है, कर सकता है, आदि का उपयोग करें, जिसमें प्रमुख संप्रत्यय तथा अधीनस्थ सम्प्रत्ययों में उपयुक्त संबंध स्थापित हो सकें ।

(5) एक बार समान सम्प्रत्ययों की पहचान हो जाने पर अधीनस्थ सम्प्रत्ययों के प्रथम स्तर के ऊपर व्यवस्थित करना प्रारंभ कर दें । इसी प्रकार कभी-कभी अनेक अनुक्रम में सम्प्रत्यय व्यवस्थित हो जाता है । इसी प्रकार विशिष्ट तथ्य किन्हीं अधीनस्थ संप्रत्ययों के उदाहरण होते हैं । जो इस प्रकार के अनुक्रम में सबसे नीचे आयेंगे ।

(6) समकक्ष (Similar) अधीनस्थ (Sub Ordinate) संप्रत्ययों में सह-संबंध दिखाने के लिए रेखाएँ खींचें। समस्त अनुक्रम एक पिरामिड के समान दिखाई देना चाहिये। इनके जोड़ने वाले अथवा संयोजक शब्दों को रेखाओं के ऊपर लिखें जिनसे उनका संबंध स्थापित हो, यह सम्बन्ध एक सिद्धान्त बनाते हैं।

(7) जब समस्त सम्प्रत्यय मानचित्र विकसित हो जायें तो कुछ विशिष्ट अधीनस्थ सम्प्रत्यय के चारों ओर एक घेरा बना दें । यह घेरा ऐसे संप्रत्ययों पर बनायें जो छात्रों को पसन्द आते है। अथवा छात्रों के कठिन स्तर के हो । यह इकाई की संरचना करते हैं ।

(8) समस्त मानचित्र के चारों ओर कम से कम घेरे बनायें तथा मुख्य अधिगम बिन्दुओं का संतुलन बनायें रखें ।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. संकल्पना मानचित्र के प्रमुख सोपान लिखें।
   Write main step of Concept Mapping?

इतिहास में ज्ञानात्मक मानचित्रण (Cognitive map in History) - अध्ययन की सुविधा तथा समझ के लिए हम समस्त सम्प्रत्यात्मक मानचित्रण को पहले अलग-अलग उपरोक्त 8 भागों में बांटेंगे तथा अन्त में इन 8 भागों का एक सम्पूर्ण चित्र इतिहास विषय से लेंगे -

(1) **सामान्य क्षेत्र के समस्त सम्प्रत्ययों के नाम-**

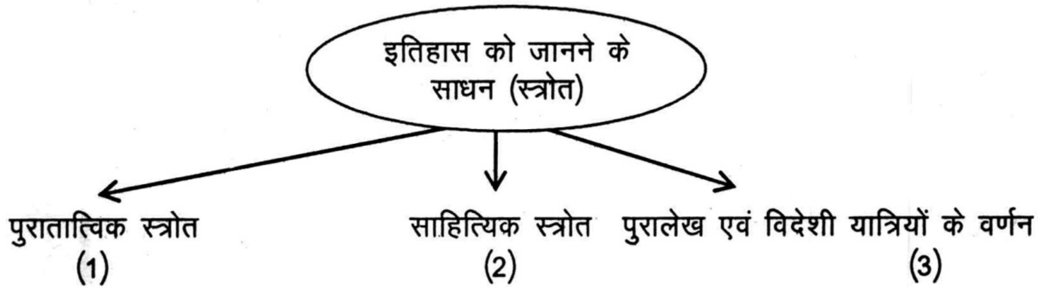

चित्र संख्या : 4.2

(2) **इन सम्प्रत्ययों के अलावा विशिष्ट उदाहरण तथ्य देना-**

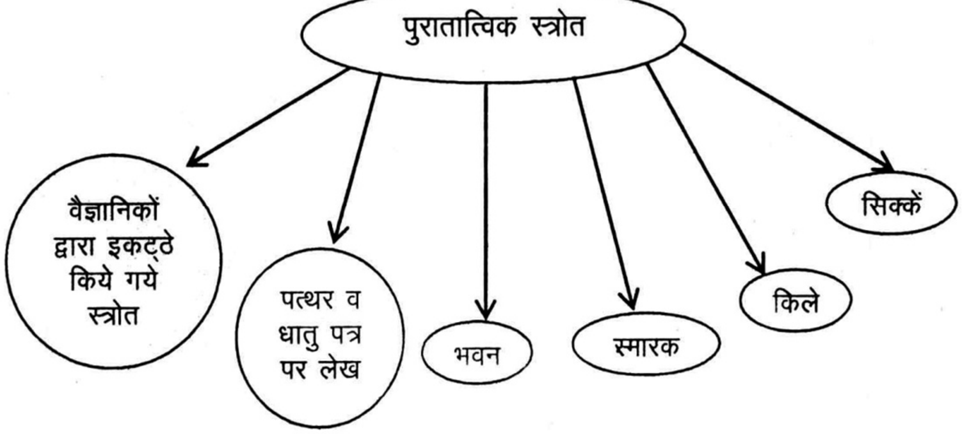

चित्र सं: 4.3

(3) **चयनित सम्प्रत्ययों की तालिका में से अधीनस्थ सम्प्रत्यय को सबसे ऊपर लिखें-**

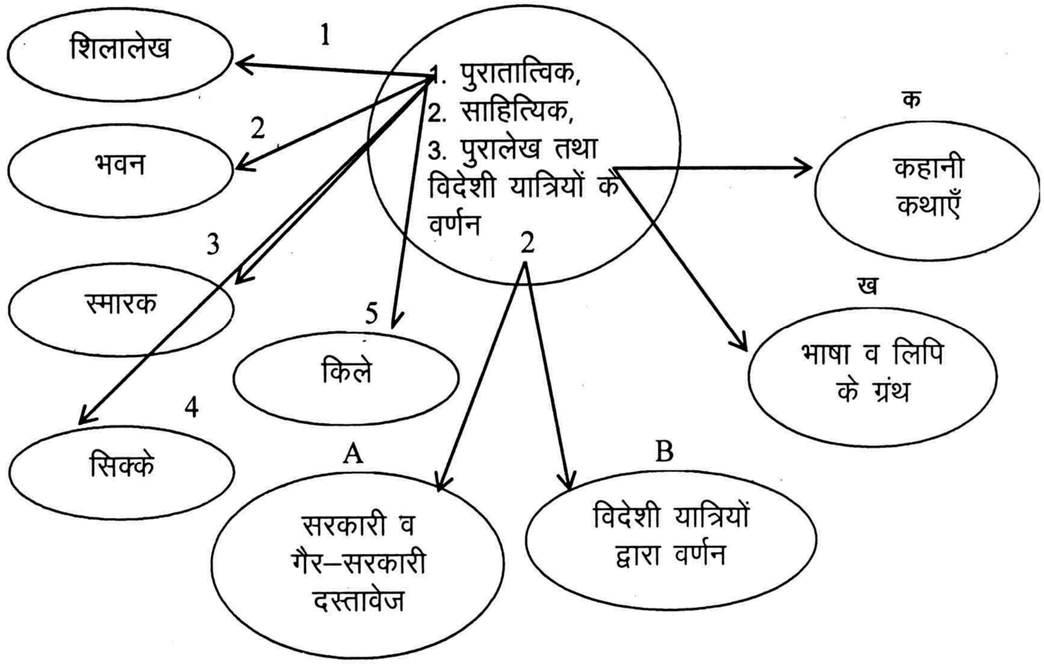

चित्र सं:4.4

(4) **अधीनस्था प्रमुख समप्रत्य के नीचे प्रथम स्तर के अधीनस्थ संप्रत्यय को व्यक्तिगत करना**

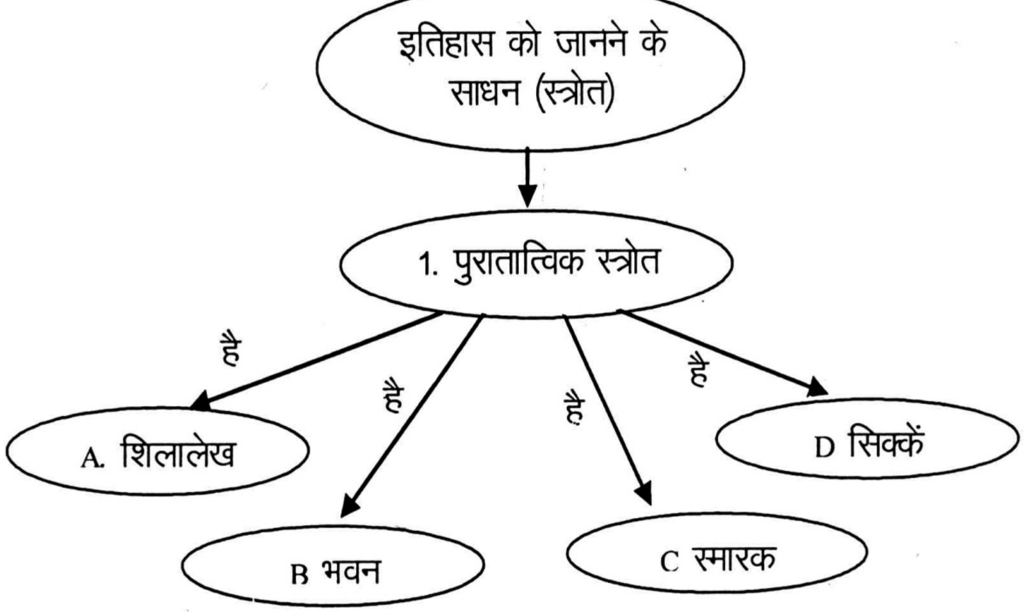

चित्र संख्या 4.5

(5) **समान प्रत्ययों की पहचान होने पर अधीनस्थ संप्रत्ययों के प्रथम स्तर के ऊपर व्यवस्थित करना**

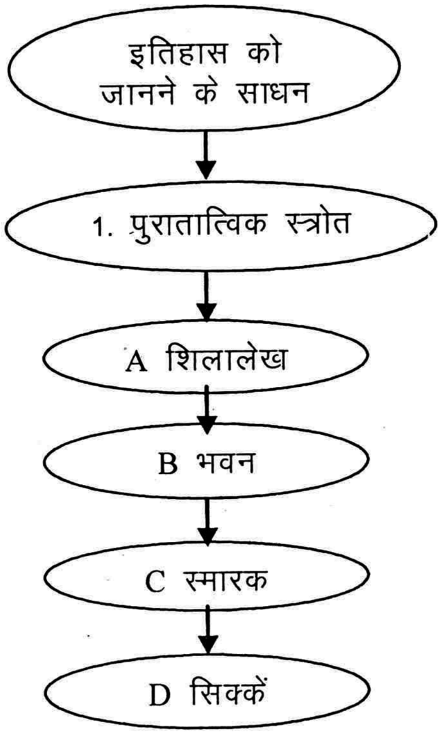

चित्र संख्या 4.6

(6) **समकक्ष, अधीनस्थ संप्रत्ययों मे सहसबंध दिखने के लिए रेखा खिचना, पिरामिड का अनुक्रम बनाना, जोड़ने वाले योजक शब्दो को रेखाओं के ऊपर लिखना-**

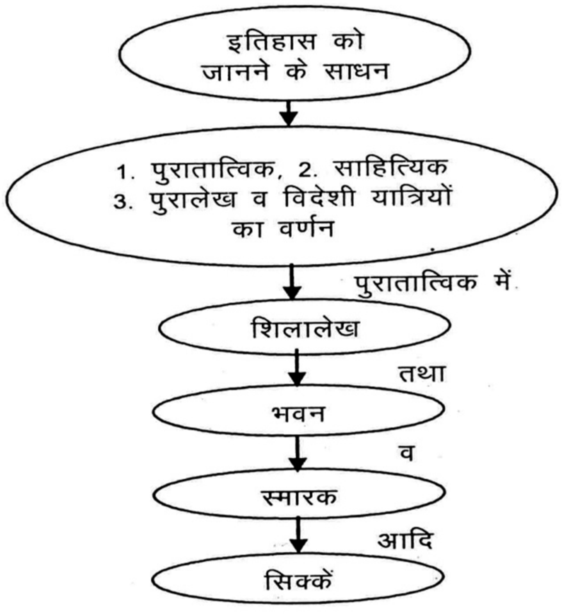

चित्र सं 4.7

(7) **समस्त मानचित्र विकसित होने पर कुछ विशिष्ट अधीनस्थ संप्रत्यय के चारों ओर घेरा बनाना (छात्रों की पसंद व कठिनाई के अनुसार घेरा बनाना) (यह इकाई संरचना भी करती है**

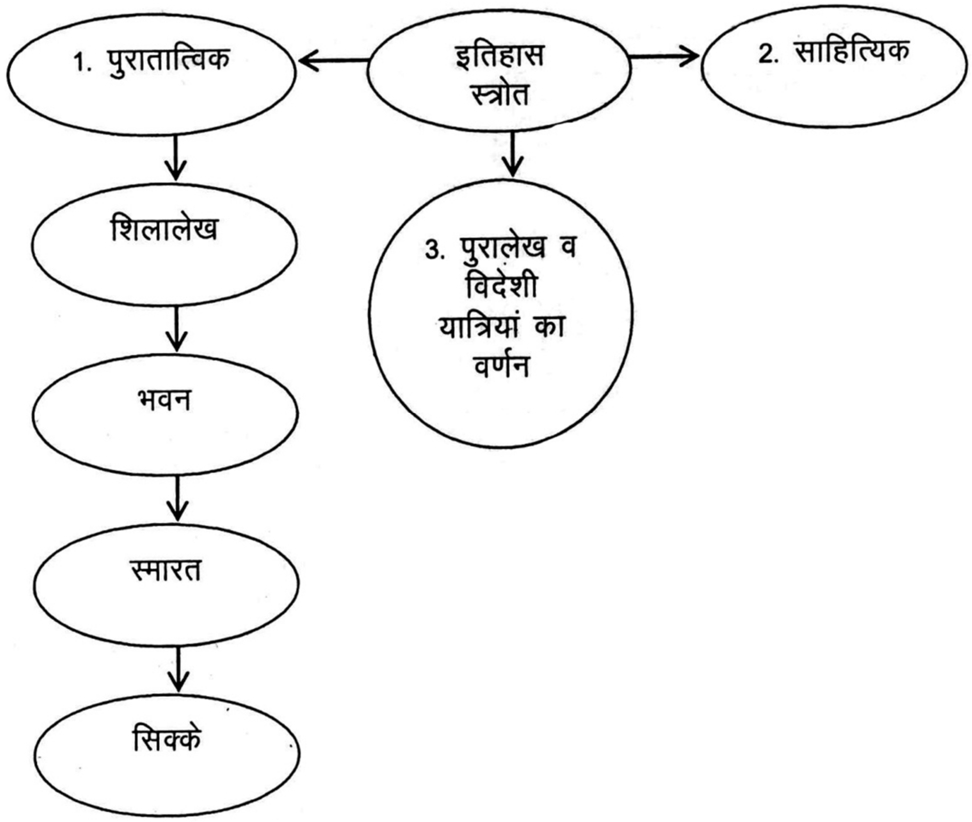

चित्र सं : 4.8

अधिगम शिक्षण मे संकल्पना मानचित्र का महत्व व लाभ

Significance and use of concept mapping in teaching and learning

1. संकल्पना मानचित्र द्वारा अर्थपूर्ण अधिगम सम्भव है ।
2. इस प्रकार के अधिगम में भ्रान्तियां कम से कम होती है, क्योंकि छात्र स्वयं अपने अनुभव व पूर्ण ज्ञान तथा सहसम्बन्ध के द्वारा अधिगम करना है ।
3. इतिहास विषय में संकल्पना मानचित्र नियोजन व शिक्षण की सघनता हैं
4. संकल्पना मानचित्र किसी भी प्रकार के प्रत्यास्मरण अधिगम में सहायक होती है ।
5. संकल्पना मानचित्र द्वारा विशिष्ट सम्प्रत्ययों में पारस्परिक सम्बन्धों के तर्क अथवा कारण जानने का अवसर प्राप्त होता है ।
6. संकल्पना मानचित्र छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने तथा व्यापक रूप से देखने में मार्गदर्शन करता है । संकल्पना मानचित्र के द्वारा छात्रों का मूल्यांकन सम्भव है ।
7. संकल्पना मानचित्र बनाने से अधिगम सरल बनता है एवं बोध विकसित करता है।
8. संकल्पना मानचित्र में पाठ्य सामग्री मस्तिष्क में स्थाई हो जाती है ।

शिक्षक की भूमिका (The role of the Teacher) - सम्प्रत्यात्मक परिवर्तन प्रविधि में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । शिक्षक को एक उत्प्रेरक का कार्य करना पड़ता है, जिसमें छात्र-छात्रों को व्यक्तिगत रूप से, छोटे समूहों में पारस्परिक सहभागिता का अवसर प्राप्त होता है। शिक्षक को एक स्वस्थ्य अधिगम वातावरण सृजित करना पड़ता हैं ताकि छात्र अपने विचार कक्षा में रख सकें।

प्रो. पीटर हर्बर और रसल टेलर (2008) के अनुसार -

1. शिक्षक छात्रों में जिज्ञासा का प्रेरक है, जिससे वह छात्रों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें प्रेरित करता है । इससे शिक्षक क्रिया विकसित कर सकता है।
2. शिक्षक छात्रों के विचारों को चुनौती देने वाला हैं जिसमें छात्रों को उनके द्वारा प्रस्तुत व्याख्या पर विवेचानात्मक चिन्तन के लिये प्रोत्साहित कर सकें ।
3. साधनयुक्त व्यक्ति जो आवश्यकतानुसार सामग्री उपलब्ध करा सकें ।
4. एक वरिष्ठ सह खोजकर्ता जो सबके विचारों को सम्मान दें
5. वाद-विवाद करने वाला जो छात्रों को विचार एकत्र करने में सहायक हो।

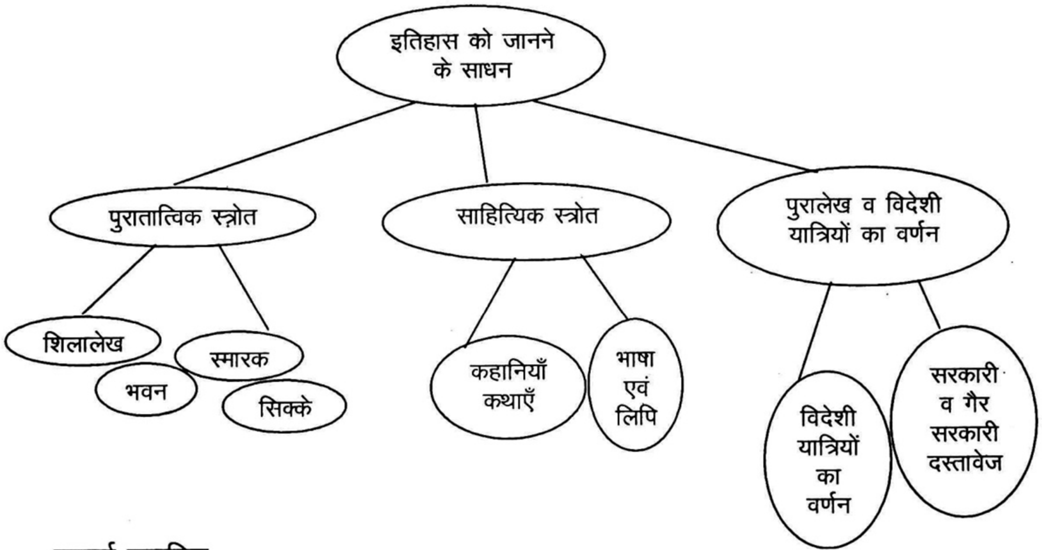

सम्पूर्ण मानचित्र

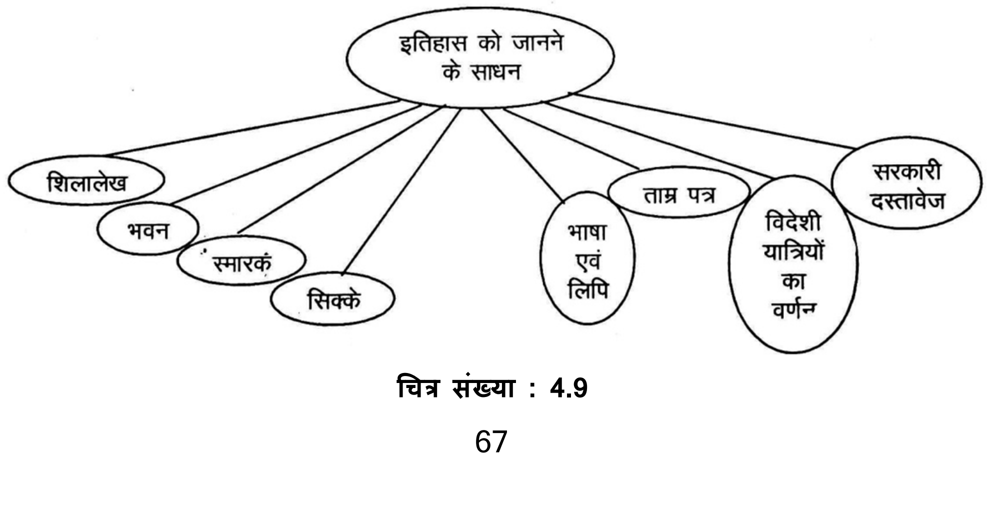

चित्र संख्या : 4.9

4.4 सारांश

(Summary)

(1) **इतिहास के पाठ्यक्रमीय तत्व (Curriculum Elements in History) -** पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित हो जिसमें छात्र सक्रियता से नवीन अनुभवों का पूर्वज्ञान से जोड़कर, नवीन रूप जान सके। अधिगम एक सक्रिय प्रविधि है।

(2) **विषय वस्तु (Contents) -** विषय वस्तु का सम्बन्ध अतीत से होता है अत: तथ्य, घटनाओं व अतीत की विभिन्न क्रियाओं से उसे जोड़ा जाये । क्योंकि इससे अधिगम एक श्रंखला के रूप में सम्पादित हैं । इतिहास विषय में संइग़नात्मक वैद्यता, विषय-वस्तु की वैद्यता, प्रक्रिया वैद्यता, ऐतिहासिक वैद्यता, नैतिकता वैद्यता की आक्श्यता है । विषय-वस्तु सरल, त्रुटिरहित तथा अन्य विषयों से जुड़ी हुई व समसामयिक हो।

(3) **शिक्षण एवं अधिगम प्रविधि (Learning and Teaching Process) -** विद्यार्थी को स्वयं ज्ञान अर्जित करने की क्षमता को विकसित करना चाहिये।

(4) सीखने के संसाधन (Resources of Learning) - इतिहास में स्त्रोत तथा अन्य साधन, पुस्तकालय से एकत्रित सन्दर्भित सामग्री अत्यधिक उपयोगी हो सकती है । विद्यालय से बाहर ऐतिहासिक धरोहर वाले स्थलों के भ्रमण की व्यवस्था की जाये तथा उनका देश व काल से सही सम्बन्ध जोड़ा जाये ।

(5) **इतिहास अध्यापक की दक्षतायें (Compentencies of History Teacher) -** इतिहास के अध्यापक में विभिन्न खुदाई की चीजों, स्त्रोत, शिलालेख व अन्य सामग्री को समझने, अन्तर करने व छात्रों को उसका ज्ञान देने की दक्षता भी होनी चाहिये।

(6) **मूल्यांकन (Evaluation)** - शिक्षण अधिगम तथा मूल्यांकन के अन्त: क्रिया का सह सम्बन्ध है। अध्यापक को विकासात्मक मूल्यांकन करते रहना चाहिये और अन्त में समग्र मूल्यांकन भी करना चाहिये।

(7) **अन्य विषयों से समन्वय (Correlation with other Subjects) -** इतिहास विषय को अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित कर पढ़ाना चाहिये।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम विद्यार्थी के व्यवहार परिवर्तन के लिए पढ़ायी जाने वाली विषय वस्तु है।

- **पाठ्यक्रम (Syllabus) -** विषय वस्तु का वह स्वरूप जो बालक को ज्ञानार्जन के लिए अध्ययन करवाने के लिए पढ़ाया जाय।
- **पाठ्यचर्या (Curriculum) -** पाठ्यचर्या में विषय वस्तु के अतिरिक्त वे समस्त अधिगम अनुभव तथा पाठ्येत्तर कार्यक्रम (Co-Curriculum Activities) के रूप में प्रदान किये जाते है, सम्मिलित किये जाते है।
- **पाठ्यचर्या के तत्व (Elements of Curriculum) -** पाठ्यचर्या तत्वों में शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम, स्वतंत्र, आश्रित तथा मिश्रित चर (Variables) के रूप में पाठ्यसामग्री का चयन निर्माण व प्रस्तुतीकरण द्वारा सीखने वाले के व्यवहार परिवर्तन के लिए आवश्यक व पर्याप्त अधिगम अनुभव प्रदान करने के समस्त तत्व होते है।

- **संकल्पना का मानचित्र (Mapping of Concepts) -** संकल्पना मानचित्र एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न संप्रत्ययों के सहसंबंध को मानचित्र के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। संकल्पना मानचित्र विकसित करने के सोपान -

1. समस्त संप्रत्ययों के नाम लिखना
2. संप्रत्ययों के उदाहरण देना
3. चयनित संप्रत्ययों में अधीनस्थ संप्रत्यय सबसे उपर लिखना
4. अधीनस्थ प्रमुख संप्रत्यय के नीचे अधीनस्थ संप्रत्यय को व्यवस्थित करना ।
5. समान प्रत्ययों के पहचान होने पर अधीनस्थ में प्रथम स्तर के उपर व्यवस्थित करना ।
6. समकक्ष, अधीनस्थ संप्रत्ययों के सहसंबंध को दिखाने के लिए रेखाचित्र, पिरामिड, संयोजक बनाना।
7. समस्त मानचित्र विकसित होने पर कुछ विशिष्ट अधीनस्थ संप्रत्यय के चारों और घेरा बनाना।
8. समस्त मानचित्र के चारों और कम से कम घेरे तथा मुख्य अधिगम बिन्दुओं का संतुलन इतिहास में ज्ञानात्मक मानचित्रण इसमें इतिहास की विषय वस्तु का उदाहरण लेते हुए मानचित्र बनाना।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1 पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या मे क्या अंतर है?
What is the difference between syllabus and curriculum?

2 पाठ्यचर्या के तत्व से आप क्या समझते है?
What do you understand by curriculum?

3 संकल्पनाओं का मानचित्रण क्यों किया जाता है?
Why is mapping of concept done?

4 संकल्पनात्मक मानचित्रण को विकसित करने के सोपान कौन-कौन से है?
What are the steps of development to concepts mapping?

5 इतिहास में किसी भी इकाई पर एक बिन्दु को विकसित करने के लिए मानचित्रण कीजिए।
Develop one Teaching point for mapping in History on any unit.

4.5 संदर्भ ग्रंथ (Refrence)

1. Bloom, Benjamin S. (1956) Taxomony of Educational Objectives the classification of educational coman N.Y. McKay.
2. Asinbel D.P.Navak and Hanesian 1978 Educational Pyschology, A cognitive view, 2nd edition N.Y. Holt, Rinchart and Winston.

3. Dale, Edger : Audio Visual Methods in Teaching
4. Mohanty : Information Technology
5. Kochar S.K : The Teaching of History
6. पी.के.सूद – विज्ञान शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर।

इकाई-5

इतिहास शिक्षण पद्धतियाँ एवं उपागम, विषय वस्तु आधारित शिक्षण पद्धतियों के विशिष्ट उदाहरण एवं विषय आधारित कौशल

Approach of Teaching methods, Specific illustrations of Content based methodology, subject's specific skills

इकाई की संरचना (Structure of Units)

5.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

5.1 इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियां (various Methods of Teaching History)

5.1.1 व्याख्यान विधि (Lecture Method)

5.1.1.1 व्याख्यान विधि की परिभाषाएँ (Definitions of Lecture Method)

5.1.1.2 व्याख्यान विधि के मुख्य उद्देश्य (Main Objectives of the Lecture Methods)

5.1.1.3 व्याख्यान विधि के गुण (Merits of the Lecture Method)

5.1.1.4 व्याख्यान विधि की सीमाएं (Limitation of the Lecture Method)

5.1.1.5 व्याख्यान विधि का उपयोग कब? (When to use Lecture Method?)

5.1.1.6 व्याख्यान विधि हेतु सुझाव (Suggestions for the Lecture Method)

5.1.2 पाठ्य पुस्तक विधि (Text-book Method)

5.1.2.1 पाठ्य पुस्तक विधि के स्वरूप (Forms of the Text Book Method)

5.1.2.2 पाठ्य पुस्तक विधि का प्रयोग (Application of the Text-Book Method)

5.1.2.3 पाठ्य पुस्तक विधि के गुण (Merits of Text Book Method)

5.1.3 प्रायोजना विधि (Project Method)

5.1.3.1 प्रयोजना विधि की परिभाषा (Definition of Project Method)

5.1.3.2 प्रयोजना विधि के प्रकार (Types of Project Method)

5.1.3.3 प्रयोजना विधि के सोपान (Steps of Project Method)

5.1.3.4 अच्छी प्रयोजना विधि की विशेषताएँ (Characteristics of a good Project Method)

5.1.3.5 प्रयोजना विधि के गुण (Qualities of Project Method)

5.1.3.6 प्रयोजना विधि की सीमाएँ (Limitation for Project Method)

5.1.3.7 प्रयोजना विधि हेतु - सुझाव (Suggestion for the Project Method)

5.1.4 समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)

5.1.4.1 समस्या समाधान विधि के सोपान (Step of Problem Solving Method)

5.1.4.2 समस्या समाधान विधि की विशेषताएँ (Characteristics of Problem Solving Method)

5.1.4.3 समस्या समाधान विधि की सीमाएँ (Limitation of Problem Solving Method)

5.1.5.4 समस्या समाधान विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Problem Solving Method)

5.1.5 विचार-विमर्श विधि (Discussion Method)

5.1.5.1 विचार-विमर्श विधि की परिभाषा (Definitions of Discussion Method)

5.1.5.2 विचार-विमर्श के प्रकार (Types of Discussion)

5.1.5.3 विचार-विमर्श विधि के सोपान (Steps of a Discussion Method)

5.1.5.4 विचार-विमर्श विधि के गुण (Merits of the Discussion Method)

5.1.5.5 विचार-विमर्श की सीमाएं (Limitation of the Discussion Method)

5.1.5.6 विचार-विमर्श विधि के सुझाव (Suggestion for the Discussion Method)

5.1.6 निरीक्षित अध्ययन विधि (Supervised Study Method)

5.1.6.1 निरीक्षित अध्ययन विधि के प्रकार (Kinds of Supervised Study Method)

5.1.6.2 निरीक्षित अध्ययन विधि के गुण (Merits of the supervised Study Method)

5.1.6.3 निरीक्षित अध्ययन विधि की सीमाएं (Limitation of the Supervised Study Method)

5.1.7 इकाई विधि (The Unit Method)

5.1.7.1 इकाई विधि के सोपान (Step of the Unit Method)

5.1.7.2 इकाई विधि के गुण (Merits of the Unit Method)

5.1.7.3 इकाई विधि की सीमाएं (Limitation of the Unit Method)

5.1.8 स्त्रोत विधि (Source Method)

5.1.8.1 स्त्रोत विधि का अर्थ (Meaning of Source Method)

5.1.8.2 स्त्रोत के प्रकार (Kind of Sources)

5.1.8.3 इतिहास शिक्षण में स्त्रोत के उपयोग (Use of Source in History Teaching)

5.1.8.4 स्त्रोत विधि के गुण (Merits of the Source Method)

5.1.8.5 स्त्रोत विधि की सीमाएं (Limitation of the Source Method)

5.1.8.6 स्त्रोत का उपयोग (Use of Sources)

5.1.9 विश्लेषणात्मक विधि तथा संश्लेषणात्मक विधि (Analytic or Synthetic Method)

5.1.9.1 विश्लेषणात्मक विधि या संश्लेषणात्मक विधि के गुण (Merits of the Analytic and Synthetic Method)

5.1.9.2 विश्लेषणात्मक विधि या संश्लेषणात्मक विधि की सीमाएं (Limitation of the Analytic or Synthetic Method)

5.1.10 कहानी वाचन विधि (Story-telling Method)

5.1.10.1 कहानी विधि के गुण (Merits of the Story-telling Method)

5.1.11 नाट्यीकरण विधि (Dramatization Method)

5.2.11.1 नाट्यीकरण विधि के गुण (Merits of the Dramatization Method)

5.2 इतिहास शिक्षण हेतु विशिष्ट तकनीक (Specific Techniques for Teaching History)

5.2.1 प्रश्न तकनीक (Questioning Technique)

5.2.1.1 प्रश्न तकनीक के उद्देश्य (Objectives of Questioning Technique)

5.2.1.2 प्रश्नों के प्रकार (Types of Questions)

5.2.1.3 प्रश्न तकनीक में याद रखने योग्य बिन्दु (Points to Remember in questioning Technique)

5.2.2 उदाहरण तकनीक (Illustration Technique)
5.2.2.1 उदाहरण के प्रकार (Types of Illustration)
5.2.3 नाट्यीकरण तकनीक (Dramatization technique)
5.3 विषय के विशिष्ट कौशल (Subject Specific Skills)
5.3.1 प्रश्न कौशल (Question Skill)
5.3.2 दृष्टान्त उदाहरण कौशल (Illustration with examples Skill)
5.3.3 श्यामपट्ट कौशल (Black Board writing Skill)
5.3.4 उद्दीपन परिवर्तन कौशल (Stimulus Variation Skill)
5.3.5 पुनर्बलन कौशल (Re-inforcement Skill)
5.3.6 व्याख्यान कौशल (Explanation Skill)
5.3.7 कहानी कौशल (Story Telling Skill)
5.4 सारांश (Summary)
5.5 संदर्भ ग्रन्थ (Reference)

5.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

"Correct history teaching means not only providing the pupil a background of historical knowledge, but also an insight into the meaning and significance of history and the ability to continue his studies for himself"T.S.Mehta

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर निम्न लक्ष्य एवं उद्देश्यों की प्राप्ति होगी -

1. विद्यार्थी इतिहास से संबंधित प्रत्यय (Concept) तथ्य (Facts), घटना (Event), परम्परा (Convention), आदि के संबंध में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी इतिहास से संबंधित प्रत्यय, तथ्य, घटना, परम्परा आदि के संबंध में व्यापक समझ विकसित कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी समस्या को पहचान कर उसका सही विश्लेषण कर सकेंगे। उसके संबंध में सबूत एकत्रित कर निर्णय पर पहुँच सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में इतिहास व ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति रुचि पैदा हो सकेगी।
5. विद्यार्थी इतिहास की घटनाओं के आधार पर वर्तमान को समझ सकेंगे।
6. विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता की भावना, अन्तर्राष्ट्रीय समझ तथा वैज्ञानिक सोच का विकास सकेगा।
7. विद्यार्थियों में इतिहास में घटित घटनाओं के संबंध में जानकारी एकत्रित करने, उनका विश्लेषण करने, सबूतों का परीक्षण करने, तर्कसंगत निर्णय लेने तथा तथ्यों व आकड़ों

को व्यवस्थित करने, उनका विश्लेषण करने व तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षमता हो सकेगी।

8. विद्यार्थी इतिहास की पद्धतियों, समय व स्थान विशेष के मध्य परस्पर संबंध कायम कर समय संज्ञान की भावना का विकास कर सकेंगे।
9. विद्यार्थी मानव सभ्यता के विकास का क्रमिक अध्ययन कर सकेंगे।
10. विद्यार्थी आधारभूत मानवीय जीवन मूल्यों को अधिक सुदृढ़ कर सकेंगे।
11. विद्यार्थी व्यापक सामाजिक सोच व व्यवहार विकसित कर सकेंगे तथा विभिन्न मतों, विश्वास, गहन-सहन के तौर तरीकों तथा सांस्कृतिक क्रियाओं के प्रति सम्मान प्रकट कर सकेंगे।

5.1 इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियाँ (Various Methods of Teaching History)

शिक्षण विधियों का इतिहास विषय में बहुत अधिक महत्व है, किन्तु विधियों को समझने के लिए प्रविधियों (Techniques) का ज्ञान भी उतना ही आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है । विधियों एवं प्रविधियों में अन्तर है। विधियाँ ज्ञानार्जन का वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान एक से दूसरे तक पहुँचाया जाता है जबकि प्रविधि किसी विधि को प्रभावी एवं सरल रूप प्रदान करती है। प्रविधि किसी विधि के साथ प्रयुक्त होकर उस विधि को रोचक एवं बोधगम्य (Comprehensive) बनाती है, उदाहरण के लिए कहानी को एक विधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है । इस कहानी को सरल, रोचक, बोधगम्य बनाने के लिए उससे संबंधित चित्र, उदाहरण, सामग्री आदि का प्रयोग प्रविधि के रूप में भूमिका निर्वहन तकनीक (Role Playing Technique), नाटकीकरण तकनीक (Dramatization), दृष्टान्त उदाहरण तकनीक (Illustration) के द्वारा विधि को अधिक प्रभावी व अर्थपूर्ण (Meaningful) बनाया जाता है।

इस प्रकार विधि एक स्वतंत्र उपागम अथवा माध्यम है जबकि प्रविधि किसी विधि के साथ जुड़कर उस विधि को प्रभावी बनाने की एक कला है।

इतिहास शिक्षण की दृष्टि से निम्न शिक्षण विधियों विशेष उपयोगी हैं।

1. व्याख्यान विधि (Lecture Method)
2. पाठ्य-पुस्तक विधि (Text Book Method)
3. प्रायोजना विधि (Project Method)
4. समस्या-समाधान विधि (Problem-Solving Method)
5. विचार-विमर्श विधि (Discussion-Method)
6. निरीक्षित अध्ययन विधि (Supervised Study Method)
7. इकाई विधि (Unit Method)
8. स्त्रोत विधि (Source Method)
9. विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि (Analytic and Synthetic Method)
10. कहानी वाचन विधि (Story-Telling Method)

11. नाट्यीकरण विधि (Dramatization Method)

5.1.1 व्याख्यान विधि (Lecture Method)

लेक्चर (Lecture) शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'Lecture' से हुई है, जिसका अर्थ होता है - जोर से पढ़ना। व्याख्यान विधि एक प्राचीन एवं परम्परागत शिक्षण विधि है । इसमें मुख्यत: भाषण के माध्यम से विषय वस्तु को पढ़ाया जाता है। शिक्षक अपनी योग्यता व क्षमताओं के अनुसार गहन व सूक्ष्म विषय वस्तु को भी सरल और सुबोध बनाकर प्रस्तुत करता है। छात्र विषय वस्तु की मुख्य बातें नोट कर लेते हैं।

5.1.1.1 व्याख्यान विधि की परिभाषा (Definition of the Lecture Method)

"व्याख्यान एक शिक्षण शास्त्रीय विधि है, जिसमें शिक्षक औपचारिक ढंग से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है ।" -जेम्स एम ली

"व्याख्यान, तथ्यों, सिद्धान्तों तथा अन्य संबंधों का प्रतिपादन है, जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।" -रिस्क

5.1.1.2 व्याख्यान विधि के मुख्य उद्देश्य (Objectives of Lecture Method)

1. छात्रों तक विषय-वस्तु को पहुंचाना।
2. उनमें विषय के प्रति समझ और रूचि विकसित करना ।
3. व्याख्यान की प्रक्रिया में विचारों को संगठित करना ।
4. छात्र-शिक्षक अन्तःक्रिया द्वारा सूचनाओं को प्राप्त करना ।
5. बौद्धिक व अबौद्धिक ढंग से अभिवृत्ति, मूल्यों का स्थानान्तरण करना ।

5.1.1.3 व्याख्यान विधि के गुण (Merits of the Lecture Method)

समय की मितव्ययता: उच्च स्तर की कक्षाओं में जहां छात्रों की संख्या अधिक रहती है, इसे सरलता से प्रयुक्त किया जा सकता है।

समय की बचत: इस विधि में पाठ्य क्रम को कम समय में पूर्ण किया जा सकता है तथा उसकी पुनरावृत्ति भी की जा सकती है।

प्रभावी: तथ्यात्मक सूचनाओं को प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। महान व्यक्तियों की जीवनी, आविष्कार, विचार तथा दर्शन को अच्छी तरह से पढ़ाया जा सकता है।

सरलीकरण: इस विधि से जटिल विषयवस्तु को सरलता से पढ़ाया जा सकता है।

काल्पनिक शक्ति का विकासक्योंकि विषयवस्तु को मौखिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इस : विधि में विद्यार्थियों को उसकी कल्पना करने का अवसर रहता है। इससे उनकी कल्पना शक्ति का विकास होता है। यह विषय वस्तु की अवधारणा को स्वयं के ढंग से बनाने हेतु लाभप्रद है।

लचीलापन: इस विधि को शिक्षक अपने छात्रों की क्षमताओं, रूचि, अभिवृति, योग्यता, पूर्वज्ञान व आवश्यकता के अनुरूप ढाल सकता है, और उनसे निकटता स्थापित कर सकता है।

रूचिकर: इस विधि से शिक्षक ऐतिहासिक घटनाओं और विषयवस्तु को एक दूसरे से संबंधित कर शिक्षण को रूचिकर बना सकता है।

कुशल: अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाकर शिक्षक जीवन की वास्तविक दशाओं को कुशलतापूर्वक प्रस्तुत कर सकता है।

कम खर्चीली: इस विधि में शिक्षक की क्षमताओं व योग्यता के अलावा और किसी अतिरिक्त शिक्षण सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। अत इसमें अपेक्षाकृत कम खर्चा आता है। :

सार्वभौमिक: इस विधि को किसी भी स्थान पर बिना कोई अतिरिक्त व्यवस्था किये उपयोग में लाया जा सकता है ।

यह विधि आज भी सबसे ज्यादा उपयोग में लाई जाती है ।

5.1.1.4 व्याख्यान विधि की सीमाएं (Limitation of the Lecture Method)

1. अकुशल व अपरिपक्व व्याख्याता शिक्षण को अरूचिकर व विद्यार्थियों को निष्क्रिय श्रोता बना देता है।
2. विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नता का इस विधि में समावेश नहीं होता है । सभी छात्रों को समान मानकर ही इसे उपयोग में लिया जा सकता है।
3. इसमें प्रयोगात्मक प्रक्रिया नहीं होने से विद्यार्थी इसमें सीधे भाग नहीं ले सकते है । 'करके सीखने' वाला गुण इसमें नहीं है।
4. विद्यार्थियों की तार्किक शक्ति के विकास में इस विधि से कोई सहयोग नहीं मिलता है।
5. विद्यार्थी की दृष्टि से यह नीरस होता है । वह मात्र एक निष्क्रिय अधिगमयक बनकर रह जाता है।
6. विद्यार्थी की अभिव्यक्ति क्षमता अथवा अन्य योग्यताओं का इसमें विकास नहीं होता है।

5.1.1.5 व्याख्यान विधि का उपयोग कब? (When to use the Lecture Method)

इस शिक्षण विधि का उपयोग निम्न अवसरों पर किया जा सकता है-

1. नई ईसाई की प्रस्तावना के लिये।
2. छात्रों में प्रारम्भिक रूचि जागृत करने के लिये।
3. कठिन स्थलों पर व्याख्या करने के लिये।
4. पुनरावृत्ति के लिये।
5. सारांश प्रस्तुत करने के लिये।
6. समय की बचत करने के लिये।
7. पाठ्य सामग्री को व्यावहारिक बनाने के लिये।

5.1.1.6 व्याख्यान विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Lecture Method)

इतिहास के शिक्षकों द्वारा इस विधि को सफलतापूर्वक एवं प्रभावी ढंग से प्रयोग करने के लिये निम्न सुझावों पर ध्यान दिया जा सकता है-

1. शिक्षक व्याख्यान की विषयवस्तु को पूरी तरह से समझकर, व्याख्यान देने से पूर्व अपने श्रोता की क्षमताओं के अनुरूप व्याख्यान की पूर्ण रूपरेखा तय करें ।
2. व्याख्यान हेतु विषयवस्तु के प्रत्येक बिन्दु का क्रम, उसका विस्तार व उसकी भाषा शैली की रूपरेखा पूर्व से ही निर्धारित कर ली जानी चाहिये ।
3. मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर अंकित कर देना, व्याख्यान में विद्यार्थियों की रूचि को बनाये रख सकता है और व्याख्यान को प्रभावी बना सकता है ।

4. व्याख्यान में आवश्यकता अनुसार प्रासंगिक उदाहरण, व्यावहारिक जीवन की घटनाओं का संस्मरण, प्रसंगों का उल्लेख, व्याख्यान को अधिक रूचिकर, प्रभावी और सजीव बना देता है।
5. व्याख्यान के बीच-बीच में विद्यार्थियों से विकासात्मक, विचारात्मक व बोध प्रश्नोत्तरी से विद्यार्थियों को व्याख्यान में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है जिससे उनका ध्यान विषयवस्तु की ओर बना रहता है।

उपरोक्त सुझावों को व्याख्यान में सम्मिलित करने से इस विधि को अधिक सार्थक, प्रभावी व उपयोगी बनाया जा सकता है।

5.1.2 पाठ्य पुस्तक विधि (Text-Book Method)

पाठ्य पुस्तक विधि अपने आप में एक स्वतंत्र विधि नहीं है। अन्य शिक्षण विधियों के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। इसमें विद्यार्थी स्वयं के स्तर पर पाठ्य-पुस्तक का स्वतंत्र अध्ययन कर ज्ञान अर्जित करता है। एडम्स वेसले के अनुसार 'पाठ्य पुस्तक विधि शिक्षण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पाठ्य पुस्तकों पर स्वामित्व प्राप्त करना हमारा तात्कालिक उद्देश्य होता है।"

5.1.2.1 पाठ्य पुस्तक विधि के स्वरूप (Forms of the Text-Book Method) - चूंकि पाठ्य-पुस्तक में ज्ञान अनेक तथ्यों, सूचनाओं, विचारों आदि के रूप में संगठित व सुव्यवस्थित रहता है, इनके अध्ययन से कम समय में अधिक मात्रा में ज्ञान अर्जित किया जा सकता है। इस विधि में बालक बिना शिक्षक की प्रत्यक्ष सहायता के भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वर्तमान में इस विधि के निम्न तीन स्वरूप प्रचलित है।

1. **रटकर जांचने की विधि (The Recitation Testing method) :** इस विधि में शिक्षक द्वारा छात्र को पाठ्य-पुस्तक के कुछ अंश स्मरण के लिये दिये जाते है। जिन पर बाद में शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछे जाते हैं।
2. **शिक्षक-विद्यार्थी द्वारा कक्षा में अध्ययन की विधि (The Total Recitation Methods) :** इस विधि में छात्रों द्वारा कक्षा में पुस्तक का मौन अथवा सस्वर पठन किया जाता है। आवश्यकतानुसार शिक्षक द्वारा कठिन अंशों को स्पष्ट किया जाता है ।
3. **पाठ्य-पुस्तक को विभाजित अंशों में याद करने की विधि (The Topical Recitation Method):** इस स्वरूप में शिक्षक द्वारा पाठ को कई भागों में विभाजित कर छात्रों को प्रत्येक भाग को याद करने के लिये दिया जाता है। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे पूर्ण अध्ययन करने के बाद प्रत्येक भाग से संबंधित किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में समर्थ होंगे। इसमें छात्रों को गृह कार्य भी दिया जाता है।

5.1.2.2पाठ्य-पुस्तक विधि का प्रयोग (Application of the Text-Book Method) - इस विधि को शिक्षक द्वारा मुख्यत: निम्न दो तरह से प्रयोग में लिया जाता है।

1. **एक पाठ्य-पुस्तक विधि (The Single Text Book Methods) :** इसमें शिक्षक द्वारा एक ही पाठ्य-पुस्तक को प्रयोग किया जाता है। नवीन पुस्तकों में संपूर्ण विषय-वस्तु अनेक भाग व उपभागों में विभाजित होती है जिसमें की विषय का व्यापक अर्थ

सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। प्रारंभिक ज्ञान के लिये प्रारंभिक व माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के लिये यह विधि उपयुक्त है। किन्तु इसमें एक ही पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग होने के कारण विषय का सीमित ज्ञान ही प्राप्त होता है तथा तार्किक शक्ति का विकास नहीं हो पाता है।

2. **बहु-पाठ्य-पुस्तक विधि (The Single Text-Book Methods) :** इसमें छात्र और शिक्षक दोनों ही अनेक पाठ्य-पुस्तकों से विषय का अध्ययन कर अनेक दृष्टिकोण एवं विचारों से परिचित होता है। यह विधि उच्च कक्षाओं के लिये अधिक उपयुक्त है।

5.1.2.3 पाठ्य पुस्तक विधि के गुण (Merits of Text -Book Method)

1. इसमें स्वाध्याय की आदत का विकास होता हैं।
2. छात्र स्वयं सक्रिय रहकर ज्ञान प्राप्त करते है।
3. इतिहास की विषय-वस्तु का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त हो सकता है।
4. कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है।
5. छात्र की बोधग्राहता की जांच हो जाती है।
6. इस विधि से छात्र को यह जानकारी हो जाती है कि किसी प्रश्न के लिये उन्हें कितनी व कौन-सी विषय वस्तु की आवश्यकता है।
7. छात्र की स्मरण-शक्ति का विकास होता है ।
8. इसमें इतिहास की वैध, विश्वसनीय एवं गहन सूचनाओं से युक्त विषय-वस्तु को व्यवस्थित रूप से प्राप्त किया जा सकता है ।

5.1.2.4 पाठ्य-पुस्तक विधि की सीमाएं (Limitation of Text- Book Methods)

1. छात्र के पास अच्छी पाठ्य पुस्तक सुलभ होना आवश्यक है अन्यथा दोषपूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकता है।
2. इस विधि से छात्र में 'करके सीखने" वाले गुण का विकास नहीं होता है ।
3. छात्र पुस्तक का दास बन जाता है ।
4. कक्षा का वातावरण नीरस व अरूचिकर हो जाता है । शिक्षण-कार्य यांत्रिक सा लगने लगता है।
5. शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सूत्र - ज्ञात से अज्ञात की ओर, विशिष्ट से सामान्य की ओर आदि की उपेक्षा होती है।
6. छात्र का क्रियात्मक व व्यावहारिक पक्ष उपेक्षित रहता हैं

5.1.2.5 पाठ्य पुस्तक विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Text-Book Method)

1. पाठ्य-पुस्तकों का चयन छात्रों की रूचि एवं मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिये।
2. पाठ्य-पुस्तक में चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, ग्राफ आदि यथास्थान होने चाहिये जिससे अमूर्त विचार मूर्त रूप धारण कर सकें।
3. इस विधि में तार्किक व समीक्षात्मक चिन्तन पर विशेष बल दिया जाना चाहिये।

4. सूक्ष्म और गहन विचारों की व्याख्या हेतु पाठ्य-पुस्तक में दृष्टांतों व उदाहरणों का प्रयोग होना चाहिये।
5. कुशल व प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा ही इसका प्रयोग किया जावे।

5.1.3 प्रायोजना विधि (Project Method)

यह विधि प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डब्ल्यू एच किलपेट्रिक द्वारा विकसित की गई है। इसमें छात्रों को स्वाभाविक परिस्थितियों में रचनात्मक कार्य करवाये जाते है। इसमें सर्वप्रथम उद्देश्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने की योजना बनाई जाती है। योजना अनुसार कार्य सम्पन्न किया जाता है और किये गये कार्य का फिर मूल्यांकन किया जाता है।

5.1.3.1 प्रायोजना विधि की परिभाषा (Definition of the Project Method)

"प्रोजेक्ट अभिप्राय युक्त सोद्देश्य क्रिया है, जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण मन के साथ की जाती है।"- डब्ल्यू एच किलपेट्रिक

"A Project is a whole Hearted purposeful activity proceeding in a social environment'-

W H Kilpatric

"प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है जिसका समाधान प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक वातावरण में होता है।"

-स्टीवेन्सन "

'A Project is Problematic act carried to completion in its natural setting' -

J A Stevenson

"प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन को एक ऐसा छोटा सा भाग है जिसे विद्यालय में सम्पादित किया जाता हैं"

-बेलार्ड

5.1.3.2 प्रायोजना विधि के प्रकार (Types of Projects Method) - सम्पूर्ण ज्ञान प्रयोग के आधार पर योजना विधि के निम्नांकित प्रकार दिखाई देते है :

1. **रचनात्मक प्रोजेक्ट (Constructive Project) :** इसके अन्तर्गत पत्र लिखना, मॉडल बनाना, मानचित्र बनाना जैसे कार्य किये जाते है।
2. **कलात्मक प्रोजेक्ट (Aesthetic Project):** इसमें कविता लेखन, कहानी, गीत लिखना, चित्रकारी करना आदि कार्य किये जाते हैं।
3. **समस्यात्मक प्रोजेक्ट (Problematic Project):** इसमें बौद्धिक कठिनाईयों का समाधान किया जाता है।
4. **अभ्यास प्रोजेक्ट (Constructive Project):** इसमें अभ्यास द्वारा बालकों में कार्यक्षमता में वृद्धि की जाती है।

5.1.3.3 प्रायोजना विधि के सोपान (Step of a Project Method) - प्रायोजना विधि में निम्न छः आधारभूत चरण होते हैं-

1. **परिस्थिति उत्पन्न करना (Formation of a Situation) -** शिक्षक छात्रों के समक्ष एक से अधिक प्रायोजनाओं को रखता है और उनके महत्व व कार्य करने की दिशा पर प्रकाश डालता है।
2. **प्रायोजना का चयन एवं उद्देश्य निर्धारित करना (Selection of a Project & Formation of Objective)** -छात्र समूह अपनी योग्यता, रूचि, समय आदि के आधार पर किसी एक योजना का चयन करता है और उसके उद्देश्य तय करता है।
3. **प्रायोजना के कार्यक्रम का नियोजन (Planning of the Project) -** निश्चित किये गये उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्र समूह योजना का कार्यक्रम बनाता है। इस कार्य में शिक्षक बतौर मार्गदर्शक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।
4. **कार्यक्रम को क्रियान्वित करना (Execution of the Project as per plan) -** शिक्षक के निर्देशन में छात्र तय किये गये कार्यक्रम के अनुसार कार्यक्रम का क्रियान्वयन करते है।
5. **कार्य का मूल्यांकन (Evaluation of the Project as per Plan) -** कार्यक्रम की समाप्ति पर किये गये कार्य से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के संबंध में विश्लेषण किया जाता है ताकि कमियों का पता लगाकर भविष्य' कें लिये सीख ली जो सकें और अच्छाइयों को दोहराया जा सके।
6. **कार्य का लेखा (Record of Work) -**समस्त कार्य एवं विश्लेषण का लेखा तैयार कर प्रस्तुत किया जाता है।

5.1.3.4 अच्छी प्रायोजना की विशेषताएं (Characteristics of a Good)

1. प्रायोजना के उद्देश्य व प्राप्य उद्देश्य निश्चित होने चाहिये ।
2. प्रायोजना उपयोगी, प्रयोगात्मक व छात्रों के जीवन से संबंधित होनी चाहिये ।
3. प्रायोजना अधिक लम्बी नहीं होनी चाहिये।
4. इससे प्राप्त ज्ञान भविष्य के लिये उपयोगी होना चाहिये।
5. इसमें वातावरणीय कारकों का ध्यान रखा जाना चाहिये।
6. योजना इस प्रकार की जानी चाहिये कि छात्र उसमें मानसिक व शारीरिक रूप से सक्रिय रहे।
7. योजना छात्रों की योग्यता, रूचि एवं अभिवृत्ति के अनुसार होनी चाहिये।

5.1.3.5 योजना विधि के गुण (Merits of the Project Method)-

1. इस विधि में छात्र सीखने को तत्पर रहते है, अत: इसमें अधिगम का 'तत्परता का नियम लागू होता है।
2. चूंकि इस विधि में छात्र स्वयं अभ्यास करते है अत: इसमें अधिगम का "अभ्यास का नियम लागू होता है।
3. चूंकि इस विधि में छात्र स्वयं द्वारा किये गये कार्य को देखकर संतुष्टि का अनुभव करते है । अत: इसमें अधिगम का 'प्रभाव का नियम" भी लागू होता है ।
4. यह विधि जीवन के वास्तविक अनुभवों से संबंधित रहती है ।

5. इसमें छात्रों को व्यावहारिक, स्वाभाविक, स्थायी एवं उपयोगी ज्ञान प्राप्त होता हैं
6. छात्रों में मिलजुल कर कार्य करने की भावना का विकास होता है ।
7. इससे छात्रों में सामाजिक सोच व धैर्य की शक्ति का विकास होता है ।
8. श्रम का महत्व समझ में आता है ।

5.1.3.8 योजना विधि की सीमाएं (Limitation Project Method)

1. इसमें अनेक सामग्री, उपकरण, यंत्र आदि की आवश्यकता रहती है । इस कारण यह विधि अधिक खर्चीली है।
2. यह विधि सभी प्रकरणों हेतु उपयुक्त नहीं है ।
3. छात्र व शिक्षक दोनों पर ही इसमें अधिक भार पड़ता हैं
4. इसमें अधिक समय की आवश्यकता होती है जिसमें विद्यालय का अन्य कार्य प्रभावित होता है।
5. इसके माध्यम से विषय की गहराई से अध्ययन संभव नहीं है।
6. इसकी सफलता पर्याप्त निर्देशन कौशल पर आधारित है जिसकी उपलब्धता का प्राय: अभाव रहता है।

5.1.3.7 योजना विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Project Method)

1. छात्रों की आवश्यकता का ध्यान रखा जावे।
2. कार्य सजीव, रोचक एवं प्रेरक होने चाहिये।
3. स्थानीय महत्व की सामग्री के आधार पर कार्य चयन किया जावे।
4. छात्रों को इसमें अधिकतम अवसर प्रदान किया जाना चाहिये।

5.1.4 समस्या-समाधान विधि (Problem Solving Method)

प्रो. बोसिंग के अनुसार 'समस्या से जूझना जीवन की प्रकृति ही है ।" समस्या-समाधान विधि शिक्षण की ऐसी विशिष्ट पद्धति है जिसमें मानसिक कार्य पर अधिक बल दिया जाता है । इसमें समस्या के विषय में छात्र स्वयं मनन कर तथ्यों की जांच पड़ताल कर उसका समाधान व निष्कर्ष निकालते है। थॉमस एवं रिस्क के अनुसार - 'समस्या-समाधान पद्धति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छात्रों के मस्तिष्क में: जटिल परिस्थिति, कठिनाई अथवा समस्या को इस प्रकार उत्पन्न कर दिया जाता है, कि वे इसके निराकरण हेतु उद्देश्यपूर्ण चिन्तन करने के लिये उत्तेजित हो सके।" यह एक उच्च-स्तरीय अधिगम है । इसमें छात्रों में विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन का विकास किया जाता है ।

5.1.4.1 समस्या का समाधान विधि के सोपान (Steps of a Problem-Solving Method)

1. समस्या का चुनाव (Selection of a Problem)
2. समस्या का प्रस्तुतीकरण (Presentation of the Problem)
3. तथ्यों का संकलन (Collection of data & Facts)
4. परिकल्पनाओं का निर्माण (Formation of Hypothesis)

5. तथ्यों की जांच (Judging and Analysis of facts & data)
6. निष्कर्ष निकालना (Drawing Conclusions)
7. मूल्यांकन व सामान्यीकरण (Evaluation and Generalization)
8. कार्य का लेखा (Record of Work)

5.1.4.2.समस्या-समाधान विधि के गुण (Merits of the Problem-Solving Method)

1. छात्रों में सोचने, तर्कयुक्त चिन्तन करने, निर्णय करने, आदि शक्तियों का विकास होता है।
2. ज्ञान को सह-संबंधित करने में सहायता मिलती है।
3. छात्र तथ्यों का एकत्रित करने एवं उसे व्यवस्थित करना सीख जाता है।
4. छात्रों में समस्या का सामना करने एवं उसका समाधान करने के प्रति रूचि जागृत होती है।
5. आपसी सहयोग की भावना का विकास होता है।
6. अन्धानुकरण की प्रवृत्ति समाप्त होती है।
7. स्थायी व प्रभावी अधिगम होता है।
8. स्व-अध्ययन को बल मिलता है।

5.1.4.3 समस्या समाधान विधि की सीमाएं (Limitations of the Problem-Solving Method)

1. इसमें अधिक समय व श्रम लगता है।
2. छोटे बच्चों के लिये उपयुक्त नहीं है।
3. इसमें सदैव अपेक्षित व संतोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं होते है।
4. प्राय: इसमें कुछ छात्र ही अधिक सक्रिय रहते है।
5. विधि में उपयोग हेतु निर्देशनात्मक सामग्री, पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि की आवश्यकता रहती है जिसका प्राय: अभाव रहता है।

5.1.4.4 समस्या-समाधान विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Problem-Solving Method)

1. छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं का ध्यान रखा जाना चाहिये।
2. छात्रों की आर्थिक स्थिति व विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के अनुसार ही कार्य तैयार किया जाना चाहिये।
3. व्यर्थ वाद-विवाद को प्रोत्साहन नहीं दिया जावे।
4. सभी छात्रों को अवसर प्रदान किया जाना चाहिये।
5. पिछड़े व निम्न बुद्धि वाले छात्रों के साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार कर उन्हें कार्य में सक्रिय भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

5.1.5 विचार-विमर्श विधि (Discussion Method)

इस विधि में शिक्षक तथा छात्र सामूहिक ढंग से किसी प्रश्न, समस्या या प्रकरण पर स्वतंत्रतापूर्वक वैचारिक आदान प्रदान करते है। इसमें भाग लेने वाले छात्र सुनने, चिन्तन करने तथा अभिव्यक्त करने का कार्य करते है। शिक्षक इस प्रक्रिया का नेतृत्व करता है तथा विचार-विमर्श को दिगभ्रमित नहीं होने देता है।

5.1.5.1 विचार-विमर्श विधि की परिभाषा (Definitions of the Discussion Method)

"विचार-विमर्श एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोग ढंग से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते है ।'

-जेम्स एम ली

"Discussion is an education group activity in which the teacher and the Student co-operatively talk over some problem or topic."

-James M Lee

"विचार-विमर्श दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य विवेकयुक्त विचारों का आदान प्रदान है।"

-योकम व सिम्पसन

5.1.5.2 विचार-विमर्श के भाग (Parts of Discussion Method)

1. लीडर-शिक्षक एवं छात्र समूह
2. समूह-छात्र
3. समस्या या प्रकरण
4. विषय - वस्तु
5. मूल्यांकन कार्य

5.1.5.3 विचार-विमर्श के प्रकार (Types of Discussion)

1. सम्मेलन (Conference)
2. वाद-विवाद (Debate)
3. परिसंवाद (Symposium)
4. सामूहिक वाद विवाद (Panel Discussion)
5. विचार गोष्ठी (Seminar)

5.1.5.4 विचार-विमर्श विधि के सोपान (Types of Discussion)

1. विचार विमर्श की तैयारी (Preparation of Discussion)

- विषय का चयन।
- अध्ययन सामग्री का संदर्भ ।
- विचार विमर्श के मुख्य बिन्दु उभारना।
- लिखित रूपरेखा तैयार करना।

2. **विचार-विमर्श का नियोजन (Planning of the Discussion)**

- उद्देश्य निर्धारित करना।

- प्रक्रिया के नियम तैयार करना।
- समूह में बोलने, सुनने व प्रश्न करने के तौर तरीके बताना।
- छात्रों में विभिन्न जिम्मेदारियाँ वितरित करना ।

3. **विचार-विमर्श का संचालन (Organization of the Discussion)**

- पूर्वनियोजन अनुसार प्रारंभ करना।
- नियंत्रित व व्यवस्थित संचालन।
- विचार-विमर्श की दिशा भ्रमित न हो इसका ध्यान रखना।
- बीच-बीच में संक्षिप्तिकरण करना।
- प्रश्नों व उत्तरों को समय-समय पर व्यवस्थित करना।
- असंबंधित व विषयेत्तर बातों को नियंत्रित कर उपेक्षित करना।

4. **विचार-विमर्श का मूल्यांकन (Evaluation of the Discussion)**

- प्रश्नोत्तरी के माध्यम से संज्ञानात्मक उद्देश्य की प्राप्ति की जांच करना।
- विचार विमर्श के दौरान भाषा अभिव्यक्ति का मूल्यांकन।
- विचार विमर्श में आयी समस्याओं व कमियों को भविष्य के लिये सूचीबद्ध करना ।

5. विचार-विमर्श का प्रतिवेदन तैयार करना (Preparation of the Report of the Discussion)

- विचार विमर्श के समस्त चरणों का संक्षेप में वर्णन करते हुए उसके निष्कर्षों के बारे में प्रतिवेदन छात्रों द्वारा तैयार कराया जाना चाहिये।

5.1.5.5 विचार-विमर्श विधि के गुण (Merits of the Discussion Method)

1. छात्र अपने भावों और विचारों का व्यवस्थित ढंग से अभिव्यक्त करना सीख लेता है।
2. छात्र में अधिक आत्म-विश्वास पैदा होता है।
3. छात्रों में घनिष्ठता बढ़ती है।
4. स्वतंत्र अध्ययन व तर्क की आदत का विकास होता है।
5. सामूहिक निर्णय की क्षमता का विकास होता है।

5.1.5.6 विचार-विमर्श विधि की सीमाएं (Limitation of the Discussion Method)

1. इसमें कौशलयुक्त शिक्षक का होना आवश्यक है।
2. केवल बड़ी कक्षाओं के लिये ही उपयुक्त है।
3. शर्मीले और मंदबुद्धि बालक इसका लाभ नहीं उठा पाते।
4. इसमें निरर्थक वाद विवाद के कारण समय नष्ट होने की संभावना रहती है।

5.1.5.7 विचार-विमर्श विधि हेतु सुझाव (Suggestion for the Discussion Method)

1. समस्या या विषय का चयन आपसी सहयोग से किया जावे।
2. पूर्व तैयारी की जावे।
3. सभी छात्रों को बोलने व अभिव्यक्ति के समान अवसर दिया जावे।
4. संचालन में छात्रों को समुचित दायित्व प्रदान किया जावे।
5. छात्रों को निष्कर्षों पर पहुंचने एवं स्वतंत्र निर्णय लेने में सहायता प्रदान की जावे।

5.1.6 निरीक्षित अध्ययन विधि (Supervised Study Method)

इस विधि में शिक्षक पाठ्य-वस्तु की सूक्ष्म विवेचना करने के उपरान्त छात्रों को उसके आधार पर कुछ निर्धारित कार्य देता हैं। शिक्षक छात्रों के कार्य का निरीक्षण व निर्देशन करता है। छात्र की कठिनाइयां और समस्याओं का निराकरण भी करता है।

क्लार्क एवं स्टार के शब्दों में "निरीक्षित अध्ययन विधि छात्रों को पढ़ने का और शिक्षकों को निरीक्षण एवं निर्देशन का अवसर प्रदान करती है।"

"A supervised study period is an opportunity both for the pupil to study under the guidance and for the teachers to supervise and guide study".

-Clark & Starr

5.1.6.1 निरीक्षित अध्ययन विधि के प्रकार (Kinds of Supervised Study Method)

1. **सम्मेलन योजना (The Conference Plan)-** इसमें कमजोर व पिछड़े हुए छात्रों को विद्यालय की छुट्टी के उपरान्त रोककर शिक्षक के निरीक्षण में विशेष अध्ययन कराया जाता है।
2. **विशिष्ट शिक्षक योजना (The Special Teacher Plan) -** इसके अंतर्गत अतिरिक्त विशिष्ट शिक्षकों की व्यवस्था करके छात्रों को विशिष्ट शिक्षण द्वारा अतिरिक्त सहायता व निर्देशन प्रदान किया जाता है।
3. **विभाजित कालांश योजना (The Dividend Period Plan) -** इस योजना में अनेक शिक्षकों को शिक्षण का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। एक शिक्षक पाठ्य-योजना निर्मित कराता है तो दूसरा शिक्षण कार्य कराता है, तीसरा निरीक्षण करता है। इसके अतिरिक्त कक्षा कालांशों को कई भाग में विभाजित किया जा सकता है।
4. **द्विकालांश योजना (The Double Period plan) -** इसमें विभाजित कालांश योजना के समान ही एक ही विषय-वस्तु के लिये दो समय चक्र लगातार दिये जाते है। पहले समय चक्र में शिक्षण कार्य कराया जाता है । तो दूसरे चक्र में छात्र निरीक्षण एवं निर्देशित अध्ययन करते हैं।
5. **सामयिक योजना (The Periodical Plan) -** इस योजना में छात्रों से दैनिक कार्य नहीं करवाकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि सामयिक आधार पर कार्य का निरीक्षण व निर्देशन किया जाता है।

5.1.6.2 निरीक्षित अध्ययन विधि के गुण (Merits of the Supervised Study Method)

1. इसमें व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था की जाती हैं
2. शिक्षक एवं छात्रों में मधुर संबंध स्थापित होते हैं
3. छात्रों में स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित होती है ।
4. कक्षा में अनुशासनहीनता की समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है ।
5. इस विधि में छात्रों को सक्रिय रखने के लिये व्यक्तिगत संलग्नता के सिद्धान्त का पालन होता है।

5.1.6.3 निरीक्षित अध्ययन विधि की सीमाएं (Limitation of the Supervised Study Method)

1. इस विधि में समय अधिक लगता है ।
2. छात्रों में केवल वाद-विवाद और परिचर्चा की आदत का विकास होता है ।
3. प्रतिभाशाली छात्र अधिक लाभान्वित नहीं होते है ।

5.1.7 इकाई विधि (The Unit Method)

यह विधि गैस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) पर आधारित है जिसके अनुसार किसी भी ज्ञान अथवा विषय-वस्तु को पहले पूर्ण रूप से देखा जाता है और फिर उसे छोटे-छोटे अंशों या उप-इकाईयों में विभाजित कर उसका अध्ययन किया जाता है। **डॉ हेनरी सी मॉरीसन** के अनुसार – "इकाई व्यवस्थित विज्ञान और कला का एक विस्तृत एवं सार्थक पहलू है।"

"Unit is a comprehrnsive and significant aspect of the environment of an organized science and an art"

–Henry C Morrison

'इकाई अधिगमकर्ताओं को प्रभावी परिणाम बनाने के लिये सूचनाओं एवं अनुभवों की एक संगठित व्यवस्था है।"

-वेस्ते एवं रॉस्की

"The Unit is an body of information and experience to effect significant outcomes for the learner"

– Wesley & Wronsky

5.1.7.1 इकाई विधि के सोपान (Steps of a Unit Method)

1. **खोज (Exploration)** - इसमें शिक्षक नयी इकाई के संबंध में छात्रों के पूर्व ज्ञान का पता लगाता है ।
2. **प्रस्तुतीकरण (Presentation) -** इसमें शिक्षक नवीन इकाई की विषय-वस्तु को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि छात्र इकाई की विषय-वस्तु को भली भांति समझ गये है।
3. **आत्मसातीकरण (Assimilation) -** छात्र इकाई की विषय-वस्तु का अध्ययन कर, आपस मे बातचीत कर अथवा लिखकर तथा शिक्षक से परामर्श कर आत्मसात करने का प्रयास करते हैं।
4. **संगठन (Organization) -** छात्र नवीन ज्ञान को आत्मसात करने के उपरान्त उसे लिखित रूप में संगठित करते हैं।
5. **अभिव्यक्ति (Recitation) -** इस हेतु निम्नलिखित दो विधियों को प्रयोग में लिया जाता है-

1. **आदर्श विधि (Ideal Practices) -** इसके अनुसार प्रत्येक छात्र को इकाई की विषय वस्तु को कक्षा के समक्ष उसी प्रकार प्रस्तुत करना होता है जिस प्रकार शिक्षक ने उसके समक्ष प्रस्तुत किया था।
2. **वास्तविक विधि (Actual Practice)** -इसमें कुछ छात्र इकाई का वाचन करते है, कुछ उसे लिखते हैं, और कुछ उस पर विचार विमर्श करते हैं। शिक्षक इनकी विभिन्न क्रियाओं के आधार पर यह निर्णय करते है कि छात्रों ने इकाई की विषय-वस्तु को किस सीमा तक ग्रहण किया है।

5.1.7.2 इकाई विधि के गुण (Merits of the units)

1. यह विधि ज्ञान की पूर्णता पर बल देती है।
2. छात्रों की रूचियों, प्रवृत्तियों और आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हैं ।
3. इस विधि में संपूर्ण पाठ्यक्रम को उपयुक्त एवं सार्थक इकाईयों में विभाजित कर अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता है ।
4. यह विधि स्वक्रिया को बढ़ावा देती है ।

5.1.7.3 इकाई विधि की सीमाएं (Limitation of the Unit Method)

1. समय अधिक लगता है।
2. इसका प्रयोग सभी पाठों के लिये नहीं किया जा सकता है।
3. इसकी सफलता शिक्षक की नियोजन करने की कुशलता पर निर्भर करती है।

5.1.8 स्त्रोत विधि (Source Method)

भूतकाल के इतिहास का पता लगाना एक जटिल प्रश्न है। इतिहास एक वैज्ञानिक विषय है अत: इतिहासकार निरर्थक व काल्पनिक कहानियों के आधार पर ऐतिहासिक बातों का निर्माण नहीं कर सकते हैं उसे इतिहास लिखने के लिये वास्तविकता का पता लगाना जरूरी है। इतिहास का आधार तथ्य है। उस समय जो व्यक्ति उपस्थित थे उन्होंने जो घटनायें देखी, उन्हें लिख कर रखा अथवा उनके पत्र व्यवहार से प्राप्त जानकारी, इस प्रकार के प्रमाण चाहे वे लिखित हों अथवा अलिखित, हम इन्हें तथ्य कहते हैं । ये तथ्य ही हमारे इतिहास के स्त्रोत हैं।

एस.वी.सी.ऐया - ' स्त्रोत भूतकालीन घटनाओं के द्वारा छोड़े गये शेष चिन्ह हैं। यद्यपि इतिहास की घटनायें वास्तविक रूप में घटित होती है, फिर भी वे अधिक समय तक वास्तविकताएँ नहीं रह पाती। उनके द्वारा छोड़े गये शेष चिन्ह ही उन्हें वास्तविकता प्रदान करते हैं। इतिहासकार इन्हीं शेष चिन्हों के आधार पर कार्य करता है। वह इन शेष चिन्हों "सहायता से अतीत की घटनाओं का तार्किक एवं क्रमबद्ध वर्णन करने में समर्थ होता है।"

S.V.C Aiya “The Source are the trace left behind by posts events. The events of History are no longer realities, though they once actually happened, traces left by them, make them real. A Historian works directly upon these traces and through them he works upon the events. He reconstructs a systematic and logical accounts of the past events with the help of sources.”

जैसा कि इतिहास के स्रोत भूतकाल के लोगों द्वारा छोड़े गये शेष चिन्ह हैं, ये शेष चिन्ह विभिन्न रूपों में पाये जाते हैं। सूत्रों के प्रकार -

1. पुरातत्वीय सूत्र - Archeological Source.
2. साहित्यिक सूत्र - Literary Source.
3. मौखिक परम्परायें - Oral Traditions.

पुरातत्वीय सूत्र को तीन भागों में बांटा जाता है -

1. **स्मारक सम्बन्धी (Monumental Sources) -** इसमें भवन, मूर्तियाँ, बर्तन आदि तथा खुदाई में इस प्रकार की मिली हुई सामग्रियाँ।
2. **पुरालेख सम्बन्धी स्त्रोत (Epigraphics) -** इसमें पत्थरों, स्तम्भों, चट्टानों, ताम्रपत्रों, भवनों की दीवारों आदि के लेख एवं मूर्तियाँ आती हैं।
3. **मुद्रा विषयक स्त्रोत (Numismatics) -** विभिन्न काल के सिक्के उनके अध्ययन से इतिहास की सामग्री प्राप्त होती है।

साहित्यिक स्त्रोत - इसके भी तीन भाग हैं -

1. **धार्मिक साहित्य (Religious Literature) -** वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, त्रिपिटक आदि।

2. **लौकिक साहित्य (Secular Literature) -** इसे भी दो भागों में बांटा है -

(क) **निजी साहित्य (Private Literature) -** इस प्रकार का साहित्य वह साहित्य है जिसकी रचना किसी लेखक ने व्यक्तित्व रूप से की हो। इस प्रकार के साहित्य में कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम, विशाखदत्त का 'मुद्रा राक्षस', कौटिल्य का अर्थशास्त्र, बाबर का बाबरनामा आदि।

(ख) **सार्वजनिक साहित्य (Official Literature) -** राजकीय आदेश, सनद फरमान, न्यायालय के निर्णय आदि आते हैं।

विदेशी प्रमाण (Foreign Testimony) - विदेशियों के विवरण इतिहास के प्रमुख स्त्रोत है। इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत यूनानी लेखकों - मेगस्थनीज, फाह्यान आदि की कृतियों का उल्लेख किया जा सकता है।

मौखिक परम्परायें (Oral Traditions) - मौखिक परम्परायें इतिहास की प्रमुख घटनाओं तथा स्थानों के नामों के सम्बन्ध में बहुत सहायक है।

यह विधि इतिहास शिक्षण हेतु प्रासंगिक है क्योंकि इसके आधार पर अतीत का अध्ययन प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इतिहास के विभिन्न स्त्रोतों से छात्रों का साक्षात्कार कराने से विषय को ढंग से समझाया जा सकता है। यह विधि नवीन खोज, अध्ययन एवं प्रयोगों के आधार पर प्रत्यक्ष, वास्तविक एवं स्थायी अनुभव प्रदान करती है।

5.1.8.1 स्त्रोत के प्रकार (Kinds of Sources) - एक विभाजन इस प्रकार भी है -

1. **प्राथमिक स्त्रोत (Primary Sources) -** इसके अंतर्गत प्रत्यक्ष अवशेष आते हैं जैसे स्मारक, मूर्तियां, खण्डहर, अस्त्र-शस्त्र, वस्त्र, सिक्के, शिलालेख, मूल हस्तलिपियां, यंत्र

आदि। यह सामग्री विभिन्न संग्रहालयों तथा स्थानों पर भ्रमण कर प्राप्त की जा सकती है।

2. **गौण स्त्रोत (Secondary Sources) -** इसके अंतर्गत अप्रत्यक्ष सामग्री आती है जैसे पुस्तकें, जीवन-चरित्र, आत्म कथाएं, प्रतिवेदन आदि।

5.1.8.2 इतिहास शिक्षण में स्त्रोत के उपयोग (Use of Sources in History Teaching)

1. **पठन पूर्व उपयोग (Pre- Lesson use) -** शिक्षक पाठ को पढ़ाने से पूर्व स्त्रोत को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर उनमें रूचि जागृत कर सकता है। प्रस्तुत स्त्रोत के संबंध में प्रश्न कर अधिक जिज्ञासा उत्पन्न की जा सकती है।
2. **पठन मध्य उपयोग (Mid-Lesson Use) -** पाठ को पढ़ाने के दौरान भी शिक्षक स्त्रोत का उपयोग कर सकता है। इसमें विद्यार्थी संदर्भित सोच विकसित कर सकते है । उदाहरण के लिये औरंगजेब पर पाठ पढ़ाने के दौरान शिक्षक औरंगजेब द्वारा लिखे गये पत्र या उसके समय के सिक्के छात्रों के समान प्रस्तुत कर उनमें पाठ के प्रति अधिक उत्साह उत्पन्न कर सकते है।
3. **पठन पश्चात् उपयोग (Post-Lesson Use)** - इतिहास के पाठ पढ़ाने के बाद शिक्षक स्त्रोत का उपयोग कर छात्रों से उसके संबंध में प्रश्न कर सकते है। इस प्रकार विषय के संबंध में रूचि को बनाये रखा जा सकता है।

5.1.8.3 स्त्रोत विधि के गुण (Merits of the Source Method)

1. छात्रों को स्वयं सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
2. छात्रों को वास्तविकता की खोज कराने का अवसर प्रदान करती है।
3. छात्रों के ज्ञान भंडार में सहायक है।

5.1.8.4 स्त्रोत विधि की सीमाएं (Limitation of the Source Method)

1. इस विधि में समय व खर्च अधिक लगता है।
2. इस विधि से खोजे गये स्त्रोत की सत्यता का पता लगाना कठिन है।

उदाहरण :-

प्रकरण - मुगल साम्राज्य का पतन

इस पाठ से निम्न बिन्दुओं पर समझ बढ़ाई जा सकती है-

1. मुगल साम्राज्य का पतन किसी एक आकस्मिक घटना के कारण नहीं हुआ था वरन् यह एक लम्बी प्रक्रिया के कारण हुआ था।
2. मुगलों द्वारा विकसित किया गया प्रशासनिक तंत्र उनके पतन का मुख्य कारण रहा था।
3. उनके भूमि संबंधी नीति भी इसका प्रमुख कारण रही थी।
4. औरंगजेब द्वारा अकबर के सिद्धान्तों व नीति का दरकिनार करना पतन का कारण रहा।
5. कमजोर व नाकाबिल उत्तराधिकारी भी मुगल साम्राज्य के पतन के लिये उत्तरदायी थे।

5.1.8.5 स्त्रोत का उपयोग (Use of Sources)

इस विषय को रूचिकर बनाने के लिये निम्नांकित स्त्रोत का उपयोग किया जा सकता है-

1. औरंगजेब द्वारा लिखे गये विभिन्न पत्र व जारी फरमानों के अंश।

2. मान्दी द्वारा औरंगजेब की नीतियों के संबंध में की गई व्याख्या के अंश।
3. भीमसेन द्वारा मुगल काल में जागीरदारी तंत्र के संबंध में बताये गये तथ्य।
4. मुगल काल में किसानों की स्थिति के संबंध में बर्नियर द्वारा बताये गये अंश।
5. काफी खान द्वारा मुगल काल में महिलाओं की स्थिति के बारे में बताये गये अंश।

शिक्षक द्वारा इन सभी स्त्रोतों को कक्षा में प्रस्तुत कर छात्रों के अनेक समूह बनाकर प्रत्येक पर अध्ययन व प्रतिवेदन चाहा जा सकता है। इन प्रतिवेदनों पर बाद में पूर्ण कक्षा द्वारा चर्चा व वाद विवाद कर समग्र शान अर्जित किया जा सकता है।

5.1.9 विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि (Analytic and Synthetic Method)

इस विधि में सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा पाठ्य-वस्तु को छोटे छोटे खंडों में विभाजित कर उसका विश्लेषण किया जाता है। फिर विश्लेषित खंडों को पुन: जोड़कर या संश्लेषण कर व्यवस्थित रूप दिया जाता है। इस प्रकार इस विधि में पहले 'संपूर्ण से अंश की ओर (From Whole to the Parts)" और फिर "अंश से संपूर्ण की ओर (From parts to whole)" नामक शिक्षण सूत्र का पालन किया जाता है।

5.1.9.1 विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि के गुण (Merits of the Analytic and Synthetic Method)

1. इसमें छात्र सक्रिय रहते हैं।
2. यह विधि शिक्षण के सभी स्तरों पर उपयोगी है।
3. इसमें किसी भी स्तर की विषय-वस्तु को बोधगम्य बनाया जा सकता है ।

5.1.9.2 विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि की सीमाएं (Limitation of the Analytic and Synthetic Method)

1. इस विधि की सफलता प्रश्नों की गुणात्मकता पर निर्भर करती है।
2. इसमें अच्छे विश्लेषण एवं संश्लेषण के लिये बहुत कुशल शिक्षक की आवश्यकता रहती है।
3. प्रश्न कौशल में दक्ष शिक्षक ही इस विधि का सही प्रयोग कर सकते हैं।

5.1.10 कहानी विधि (Story-Telling Method)

कहानियों में छात्रों का एक स्वाभाविक रूचि रहती है। इतिहास शिक्षण में तो यह विधि और रूचिकर हो जाती है। इतिहास के तथ्यों का जीवन गाथाओं व कहानियों के रूप में अधिक प्रभावी तरीके से पढ़ाया जा सकता है। यह विधि 8 से 10 वर्ष के छात्रों के लिये बहुत उपयोगी है। इसमें विषय से संबंधित छोटी छोटी कहानियों व किस्सों को एकत्रित कर पूर्ण विषय-वस्तु को रूचिकर बनाया जा सकता है।

5.1.10.1 कहानी विधि के गुण (Merits of the Story- telling Method)

1. यह विधि कम खर्चीली है।
2. इसमें छात्रों की रूचि बनी रहती है।
3. इसमें छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास होता है।
4. छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करने का अवसर मिलता है।

5. छात्रों को अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि का भी अवसर मिलता है।
6. छात्रों में सद्गुणों का भी विकास होता है।
7. इस विधि से छात्रों के आचरण में आदर्शों का निर्माण होता है जो उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र के विकास में सहायक होता है।

5.1.11 नाट्यीकरण विधि (Dramatization Method)

इस विधि में अभिनय के माध्यम से इतिहास के वास्तविक प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है। छात्रों के सक्रिय सहयोग से उन्हें पढ़ाने की यह उत्तम विधि है। इससे पाठन को रूचिकर बनाया जा सकता है। जैसे-पद्मिनी के जौहर का अभिनय, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का युद्ध आदि।

5.1.11.1 नाट्यीकरण विधि के गुण (Merits of the Dramatization Method)

1. इस विधि में छात्रों का स्वयं अभिनय कर अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है।
2. छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास होता है।
3. इस विधि से उच्चारण दोष भी दूर होता है।
4. छात्रों के अध्ययन में वास्तविकता आती है।
5. यह विषय वस्तु को रोचक बनाता है।

5.2 इतिहास शिक्षण हेतु विशिष्ट तकनीक (Specific Techniques for Teaching History)

"All techniques should be in line with democratic process and related to the goals desired in the study of a topic. Techniques are employed for getting the learning under way with guidance from teacher. They should be selected as a means of serving the best purpose of a particular time with the resultant of growth for the individual"

-M.P Moffatt

इतिहास शिक्षण हेतु निम्न विशिष्ट तकनीकों का उपयोग शिक्षण को रूचिकर ग्रहण योग्य प्रभावी व सहज बनाने हेतु किया जाता है।

5.2.1 प्रश्न तकनीक (Questioning Technique)

इस तकनीक में प्रश्नों के माध्यम से छात्रों के ज्ञान की परीक्षा ली जाती है । आधुनिक शिक्षण प्रक्रिया में इस तकनीक से शिक्षण के अनेक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है।

5.2.1.1 प्रश्न तकनीक के उद्देश्य (Objectives of questioning Technique)

1. छात्रों में जिज्ञासा व रूचि बढ़ाना।
2. अधिगम की प्रक्रिया में मार्गदर्शन करना।
3. अनुसंधान व आविष्कार को प्रोत्साहित करना।
4. छात्रों के ज्ञान को परखना।
5. मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करना।

6. विचार प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना व दिशा देना।

5.2.1.2 प्रश्नों के प्रकार (Types of Question)

इस तकनीक को निम्न प्रकार में बांटा जा सकता है -

1. **परिचयात्मक प्रश्न (Introductory Question) -** प्रारंभिक अवस्था में इस प्रकार के प्रश्न उपयोगी होते है। मुख्य पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों को विषय के प्रति जागरूक करने और नवीन जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करने हेतु इस प्रकार के प्रश्न किये जा सकते है।

विषय 'पानीपत का तृतीय युद्ध" पर निम्न परिचयात्मक प्रश्न किये जा सकते है-

1. पानीपत का प्रथम युद्ध किस किस के मध्य हुआ था?
2. उस युद्ध का क्या प्रभाव हुआ था?
3. पानीपत का द्वितीय युद्ध किस किस के मध्य हुआ था?
4. उस युद्ध का क्या प्रभाव हुआ था?

और इन प्रश्नों से छात्रों की पूर्व जानकारी परखने व उनकी जिज्ञासा बढ़ाने के बाद शिक्षक अपने पाठ का उद्देश्य छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

2. **विकासात्मक प्रश्न (Developing Question) -** इस प्रकार के प्रश्नों से पाठ को आगे बढ़ाया जाता है या उसे विकसित किया जाता है।

उदाहरण -

1. औरंगजेब द्वारा मराठा शक्ति को परास्त करने के लिये किस दिशा की ओर कूच किया गया?
2. सम्राट समुद्रगुप्त ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिये किस दिशा में आक्रमण किया?
3. अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी विजय पताका किस दिशा में फहराई?
4. उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते है?

इस प्रकार शिक्षक यह समझा सकता है कि अक्सर उत्तर में स्थित सम्राटों द्वारा दक्षिण दिशा में ही अपने साम्राज्य का विस्तार किया गया। पानीपत के युद्ध के समय दक्षिण में मराठा शक्ति का आधिपत्य था।

3. **पुनरावृत्ति प्रश्न (Recapitulative Question) -** इस प्रकार के प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य पढ़ाये गये पाठ को दोहराना है। इससे छात्रों को पाठ को समझने का एक और अवसर मिल सकता है ।

उदाहरण - उपरोक्त विषय पर निम्न प्रश्न किये जा सकते है -

1. अब्दाली को भारत पर आक्रमण करने के लिये किसने बुलाया था?
2. नजीब खान ने अब्दाली को क्यों बुलाया था?
3. राजपूतों ने मराठा को सहयोग क्यों नहीं दिया था?
4. इस युद्ध का मराठा शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ा था?

4. **विचारोत्तेजक प्रश्न (Thought Provoking Question) -** प्रत्येक अध्याय के शिक्षण उपरान्त छात्रों की मानसिक क्षमता बढ़ाने के लिये इस प्रकार के प्रयत्न किये जा सकते है।

उदाहरण -

पानीपत के युद्ध के समय मराठा और नजीब खान के मध्य किस प्रकार का रिश्ता था?

5. **परीक्षात्मक प्रश्न (Testing Question)** - इस प्रकार के प्रश्नों से यह ज्ञात किया जाता है कि छात्रों ने विषय को कितना ग्रहण किया है।

उदाहरण -

1. पानीपत का तृतीय युद्ध किन शक्तियों के बीच हुआ था?
2. इस युद्ध के क्या प्रमुख कारण रहे थे?
3. इस युद्ध के क्या प्रभाव हुए थे?

6. **समस्यात्मक प्रश्न (Problematic Question)-** इस प्रकार के प्रश्न पाठ के प्रारम्भ या मध्य में पूछे जा सकता है। इससे छात्रों का दिमाग विषय के प्रति उत्तेजित ले सकेगा।

1. गुप्त काल को स्वर्णिम काल क्यों कहते है?
2. अकबर को महान क्यों कहा जाता है ?
3. सन् 1857 के सैनिक विद्रोह को स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम क्यों कहते है?

5.2.1.3 प्रश्न तकनीक में ध्यान रखने योग्य बिन्दु (Points to remember in Questioning Technique)

1. प्रश्न सरल, निश्चित व छोटे होने चाहिये।
2. छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार ही प्रश्न की भाषा होनी चाहिये।
3. प्रश्न ऐसे हों जिससे सभी छात्र विचार करने लगे।
4. प्रश्न विषय से संबंधित होने चाहिये।
5. प्रश्नों में पाठ्य पुस्तक में लिखे शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहिये।

5.2.2 उदाहरण तकनीक (illustration Technique)

मौखिक शिक्षण में इस तकनीक का उपयोग अच्छे ढंग से हो सकता है । उदाहरण के माध्यम से छात्रों का ध्यान व रुचि बढ़ाई जा सकती है । इतिहास शिक्षण में इसका उपयोग काफी हो सकता है ।

5.2.2.1 उदाहरण के प्रकार (Types of Illustration)

1. **मौखिक उदाहरण (Oral Illustration)-** सामान्य सिद्धान्तों को समझाने के लिये इसका उपयोग किया जा सकता है । इतिहास शिक्षक को ध्यान रखना चाहिये कि उदाहरण सरल, आसानी से ग्रहण करने योग्य व वास्तविक जीवन से जुड़े हुए होने चाहिये ।

2. **दृश्य उदाहरण (Visual Illustrations) -** इससे छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास होता है। इस हेतु इतिहास से संबंधित किसी चित्र, मॉडल, मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र आदि का उपयोग किया जा सकता है।

5.2.3 नाट्यीकरण तकनीक (Dramatization Technique)

यह इतिहास शिक्षण की नवीनतम तकनीक हैं इसमें किसी घटना का नाट्यीकरण कर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें अनेक छात्र सम्मिलित होते है। छात्रों की इन्द्रियों को प्रशिक्षित करने के लिये यह तकनीक काफी उपयोगी है। छात्रों में इससे विषय के प्रति आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है।

5.3 विषय के विशिष्ट कौशल
Subject Specific Skill

"The teacher of History must have the power of realizing the dead post in living present, in fact, have a touch of imagination as well as vastly larger amount of positive knowledge. Then he will attempt to pile upon the memory of his class."

-Lord Bryce

"The teacher of history must be a person of wide culture. He should be well-read, and there can be not doubt that as a messenger of man's cultural heritage he should be familiar with the great works of the world's literature and he should know something about the work of the writers of today."

-Prof C P Hill

"What is needed foremost in the history teacher is his keeping an open mind. He must not be dogmatic or fanatical in his views nor must he be impervious to new facts and ideas as they are thrown by modern research. Besides having a good knowledge of his subject, a wild imagination, a romantic sense of history and fair powers of sketching, he must be a good story teller, especially in the initial stages. Have a grip of method, and that cultured catholicity of mind that comes from a proper study of History."

-Prof K D Ghose

अन्य विषयों की भाँति इतिहास विषय के भी अपने कुछ विशिष्ट कौशल है। कौशल वे क्रियाएँ हैं जिनके द्वारा सीखने वाले के व्यवहार में परिवर्तन होता है। इतिहास शिक्षण के कुछ विशिष्ट कौशल है।

5.3.1 प्रश्न कौशल - (Question Skill)

5.3.2 दृष्टान्त उदाहरण कौशल - (Illustration with examples Skill)

5.3.3 श्यामपट्ट कौशल - (Black Board writing Skill)

5.3.4 उद्दीपन परिवर्तन कौशल - (Stimulus Variation Skill)

5.3.5 पुनर्बलन कौशल - (Re-inforcement Skill)

5.3.6 व्याख्यान कौशल - (Explanation Skill)

5.3.7 कहानी कौशल - (Story Telling Skill)

5.3.1 प्रश्न कौशल (Question Skill)

इतिहास में प्रश्नों का अत्यधिक महत्व है, विभिन्न प्रकार के प्रश्न विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। उदाहरणार्थ - प्रस्तावना प्रश्न, खोजपूर्ण प्रश्न, बोध प्रश्न, विकासात्मक प्रश्न, पुनरावृत्ति प्रश्न, मूल्यांकन प्रश्न। इन सभी प्रश्नों का स्वरूप, करने का तरीका, अवधि एवं प्रयोग भिन्न-भिन्न होता है। प्रश्नों के द्वारा विद्यार्थी सक्रिय बना रहता है, साथ ही उच्च मानसिक शक्तियों का विकास होता है। प्रश्नों का चयन, निर्माण, बनावट व प्रस्तुतीकरण इतिहास को सजीव बना देता है। शिक्षक शिक्षार्थी अन्तःक्रिया होने से कक्षा-कक्ष वातावरण अनुशासित रहता है। ऐतिहासिक तथ्यों का अन्वेषण भी प्रश्नों के द्वारा भली प्रकार किया जा सकता है। प्रश्न इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में सहायक होते हैं। प्रश्नों के द्वारा अतीत को वर्तमान से जोड़ा जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रश्न कौशल किसी भी विधि के अन्तर्गत आसानी से प्रयोग में लाया जा सकता है. जिससे यह कौशल, तकनीक बन जाता है जिससे शिक्षण प्रभावी बनता है।

5.3.2 दृष्टान्त उदाहरण कौशल (Illustration with examples Skill)

इतिहास अतीत की घटनाओं के उदाहरण हैं और इन उदाहरणों को दृश्य साधन यथा - चित्र, मॉडल, पावर पॉइंट प्रजेन्टेशन (Power Point Presentation) अथवा Electronic Media के द्वारा सजीव इतिहास को रोचकता के साथ विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हैं। इसके साथ ही विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण भली प्रकार से करने के लिए दृष्टान्त उदाहरण का प्रयोग ज्ञान में अधिक वृद्धि करता है। ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं को उदाहरण के माध्यम से छात्रों को विषय की गहनतम जानकारी प्रदान करता है।

इस कौशल का प्रयोग भी अन्य कौशल की भाँति आवश्यकता तथा सफलता के साथ किया जाना चाहिए, सार्थकता इसका प्राण है और निरर्थक बकवास इसकी हत्या । अत: दृष्टान्त उदाहरण एक तर्कयुक्त कौशल है।

5.3.3 श्यामपट्ट लेखन कौशल (Black Board Writing Skill)

श्यामपट्ट सबसे सुगम व सबसे अधिक प्रयोग में आने वाला वह उपकरण है जिसे कम मेहनत के साथ आसानी से प्रयोग में लाया जा सकता है। श्यामपट्ट पर सूचनाओं एवं घटनाओं, महत्वपूर्ण तिथियों एवं तथ्यों को अंकित करने, समय सारणी बनाने, क्रियात्मक कार्य (Functional Work) करने, वंशवृक्ष बनाने, लाइनचार्ट बनाने, संबंध स्थापित करने, मार्ग दर्शाने, विद्यार्थी का ध्यान आकर्षित करने आदि कार्य के लिए शिक्षण एवं शिक्षार्थी के सहयोग से किया जा सकता है।

श्यामपट्ट लेखन कौशल का प्रयोग तभी महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होगा जब इसका प्रयोग उचित तरीके से किया जाए। श्यामपट्ट पर सुन्दर, सुडौल, सीधी लाइनों में, उचित दूरी, एक तरफ खड़े होकर लिखना, लिखते समय तथ्यों को बोलना, उस पर लिखे हुए को सावधानीपूर्वक मिटाना,

लिखने के समय का उचित प्रबंधन आदि सावधानियाँ कक्षा-कक्ष अन्त:क्रिया पर स्थायी प्रभाव छोड़ती है। विद्यार्थी के पास प्रमाण के रूप में श्यामपट्ट कार्य व सार लिखित रूप में रहता है तथा सुनने में अधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करने से यह अपनी विशिष्टता रखता है। श्यामपट्ट लेखन अध्यापक के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि शिक्षार्थी के लिए।

5.3.4 उद्दीपन परिवर्तन कौशल (Stimulus Variation Skill)

उद्दीपनों का इतिहास शिक्षण में बहुत अधिक योगदान है, बालक जब किसी तथ्य (Fact) को विभिन्न भावनाओं तथा मुद्राओं के द्वारा अर्थग्रहण करता है तो उसका अपना अलग ही महत्व होता है। इतिहास में अनेक ऐसे स्थल आते हैं जहाँ उद्दीपन अथवा प्रेरक बालकों में किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के प्रति एक सोच उत्पन्न करता है, भावनाएँ जिनकी मौखिक अभिव्यक्ति उतनी प्रभावी नहीं होती जितनी मुखाकृति द्वारा प्रभावी बनती है। ऐतिहासिक घटनाओं का मार्मिक एवं अर्थपूर्ण चित्रण जैसे दया, सहानुभूति, त्याग, वीरता, नेतृत्व आदि गुण उद्दीपनों द्वारा आसानी से स्पष्ट किए जाते हैं।

उद्दीपनों का चयन, प्रयोग तभी सार्थक हैं जब उनका सफलतापूर्वक तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाए। उदाहरण के लिए झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरगाथा अथवा पदमिनी के जौहर का मुख मुद्राओं द्वारा अभिव्यक्ति श्रोताओं व सीखने वाले में जोश एवं उत्साह भर देती है। उद्दीपनों के परिवर्तन द्वारा इतिहास गाथाओं का वर्णन अतीत को ताजा व सजीव कर देता है। उद्दीपन परिवर्तन कौशल का अभ्यास एवं प्रयोग सीखने के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होने के साथ-साथ शिक्षण को रोचक एवं बोधगम्यता प्रदान करता है।

5.3.5 पुनर्बलन कौशल (Re-inforcement Skill)

यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि कोई भी व्यक्ति किसी कार्य को तब निरन्तर जारी रखता है जब उसे उस कार्य के लिए तुरन्त उचित पुनर्बलन प्रदान किया जाए। सीखने के सिद्धान्तों में 'प्रभाव एवं परिणाम का' सिद्धान्त सीखने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण तथ्य है । कार्य को पूर्ण होने तक उसे रुचि व लगन के साथ करते रहने के लिए विद्यार्थी को पुनर्बलन प्रदान किया जाता है। यह पुनर्बलन शाब्दिक (Verbal) तथा अशाब्दिक (Non-Verbal) सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रकार का होता है।

पुनर्बलन का सकारात्मक स्वरूप का प्रयोग ही हानि से बचाता है अत: जहाँ तक संभव हो सकारात्मक पुनर्बलन (Positive Reinforcement) का प्रयोग किया जाना चाहिए किन्तु इसका अनावश्यक तथा अत्यधिक उपयोग भी नहीं करना चाहिए। समय पर दिया गया उचित व पर्याप्त पुनर्बलन सीखने को प्रेरित करता है, साथ ही अलग-अलग प्रकार के सकारात्मक पुनर्बलन का उपयोग करना चाहिए सदैव एक प्रकार का पुनर्बलन 'तकिया कलाम' बन सकता है। शाब्दिक अशाब्दिक पुनर्बलन कार्य के परिणाम पर निर्भर करता है। इसलिए पुनर्बलन कौशल का उपयोग इतिहास शिक्षण में उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति में विशेष महत्व रखता है, विशेषत: भावात्मक पक्ष (Affective Domain) के परिवर्तन के लिए।

5.3.6 व्याख्यान कौशल (Explanation Skill)

इतिहास अतीत की घटनाओं की वर्तमान में जानकारी है अर्थात् जो कुछ घटित हो चुका है उसकी जानकारी विद्यार्थियों को देन के लिए व्याख्यान एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण कौशल है। व्याख्यान का प्रयोग आरम्भिक सूचनाओं (First-hand Knowledge) पर आधारित होता है। इतिहास वे दस्तावेज अथवा तथ्य हैं जो परिवर्तित नहीं किए जाते ये शुद्ध तथा प्रामाणिक होते हैं। इतिहास उदाहरणों का पुंज (Cluster) हैं अर्थात् किसी काल, देश अथवा व्यक्ति से संबंधित जानकारियाँ व्याख्यान के माध्यम से सीखने वाले तक पहुँचाई जाती है। व्याख्यान का प्रयोग केवल मौखिक कथन नहीं है अपितु इसमें रोचक एवं प्रभावी तकनीकी व प्रविधियों का उपयोग कर इसे स्मरण स्तर से चिन्तन स्तर तक पहुँचाने में मदद मिलती है।

व्याख्यान को प्रभावी बनाने के लिए इसमें चित्र अथवा श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग भी किया जा सकता है। ऐतिहासिक तथ्यों के रूप में प्राप्त सामग्री यथा-इमारतों, सिक्कों, बर्तन, अवशेष, कला एवं संस्कृति आदि की जानकारी दिखाते हुए की जा सकती है। व्याख्यान की भाषा, स्तर तथा अवधि इस कौशल की मेरूदण्ड है। इतिहास शिक्षण में यह सबसे अधिक प्रयोग में आने वाला कौशल है -जो पूर्व ज्ञान तथा नवीन ज्ञान को जोड़कर उपयोगी तथ्य व्यवहारिक बनाता है।

5.3.7 कहानी कौशल (Story Telling Skill)

कहानी अपने आपमें रोचक कौशल है इसे कौशल इसलिए कहा जाता है क्योंकि कहानी कहना भी एक कला एवं शैली है। छोटे बच्चों में तो यह कौशल और भी लोकप्रिय है, क्योंकि कहानी बालकों को मनोवैज्ञानिक संतुष्टि प्रदान करती है।

कहानी कौशल का उपयोग तभी सार्थक है, जब इसका सावधानीपूर्वक उपयोग किया जाए। कहानी कौतुहलपूर्ण के साथ सत्य पर आधारित हो। कहानी कहने का ढंग भी अधिक महत्वपूर्ण है। इतिहास शिक्षण में कहानी कौशल का विशेष महत्व है। क्योंकि इतिहास का संग्रह कहानियों व कथाओं के रूप में रहता है। कहानी किसी घटित हुई घटना की पुनरावृत्ति प्रस्तुति है। शासकों व उनके शासन के किस्से कहानी के रूप में उस काल की विशेषताओं, रीति-रिवाजों, संस्कृति, राजनीति, सभ्यता आदि का वर्णन है । कहानी से नीति तथा नियमों की भी जानकारी मिलती है, उदाहरण के लिए गद्दी के उत्तराधिकार को वस्तुस्थिति, राज्य के खजाने से जुड़े मुद्दे आदि ।

कहानी कौशल का आनंद तथा रोचक प्रस्तुतीकरण मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ता है। कहानी से इतिहास के अतीत के गौरव की जानकारी प्राप्त होती है । इतिहास शिक्षक को इस कौशल का निपुण होना चाहिए तभी वह इसके प्रयोग के साथ न्याय कर सकेगा।

इस प्रकार इतिहास शिक्षण के उपरोक्त विशिष्ट कौशल है जिसका उपयोग स्वभावतः: विषय वस्तु की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षक द्वारा किया जाता है और शिक्षक का यह प्रयोग इतिहास के विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति रुचि तथा वैज्ञानिक सोच का विकास करता है। इतिहास का ज्ञान तथा इतिहास के उद्देश्यों की प्राप्ति इन कौशलों के प्रयोग द्वारा ही संभव है क्योंकि शिक्षण के लिए किसी भी विधि का उपयोग किया जाए उसमें कौशल का प्रयोग होने से ही ज्ञान सीखने वाले तक पहुँचता है। इतिहास के ये विशिष्ट कौशल इतिहास को सजीव एवं रोचक तथा बोधगम्य बनाते हैं।

5.4 सारांश
(Summary)

सभी विधियों, तकनीकों व विशिष्ट कौशल के गुणों को विस्तार से जान लेने के बाद यही समझ में आता है कि इतिहास शिक्षक हेतु किसी एक विधि के उपयोग को महत्व नहीं दिया जा सकता है। परन्तु इतिहास को समझने व सीखने के मार्ग को इन सब विधियों को आवश्यकतानुसार उपयोग में लेकर रोचक और मनोरंजक -बनाया जा सकता है। यह तथ्य काबिले-गौर है कि इतिहास की घटनाओं को तार्किक व तथ्यात्मक विवेचन व प्रस्तुतीकरण उतना ही आवश्यक है जितना की किसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के संबंध में आवश्यक है। छात्रों की अपने समाज, सभ्यता, देश आदि के संबंध में सही समझ उसकी सोच व भावी क्रिया कलापों को बहुत अधिक प्रभावित करती है। इस दृष्टि से देखा जाये तो इतिहास विषय को राष्ट्र निर्माण हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय कहा जा सकता है। और इसकी इसी महत्ता के अनुसार इसे गंभीरता से लिया जाना आवश्यक है। इसमें शिक्षक की एक बहुत ही बड़ी भूमिका है । इतिहास के शिक्षक का बहुत विशाल व्यक्तित्व, अत्यन्त गूढ़ व वैचारिक दिमाग होना चाहिये । वह एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जो अपने स्वयं के विचारों, सोच, धर्म, संस्कृति आदि से प्रभावित हुए बिना इतिहास की विवेचना व विश्लेषण कर सके । और अपने ज्ञान को समस्त प्रभावी तकनीकों व विधियों के माध्यम से छात्रों में स्थापित कर सके । शिक्षक अपने कौशल से, सृजनात्मक शिक्षक से छात्रों में इतिहास के प्रति जिज्ञासा व उत्साह संचारित कर सकते है ।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियाँ कौन कौन सी हैं ? किसी एक विधि का विस्तार से वर्णन कीजिये।
   What are the different methods of teaching History? Explain any one of them in detail.
2. इतिहास शिक्षण की परम्पगत विधियों के नाम लिखिए। क्या आपके विचार मे परंपगत विधियाँ आधुनिक विधियों से बेहतर हैं? कारण सहित विस्तार कीजिये।
   Write names of traditional and modern method of teaching History. In your opinion, are traditional teaching method better than modern ones? Explain in detail with suitable reasons.
3. इतिहास शिक्षण मे स्रोत विधि क्या है? इतिहास का पाठ पढ़ाने मे आप इसका उपयोग कैसे करेंगे? उदाहरण देकर स्पष्ट करे।
   What is the source method of Teaching History? How would you use thisa method in teaching lesson in history? Explain by a suitable Illustration.

4. इतिहास शिक्षण हेतु व्यखान विधि के गुण व सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिये?

Critically analyse the merits and limitation of lecture method of teaching History.

5. इतिहास शिक्षण मे योजना विधि को उदाहरण के साथ विस्तार से समझाये । इस विधि के गुण, सीमाएं भी बताइये।

Explain in detail by an example the Project Method of teaching History, Also mention the merits and limitation of the method.

6. इतिहास शिक्षण में समस्या-समाधान विधि के सोपान को उदाहरण के साथ बताइये । यह भी बताईये कि इस विधि के प्रयोग में किन-किन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

Explain by example the steps of a Problem Solving Method of Teaching History. Also explain the point which should be specially taken care of in this method.

7. निरीक्षित-अध्ययन विधि क्या है? इसके विभिन्न प्रकार तथा इसके गुण व दोष बताईये?

What is supervised Study Method? Explain its various kinds and its merits and limitations.

8. इतिहास शिक्षण में इकाई विधि का विस्तार से वर्णन किजिये । इस विधि के उपयोग हेतु दीजिये।

Explain in details the unit Method of Teaching History. Give suggestion regarding to use of this method.

9. आपके मत में इतिहास शिक्षणा की सर्वोत्तम विधि कौन सी है? विभिन्न विधियों को अध्ययन कर अपने मत को स्पष्ट करें।

Which is the best method of teaching history in your opinion? Clarify your opinion by comparatively studying different method of teaching history.

10. इतिहास शिक्षण में कौन कौन सी विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जाता है? उन माध्यमिक स्तर पर सबसे उपयुक्त तकनीक का वर्णन कीजिये ।

What different techniques are used to teaching of History? Describe the best technique at Senior Secondary level.

11. प्रश्न तकनीक से आप क्या समझते है प्रश्न करने के उद्देश्य एवं विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ।

What do you understand by questioning technique? Throw light on the objectives and characteristics of Questioning Technique.

12. इतिहास के कौंन-कौन से विशिष्ट कौशल है? इनका उपयोग इतिहास शिक्षण में किस प्रकार किया जा सकता है?

What are specific Skill of History? How are they used in History teaching?

5.5 संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Das, Tragi & Verma — Teaching of History
2. Sharma, Vasistha & Tiwari — इतिहास शिक्षण
3. Kochar, S.K — Teaching of History
4. Sharma, G R — इतिहास शिक्षण
5. Dikshit & Baghela — इतिहास शिक्षण
6. Chabra, GS — Advances Study in History of Modern India
7. Michael, Edwards — History of India

इकाई-6

इतिहास शिक्षण में संचार साधन एवं संचार साधनों का समाकलन

Media and Media Integration in History Teaching

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

6.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 संचार माध्यम के प्रकार (Types of Media)

6.3 श्रव्य - दृश्य उपकरणों का अर्थ - संचार साधनों के संदर्भ में (Meaning of Audio -Visual aids in reference to media)

6.3.1 श्रव्य-दृश्य उपकरणों का वर्गीकरण व संचार साधनों के रूप में उनका उपयोग (Classification of Audio-visual Aids and their use as a form of Media)

6.3.1.1 एडगर डेल के अनुसार

6.3.1.2 अहलूवालिया के अनुसार

6.4 आधुनिक संचार माध्यम (Modern Media)

6.4.1 रेडियों (Radio)

6.4.2 चलचित्र (Films)

6.4.2.1 चलचित्र से शिक्षण कार्य में लाभ(Advantage of film teaching)

6.4.2.2 चलचित्र शिक्षण के विभिन्न सोपान(Different steps of film Teaching)

6.4.3 टेलीविजन (Television)

6.4.4 कम्प्यूटर (Computer)

6.4.5 इंटरनेट (Internet)

6.4.6 दूरभाष (Telephone)

6.4.7 ई-मेल (E-Mail)

6.4.8 उपग्रह-अनुदेशात्मक दूरदर्शन प्रयोग (Site, Satellite, Instructional experiment)

6.4.9 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिक का कक्षा-कक्ष में प्रयोग (Use of information and Communication technology in Class room)

6.4.10 वेब आधारित शिक्षा-वर्तमान युग की आवश्यकता (Web based education)

6.4.11 आभासी विश्वविद्यालय (Virtual University)

6.5 संदर्भ ग्रन्थ (References)

6.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य
(Aims and Objectives)

इस अध्याय के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं-

1. विद्यार्थियों को इतिहास शिक्षण के संचार माध्यमों व शिक्षण सामग्री के संबंध में जानकारी देना।
2. इतिहास शिक्षण में विभिन्न संचार माध्यमों व शिक्षण सहायक सामग्री के अनुप्रयोग को समझाना।
3. शिक्षण सामग्री, उपकरणों व माध्यमों के ज्ञानार्जन पर प्रभाव को बताना ।
4. वर्तमान युग में आधुनिक संचार माध्यमों व शिक्षण सहायक सामग्री से विद्यार्थियों का परिचय कराना ।
5. इतिहास शिक्षण को आधुनिक बनाने हेतु जानकारी देना ।
6. विभिन्न शिक्षण उपकरणों, माध्यमों व सामग्री के मध्य संबंध के बारे में जानकारी देना।

6.1 प्रस्तावना
(Introduction)

शिक्षण में संचार साधनों व शैक्षिक उपकरणों का बालक की ज्ञानार्जन प्रक्रिया को सरल, रोचक एवं गतिशील बनाने मैं तथा उसे एक मूर्त आधार देकर स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से विशेष महत्व है। अन्य विषयों की अपेक्षा इतिहास शिक्षण में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इतिहास भूतकाल से संबंधित है और भूतकाल प्राय: अस्पष्ट, धूमिल और अमूर्त होने के कारण उसके प्रभावी प्रस्तुतीकरण के लिये उपयुक्त उपकरणों की आवश्यकता रहती है । इन उपकरणों के माध्यम से इतिहास सजीव, मूर्त व प्रत्यक्ष हो जाता है जो बालक के लिये रोचक व बोधगम्य बन जाता है।

6.2 संचार माध्यम के प्रकार
(Types of Media)

आज का युग विज्ञान का युग है। आज हमने विज्ञान के साथ टेक्नोलॉजी में भी अच्छी प्रगति की है। इससे भी आगे बढ़ कर हम देखें तो सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का महत्व पूर्ण योगदान अधिगम को विकसित करने में है । आज शिक्षा जगत में छात्रों में चिन्तन कौशल तथा सीखने की अभिवृत्ति विकसित करना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है और इसमें सूचना सम्प्रेषण या संचार माध्यम महन्ति योगदान दे सकते हैं।

अंग्रेजी के Media शब्द का अर्थ है दो भिन्न-भिन्न बिन्दुओं को जोड़ने वाला। प्रथम बिन्दु जो सूचना देना चाहता है-सम्प्रेषक और दूसरा जो सूचना ग्रहण करना चाहता है-ग्रहणकर्ता। शिक्षण प्रक्रिया में इसे ही द्वि-मुखी प्रक्रिया कहा है अर्थात् शिक्षक और शिक्षार्थी। इन दोनों के मध्य जिस साधन से सम्पर्क स्थापित किया जाता है वही शिक्षण कार्य में मीडिया कहा जाता है।

जनसंचार या जनमाध्यम का उपयोग बहुत बडी संख्या को प्रभावित करने में किया जाता है। ये वे माध्यम है जिनके द्वारा एक समाज धीरे-धीरे किसी भी तथ्य के बारे में आश्वस्त होता है, जन संचार माध्यम कहलाते हैं।

जनसंचार माध्यम के कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं-जन जाग्रति उत्पन्न करना, जनमत को सचेत करना, देश तथा देश से बाहर घटित होने वाली नवीनतम घटनाओं तथा सूचनाओं से परिचित कराना इस प्रकार जनसंचार व्यक्तियों के मनोरंजन में भी मदद करता है । ये प्रचार व विज्ञापन भी करते हैं। विकासशील तथा विकसित देशों में शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास कर रहे है। शिक्षाविदों का एक समूह जन संचार माध्यम को शिक्षा का प्रतिनिधि मानता है । जन संचार माध्यम शिक्षा में वही भूमिका निभाता है जो परिवार, समाज तथा विद्यालय निभाता है । जनसंचार माध्यम न केवल शिक्षा के लिये संगठन की रचना करते है बल्कि अन्य उद्देश्य भी पूरा करते है अत: इन्हें शिक्षा 'के औपचारिक प्रतिनिधि माना गया है। कुछ शिक्षाविद् इन्हें प्रतिनिधि ही नहीं बल्कि शिक्षा का एक सशक्त माध्यम भी मानते है।

शिक्षा में जनसंचार माध्यमों की आवश्यकता एवं महत्व - राष्ट्रीय शिक्षानीति 1986 में कहा गया था कि आगामी दशकों में शिक्षा को अनेक श्रृंखलाओं से गुजरना होगा । लेकिन अब सम्प्रेषण की आधुनिक तकनीक के कारण इन जनसंचार के साधनों में से कुछ ने तीव्र गति से वृद्धि की है। अब इनके माध्यम से समय व स्थान को कम करना सम्भव हो गया हैं । शिक्षा तकनीक का प्रयोग अब महत्वपूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने, शिक्षकों को पुन: प्रशिक्षण देने, शिक्षा के स्तर को सुधारने, कला व संस्कृति में जागृति पैदा करने, स्थायी मूल्यों का पोषण करने के लिये इनका औपचारिक व अनौपचारिक रूप से प्रयोग किया जाता है।

जनसंचार माध्यम के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जाता है -

1. भारतीय संविधान की धारा 45 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये।
2. विशाल जनसमूह में सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने के लिये।
3. राष्ट्रीय एकता एवं विश्व मातृत्व की भावनाओं का विकास करने के लिये तथा देश वे देश से बाहर की घटनाओं की जानकारी विशाल जनसमूह को देने के लिये।
4. राष्ट्र के विभिन्न राज्यों की कला व परम्परा का प्रदर्शन कर उनमें कला व संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा करना।
5. सूचनाओं को शीघ्र व व्यापक रूप से प्रसारित करवाने हेतु।

इस प्रकार हम संचार साधनों को एक सशक्त साधन के रूप में काम में लेते है।

संचार के माध्यम मुख्यत: निम्न तीन प्रकार के होते हैं-

1. श्रवणेन्द्रिय (Audio) जैसे टेप, ग्रामोफोन, रेडियो आदि।
2. दर्शनीय (Visual) जैसे टेलीविजन, फिल्म, वीडियो फिल्म, नाटक, नौटंकी आदि।
3. श्रव्य - दृश्य (Audio-Visual) जैसे फिल्म, वी.सी.डी., मेले आदि।

संचार के माध्यमों को निम्न प्रकार से भी विभाजित किया जा सकता है-

1. प्रदर्शन बोर्ड - चॉकबोर्ड, फलेनबोर्ड, बुलेटिन बोर्ड आदि।
2. ग्राफिक मीडिया - चित्र, चार्टस, पोस्टर, ग्राफ, मानचित्र आदि।
3. थ्री डाइमेन्शन मीडिया - मॉडल वस्तु कठपुतली, प्रतिमूर्ति आदि।
4. प्रोजेक्टर मीडिया - स्लाईडस, फिल्म, ट्रान्सपेरेन्सिज, टेलीविजन, वीडियो टेप्स आदि।
5. श्रवण मीडिया - रेडियो, ऑडियो कैसेट्स आडियो सी.डी आदि।
6. क्रियात्मक मीडिया - नाटक, रोलप्लेइंग आदि।

बालकों में इतिहास से संबंधित भूतकाल के विषयों में समीपता की अनुभूति को जागृत करने के लिये और उसे विकसित करने के लिये शिक्षण माध्यमों की व उपकरणों की विशिष्ट भूमिका है । डॉ. जॉनसन ने इतिहास शिक्षण में इनकी महत्ता को बताते हुए कहा है कि इतिहास के विषय में चाहे जो परिकल्पना रहे तथा उसके शिक्षण के उद्देश्यों को चाहे जिस रूप में निर्धारित किया जाये, कक्षा में इतिहास को प्रभावी बनाने में भूतकाल का सजीव रूप में प्रस्तुतीकरण ही अन्तत: एक आधारभूत विकल्प है।

6.3 श्रव्य- दृश्य उपकरणों का अर्थ - संचार साधनो के संदर्भ में (Meaning of Audio -Visual aids in reference to media)

श्रव्य - दृश्य उपकरणों के अंतर्गत वह शिक्षण सहायक सामग्री आती है जो नेत्र ओर कान के द्वारा विचार तथा अनुभव का प्रसारण करती है। ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में ये उपकरण अमौखिक और मूर्त अनुभव के उपयोग के बल देते हैं चलचित्र, फिल्म स्ट्रिप्स, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि श्रव्य-दृश्य सामग्री रूप है। मनोवैज्ञानिक आधार पर यह सिद्ध हो गया है कि ज्ञानार्जन एवं प्रसारण प्रक्रिया का आधार ज्ञानेन्द्रियों पर वातावरण में प्रस्तुत उद्दीपकों के प्रभाव से अद्भुत प्रतिबोधात्मक अनुभव है और श्रव्य-दृश्य सामग्री के माध्यम से 10 प्रतिशत प्रतिबोधात्मक अनुभव होता है, इनके द्वारा अधिगम अनुभवों का प्रसारण व्यापक होता है।

6.3.1 श्रव्य-दृश्य उपकरणों का वर्गीकरण व संचार साधनों के रूप में उनका उपयोग (Classification of Audio - Visual Aids)

जार्विस के अनुसार वर्गीकरण -

1. मौखिक कहानी, उदाहरण, वृतान्त आदि।
2. चित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि।
3. भौतिक अवशेष।
4. स्थानीय इतिहास।
5. प्रतीकात्मक सामग्री - मानचित्र, समय रेखाचित्र, वंशवृक्ष आदि।

6.3.1.1 एडगर डेल के अनुसार

डेल ने संपूर्ण श्रव्य -दृश्य उपकरणों को अनुभव शंकु (Cone of Experience) के रूप में प्रस्तुत किया है -

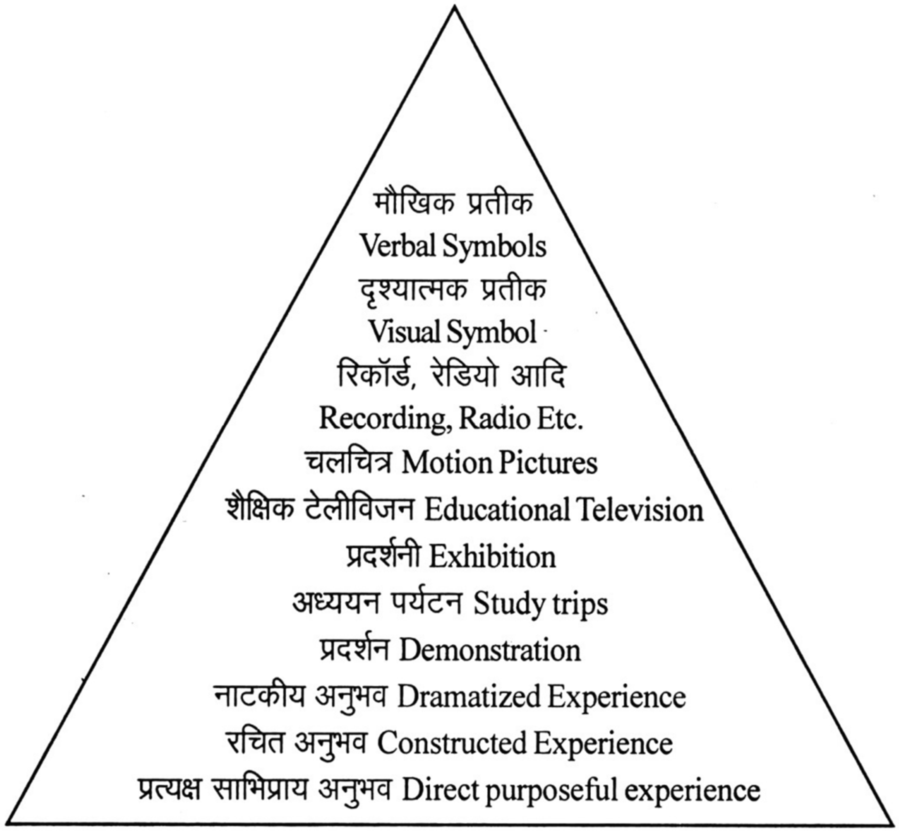

चित्र संख्या : 6.1

6.3.1.2 अहलूवालिया के अनुसार

एस एल अहलूवालिया ने श्रव्य दृश्य सामग्री को निम्नांकित रूप से वर्गीकृत किया है -

1. त्रि-आयामी उपकरण (Three -Dimensional Aids)
   - मॉडल्स
   - रेखाचित्र
   - अवशेष
   - कठपुतली
2. श्रव्य उपकरण (Audio Aids)
   - ग्रामोफोन
   - टेपरिकॉर्डर
   - रेडियों प्रसारण
3. क्रियात्मक उपकरण (Activity Aids)
   - ऐतिहासिक पर्यटन
   - नाटकीकरण

4. लेखाचित्रात्मक उपकरण (Graphic Aids)
    - चित्र
    - चार्ट एवं मानचित्र
    - युद्ध योजनाएं
    - समय रेखा और समय रेखाचित्र
5. प्रदर्शन बोर्ड (Display Board)
    - श्याम पट्ट
    - फ्लेनल बोर्ड
    - बुलेटिन बोर्ड
6. प्रक्षेपी उपकरण (Projected Aids)
    - फिल्म
    - फिल्म पट्टियाँ
    - स्लाइड्स
    - एपिडोस्कोप

6.4 आधुनिक संचार माध्यम (Modern Media)

6.4.1 रेडियो

रेडियो शिक्षण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण है। परन्तु हमारे यहां विद्यालयों में इसका बहुत कम प्रयोग देखने को मिलता है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले विभिन्न चैनलों पर अनेक शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। आकाशवाणी के केन्द्रों के प्रतिदिन नियत समय पर नियमित तौर पर विभिन्न विषयों से संबंधित विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है ।

1. **ज्ञानवर्धन पाठ -** इस प्रकार के पाठ में उन प्रसारणों को रखा जा सकता है। विद्यालय के पाठ्यक्रम से प्रत्यक्ष एवं विशिष्ट संबंध नहीं होता है परन्तु कार्यक्रम में किसी विषय अथवा घटना के संबंध में पर्याप्त जानकारी होती है। सामान्यत: इस प्रकार के कार्यक्रम किसी वार्ता अथवा संस्मरण के रूप में प्रसारित किये जाते है।
2. **प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ -** रेडियो केन्द्रों द्वारा विशिष्ट पाठ्यक्रम के संबंध में शिक्षण हेतु विशेष कार्यक्रम तैयार कर शिक्षा के उद्देश्य से नियमित तौर पर प्रसारित किये जाते है । इसे हम दूरस्थ शिक्षा भी कह सकते है । ये कार्यक्रम विशेषज्ञों द्वारा पर्याप्त व अध्ययन के बाद इस प्रकार तैयार कर प्रस्तुत किये जाते है कि इनसे सुनने वाले को उसी प्रकार का लाभ मिले जैसा कि विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने से मिलता है।

रेडियो के माध्यम से कक्षा के वातावरण को रोचक व जीवन्त बनाया जा सकता है । छात्रों को रेडियों सुनना अच्छा लगता है और इसमें प्रसारित कार्यक्रमों को वे बड़े ध्यान से सुनते है। रेडियो कार्यक्रमों में विषय वस्तु को नाटक अथवा गायन शैली से भी बताया जा सकता है जो कि सामान्यत: कक्षा में संभव नहीं है। इस प्रकार के कार्यक्रमों से बालक में कल्पनाशक्ति तथा अभिरूचि का विकास होता है।

6.4.2 चलचित्र (Films)

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वर्तमान में नवयुवकों और बच्चों को चलचित्र देखना अत्यधिक पसंद है और इसी कारण से यह भी कहा जा सकता है कि फिल्म, शिक्षा प्रदान करने का एक बहुत बडा संचार साधन है। इतिहास शिक्षा में तो चलचित्र अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। आज चलचित्र निर्माण की तकनीक जिस स्तर पर विकसित हो गई है जिससे इतिहास की विभिन्न घटनाओं को कलाकारों के अभिनय के माध्यम से बिल्कुल जीवंत रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इतिहास के विभिन्न विषयों पर पर्याप्त शोध व अध्ययन कर बिल्कुल सटीक चित्रण किया जाने लगा है जिससे संपूर्ण घटनाक्रम को लगभग हूबहू बताया जाने लगा है। यहां तक कि घटना के समय की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति को भी आसानी से बताया जा सकता है। एक प्रकार से इस माध्यम के द्वारा परोक्ष रूप से इतिहास के बीते समय में जाया जा सकता है। इतिहास शिक्षण में चलचित्र का उपयोग निम्नांकित कार्यो के लिये किया जा सकता है-

1. इतिहास के विभिन्न कालों में मनुष्य की जीवन दशाओं का तुलनात्मक ज्ञान देने के लिये।
2. विभिन्न कालों की स्थापत्य कला, जीवन शैली, चित्रकला आदि का ज्ञान प्रदान करने के लिये।
3. इतिहास की विभिन्न घटनाओं को विस्तार से दर्शाने के लिये ।
4. इससे इतिहास के जटिल प्रकरणों को सरल व रूचिकर बनाया जा सकता है ।

शिक्षण हेतु चलचित्र का चयन करते समय शिक्षक की निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये -

1. फिल्म ऐतिहासिकता को प्रकट करने में सहायक होनी चाहिये।
2. फिल्म में तथ्य सही व स्पष्ट होने चाहिये।
3. फिल्म में भाषा, बोल आदि ऐतिहासिकता के अनुरूप ही होने चाहिये।
4. फिल्म में प्रमाणिक तथ्य होने चाहिये।
5. फिल्म की कथावस्तु मनोरंजक व शिक्षाप्रद होनी चाहिये ।

चलचित्र से प्राप्त ज्ञान को पुख्ता करने के लिये फिल्म देखने बाद बालकों से उस संबंध में वाद-विवाद अथवा प्रश्नोत्तरी या निबंध लेखन जैसा कोई कार्य करवाना चाहिये ।

6.4.2.1चलचित्र से शिक्षण कार्य के लाभ

1. चलचित्रों में गति और तारतम्यता होती है जिसके कारण ज्ञान में भी आवश्यक तारतम्यता लाई जा सकती है।
2. कुछ घटनाओं को चलचित्रों के माध्यम से अत्यंत सहजता व सरलता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है।
3. चलचित्र छात्रों को वास्तविकता का बोध कराते है।
4. चलचित्रों की वास्तविकता और गतिशीलता छात्रों के ध्यान को बनाये रखती है।

5. चलचित्रों का संगीत ज्ञान प्राप्ति का उपयुक्त वातावरण तैयार कर सकता है जिससे छात्रों की रूचि व ध्यान बना रहता है।

6.4.2.2 चलचित्र शिक्षण के विभिन्न सोपान (Different Steps of Film Teaching)

जारोलिमेक ने चलचित्र शिक्षण के निम्न सोपान का वर्णन किया है-

1. स्वयं की तैयारी

- चलचित्र का चयन
- चलचित्र का स्तर
- चलचित्र के विषय वस्तु का पूर्वाध्यन
- प्रदर्शन की योजना

2. कक्षा कक्ष की तैयारी

- शीर्षकादि श्यामपट्ट पर लिखे ।
- सज्जा को व्यवस्थित करें ।
- बैठक व्यवस्था देखें ।

3. कक्षा शिक्षण की तैयारी

- चलचित्र की आवश्यकता बतायें ।
- प्रेरित करें ।
- असाधारण शब्दों का अध्ययन करें
- मुख्य बिन्दुओं का उल्लेख करें ।

4. चलचित्र प्रदर्शन

- एक अध्यापक, एक कक्षा, एक चलचित्र ।
- प्रकाश केन्द्रित करें ।
- ध्वनि स्तर देखें ।

5. निष्कर्ष व अनुगम

- प्रश्नों का विवेचन करें ।
- परीक्षा करें ।
- अनुगम क्रियायें करें ।
- नाटकीयकरण करें ।
- अनुसंधान करें।
- निष्कर्षों का मूल्यांकन करें ।

6.4.3 टेलीविजन (Television)

टेलीविजन अत्यन्त उत्तम श्रव्य दृश्य उपकरण है। हमारे देश में शिक्षा के प्रसार हेतु टेलीविजन का उपयोग विगत दो दशकों से हो रहा है। इसके माध्यम से बालक आसानी से ज्ञान प्राप्त कर लेता है। विगत दो दशकों से भारत में मानव निर्मित उपग्रहों की मदद से टेलीविजन के माध्यम से शिक्षा के कार्यक्रम देश के दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचाये जा रहे है।

टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले शिक्षा के कार्यक्रम जीवन्त होते है। उपग्रहों की मदद से उन्हें दूरस्थ स्थित विद्यार्थी को तत्काल दिखाया जा सकता है । इसके कारण टेलीविजन केन्द्र में

अथवा बाहर किसी भी कार्यक्रम को उसी समय दिखाया जा सकता है जब वह घटित हो रही हो । अर्थात् यथार्थ में शिक्षा प्रदान की जा सकती है । इसका एक और लाभ यह है कि इसमें अन्य प्रकार की शिक्षण सामग्री को उपयोग भी किया जा सकता है । टेलीविजन के उपयोग से शिक्षण का स्तर बहुत ऊंचा हो जाता है ।

6.4.4 कम्प्यूटर (Computer)

इक्कीसवीं सदी में संसार को पहुंचाने वाला यही उपकरण है जिसके कारण समाज के लगभग हर कार्य में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं । शिक्षा जगत इससे अछूता नहीं है । शिक्षण हेतु यह सबसे नवीनतम एवं अत्यन्त शक्तिशाली उपकरण है जो अपने आप में एक माध्यम भी है । इतिहास शिक्षण में भी कम्प्यूटर बेहद उपयोगी व प्रभावी है । कम्प्यूटर द्वारा पाठ में बताये गये समस्त उपकरण व माध्यम का कार्य बडी ही आसानी से किया जा सकता है । इसे विज्ञप्ति पट्ट के रूप में विद्यालय में इस्तेमाल किया जा सकता है । इसके माध्यम से सभी प्रकार के श्रव्य दृश्य कार्यक्रम किये जा सकते हैं । इस पर चलचित्र आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है तो इस पर विभिन्न प्रकार के मानचित्र, चार्ट, ग्राफ आदि आसानी से तैयार कर बताये जा सकते हैं । किसी स्थान विशेष का मानचित्र तैयार करने अथवा उसका त्रि-आयात्मक प्रतिरूप तैयार करने में इसका उपयोग किया जा सकता है । इसमें उपलब्ध पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण की सुविधा, श्यामपट्ट के स्थान पर उपयोग में ली जा सकती है । यही नहीं, इतिहास शिक्षण हेतु शिक्षक की चाह के अनुरूप इसमें पाठ तैयार कर दिखाये व पढ़ाये जा सकते है । आकड़ों, समय व रेखाचित्रों को प्रस्तुत करने में यह बेहद सक्षम है । इसमें इतिहास से संबंधित सभी प्रकार की पठन सामग्री को संग्रहित कर रखा जा सकता है तथा जब चाहे उसका उपयोग किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त इसमें विभिन्न प्रकार के रोचक खेल तैयार कर उनको खेलने की सुविधा है जिसका उपयोग इतिहास शिक्षण हेतु किया जा सकता है । इतिहास की घटनाओं, युद्ध योजनाओं आदि को कम्प्यूटर खेलों में बदलकर छात्रों को इनके माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है । स्वक्रिया व कल्पनाशक्ति के साथ स्मृति का भी इसमें विकास होता है ।

6.4.5 इंटरनेट (Internet)

सूचना प्रौद्योगिकी का यह सबसे नवीनतम अस्त्र है । इसने समस्त संसार को एक दूसरे प्रकार से व्यक्ति के घर अथवा कार्यालय में एकत्रित कर दिया है । एक समान कम्प्यूटर एवं उपग्रहों द्वारा संचालित सूचना तंत्र की मदद से दुनिया के किसी भाग के किसी भी व्यक्ति या विभाग से किसी भी समय सम्पर्क कर सूचना का आदान प्रदान किया जा सकता है । किसी विशेषज्ञ से संपर्क करना हो किसी सामग्री की जानकारी चाहिये हो किसी स्थान विशेष या संग्रहालय की पूर्ण जानकारी की आवश्यकता हो, भ्रमण कार्यक्रम तैयार करना हो, अर्थात् किसी भी प्रकार का संपर्क का कार्य हो, इंटरनेट की सहायता से यह आसानी से घर बैठे किया जा सकता हैं यही नहीं, इनकी सहायता से दूरस्थ बैठे व्यक्ति से आपसी विचार विमर्श या सम्मेलन इस प्रकार किया जा सकता है जैसे कि साथ बैठकर किया जाता है । असीम संभावनाओं वाले इस माध्यम को विद्यालय में जितना जल्द उपयोग में लाया जायेगा, छात्रों के ज्ञान का विकास उतना ही अधिक प्रभावी हो सकेगा ।

6.4.6 दूरभाष (Telephone)

इस माध्यम की सहायता से हम दूर बैठे व्यक्ति से कम समय में ही वार्ता कर सकते है। इतिहास से सम्बन्धित जानकारी का संचरण इसके द्वारा अतिशीघ्र किया जा सकता है ।

6.4.7 ई-मेल (E-Mail)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिक का वर्तमान में एक प्रमुख अंग ई-मेल हो गया है । इन्टरनेट के माध्यम से दूरस्थ स्थानों पर बैठे इतिहासकार से नवीनतम जानकारी को घर बैठे हासिल कर छात्रों को प्रदान कर सकते है।

6.4.8 उपग्रह-अनुदेशात्मक दूरदर्शन प्रयोग (Site,Satellite,Instructional experiment)

भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से एक बड़ा राष्ट्र है । इसलिए टेलीकांफ्रेन्सिंग के माध्यम से टेलीटीचिंग (शिक्षण) सम्भव हो सका है । इसके माध्यम से एक शिक्षक के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न स्थानों के छात्र लाभान्वित हो सकते है । विभिन्न क्षेत्रों में इतिहासकारों की राय इसके माध्यम से जानी जा सकती है ।

एजुसेट (Educational Satellite) के माध्यम से ही शैक्षिक सूचनाओं को विद्यार्थियों तक प्रसारित किया जा सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'इसरो' ने एक विशेष उपग्रह 'एजुसेट' ' को अन्तरिक्ष में स्थापित किया है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 72 चैनलों के प्रसारण की योजना बनाई गई है (20 सितम्बर 2004 में)

6.4.9 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिक का कक्षा-कक्ष में प्रयोग

(Use of Information and Communication technology in class room)

वर्तमान में ज्ञान का विस्तार तेजी से हो रहा है और नित नये परिवर्तन हो रहे है, ऐसे में प्रत्येक विद्यार्थी अपनी जानकारी को पूर्ण रखने के लिए सूचना एवं संचार के माध्यम पर ही भरोसा कर सकता है जिससे उन्हें सत्य एवं प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हो सके । इसके लिए शिक्षक निम्न प्रकार से उनकी मदद कर सकता है-

- इन्टरनेट द्वारा इतिहास से सम्बन्धित नवीन सूचनाओं को प्रदान करवाना ।
- दूरदर्शन द्वारा इतिहासकारों (विशेषज्ञों) की वार्ता सुनाकर ।
- टेलीकांफ्रेन्सिंग द्वारा एक विद्यालय के छात्रों का दूसरे विद्यालय के छात्र एवं शिक्षकों के मध्य वार्ता करवाना ।
- विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक सूचनाओं को डाटाबेस तैयार करना ।
- काम्पैक्ट डिस्क (C.D.) द्वारा विषय की जटिलताओं को स्पष्ट करना ।
- कम्प्यूटर द्वारा सूचनाओं का विश्लेषण व संकलन करना ।
- विद्यार्थियों को विश्व के प्रमुख सन्दर्भ ग्रन्थों एवं पुस्तकों के बारे में परिचय देना ।
- ई-मेल से विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करना तथा जानकारी प्रेषित करवाना ।

6.4.10 वेब आधारित शिक्षा-वर्तमान युग की आवश्यकता (Web based education)

आधुनिक शैक्षिक तकनीकी के युग में तेजी से हो रहे बदलाव के कारण पढ़ने, सीखने और सीखाने के पारम्परिक तरीके भी तेजी से बदल रहे है । इन्टरनेट भूमण्डलीय जानकारियों का

झरोखा है। 'इन्टरनेट' - इन्टरनेशनल नेटवर्क का संक्षिप्त रूप है । इसकी खोज 1990 में डी. विन्टर जी सर्फ ने की है । यह विश्वभर में फैले हुए असंख्य कम्प्यूटरों के आपसी नेटवर्क का नेटवर्क है । यानी विश्व भर के कम्प्यूटर इसके द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए है । पलभर में आवश्यक सूचनाओं की जानकारी हासिल घर बैठे इन्टरनेट से प्राप्त की जा सकती है । 'इन्टरनेट' को संक्षेप में नेट' या 'वेब' भी कहा जाता है ।

6.4.11 आभासी विश्वविद्यालय (Virtual University)

वर्तमान में उच्च शिक्षा को सुलभ एवं सार्वभौमिक बनाने के लिए आभासी विश्वविद्यालयों द्वारा 'वेब' आधारित शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इस प्रकार के विश्वविद्यालय में अन्य विश्वविद्यालय की सभी विशेषताएं होती है। इसके साथ विशेष बात यह है कि यहां छात्रों की संख्या, विषय चुनने की बाध्यता, पंजीकरण की कठोर शर्तें, कठोर नियम वाली वार्षिक परीक्षा प्रणाली, सीमित पाठ्यक्रम, एक पक्षीय अध्ययन, अनुदेशानात्मक सामग्री का निम्नस्तर इत्यादि कमियाँ जो कि अन्य विश्वविद्यालयों में होती है, नहीं पाई जाती है ।

'वेब' आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए किसी भी शैक्षिक संस्थान को अपनी वेबसाइट' का निर्माण करना पड़ता है तथा इसी के द्वारा फिर आभासी कक्षा का वातावरण तैयार कर शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार की आभासी कक्षा में शिक्षार्थी में परस्पर अन्तःक्रिया होती रहती है।

इन आभासी विश्वविद्यालयों में घर बैठे छात्र ऑनलाइन इन्टरनेट के माध्यम से प्रवेश पत्र भरना, प्रवेश परीक्षा देना, फीस जमा करना इत्यादि कार्य कर सकता है। शिक्षार्थी अपनी रुचि तथा क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन कर सकता है। शिक्षण विधि भी अपनी रुचि क्षमता के अनुसार चयनित कर सकता है, जैसे-सेमिनार विधि, स्वःशिक्षा विधि इत्यादि ।

इस प्रकार की शिक्षा में शिक्षक-शिक्षार्थी निम्न कार्य कर सकते हैं-

- ई-लाइब्रेरी के माध्यम से शिक्षक तथा छात्र किसी भी डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से पुस्तक पढ़ सकते है ।
- विशिष्ट बिन्दु पर कठिनाई होने पर अपने सहपाठी समूह तथा शिक्षक के साथ सामूहिक विचार विमर्श कर समस्या का समाधान कर सकते है ।
- शिक्षक अपनी शिक्षण कौशल मे उन्नयन करने के लिए इनका प्रयोग कर सकता है ।
- वेब शिक्षा यानी हर समय, हर स्थान पर तथा जो चाहो-वाक्य को सत्य साबित करती है।

वेब आधारित शिक्षा के उद्देश्य

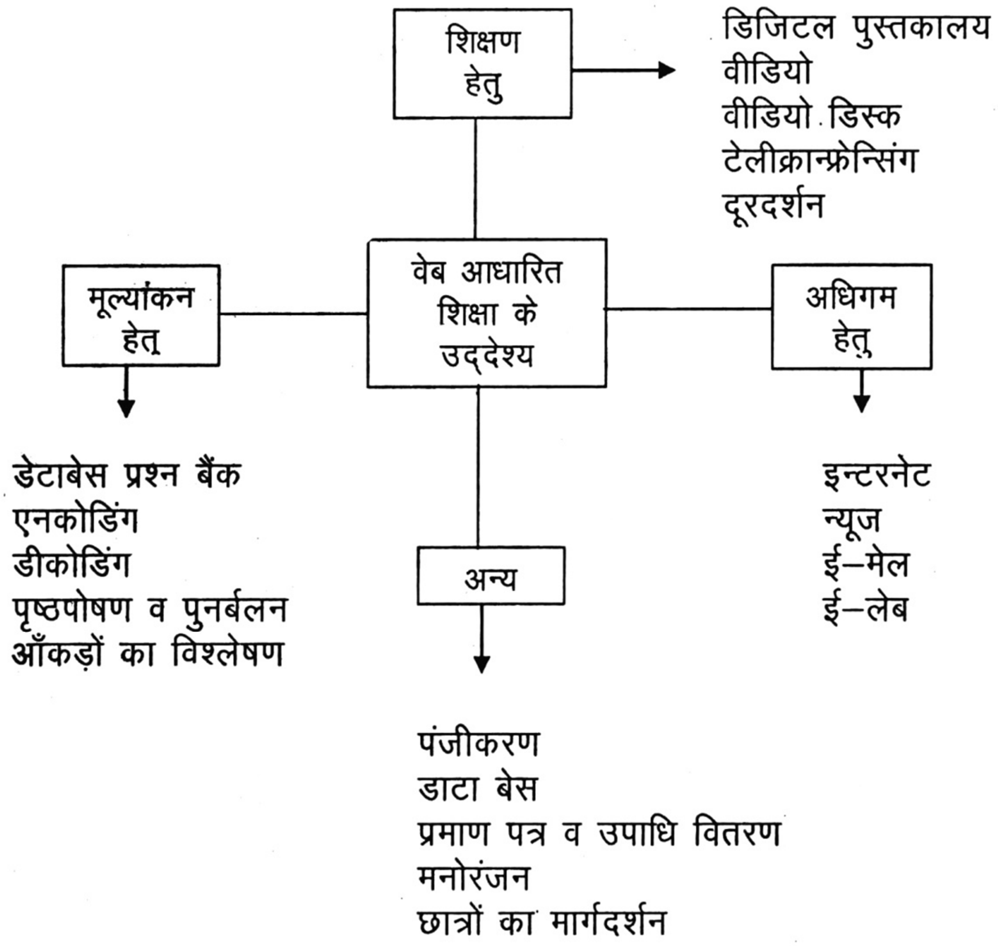

चित्र संख्या : 6.2

इतिहास विषय में वेब आधारित शिक्षण-प्रधिगम (Web Based teaching learning in History)

वेब आधारित शिक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाली विषय वस्तु से सम्बन्धित नई जानकारी को प्राप्त करने के लिए उनसे सम्बन्धित वेबसाइट्स का भ्रमण कर सकते है । इन वेब साइट्स पर समन्धित विषय वस्तु के ऐतिहासिक तथ्य (Histrorical Facts),सम्प्रत्यय (Concepts), नियम (Laws), तथा सिद्धान्तों (Theories) से निर्मित सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक जानकारी (ज्ञान) का विशाल भण्डार होता है ।

इस शिक्षा में अमूर्त तथ्यों को चित्रों, एनीमेशन तथा मल्टीमीडिया (बहुमाध्यम) के माध्यम से समझाया जा सकता है ।

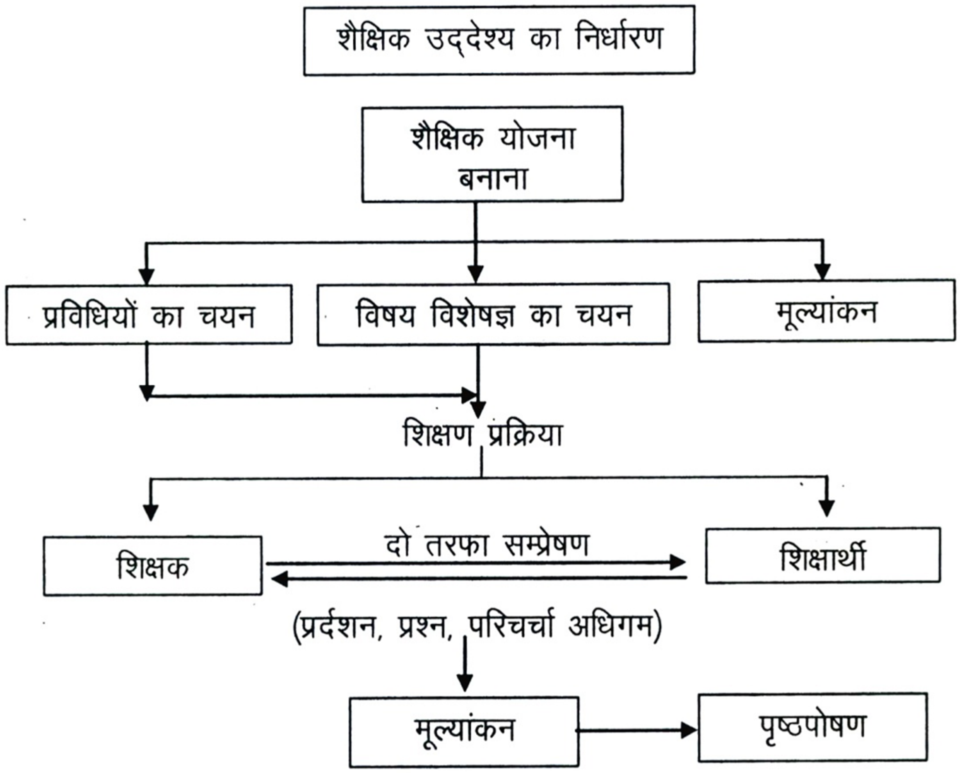

चित्र संख्या : 6.3

सर्वप्रथम शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है । इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योजना का निर्माण किया जाता है जिसमें शैक्षिक प्रविधियों, विशेषज्ञों का चयन, शिक्षण प्रक्रिया तथा मूल्यांकन आता है ।

शिक्षण प्रक्रिया में दो तरफा सम्प्रेषण यानी शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य अन्तःक्रिया (प्रश्न, प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा) होती है । किसी भी प्रकार की शंका या समस्या का समाधान विशेषज्ञों की राय से किया जा सकता है ।

वेब आधारित व्यक्तिगत अधिगम (Web Based Individualized learning) - इन्टरनेट पर किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त हो सकती है तथा सभी उपलब्ध जानकारियाँ एक दूसरे से जुड़ी हुई होती है इसलिए इस पेज को 'वेब पेज' कहते है । अधिगमकर्ता वेबसाइट से सम्बन्ध स्थापित कर अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी एकत्र करता है तथा सीखना प्रारम्भ करता है । अधिगमकर्ता स्वतन्त्र रहते हुए भी अपनी गति से शिक्षा ग्रहण कर सकता है । शिक्षक मार्गदर्शक का कार्य करता है ।

शिक्षक एवं छात्र इन्टरनेट चैटिंग के माध्यम से एक दूसरे सम्पर्क स्थापित कर सकते है। यह प्रक्रिया दो तरफी सम्प्रेषण की होती है । वेब आधारित शिक्षा में ई-मेल के माध्यम से छात्र लिखित कार्य, परियोजना इत्यादि को मूल्यांकन हेतु भेज सकते है । शिक्षक ई-मेल के माध्यम से समस्याओं के हल, मूल्यांकन के परिणाम तथा पृष्ठपोषण भेज सकते है ।

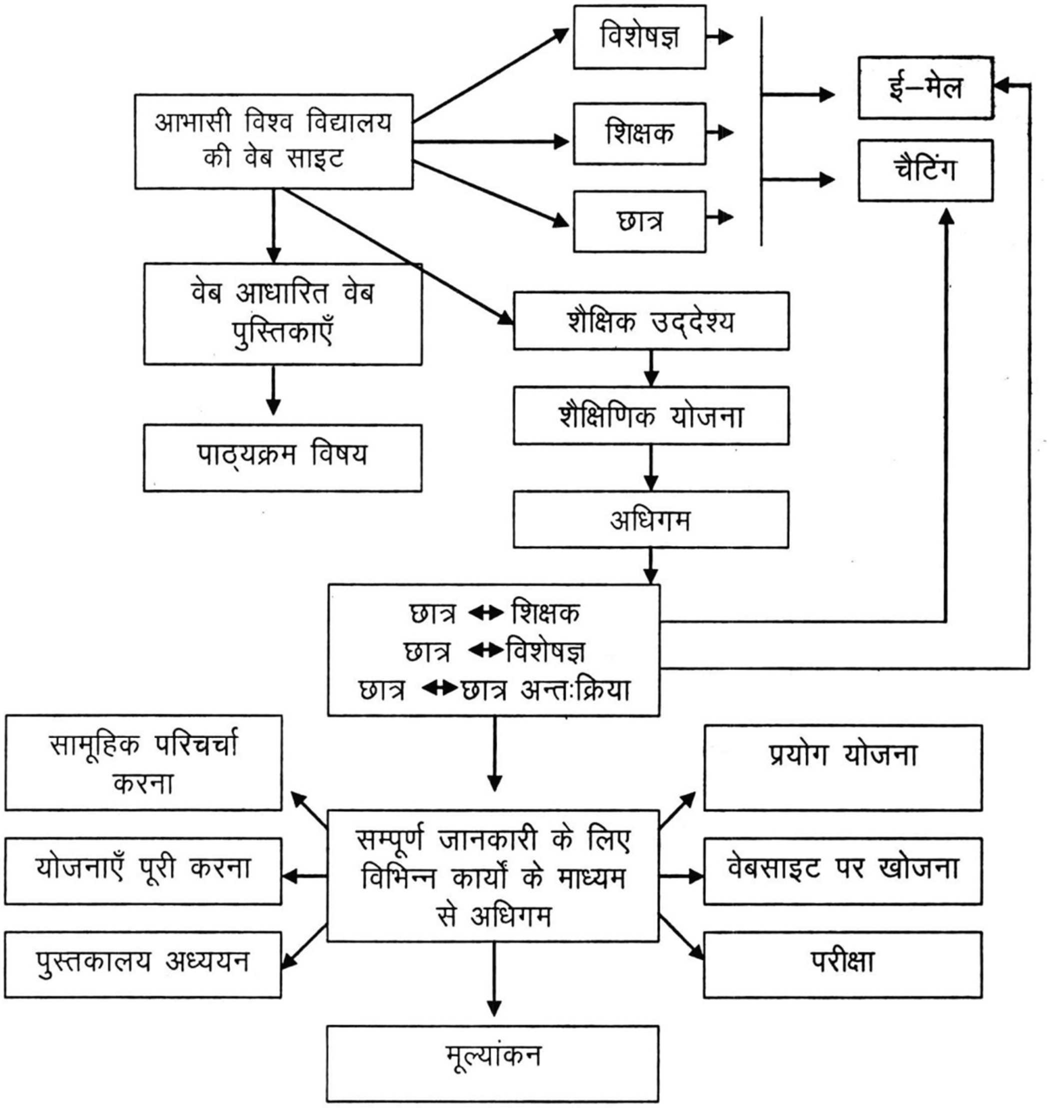

वेब आधारित अधिगम - एक प्रारूप

चित्र संख्या : 6.4

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इतिहास शिक्षण में श्याम पट्ट और प्रतिरूप के महत्व को स्पष्ट कीजिये।
   Clarify the importance of black board and models in teaching history.
2. इतिहास के सफल अध्यापन के लिये आवश्यक उपकरणों की कारण सहित सूची, तैयार कीजिये।
   Prepare a list of teaching aids which are essential for successful teaching History. Give reasons.

3. इतिहास अर्थात् अतीत को वास्तविक बनाने के लिये, इतिहास शिक्षण में प्रयोग किये जाने युक्तियों को विस्तार से बताइये।

Mention in detail the devices used in teaching History in order to make the past 'real'.

4. मानचित्र, समय रेखा, चार्ट, श्यामपट्ट आदि का उपयोग इतिहास शिक्षण में किस प्रकार जा सकता है? उपर्युक्त उदाहरण में उपयोग बताइये?

How could Maps, Time lines, Charts nd board used in teaching History Explain with suitable examples.

5. श्रव्य दृश्य सामग्री का इतिहास शिक्षण में क्या महत्व है? किसी दो प्रकार के श्रव्य? उपकरणों का इतिहास शिक्षा में उपयोग बताइये?

What is the importance of Audio Vsual aids in teaching of History? Illustration the use of any two of such aids.

6. इतिहास शिक्षण में रेडियो के उपयोग बताइये।

Explain the use of radio in teaching History.

7. इतिहास शिक्षण में चलचित्र का प्रयोग किस प्रकार से किया जा सकता हैं?

How could Films be used in teaching History?

8. ऐतिहासिक पर्यटन के इतिहास शिक्षण में महत्व को विस्तार से बताइये ।

Explain in details the importance of Historical Tours in Teahing History.

9. इतिहास शिक्षण में प्रयोग होने लायक कुछ अतिआधुनिक संचार माध्यमों व उपकरणों विवेचना कीजिये।

Analyses in details ultra modern media equipments and aids which could be used in teaching History.

10. इतिहास शिक्षण टेलीविजन के महत्व को बताइये।

Explain the importance of television in teaching History.

11. इतिहास शिक्षण में उपयोगी कुछ पारंम्परिक कलाओं का वर्णन कीजिये।

Explain some traditional arts which are used in teaching History

12. कठपुतली तथा नाटक की कला का इतिहास शिक्षण में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है

How could the art of Puppetry and Drama be in teaching of History. Explain with examples.

6.5 संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Sharma A.R : Information Technology
2. वर्मा, रामपाल सिंह, इतिहास शिक्षण
3. दीक्षित एवं बाघेला : इतिहास शिक्षण
4. बाघेला, हेत सिंह : शैक्षिक प्रौद्योगिकी
5. Dale,Edger :Audio Visual Methods in teaching
6. Kochar, S.K, : The Teaching of History
7. Ahulawalia, S.L.: Audio-Visual Handbook
8. Binning & Binning : Teaching of Social Studies in Secondary Schools
9. त्यागी, गुरूशरण इतिहास शिक्षण
10. डी. भटनागर, आरपी. शिक्षण की तकनीकी
11. Mohanty : Information Technology

इकाई-7

इतिहास शिक्षण में नियोजन सत्रीय, इकाई और दैनिक पाठ योजना

Planning in History Teaching - Sessional/ Annual Plan, Unit Plan and Lesson Plan

इकाई की संरचना (Structure of unit)

7.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

7.1 वार्षिक योजना (Annual plan)

- 7.1.1 वार्षिक योजना का महत्व (Importance of Annual Plan)
- 7.1.2 वार्षिक योजना की विशेषताएँ (Characteristics of Annual Plan)
- 7.1.3 वार्षिक योजना के निर्माण में सावधानियां (Precautions Taken During Construction of Annual Plan)
- 7.1.4 वार्षिक योजना के निर्माण के चरण-सोपान (Step in Construction of Annual plan)

7.2 इकाई योजना (Unit Plan)

- 7.2.1 इकाई का अर्थ (meaning of Unit)
- 7.2.2 इकाई की विशेषताएं (Characteristics of Unit)
- 7.2.3 इकाई की बनावट (Composition of unit)
- 7.2.4 इकाई योजना के सोपान (Steps of Unit plan)
- 7.2.5 इकाई योजना के लाभ (Advantage of Unit Plan)
- 7.2.6 इकाई योजना की सीमाएं (Limitation of Unit Plan)
- 7.2.7 इकाई योजना का प्रारूप (Format of Unit Plan)
- 7.2.8 सारांश (Summary)

7.3 पाठ योजना (lesson plan)

- 7.3.1 परिभाषाएँ (Definition)
- 7.3.2 पाठ योजना की आवश्यकता (Need of Lesson Plan)
- 7.3.3 पाठ योजना की आवश्यक के तत्व (Essential Elements of Lesson Planning)
- 7.3.4 पाठ योजना के विविध उपागम (Various Approaches to lesson Planning)
- 7.3.5 पाठ योजना का प्रारूप (Format of Lesson Plan)

7.3.6 पाठ योजना के लाभ (Advantage of Lesson Plan)
7.3.7 इकाई और पाठ योजना में अन्तर (Difference between Unit Plan and Lesson Plan)
7.3.8 सारांश (Summary)
7.4 सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

7.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and objectives)

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर

1. विद्‌यार्थी विभिन्न योजनाओं के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. विभिन्न योजनाओं के महत्व व विशेषताएं जान सकेंगे ।
3. विभिन्न योजनाओं के सोपानों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
4. विभिन्न योजनाओं का निर्माण कर सकेंगे ।
5. विभिन्न योजनाओं में शिक्षक की भूमिका को भली भांति समझ सकेंगे ।

इतिहास शिक्षण में वार्षिक, इकाई एवं पाठ योजना (Annual, Unit plan and Lesson Plan in History teaching) - किसी भी कार्य की सफलता उस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से करने में है। यदि उसका पूर्व नियोजन कर लिया जाए तो कार्य की सफलता में कोई सन्देह नहीं है। इसके लिए यह आवश्यक है कि योजना सुव्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण तथा संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए बनाई जाए। व्यावसायिक कार्यो में तो योजना की अनिवार्यता होती है परंतु शिक्षण के क्षेत्र में भी यह एक आवश्यकता बन गई है। यदि शिक्षक, शिक्षण से पूर्व एक व्यवस्थित योजना बना लेता है तो वह शिक्षण कार्य में अवश्य सफल होता है। एक सफल अध्यापक यदि अपने विषय की वार्षिक योजना बनाकर उसे इकाई योजनाओं में विभक्त कर उसे एक तार्किक ढंग से व्यवस्थित करता है तथा नियोजित रूप से सब कुछ लिख लेता है तो यह शिक्षण की योजना कहलाती है। आई.के. डेवीज (I.K. davies) कहते है - "नियोजन के अंतर्गत वे सभी क्रियाएं सम्मिलित की जाती हैं, जिन्हें शिक्षक सीखने के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सम्पन्न करता है।"

अत: चिन्तन कर कार्य को कुशलता व प्रभावशाली ढंग से पूर्ण करना अध्यापक का कार्य है। आधुनिक समय में दिये जाने वाले ज्ञान में योजना को महत्व दिया जाता हैं क्योंकि ज्ञान गुणात्मक दृष्टि से अधिक है तथा समय कम होता है। अत: इस कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान किस प्रकार बालकों को दिया जा सकता हैं यह योजना द्‌वारा ही सम्पन्न हो सकता है, तथा शिक्षक सफल हो कर प्रभावी शिक्षण कार्य कर सकता है ।

7.1 वार्षिक योजना
(Annual Planning)

शिक्षण योजना के अंतर्गत दो प्रकार की योजना तैयार की जाती है पहली दीर्घकालिक व दूसरी अल्पकालिक । परन्तु शिक्षण कार्य पूरे सत्र चलता है पूरे सत्र की शिक्षण योजना बनाना इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक निर्धारित पाठ्यक्रम को किस प्रकार पूरा करें । शिक्षण सत्र प्राय: जुलाई से प्रारम्भ होकर मई तक चलता है । अत: सत्र भर के लिए बनायी गयी योजना को

वार्षिक योजना कहते है । वार्षिक योजना अध्यापक को निर्देशन तथा मार्गदर्शन देती है । विद्यालय में अनेक कक्षाएं होती है तथा प्रत्येक कक्षा में विभिन्न विषय । इसलिये यह वार्षिक योजना प्रत्येक क्या के लिए विषयवार बनाई जाती है । चूंकि एक विषय अलग-अलग कक्षाओं में भिन्न स्तर का होता है तथा पाठ्यवस्तु भी भिन्न-भिन्न होता है इस कारण से सभी कक्षाओं की तथा छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए पृथक-पृथक वार्षिक योजनाएं बनाई जाती है।

7.1.1 वार्षिक योजना का महत्व (Importance of Annual Plan)

1. वार्षिक योजना से सम्पूर्ण सत्र का कार्य योजनाबद्ध ढंग से करने के लिए एक निश्चित दिशा मिलती है।
2. वार्षिक योजना में प्रत्येक परीक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम का उल्लेख रहता है अत: मूल्यांकन की दृष्टि से उपयोगी है।
3. प्रत्येक माह में पढ़ाई जाने वाली पाठ्यवस्तु का ध्यान रहता है।
4. शिक्षण में किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति करनी है, इसका ज्ञान अध्यापक को रहता है।
5. छात्रों को सत्र की समस्त गतिविधियों का प्रतिबिम्ब सत्र के प्रारम्भ में ही मिल जाता
6. अध्यापक के स्व मूल्यांकन में सहायता करती है।
7. उपचारात्मक शिक्षण में सहायता प्रदान करती है।
8. अध्यापक को अध्यापन में सहायता मिलती है।

7.1.2 वार्षिक योजना की विशेषताएं (Characteristics of Annual Plan) -

1. इसमें छात्रों की शारीरिक व मानसिक योग्यता तथा अध्यापक की योग्यता का ध्यान रखा जाता है।
2. यह विद्यालय के साधनों को ध्यान में रखकर बनाई जाती 'है ।
3. यह लचीली व्यापक तथा समस्त कक्षाओं से सम्बन्धित होती है ।
4. इसमें समस्त शिक्षकों की सत्र के 'लिए बनाई गई सभी योजनाओं में समन्वय रहता है।

7.1.3 वार्षिक योजना के निर्माण में सावधानियाँ (Precaution taken during construction)

1. योजना का स्वरूप लचीला होना चाहिए ताकि कभी भी आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन किया जा सकें।

2. योजना का निर्माण करते समय अध्यापक को सर्वप्रथम सत्र के कार्य दिवसों की संख्या ज्ञात कर लेनी चाहिए। इनमें से परीक्षा उत्सव के दिन घटा कर शेष बचे दिनों के लिए तैयार करनी चाहिए।
3. योजना निर्माण में शिक्षक अपने अनुभवी साथियों से भी विचार-विमर्श कर ले तो यह उसके लिए लाभदायक रहेगा।
4. योजना के समय अध्यापक की छात्र के स्तर व स्वयं की क्षमता का ध्यान रखना चाहिए।
5. वार्षिक योजना में सम्मिलित क्रियात्मक कार्य की प्रकृति व्यवहारिक होनी चाहिए।
6. योजना निर्माण करते समय अध्यापक को गत वर्ष की योजना का भी अवलोकन कर लेना चाहिए ।
7. किसी कक्षा में एक विषय के एक से अधिक अध्यापक हो तो उन्हें मिलकर उस कक्षा की योजना बनानी चाहिए।

7.1.4 वार्षिक योजना निर्माण के चरण / सोपान (Steps in Construction of Annual) - चूंकि वार्षिक योजना एक सत्र भर की योजना है। इस योजना को आधार बनाकर ही शिक्षण कार्य की अन्य योजनाएं-पाठ योजना, इकाई योजना आदि बनायी जाती है अत: इसको बड़ी सावधानीपूर्वक बनाया जाना चाहिये। वार्षिक योजना का निर्माण निम्न चरणों को ध्यान में रखते हु ए करना चाहिए।

1. सर्वप्रथम पाठ्यवस्तु का विश्लेषण कर पढ़ाये जाने वाली पाठ्यवस्तु का अलग-अलग इकाईयों में विभाजन कर लेना चाहिये ।
2. विषयाध्यापक को अपने विषय में प्राप्त कालांशों की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए । शिक्षण सत्र के कुल कालांशों में अवकाश दिवस व परीक्षा व उत्सव दिवस घटाने के बाद कार्य दिवस प्राप्त हो जाते है ।
3. अन्य अध्यापकों से भी विचार-विमर्श के आधार पर यह निश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक इकाई के शिक्षण के लिए कितने कालांशों की आवश्यकता होगी ।
4. आवृति, मूल्यांकन तथा सुधारात्मक अध्यापन के कालांश की व्यवस्था प्रत्येक इकाई हेतु की जानी चाहिए ।
5. वार्षिक योजना बनाते समय प्रत्येक इकाई में ज्ञान अवबोध, ज्ञानोपयोग कौशल, रूचियां तथा अभिवृतिया आदि में से किन-किन उद्देश्यों को प्राप्त करना है इनको भी पूर्व में निश्चित कर लेना चाहिए ।
6. आवश्यक शिक्षण सामग्री का उल्लेख वार्षिक योजना में किया जाना चाहिए ।
7. उद्देश्यों के निर्धारण तथा समय सीमा का सीधा सम्बन्ध है । यदि केवल ज्ञानात्मक उद्देश्य प्राप्त करने हैं तो उससे समय कम लगता है क्योंकि वह मानसिक प्रक्रिया की प्रारम्भिक अवस्था है । यदि अवबोध, कौशल और ज्ञानोपयोग का विकास करना हो तो योजना में अधिक समय देना होगा क्योंकि ये उच्च मानसिक क्रियाओं से सम्बन्धित है ।

8. सामान्यत: एक वर्ष में तीन सत्र होते है प्रथम सत्र-जुलाई से सितम्बर, द्वितीय सत्र अक्तूबर से दिसम्बर तथा तृतीय सत्र जनवरी से अप्रैल तक माना जाता है । वार्षिक योजना का निर्माण इन सत्रों को ध्यान में रखकर करना चाहिए । जिससे यह अधिक प्रभावशाली बन सकती है ।
9. योजना बनाते समय इकाई की प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए । यदि इकाई कठिन स्तर की है तो उसे अधिक महत्व तथा सरल स्तर को कम महत्व दिया जाना चाहिए ।
10. योजना निर्माण के समय अध्यापक को शिक्षण उद्देश्य उपलब्ध साधन-सुविधाएं आदि का ध्यान रखकर सावधानीपूर्वक इसका निर्माण करना चाहिए।

इसके बाद योजना का प्रारूप बनेगा । वार्षिक योजना जितनी अधिक कुशलता से तैयार की जायेगी, अध्यापन कार्य उतना ही अधिक विधिवत होगा । अत: पूर्ण सावधानी से वार्षिक योजना का निर्माण करना चाहिए, क्योंकि यह सत्र भर चलने वाले शिक्षण कार्य के लिए दिशा सूचक का कार्य करती है।

स्वमूल्यांकन प्रशन

1. वार्षिक योजना क्या है?
   What is Annual Plan?
2. वार्षिक योजना से आप क्या समझते हैं? अच्छी वार्षिक योजना की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिये?
   What do you understand by Annual Plan ? Elucidate the characteristic of good Annual Plan.
3. वार्षिक योजना का प्रारूप तैयार कीजिये?
   Prepare the Proforma of Annual plan?
4. वार्षिक योजना निर्माण के सोपानों का वर्णन कीजिये? वार्षिक योजना निर्माण हेतु किन बातों को ध्यान मे रखा जाना चाहिए।
   Describe the Different Step of Construction of Annual Plan. What thing Should be kept in mind when preparing Annual Plan.

7.2 इकाई योजना (Unit Plan)

7.2.1 इकाई का अर्थ (Meaning of Unit) - शिक्षा शब्द कोष में इकाई शब्द का अर्थ पाठों का समुच्चय होता है। इकाई को भ्रमवश पाठ या विषयवस्तु का अंश मान लिया जाता है । इकाई का तात्पर्य ज्ञानानुभवों के एकीकृत रूप से है ऐसे अनुभव जो कि आपस में सम्बन्धित हों तथा जिन्हें एक साथ पढ़ाया जा सके, शिक्षण इकाई के अंतर्गत आते है । शिक्षण में इकाई का सर्वप्रथम उपयोग मॉरीसन ने किया। मॉरीसन ने यह माना कि इकाई शिक्षण का एक आवश्यक

अंग है और कोई भी छात्र विषय वस्तु को पूर्ण रूप से तभी आत्मसात कर सकता है जब उसे योजनाबद्ध ढंग से प्रस्तुत कर दिया जाए।

सामान्य रूप से हम कह सकते है कि पाठ्यक्रम का वह संगठित रूप है जो ज्ञान के किसी महत्वपूर्ण क्षेत्र में केन्द्रित रहता है तथा जिसका ज्ञान होने पर उसमें निहित सभी प्रकरणों का आपस में परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है ।

परिभाषाएं (Definitions) -

समफोर्ड (Samford) - इकाई ऐसी विषय वस्तु की रूपरेखा है जो शिक्षार्थी की आवश्यकताओं और रूचियों से सम्बन्धित होने से अपने आप में अलग सी दिखाई देती है ।"

"Unit is an carefully selected subject matter which has been isolated because of its relationship to pupils needs and interest"

-Samford

प्रेस्टॉन (Preston) - "एक जैसी वस्तुओं का समूह जो कि अधिगमकर्ता द्वारा बोधगम्य हो, इकाई कहलाती है।"

"A units is as large as block of detailed subject matter as can overviewed by the learner"

सी मोरिसोन (C.Morison)' - "इकाई संगठित विज्ञान तथा कला के वातावरण का विस्तृत व महत्वपूर्ण पहलू है, जिसके सीख लेने से व्यक्तित्व में अनुकूलता आती है ।

हैरम (Herram) - "इकाई किसी विषय का एक बड़ा उपयोग होता है, जिसमें कोई मूलभूत सिद्धान्त होता है । इस सिद्धान्त या प्रकरण के अनुसार ही छात्र-छात्राओं का इस प्रकार नियोजन किया जाता है कि उन्हें महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त हो सकें ।

7.2.2 इकाई की विशेषताएं (Characteristics of Unit) - इकाई में सामान्यत: निम्नांकित विशेषताएं होती है

1. इकाई सम्पूर्ण पाठ्यक्रम तथा दैनिक पाठ को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है ।
2. इकाई शिक्षण में ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग अभिवृति, अभिरूचि, कौशल आदि सभी उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से प्रयास करना सम्भव होता है ।
3. अन्य इकाईयों से सम्बन्ध जोड़ने में सहायक ।
4. शिक्षण में विभिन्न विधियों का उपयोग सम्भव ।
5. इकाई-शिक्षण में हम सम्पूर्ण से अंश की ओर बढ़ते है जो कि शिक्षण का एक मूल्यवान सूत्र है।
6. इकाई-शिक्षण में विषयवस्तु की दृष्टि से समग्रता होती है ।
7. दैनिक शिक्षण के लिए आधार प्रदान करने वाली ।
8. बालकों को नवीन अनुभवों का ज्ञान अर्जित कराने में सहायक ।
9. बालकों के लिए बोधगम्य तथा रूचि जाग्रत करने वाली ।
10. सम्पूर्ण अनुभव पर आधारित ।

7.2.3 इकाई की बनावट (Composition of the Unit) - पाठ्यक्रम के छोटे बोधगम्य भाग इस प्रकार बना दिये जाते है कि एक ही प्रकार के प्रकरण उस भाग में सम्मिलित हो जाते है। शिक्षार्थी की दृष्टि से ये उप भाग सीखने हेतु उपयुक्त होते हैं क्योंकि वे इन छोटे भागों को आसानी से समझ लेते हैं तथा अन्य उपभागों को भी पढ़ने के लिए उत्साहित करते है । बालक के लिए इस प्रकार की शिक्षण इकाइयां लाभप्रद बोधगम्य तथा रूचि जाग्रत करने वाली होती है । इन इकाईयों के मुख्यत: तीन भाग होते है । प्रारम्भिक भाग में छात्र इकाई का परिचय प्राप्त कर इकाई के उद्देश्यों की जानकारी प्राप्त करता है । इकाई के दूसरे भाग में नवीन प्रत्यय एवं सूचनाएं प्राप्त कर नवीन अनुभवों को अर्जित करता है । इकाई के तृतीय व अंतिम भाग में वह सीखे हुए अनुभवों को दोहरा कर उनका अपने मस्तिष्क में संगठन करता है । चूंकि एक इकाई में समग्रता का गुण होना आवश्यक है फिर भी इकाई का आकार प्रत्येक स्तर पर समान नहीं होता है । कई बार किसी विषय में कुछ इकाइयां बड़ी होती है । किसी स्तर पर भी कुछ इकाइयां बड़ी होती है किसी स्तर पर छोटी अर्थात् प्राथमिक स्तर पर किसी पाठ से सम्बन्धित ज्ञान कम मात्रा में देना होता है। क्योंकि विषयवस्तु का क्षेत्र समिति होता है परन्तु माध्यमिक स्तर पर इन्हीं इकाईयों का क्षेत्र बड़ा किया जा सकता है। अत: हम यह मान सकते है कि प्रत्येक स्तर पर इकाई के आकार का निर्णय उसमें सम्मिलित विषय-वस्तु की मात्रा पर निर्भर करता है, इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इकाई शिक्षण-अधिगम परिस्थिति का वह समूह है । जो कम से कम दो तथा अधिक से अधिक आठ से दस पाठों में विभाजित किया जा सकें । अत: विषयवस्तु को इस प्रकार विभाजित करना उपयुक्त होगा कि उसकी समग्रता नष्ट ना हो तथा छात्रों को आसानी से समझ में आ सकें।

इकाई योजना (Unit Plan)- किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए उसका पूर्व नियोजन आवश्यक होता है । यदि पूर्व में योजना बना ली जाए तो कार्य की सफलता में सन्देह नहीं होता । इसी प्रकार शिक्षण के क्षेत्र में भी प्रत्येक कार्य को विधिवत् करने के लिये योजना बना लेनी चाहिए तभी प्रत्येक कार्य व्यवस्थित रूप से किया जा सकता है ।

इसके अनुसार अध्यापक को अपने अध्यापन कार्य से सम्बन्धित योजना बनाकर ही शिक्षण कार्य करना चाहिए। अत: इसके लिए उसे अपने विषय से संबंधित पाठों की इकाइयां बना लेनी चाहिए और इन्हीं इकाईयों को शिक्षण में इकाई योजना कहा जाता है ।

इकाई योजना में विषयवस्तु की दृष्टि से समग्रता होती है तथा वह सम्पूर्ण अनुभव पर आधारित होती है। इकाई योजना के संदर्भ में वाल्टर डी. पियर्स तथा माइकल ए. लोर्बर (Water D. Pierce and Michael A.Lober) कहते है कि - "इकाई योजना अध्यापक द्वारा पूर्व चिन्तन की शिक्षार्थी के एक अन्तराल में (सामान्यत: 3 से 6 सप्ताह) क्या प्राप्त करेंगे तथा कैसे सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे को प्रदर्शित करती है ।"

इकाई योजना को अध्यापक व्यूह रचना माना जाता है, जो पूर्व चिन्तन पर आधारित होता है तथा जिसकी समाप्ति मूल्यांकन द्वारा होती है ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इकाई योजना एक आधार पत्र है जिसमें शिक्षण उद्देश्य, विषय-वस्तु अध्ययन-अध्यापन स्थितियां, सहायक शिक्षण सामग्री, नियत कार्य तथा मूल्यांकन आदि की स्पष्ट रूपरेखा होती है ।

7.2.4 योजना के सोपान (Step of Unit Plan) -

(1) **मॉरीसन के सोपान (Marrison's Steps) -** निम्न पांच सोपान बताएं है-

1. खोज-Exploration
2. प्रस्तुतीकरण- Presentation
3. अवशोषण -Assimilation
4. संगठन -Organisation
5. मौखिक आवृति -Recitation oral

(2) **ग्राहम्स के सोपान -** ग्राहम्स तथा आईवर्वसन ने निम्न सोपान इकाई योजना बताए है-

1. प्रस्तावना (introduction)
2. नियोजन (Planning)
3. अनुसंधान (Investigation)
4. अवबोध (Understanding)

(3) **रिस्क के सोपान -** निम्न सोपान निर्धारित किए है-

1. उद्देश्यों का चयन (selection of Objectives)
2. इकाई-खण्डों का विभाजन (Distribution of Unit Parts)
3. इकाई खण्डों का विकास (Development of unit Parts)
4. प्रस्तावना (Introduction)
5. व्यक्तिगत आवश्यकताओं की व्यवस्था (Organisation of Personal need)
6. मूल्यांकन (Evaluation)
7. सम्बन्धित पुस्तकों की सूची (List of related books)

7.2.5 इकाई योजना के लाभ (Advantage of Unit Plan)

1. इकाई योजना से बालक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता का विकास कर लेते हैं ।
2. विषयवस्तु का संगठन अच्छी प्रकार से करती है ।
3. प्रजातंत्र के सिद्धान्त पर आधारित है ।
4. इकाई योजना मनोवैज्ञानिक है । अत: बालकों की रूचियों व आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है ।
5. शिक्षक छात्र क्रिया पहले से सुनिश्चित हो जाने से उनकी सक्रिय सहभागिता रहती है ।
6. बालकों के ज्ञानकोष में वृद्धि कर उनकी योग्यताएं विकसित करती है ।
7. शिक्षण की उचित रूपरेखा तैयार हो जाती है, जिसमें नियोजित शिक्षण होता है ।
8. व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जाती है ।

7.2.6 इकाई योजना की सीमाएं (Limitation of unit Plan)

1. इकाई योजना के अनुसार शिक्षण यन्त्रवत हो जाता है तथा मौलिकता की समाप्ति हो जाती है ।
2. इसे तैयार करना कठिन कार्य है ।
3. इसमें सहायक सामग्री के प्रयोग पर अधिक बल दिया जाता है अत: यह अधिक महंगी है।
4. सभी प्रकार के ज्ञानार्जन के लिए वह विधि उपयुक्त नहीं है ।
5. इसके द्वारा शिक्षण करने में समय अधिक लगता है।

7.2.7 इकाई योजना का प्रारूप (Format of Unit Plan)-

इकाई योजना का प्रारूप (Format of Unit Plan)

उप इकाई / प्रकरण	शिक्षण बिन्दु व विषय वस्तु विश्लेषण	उद्देश्यमय व्यवहारगत परिवर्तन	अध्ययन-अध्यापन संस्थिति		नियत कार्य	मूल्यांकन
			शिक्षक क्रिया	शिक्षार्थी क्रिया		

1. सर्वप्रथम सामान्य सूचनाएं जो इकाई योजना से सम्बन्धित होती है, अंकित की जाती हैं, जिनमें कि प्रारम्भिक जानकारी मिल सकें । जैसे कक्षा, कालांश आवृति हेतु कालांश, मूल्यांकन हेतु कालांश इन सबकी आवश्यकता इकाई में कितनी होगी इसका परिचय दिया जाता है ।
2. इकाई के भाग उप इकाई कहलाते है, जिनमें इकाई को विभक्त किया जाता है तथा प्रतिदिन के पाठ के प्रकरण जो उप-इकाई में होते है, लिखे जाते हैं ।
3. उप इकाईयों व प्रकरण निश्चित हो जाने से यह ज्ञात हो जाता है कि इकाई शिक्षण में कितने कालांशों की आवश्यकता होगी।
4. प्रकरण निश्चित हो जाने पर शिक्षण बिन्दुओं का चयन कर उन्हें व्यवस्थित रूप से लिखा जाता है इसके लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक का विषय वस्तु पर पूर्ण अधिकार हो तथा विषय-वस्तु विश्लेषण की योग्यता उसमें आवश्यक हों ।
5. इसके पश्चात् उन शिक्षण उद्देश्यों को लिखा जाता है जो इकाई के अध्ययन क्रम में छात्र अर्जित करते है । अत: ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग कौशल, अभिरूचि च अभिवृत्ति आदि उद्देश्य निर्धारित किए जाते है ।
6. शिक्षण बिन्दु व उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण छात्र क्रियाओं को उल्लेखित किया जाता है। जिन उद्देश्यों को लेकर अध्यापक शिक्षण कार्य कर रहा है और छात्र अंत क्रिया कर अधिगम कर रहा है, इन सभी क्रियाओं को शिक्षक छात्र क्रियाओं में लिखा जाता है ।

7. इकाई योजना में जितनी भी सहायक सामग्री जैसे मानचित्र, चित्र समय रेखा या अन्य श्रव्य-दृश्य साधनों की सहायता ली जा रही है उनका पर्याप्त विवरण दिया जाता है कि इनका किस प्रकरण में किन-किन साधनों का उपयोग किया गया है?
8. बालक विषय वस्तु का अधिगम करता है तो गृह कार्य उस अधिगम को प्रबल बनाता है, मैं: शिक्षक द्वारा गह कार्य दिया जाना आवश्यक है इसलिए प्रत्येक प्रकरण से सम्बन्धित गृह कार्य निर्धारित रूप से दिया जाता है ।
9. मूल्यांकन इकाई का अंतिम पक्ष है । मूल्यांकन करने के लिए इकाई जांच परख का निर्माण किया जाता है चूंकि इकाई जांच के सभी प्रश्न उद्देश्यों पर आधारित होते हैं अत: बालक के सभी पक्षों का मूल्यांकन हो जाता है ।

7.2.8. सारांश (Summary) -

इकाई योजना के उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता हैं कि योजना इकाई शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया का शाब्दिक चित्र प्रस्तुत करती हैं । इकाई योजना बना लेने से शिक्षक शिक्षण के प्रत्येक पक्ष की दृष्टि से स्पष्ट हो जाता हैं तथा शिक्षण कार्य को पूर्ण आत्म विश्वास एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न कर सकता हैं । इतना होते हुए भी यह सही है कि इकाई योजना एक साधन है, साध्य नहीं ऐसा नहीं है कि शिक्षक योजना का दास होकर कार्य करें । उसे शिक्षण प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर पर आपकी सूझ बूझ का उपयोग कर शिक्षण को निरन्तर उन्नत बनाने का प्रयास करना चाहिए । यदि ऐसा करने के लिए अपनी योजना मे परिवर्तन भी करना पड़े तो सहर्ष करना चाहिए ।

इकाई योजना में विषय - वस्तु की दृष्टि से समग्रता होती है । यह एक सम्पूर्ण अनुभव पर आधारित होती है। इसमे सभी विभिन्न उद्देश्यों की दृष्टि से चिन्तन करना सम्भव होता है । यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम तथा दैनिक शिक्षण को जोड़ने वाली अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है । इसमे विभिन्न प्रगतिशील विधियों के उपयोग की दृष्टि से विचार किया जा सकता है । इसका मनोवैज्ञानिक आधार भी समूह है । इकाई का आधार स्तरानुसार बदल जाता है । सामान्यत: इकाई अनुसार शिक्षण का वह समूह है । जो कम से कम तीन-चार तथा अधिक से अधिक आठ-दस पाठों में विभाजित किया जा सकें।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इकाई योजना से आप क्या समझते हैं?
   What do you understand by Unit Plan?
2. इतिहास शिक्षण मे इकाई योजना पर एक टिप्पणी लिखिये?
   Write a note on Unit Plan History Teaching.
3. इकाई योजना की रूपरेखा तथा बिन्दुओं की व्याख्या कीजिये?
   Explain the main points and outline of the Unit Plan?
4. इकाई योजना की उपयोगिता का समीक्षात्मक मूल्यांकन कीजिये?
   Critically assess utility of the Unit Plan?

5. इकाई पाठ योजना सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का एक स्पष्ट चित्र है।उक्त कथन स्पष्ट कीजिये।
"Unit Plan is a clear picture of whole taching process"Explain the above statement.

7.3 पाठ योजना
Lesson Plan

किसी भी कार्य की सफलता या असफलता उसके नियोजन पर निर्भर करती है । यदि शिक्षण से पूर्व पूर्ण योजना तैयार कर ली जाए तो वह निश्चित रूप से सफल होता है । यह शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु भी आवश्यक है । शिक्षक जिस विषयवस्तु को पढ़ाना चाहता है, उसे वह इकाइयों में विभाजित कर लेता है और उस इकाई की विषयवस्तु को वह प्रतिदिन पढ़ाता है परन्तु प्रतिदिन के शिक्षण से पूर्व भी वह चिन्तन करता है और सोचता है कि बालक की विषयवस्तु से उत्सुकता कैसे बढ़ाई जाए, कौन सी सहायक सामग्री काम में ली जाए, बालकों में कौन-कौन से व्यवहारगत परिवर्तन हो सकेंगे? इन प्रश्नों पर विचार कर शिक्षक एक कालांश हेतु एक लिखित योजना का निर्माण करता है, जिसे पाठ योजना कहते है ।

पाठ योजना के निर्माण से तात्पर्य है कक्षा में जाने से पूर्व अध्यापक पाठ सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातों का ब्यौरा बना लें, क्योंकि मौखिक रूप से ब्यौरा बनाने में बहुत कुछ भूल सकता है पर लिखित रूप देना ठीक रहता है । मारसेल शिक्षक को एक कलाकार की भांति मानते है । उसकी कृति श्रेष्ठ तभी होगी जबकि वह सफल कलाकार की भांति अपने शिक्षण कार्य की योजना सामान्य शिक्षण सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित कर लें । इसी प्रकार स्ट्रक ने शिक्षण के कार्यो को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए पाठ योजना बनाने की आवश्यकता पर बल दिया है, उन्होंने शिक्षक और इंजीनियर की तुलना करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार एक कुशल अभियंता पूर्व में ही कार्य तथा सामग्री के बारे में निर्णय ले लेता है ताकि दूसरे दिन कार्य बिना रूकावट तथा सफलतापूर्वक चलता रहे, अध्यापक को भी अध्यापन से पूर्व ऐसी ही अध्यापन की रूपरेखा बना लेनी चाहिए ।

7.3.1 परिभाषाएं (Definitions)

पाठ योजना शिक्षण की पूर्व तैयारी है जिसे शिक्षक पूर्व चिन्तन के आधार पर अधिगम शिक्षण सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर अध्यापन हेतु तैयार करता है । विभिन्न लोग अलग-अलग प्रकार से पाठ योजना की परिभाषा करते है । कुछ लोग इसे शिक्षण का नील-पत्र कहते है तो कुछ इसे सृजनात्मक कार्य (Creative Work) कहते है, परन्तु यह एक कक्षा अध्यापन की पूर्व लिखित योजना है जिसमें पाठ का प्रयोजन और उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयोग किए जाने वाली विधियों को निश्चित करता है इसे निम्न परिभाषाओं से समझा जा सकता है :-

(1) **बाईनिंग एवं बाईनिंग -** "दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्यवस्तु का चयन करना और क्रमबद्ध करना तथा प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्णय करना प्रमुख है।"

Daily lesson planning involves definition the objectives, selecting, sequency arranging the subject matter and determining the method of presentation.

(2) **डेवीज (Devis) अनुसार** - "शिक्षण व्यवस्था के सभी पक्षों के व्यावहारिक रूप का आलेख ही पाठ योजना है।"

(3) **बासिंग के अनुसार** - "पाठ योजना से अभिप्राय उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए उन विशिष्ट साधनों का वर्णन हैं जिनके द्वारा वे उपलब्धियाँ एक निश्चित समय में की गई क्रियाओं के परिणामस्वरूप प्राप्त की जाती है ।"

"Lesson Plan is the title given to a statement of the achievements to be realized and the specific means by which these are attained as a result of achievement engaged during the period.

7.3.2 पाठ योजना की आवश्यकता (Needs of lesson Plan) -

1. शिक्षक के कार्य को पाठ योजना नियमित तथा सुसंगठित बनाती है ।
2. पाठ के उद्देश्य निश्चित करने में सहायक है ।
3. पाठ योजना से शिक्षक का व्यर्थ समय नष्ट होने से बचता है ।
4. शिक्षक को उत्तम शिक्षण विधि चुनने में सहायक है ।
5. विचार रहित शिक्षण के दोषों को दूर करने में सहायक है ।
6. उपयुक्त सहायक सामग्री का आयोजन करने में सहायक है ।
7. शिक्षक को क्रमबद्ध व नियमबद्ध कार्य करने की प्रेरणा मिलती है 1
8. नये पाठ का पूर्व पाठ के साथ सम्बन्ध स्थापित रखने में सहायक है ।
9. बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य किया जाता है ।
10. शिक्षण की सफलता का मूल्यांकन सम्भव है ।

7.3.3 पाठ योजना के आवश्यक तल (Essential elements of lesson Plan)

1. पाठ योजना लिखित रूप से तैयार की जानी चाहिए।
2. पाठ योजना बालक के पूर्व ज्ञान पर आधारित हो अर्थात् पूर्व पाठ को नवीन पाठ से सम्बद्ध करें।
3. पाठ योजना में शिक्षण बिन्दुओं का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए ।
4. पाठ योजना के उद्देश्य निर्धारित होने चाहिए जिन्हें पाठ द्वारा प्राप्त करना है ।
5. शिक्षण उद्देश्यों के साथ अपेक्षित व्यवहारागत परिवर्तन भी लिखे जाने चाहिए ।
6. पाठ योजना में शिक्षण सामग्री के प्रयोग का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए
7. पाठ योजना में महत्वपूर्ण उदाहरणों का समावेश हो ।

8. पाठ योजना द्वारा रोचक व प्रेरणादायक शिक्षण विधियों के प्रयोग की ओर संकेत मिलना चाहिए।
9. पाठ योजना में प्रश्न तथा सम्भावित उत्तरों को स्पष्ट भाषा में लिखा जाना चाहिए।
10. पाठ योजना में दिए जाने वाले अधिगम अनुभवों का उल्लेख होना चाहिए।
11. पाठ योजना में पाठ के प्रत्येक पद के लिए कुछ समय निर्धारित हो ।
12. मूल्यांकन प्रश्न शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाए जाने चाहिए ताकि छात्रों की प्रगति का पता चल सकें।
13. पाठ योजना पुनर्निरीक्षण को पाठ शिक्षण में स्थान दें ।

7.3.4 पाठ योजना के विविध उपागम (Various Approaches of Lesson Planning) – योजना के निर्माण में अनेक उपागमों का प्रयोग किया जाता है, कुछ महत्वपूर्ण उपागम निम्नलिखित है:-

(1) **मॉरीसन उपागम (Morrioson Approach)-** इस उपागम को हेनरी सी, मौरीसन ने सन् 1926 में प्रस्तुत किया । इस उपागम को मौरीसन उपागम अथवा इकाई प्रणाली (Unit Method) कहते है। यह गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर आधारित है । इस उपागम का मूलभूत सिद्धान्त है कि ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में ज्ञान की एकता महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा ध्यानपूर्ण की ओर शीघ्र आकर्षित होता है और बाद में उसके अंगों का विश्लेषण किया जाता है । यह छात्र-केन्द्रित उपागम कहा जाता हैं क्योंकि इसके निर्माण में छात्र की रूचि तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता हैं । मौरीसन के अनुसार शिक्षण में पूर्व परीक्षा अध्यापन, मूल्यांकन सुधारात्मक शिक्षण, अध्यापन, मूल्यांकन श्रृंखला का उपयोग तब तक किया जाना चाहिए जब तक कि बालक इकाई को पूर्ण रूप से सीख न लें । इसका मानना है कि उद्देश्यों का स्पष्टीकरण भली प्रकार से किया जाना चाहिए । हरबार्ट की पंचपदी के समान मौरीसन की इकाई प्रणाली में भी निम्न पांच पदों का अनुसरण किया जाता है :-

1. अन्वेषण - (Exploration)
2. प्रस्तुतीकरण - (Presentation)
3. आत्मीकरण - (Assimilation)
4. संगठन - (Organisation)
5. अभिव्यक्ति - (Recitation/Expression)

इन पांच पदों का अनुसरण शिक्षण के दौरान किया जाता है तथा इन्हीं के आधार पर बालक के व्यक्तित्व में वांछित परिवर्तन का प्रयास किया जाता है।

(2) **हरबार्ट उपागम (The Habartian Approach) -** यह उपागम जॉन फेड्रिक हरबार्ट के द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसे पंचपदी प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है । हरबार्ट की धारणा है कि बालक अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है । ये अनुभव बाह्य जगत के सम्पर्क में आने से प्राप्त करता है और यह ज्ञान धीरे-धीरे संचित होता रहता है । शिक्षण के संबंध में हरबार्ट का विचार है कि बालक को ज्ञान प्रस्तुत करते समय नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से यदि सम्बन्धित कर दिया जाये तो वह इसे सुगमता व सरलता से सीख सकेगा । इस प्रकार दिये जाने वाले ज्ञान

को वह प्रस्तुतीकरण की संज्ञा देता है । इसमें शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। क्योंकि वह बालक को बाह्य जगत का अनुभव कराता है ।

ये अनुभव जितने क्रमबद्ध और तर्क संगत होंगे बालक के ज्ञान का स्तर उतना ही अच्छा होगा । परन्तु प्रश्न यह उठता है कि ये अनुभव किस प्रकार से कराया जाए इस संबंध में हरबार्ट यह कहता है कि यह सामाजिक आदान-प्रदान, व्यक्तिगत अनुभूति एवं निर्देशन तथा वस्तुओं से सीधा सम्पर्क कराकर किया जा सकता है । यह भी आवश्यक है कि बालक अच्छे व बुरे में भेद स्थापित कर अच्छे तथ्यों एवं प्रत्ययों को ही ग्रहण करें और शिक्षक इन दोनों अनुभवों को पहचानना तथा इनमें भेद स्थापित करना सिखाता है । अतः इस उपागम में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण माना गया है।

हरबार्ट ने यह आवश्यक समझा कि बालक के समक्ष एक तार्किक क्रम तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से बाह्य जगत की वस्तुओं की प्रस्तुत करने की आवश्यकता है और इसी कारण उसने अपने उपागम में पांच सोपान प्रस्तुत किए जिन्हें 'पंचपदी शिक्षाक्रम' कहा जाता है । यह पद निम्न प्रकार से है ।

1. उद्देश्य कथन - (Statement of Aims)
2. प्रस्तुतीकरण - (Presentation)
3. स्पष्टीकरण - (Explanation)
4. सामान्यीकरण - (Generalization)
5. प्रयोग - (Application)

शिक्षण में इन्हीं पदों का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है । ये उपागम मनोविज्ञान में साहचर्य रूचि तथा पुर्वानुवर्ती संचित सिद्धान्तों पर आधारित हैं । इस विधि के अनुसार "सीखने की परिस्थितियों में इकाईयों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है और इकाईयों की क्रियाओं को एक क्रम में सम्पादित किया जाता है।" इस उपागम में पाठ्यवस्तु अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसमें मुख्य बिन्दु सीखना निर्धारित किया गया है और यदि यह प्रक्रिया अध्यापक को भली भांति समझ में आ जाता है तो वह एक शिक्षक बन सकता है।

इस मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया की परिकल्पना शिक्षण में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई और आज भी इनका प्रयोग पाठ योजना निर्माण में तथा अध्यापन में किया जाता है । शिक्षण प्रक्रिया में हरबार्ट की यह देन अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

(3) **ड्युवी तथा किलपेट्रिक उपागम (Dewy and Kilpatric Approach) -** यह उपागम जॉन ड्युवी तथा उनके शिष्य किलपेट्रिक द्वारा प्रस्तुत किया गया । इस उपागम में अधिगम अनुभवों को विशेष महत्वपूर्ण माना गया है जिसमें यह मान्यता है कि बालक अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को हल करने में कुछ अनुभव प्राप्त करता है और इन अनुभवों के आधार पर बालक को ज्ञान दिया जाए वह इसे शीघ्रता से अर्जित कर लेगा । ड्युवी तथा किलपेट्रिक उपागम में पाठ योजना में अधिगम का आधार योजना (Project) को माना गया है। जिसे वर्तमान में प्रयोजना विधि (Project Method) के नाम से भी जाना जाता है । इसमें अधिगम के दौरान पूर्णतः स्वाभाविक वातावरण रखा जाता है, जिसमें स्वक्रिया पर जोर दिया

जाता है जिसमें बालक स्वयं करके सीखते है । इस उपनाम में निम्न सात पद ड्युवी तथा किलपेट्रिक द्वारा प्रस्तुत किये गये है :-

1. परिस्थिति उत्पन्न करना - (Creating the situation)
2. योजना का चयन - (Selection of Project)
3. योजना का उद्देश्य - (Objectives of Projects)
4. योजना के कार्यक्रम की व्यवस्था - (Planning)
5. योजना का क्रियान्वयन - (Execution)
6. कार्यो का मूल्यांकन - (Evaluation)
7. योजना की रिपोर्ट बनाना - (Reporting)

निम्न सोपानों के आधार पर पाठ योजना का निर्माण कार्य किया जाता है । यह उपागम शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण देन है ।

(4) **ब्रिटिश उपागम (British approach) -** इस उपागम में मुख्य स्थान शिक्षक का होता है ।ब्रिटेन की शिक्षा प्रणाली पर वहां की परम्पराओं का काफी प्रभाव पड़ता है । इस उपागम पर आधारित पाठ योजना में शिक्षक की क्रियाओं तथा छात्रों के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जाता है। इस उपागम की मान्यता है कि शिक्षक का शिक्षण उसकी प्रभावशाली शिक्षण क्रियाओं पर निर्भर करता है। जितनी अधिक शिक्षक की क्रियाएं होती हैं, बालक को उतना ही सीखने के अवसर प्राप्त होते है। जब बालक पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उसके मूल्यांकन हेतु निष्पत्ति परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है ।

(5) **अमेरिकन उपागम (American Approach) -** इस उपागम में अधिगम उद्देश्यों को प्रमुखता दी जाती है । यह उपागम 'छात्र-केन्द्रित' माना गया है । प्रस्तुत उपागम में अध्यापक शिक्षण के दौरान सम्पूर्ण अधिगम परिस्थितियां उत्पन्न करता है, जिससे ज्यादा से ज्यादा छात्र सीख सके तथा उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके । इस उपागम में उद्देश्य व्यवहार तथा मूल्यांक्न को प्रमुख स्थान दिया गया है चूंकि यह छात्रकेन्द्रित है, अत: छात्र इसमें अधिक सक्रिय रहते है । पाठ्यवस्तु के आधार पर उद्देश्यों का परिभाषीकरण किया जाता है तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों, प्रविधियों, श्रव्य-दृश्य सामग्री आदि का उपयोग किया जाता है इसे व्यवहार उद्देश्य-मूल्यांकन की प्रमुख प्रणाली भी माना जा सकता है ।

(6) **भारतीय उपागम (Indian approach) -** भारतीय उपागम को ध्यान से अवलोकन करने पर इस पर ब्रिटिश उपागम तथा अमेरिकन उपागम का प्रभाव दिखाई देता है । प्रारम्भ में भारत में हरबार्ट की पंचपदी का अनुसरण करते हुए पाठ योजनाओं का निर्माण किया गया । परन्तु सन् 1960 के पश्चात् एनसीईआरटी. दिल्ली, सी.ए.एस.ई. बड़ौदा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के फलस्वरूप पाठ योजनाओं में परिवर्तन आने प्रारम्भ हो गए जिसमें पाठ योजना का एक नवीन रूप प्रस्तुत किया गया है। इन नवीन रूप में शिक्षण उद्देश्यों व सीखने के अनुभवों पर विशेष बल दिया जा रहा है।

कोई भी दैनिक पाठ योजना ऐसी नहीं हो सकती जो शिक्षण को निर्जीव व यन्त्रवत तैयार करें। यह तो शिक्षण प्रक्रिया को सूझबूझ के साथ प्रस्तुत करने में सहायक होती है । एक कोण

पर शिक्षण उद्देश्य, दूसरे पर अध्ययन-अध्यापन संस्थितिया तथा तीसरे पर मूल्यांकन स्थापित है और पाठ योजना का कोई भी प्रारूप इन त्रिकोणों से बाहर नहीं हो सकता इस आधार पर पाठ योजना का निम्न स्वरूप रखा जा सकता है ।

(1) **परिचयात्मक सूचना- (Introductory information)**

(1) कक्षा (Class)

(2) विषय (Subject)

(3) इकाई (Unit)

(4) दिनांक (date)

(5) कालांश (Period)

(6) समयावधि (Time Duration)

(7) प्रकरण (Topic)

(2) **उद्देश्य (objectives) -**

1. ज्ञान -knowledge
2. अवबोध -Understanding
3. ज्ञानोपयोग -Application
4. कौशल -Skill
5. अभिरूचि -interest/ Aptitude
6. अभिवृत्ति -Attitude
7. सहायक सामग्री -teaching aids or material aods
8. पूर्वज्ञान -Previous Knowledge
9. प्रस्तावना -Introduction
10. उद्देश्य कथन -Statement of aims
11. प्रस्तुतीकरण -Presentation

7.3.5

शिक्षण बिन्दु	उद्देश्य संकेत	अध्ययन-अध्यापन संस्थितियाँ	अधिगम अनुभव
Teaching Point	Objectives	Teaching- Learning Situation	Learning Experience

सारणी संख्या 7.1

12. श्यामपट् -Black Board
13. मूल्यांकन प्रश्न -Evaluation
14. नियत कार्य -Assignment or Home Work

इस प्रकार शिक्षण की सभी योजनाओं में दैनिक पाठ योजना बहुत महत्वपूर्ण है । यह एक क्रियात्मक योजना है जिसका सम्बन्ध दैनिक शिक्षण से होता है । पाठ योजना द्वारा मूल्यांकन कर यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों को पाठ योजना की सहायता से पढ़ाने

पर किस सीमा तक प्राप्त किया जा सकता है । अत: परिपूर्ण पाठ योजना की सहायता से शिक्षण को पूर्णतया प्रभावी बनाया जा सकता है ।

7.3.6 पाठयोजना के लाभ (Advantage of lesson Planning) - पाठ योजना बनाने के निम्नलिखित लाभ है

(1) **आत्म-विश्वास (Confidence) -** पाठ योजना का निर्माण कक्षा में जाने से पूर्व ही करना होता है अत: शिक्षक उसे पूरी मेहनत एवं लगन से तैयार करता है परिणाम स्वरूप उसमें आत्मविश्वास होगा और वह प्रत्येक क्रिया को सुचारू रूप से आगे बढ़ाता जायेगा ।

(2) **मनोवैज्ञानिक शिक्षण (Psychological Teaching) -** पाठ योजना के निर्माण में शिक्षक विभिन्न शिक्षण की विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग करता है । उसके लिये उचित आधार पर शिक्षण कार्य कर सकते है । पूर्व ज्ञान के आधार पर छात्रों की क्षमताओं का पता लगा लेता है और उसके अनुरूप उन्हें आगे ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करता है ।

(3) **विषय-सामग्री की निश्चितता (Determination of Subject Matter) -** पाठ योजना का निर्माण अध्यापक एक निश्चित कालांश के लिये करता है ऐसे वह उपलव्य कालांश में कितनी विषय-वस्तु का कक्षा में प्रस्तुतीकरण कर सकेगा । वह निरर्थक की बातों में नहीं उलझेगा और क्रमबद्ध रूप से उन्हें ज्ञान प्रदान कर सकेगा । इससे कक्षा में अनुशासन बना रहेगा । बालक अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहेंगे ।

(4) **सहायक सामग्री की तैयारी (Preparation of Material Aids) -** पाठ योजना के निर्माण के समय शिक्षक इस बात को भी तय कर लेता है कि किस प्रकार तथ्यों के स्पष्टीकरण में वह विषयवस्तु को कक्षा में कैसे रोचक एवं सुगम्य बनाकर बालकों के सामने प्रस्तुत करेगा एवं कक्षा में बिना अपना समय खोये एवं परेशानी के पाठ को समुचित ढंग से पूरा कर सकेगा।

(5) **ज्ञान का स्थाई होना (Stability in Knowledge) -** पाठ योजना में वह श्याम-पट्ट कार्य भी करता है । जिसे विद्‌यार्थी अपने पास लिखता जाता है परिणामस्वरूप उसके ज्ञान का स्थायित्वकरण भी होता है और कमी भूलने पर वह नोट बुक खोलकर उसे पुनर्स्मरण भी कर सकता है । इस प्रकार पाठ योजना कई तरह से लाभदायक साबित होती है ।

7.3.7 इकाई व पाठ योजना में अंतर (Difference between unit Plan and lesson Planning

अंतर का आधार	इकाई योजना (Unit Plan)	पाठ योजना (Lesson Plan)
अर्थ	प्रकरणो की समानता के आधार पर सभी पाठो को एक स्थान पर संबन्धित रूप से लिखना इकाई योजना है।	शिक्षक द्‌वारा एक कालांश मे पढ़ाये जाने वाले पाठ से संबन्धित गतिविधियों का पूर्व आलेख पाठ योजना है।
विषयवस्तु	इसमे पूरी इकाई से संबन्धित विषयवस्तु एवं उद्देश्य का निर्धारण होता है।	इसमे एक ही प्रकरण से संबन्धित विषय वस्तु एवं उद्देश्य होते हैं।
क्षेत्र	इकाई योजना विस्तृत है।	पाठ योजना संक्षिप्त है।
अधिगम अनुभव	इकाई योजना मे अधिगम अनुभवो	इसमे अधिगम अनुभव स्पष्ट रूप से

	को स्पष्टतः नहीं लिखा जाता।	लिखे जाते हैं।
ग्रहकार्य एवं मूल्यांकन	इसमे सभी पाठों का मूल्यांकन एवं गृहकार्य लिखा जाता है।	इसमे प्रत्येक दैनिक पाठ से संबन्धित पृथक-पृथक, मूल्यांकन कार्य एवं गृहकार्य दिया जाता है।
बनाने का समय	इकाई योजना दैनिक पाठ योजना से पूर्व मे बनाई जाती है।	दैनिक पाठ योजना का आधार इकाई योजना है। अतः यह बाद मे बनाई जाती है।

7.3.8 सारांश (Summary) -

पाठ योजना वह पूर्व निर्धारित योजना है जिसमें शिक्षक नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ता हुआ उपयुक्त विधियों, प्रविधियों एवं सहायक सामग्री के प्रयोगों द्वारा एक निश्चित समयावधि में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता है । इसमें वह पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कक्षा में समुचित वातावरण का निर्माण करता है और विभिन्न प्रकार से शिक्षार्थियों को उत्पेरित करता है ।

पाठ योजना बनाकर पढ़ने से शिक्षक पूर्व आत्म-विश्वास के साथ अध्यापन कार्य करता है वह छात्रों का मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षण कर सकता है पिछड़े बालकों का पता लगाकर उन्हें अतिरिक्त समय दे सकता है । वह निरर्थक की बातों में समय नष्ट नहीं कर सकता है तथा शिक्षण के सहायक साधनों का समुचित उपयोग कर सकता है, श्यामपट्ट कार्य आदि करवाकर उसके ज्ञान को स्थाई रूप प्रदान करता है इस प्रकार से पाठ योजना उसके लिये महत्वपूर्ण साबित होती है ।

शिक्षण की सभी योजनाओं में दैनिक पाठ योजना बहुत महत्वपूर्ण हैं । यह एक क्रियात्मक योजना हैं तथा इसका दैनन्दिन शिक्षण से सम्बन्ध होता हैं ।

दैनिक पाठ योजना का निर्माण करते समय शिक्षण-शिक्षार्थी-अनुक्रियाएँ, सहायक शिक्षण साम्रगी तथा मूल्यांकन आदि का ध्यान रखा जाता हैं । उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्ययनाध्यापन-संस्थितियों का निर्माण कर अन्त में मूल्यांकन इस ध्येय से किया जाता हैं कि यह ज्ञात हो सके कि शिक्षण उद्देश्यों को पाठ योजना की सहायता से पढ़ाने पर किस सीमा तक प्राप्त किया जा सका हैं।

पाठ योजना का उपयोग शिक्षण कार्य में भली प्रकार से कर शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता हैं ।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Question)

1. पाठ योजना बनाने के क्या लाभ है? उल्लेख कीजिये।
   What are the advantage of preparing lesson Plan?
2. पाठ योजना की उपयोगिता बताइये ।
   Discuss the utility of Lesson Plan.
3. इकाई योजना और पाठ योजना में अतंर बताइये।
   Differentiate between unit Plan & Lesson plan

4. पाठ योजना से आपका क्या अभिप्राय है?विवेचना कीजिये । दैनिक पाठ योजना रूपरेखा संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

What do you mean by lesson Plan? Give an outline of a daily lesson plan in berif.

5. पाठ योजना निर्माण के उद्देश्यों की विवेचना कीजिये ।

Disucuss the purpose of lesson Planning.

लघुत्तरात्मक प्रश्न (short answer type question)

1. पाठ-योजना मुख्य रूप से कितने प्रकार की होती है?
2. पाठ-योजना में उद्देश्यों के निर्धारण का क्या महत्व है?
3. शिक्षण के उपकरणों द्वारा पाठ-योजना को कैसे प्रभावी बनाया जा सकता है?
4. कक्षा में प्रभावशाली शिक्षण करने हेतु पाठ-योजना की तैयारी किस प्रकार की जानी चाहिए।

दैनिक पाठ योजना

दिनांक - 05.01.07

कक्षा – 6

कालांश – 1

इकाई – नदी की घाटी सभ्यताएं

समयावधि – 30 मिनट

प्रकरण - सिन्धु घाटी सभ्यता उद्देश्य -

उद्देश्य-

(1) **ज्ञानात्मक -** विद्यार्थियों को सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्याभिज्ञान एवं प्रत्यास्मरण करना ।

- सिन्धु घाटी सभ्यता का परिच
- सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताएं
- सिन्धु, घाटी सभ्यता का पतन

(2) **अवबोध -**

- विद्यार्थियों को सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताओं की व्याख्या कराना ।
- विद्यार्थियों को सिन्धु घाटी सभ्यता की मिश्र सभ्यता से तुलना कराना ।

(3) **ज्ञानोपयोग -** विद्यार्थी सीखे हुए ज्ञान का नवीन परिस्थितियों से सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे।

(4) **कौशल -**

- विद्यार्थियों को सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थलों को मानचित्र में अंकित करने की कुशलता का विकास करना ।

- विद्यार्थियों को सिन्धु घाटी सभ्यता की नगर योजना का चार्ट बनाने की कुशलता का विकास करना ।

(5) **अभिरूचि -** विद्यार्थियों में सिन्दु घाटी सभ्यता के ऐतिहासिक स्थलों को दूरदर्शन एवं प्रत्रिका देखने की सम्बन्धित साहित्य पढ़ने की रूचि विकसित करना ।

(6) **अभिवृति** - विद्यार्थियों में सिन्धु घाटी सभ्यता को पढ़कर अन्य प्राचीन सभ्यताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना ।

(7) **पूर्ण ज्ञान -** छात्र मानव के विकास व उसके रहन-सहन के बारे में सामान्य जानकारी रखते है।

सहायक सामग्री-

- कक्षा उपयोगी सामान्य उपकरण ।
- भारत का मानचित्र, नगर नियोजन का चार्ट ।

प्रस्तावना -

- मनुष्य को जीवित रहने के लिए किन-किन चीजों की आवश्यकता होती है ।
- जल कहां-कहां से प्राप्त होता है?
- नदी के आस-पास बसी हुई सभ्यता कौनसी सभ्यता कहलाती है?
- नदी घाटी सभ्यता को भारत की किस सभ्यता के नाम से जाना जाता है ।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के बारे में बताइए ।

उद्देश्य कथन -

आज हम सिन्धु घाटी सभ्यता के बारे में अध्ययन करेंगे ।

पाठ का प्रस्तुतीकरण एवं विकास

शिक्षण बिन्दु	उद्देश्य संकेत	अध्ययन-अध्यापन संस्थितियाँ	अधिगम अनुभव
Teaching Point	**Objectives**	**Teaching- Learning Situation**	**Learning Experience**

श्यामपट्ट सारांश :

1. **सिंधु घाटी सभ्यता का परिचय -** इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते है, 1992 में खोज की, राजस्थान में कालीबंगा तक विस्तार है और प्रमुख नगर हड़प्पा व मोहनजोदड़ो है ।

2. **सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएं -** नगरों का निर्माण सुव्यवस्थित था, सबसे अच्छी इमारत स्नानागार थी, समाज में तीन वर्ग - व्यापारी, शासक मजदूर थे ।

3. **पतन -** यह सभ्यता 1000 वर्ष तक बनी रही, व इसका पतन बाढ़, भूकम्प, किसी महामारी या प्रकोप के कारण या आर्यो के आक्रमण के कारण हुआ ।

पुनरावृत्ति / मूल्यांकन प्रश्न

निर्देश - निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रश्न संख्या 1 का विकल्प चयन कीजिए, प्रश्न 2 के रिक्त स्थान भरिए, प्र. 3 का एक शब्द में उत्तर, अन्य प्रश्नों का उत्तर अपने शब्दों में दीजिए।

1. सिन्धु घाटी सभ्यता का पता किस सन् में लगा ?

(अ) 1920 ई. (ब) 1922 ई. (स) 1921 ई. (द) 1923 ई.

2. सिन्धु घाटी सभ्यता के दो नगर .... व .... है ।
3. वर्तमान में हड़प्पा व मोहन जोदड़ो किस देश में है?
4. सिन्धु सभ्यता की क्या-क्या देन रही है ।
5. सिन्धु घाटी सभ्यता का पतन किन कारणों से हुआ था?

नियत कार्य -

1. सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताएं बताइए व भारत के मानचित्र में इसके प्रमुख स्थान अंकित कीजिए।

7.4 संदर्भ ग्रंथ (Refrences)

(1) घाटे बीडी-इतिहास शिक्षण, साहित्य अकादमी चण्डीगढ़-1981

(2) ओड, प्रो.एल.के. - पाठ योजनाएं, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।

(3) सक्सेना, एन.आर. स्वरूप - शिक्षण कला एवं पद्धतियाँ

(4) दीक्षित, यू.एन. एवं बघेला - इतिहास शिक्षण राज. हिन्दी अकादमी, जयपुर ।

(5) Shaida, B.D. and Sahib Singh- Teaching of History Ganpat Ray& Sons Jalandhar

(6) H. Johnson - The Teaching of History (Macmillam Co.,NewYork-1963)

(7) Jarvis C.H - The Teaching of History (Oxford Uni Press London-1932)

(8) Wells H.G- The New Teaching of History (Cassells, London-1921)

(9) पुरोहित, जगदीशनारायण - शिक्षण के लिए आयोजन, राज. हिन्दी ग्रन्ध अकादमी, जयपुर ।

(10) पुरोहित, जगदीशनारायण व्यास शर्मा, भावी शिक्षको के लिए आधारभूत कार्यक्रम राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

इकाई-8

इतिहास शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण, प्रश्न पत्र सेट का निर्माण तथा इतिहास आधारित प्रश्न बैंक का निर्माण, खुली पुस्तक परीक्षा हेतु प्रश्न

Measurement and Evaluation in History teaching, diagnostic and remedial teaching. Development of multiple question paper set framing of content based question bank in History teaching, some question for open book examination.

इकाई की संरचना (structure of Unit)

8.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and objectives)

8.1 मूल्यांकन की अवधारणा (Concept of Evaluation)

8.1.1 मूल्यांकन की परिभाषाएं (Definitions of Evaluation)

8.2 मापन का अर्थ एवम् परिभाषाएं (Meaning and definition of Measurement)

8.2.1 मापन प्रक्रिया (Measurement Process)

8.2.2 मूल्यांकन एवं मापन में अन्तर (Difference between Evaluation and Measurement)

8.2.3 मापन एवं मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Measurement)

8.2.4 मापन एवं मूल्यांकन की तकनीक (Technique of measurement and Evaluation)

8.2.5 मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण (tools of Measurement and Evaluation)

8.3 निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic test)

8.3.1 निदानात्मक परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and Definition of diagnostic Test)

8.3.2 निदानात्मक परीक्षण के उद्देश्य (Main objectives of diagnostic test)

8.3.3 निदानात्मक परीक्षण के प्रकार (Types of diagnostic test)

8.4 उपचारात्मक परीक्षण (Remedial teaching)

8.5 बहु चयनात्मक प्रश्न (Multiple choice- Item)

8.6 इतिहास शिक्षण में प्रश्न बैंक (Question bank in History teaching)

8.7 खुली पुस्तक परीक्षा (Open book Examination)

8.8 संदर्भ ग्रंथ (References)

8.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य

Aims and Objectives

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर छात्र-

- मापन एवं मूल्यांकन की अवधारणा से अवगत हो सकेंगे।
- मापन एवं मूल्यांकन का कक्षा कक्ष में आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकेंगे।
- निदानात्मक शब्द की अवधारणा से अवगत हो सकेंगे।
- निदानात्मक परीक्षण तैयार करना तथा छात्रों की कमजोरियों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास कर सकेंगे।
- निदान एक सामान्य अधिगम दोष है इस तथ्य से अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों को परिचित करा सकेंगे।
- विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की कमजोरियां शिक्षण के समय अनुभव कर सकेंगे।
- उपचारात्मक परीक्षण की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।
- उपचारात्मक परीक्षण एवं निदानात्मक परीक्षा में अन्तर ज्ञात कर सकेंगे।
- विद्यालय स्तर पर उपचारात्मक परीक्षा की व्यवस्था करना एवं इसको आयोजित कराने में शिक्षकों को प्रेरित कर सकेंगे।
- शिक्षा व्यवस्था परीक्षा प्रणाली में नवीन प्रत्ययों से अवगत होना तथा खुली पुस्तक परीक्षा प्रश्न बैंक एवं मल्टीपल प्रश्न पत्र तैयार कर सकेंगे।
- मल्टीपल प्रश्न पत्र का प्रारूप तैयार करके अध्यापक डायरी में प्रस्तुत कर सकेंगे।
- इतिहास विषय के हेतु प्रश्न बैंक का निर्माण करना एवं विद्यार्थियों व अन्य शिक्षकों से प्रश्न तैयार कर सकेंगे।

भूमिका (Introduction) - शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आयोजन कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों को लेकर किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति तभी होगी, जब बालकों को विद्यालयों में उपयुक्त शिक्षा की व्यवस्था की जायें। शिक्षा व्यवस्था उपर्युक्त शिक्षण विधि, प्रविधि आदि के द्वारा की जाती है, पर यह व्यवस्था कितनी प्रभावी है? सार्थक है ? और किस सीमा तक प्राप्त की जा रही हैं? इन सब प्रश्नों का उत्तर जानने के लिये शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाया जाता है। अर्थात् मापन एवं मूल्यांकन शिक्षण-प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसी प्रक्रिया या व्यवस्था के द्वारा अध्यापक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं, योग्यताओं, रूचियों के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था करता है। शैक्षिक उद्देश्य शिक्षण-प्रक्रिया एवं मूल्यांकन तीनों एक दूसरे पर निर्भर होते है। मूल्यांकन एवं मापन शैक्षिक उद्देश्यों को निर्धारित करने तथा उपयुक्त शिक्षण-प्रक्रिया के चयन में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं।

8.1 मूल्यांकन की अवधारणा (Concept of Evaluation)

मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ मूल्य का अंकन करना है। मूल्यांकन एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया का प्रयोग हम दैनिक जीवन में निरन्तर करते है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया एवं व्यवहार का मूल्यांकन करता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति संबंधित व्यक्ति में उत्पन्न हुए व्यावहारिक परिवर्तनों के आधार पर अपने कार्यो का मूल्यांकन करता है। उदाहरणस्वरूप - चिकित्सक अपने व्यवहार का मूल्यांकन रोगी में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर करता है। डिजाईनर अपने डिजाईन की प्रतिक्रिया बाजार में देखता है तो शिक्षक अपने कौशलों के द्वारा जो परिवर्तन होते हैं विद्यार्थियों में देखता है। मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया एक का अविच्छिन्न अंग (Internal Part) है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। शिक्षक अपनी कक्षा में छात्रों का मूल्यांकन निरन्तर करते रहते है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षण भी आयोजित किये जाते है। इसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया के प्रत्येक पक्ष को प्रतिपुष्टि प्रदान कर शिक्षक अपने शिक्षण नियोजन, शिक्षण व्यवस्था तथा शिक्षण अग्रेषण में आवश्यक सुधार लाकर अधिक सफलता प्राप्त करता है। (मूल्यांकन आधार पर पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, एवं प्रविधियों आदि में सुधार कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उत्तम बनाया जा सकता है।

8.1.1 मूल्यांकन की परिभाषा (Definitions of Evaluation) -

टारगेनर्स तथा एडम्स ने मूल्यांकन को इस प्रकार से परिभाषित किया है मूल्यांकन का अर्थ है किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निश्चित करना। इस प्रकार शैक्षणिक मूल्यांकन से तात्पर्य है - शिक्षण-प्रक्रिया तथा सीखने की क्रियाओं से उत्पन्न अनुभवों की उपयोगिता के बारे में निर्णय देना।

The meaning of evaluation is to evaluate certain values of some process of things. Thus educational evaluation is to give of judgments on the degree of worth winless of some teaching process or learning experience.

Targerson, G.S.Adams

Evaluation is the process of gathering and interpreting evidences of changes in the behavior of students of the progress through school.

-Quevlain Hanna

कोठारी कमीशन (1966) ने मूल्यांकन के स्वरूप एवं अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो कि संपूर्ण शिक्षा-प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है और शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

Evaluation is a continuous process, forms an integral part of the total system of education and is intimately related to educational objective.

एच.एच. रेमर्स तथा एन.एल. गेज ने मूल्यांकन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि - मूल्यांकन में व्यक्ति अथवा समाज अथवा दोनों की दृष्टि से क्या अच्छा है अथवा क्या वांछनीय है, का विचार या लक्ष्य निहित रहता है।

Evaluation assumes a purpose or an idea of what is good or desirable from the stand point of individual or society or both.

H.H.Remmers and N.L.Gage

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मूल्यांकन एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण प्रक्रिया की उपयोगिता उसके द्वारा बालकों में विकसित व्यवहार परिवर्तन की जांच के आधार पर निश्चित की जाती है व उसी के अनुकूल परिपक्व निर्णय (Mature Decision) के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में सुधार हेतु दिशा दी जाती है।

मूल्यांकन की नवीन अवधारणा :New Concept of Evaluation

मूल्यांकन प्रक्रिया की नवीन धारणा के अनुसार इस प्रक्रिया के तीन अंग है - (1) शैक्षिक उद्देश्य (Educational Objectives) (2) सीखने के अनुभव (Learning Activities) और (3) व्यवहारिक परिवर्तन (Behavioural Changes) इन तीनों अंगों में घनिष्ठ संबंध है, जिसे एक त्रिभुज के रूप में निम्न ढंग से किया जा सकता है।

चित्र संख्या : 8.1

मूल्यांकन का यह प्रत्यय केवल पाठ्यवस्तु तक सीमित नहीं है वरन् विद्यालय पाठ्यक्रम से संबंधित समस्त उद्देश्यों की एक विशाल एवं व्यापक श्रृंखला का मूल्यांकन करते हैं।

8.2 मापन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Measurement)

मापन का अर्थ है किसी व्यक्ति के गुण एवं व्यवहार अथवा वस्तु के गुण का संख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करना अर्थात् मापन किसी वस्तु या व्यक्ति के गुणों के परिमाणीकरण (Quantitative) की प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए विद्यार्थी बहुत बुद्धिमान है कहना मूल्यांकन है, परन्तु उसकी बुद्धिलब्धि गणितीय सूत्र से मालूम कर प्रतिशत में व्यक्त करना मापन है। शिक्षक के लिए व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर शिक्षण करना आवश्यक है। मापन प्रक्रिया शिक्षक को विशिष्ट रूप से यह आधार प्रस्तुत करती है। वह बालक की बुद्धि, योग्यता, कौशल, अभिवृत्ति

एवं अभिरूचि आदि चरों का मापन परिमाणात्मक रूप से प्राप्त करता है और उसी प्रकार शिक्षण प्रक्रिया को नियोजित कर सकता है।

रिचर्ड एच.लिण्डेमेन ने मापन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि -

मापन को किन्हीं मान्य नियमों के अनुरूप व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के किसी समुच्चय के प्रत्येक तत्व को अंगों के किसी समुच्चय से एक अंक आबंटित करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

Richard, H. Lindeman Measurement may be defined as the assignment of one of a set of numbers to each a set of persons or objects according to certain established rules-

M.S.Stevens

एम.एस.स्टीवेन्स के अनुसार मापन किन्हीं स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।

Measurement is the process of assigning numbers to each a set of persons or objects according to agreed rules-

ब्रेडफील्ड तथा मोरडोक के शब्दों में मापन किसी घटना के विभिन्न आयामों को प्रति आवंटित करने की प्रक्रिया है जिससे उस घटना की यथार्थता का निर्धारण किया जा सकें।

Measurement is the process of assigning symbols to dimension of a phenomenon in order to characterize the status of the phenomenon as precisely as possible

-Bradfield and Murdock

मापन की उपरोक्त वर्णित परिभाषाओं के अवलोकन से स्पष्ट से है कि वास्तव में मान के द्वारा व्यक्तियों या वस्तुओं में उपस्थित किसी गुण अथवा विशेषता का यह वर्णन गुणात्मक भी हो सकता है और मात्रात्मक भी हो सकता है। शैक्षिक मापन का तात्पर्य छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में लिया जाता है। मापन एक ऐसी वर्णात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तियों अथवा वस्तुओं के किन्हीं गुणों अथवा विशेषताओं का अध्ययन किया जा सकें।

8.2.1 मापन प्रक्रिया (Measurement process)

- वस्तु या व्यक्ति के गुणों या चरों की पहचान (Identification of attributes and variables of any person or object)
- व्यवहार परिवर्तन अथवा अनुक्रियाओं का निर्धारण (Deciding the behavioral changes and response)
- अंकीकरण प्रक्रिया का प्रतिपादन (Establishment of scoring process)

मापन के कार्य (Functions of Measurement)

- पूर्व नैदानिक कार्य (Pre-Diagnostic Function)
- नैदानिक कार्य (Diagnostic Function)
- अनुसंधान कार्य (Research Function)

मापन की विधियाँ (Methods of Measurement)

- परीक्षण विधि (Teat Method)
- निरीक्षण विधि (Observation method)
- मिश्रित विधि (Mixed method)

मापन तथा मूल्यांकन (Measurement and Evaluation) - मापन एवं मूल्यांकन को समानार्थी शब्दों में प्रयोग किया जाता है, मापन मूल्यांकन का ही एक अंग है। शिक्षा के क्षेत्र में भी मापन का प्रयोग मूल्यांकन करने हेतु किया जाता है। इन दोनों प्रत्ययों में आंशिक (Partly) अंतर है जिसे ....**ब्रैडफील्ड एवं मरडॉक** ने स्पष्ट करते हुए लिखा है। मापन वह प्रक्रिया है जिसमें किसी घटना या तथ्य के विभिन्न परिणामों या आयामों के लिए (symbol) निश्चित किये जाते हैं जिससे कि उस घटना की स्थिति के बारे में यथार्थ रूप से निश्चय किया जा सकें। मूल्यांकन में घटना या तथ्य का किसी सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक मानक के संदर्भ में मूल्य ज्ञात करने की दृष्टि से प्रतीक निश्चित किये जाते हैं।

Measurement is the process of assigning symbol to dimensions of phenomena in order to characterize the status of a phenomena as precisely as possible Evaluation is the assignment of symbol to phenomena in order to characterize the worth or value of a phenomena usually with reference too some social, cultural or scientific standard.

-Bradified & Markdock

8.2.2 मापन एवं मूल्यांकन में अंतर को निम्नानुसार समझा जा सकता है -

मूल्यांकन एवं मापन में अंतर

	मूल्यांकन (Evaluation)	**मापन (Measurement)**
1.	मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक	मापन का क्षेत्र सीमित
2.	समय कम लगता है क्योंकि मूल्यांकन हेतु आधार मापन द्वारा पूर्व मे तैयार रहते है।	एक गुण का मापन पृथक पृथक करने मे समय अधिक लगता है।
3.	धन अधिक व्यय होता है। श्रम एवं समय भी अधिक लगता है।	अपेक्षाकृत कम धन व्यय होता है।
4.	वस्तु अथवा व्यक्ति समग्रता का मूल्यांकन किया जाता है।	मापन वस्तु और व्यक्ति पृथक पृथक गुणों का किया जाता है।
5.	मूल्यांकन मे)How Good) कितनी अच्छी का बोध होता है।	मापन मे)how much) कितनी मात्रा का बोध होता है।
6.	छात्र के संबंध मे सार्थक भविष्यवाणी किया जाना संभव है।	इसमे भविष्यवाणी संभव नहीं है।
7.	इसमे संख्यात्मक एवं वर्णात्मक व्याख्या की जा सकती है।	इसमे केवल संख्यात्मक व्याख्या ही किया जाना संभव है।

उपरोक्त अंतर के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों शब्द एक ही प्रयोजन को लेकर किये जाते है। इनकी कार्यप्रणाली में अवश्य अंतर दिखाई देता है पर शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न शिक्षाविद् इसका प्रयोग एक ही अर्थ में करते रहे हैं।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. मापन के अर्थ को स्पष्ट कीजिये।
2. मापन के क्या कार्य है।
3. मापन की विधियाँ स्पष्ट कीजिये।
4. मापन एवं मूल्यांकन मे अंतर स्पष्ट कीजिये।

सारांश -

मापन मूल्यांकन का ही अंग है जो किसी व्यवहार के पहलू का संख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करता हैं। मापन की निश्चित प्रक्रिया होती हैं। मापन के द्वारा विद्यार्थियों कें गुणों मे सुधार लाया जाता हैं। मापन एवं मूल्यांकन में पर्याप्त अंतर हैं, इस अंतर के आधार पर शिक्षा में इनका प्रयोग किया जाता हैं।

8.2.3 अच्छे मापन एवं मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Measurement and Evaluation)

मापन एवं मूल्यांकन की अवधारणा को जानने के बाद इसकी कुछ विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं।

1. वैधता (Validity)
2. संतुलन (Balance)
3. सक्षमता (Efficiency)
4. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
5. विशिष्टता (Specification)
6. कठिनता (Difficulty)
7. विभेदकता (Discrimination)
8. विश्वसनीयता (Reliability)
9. न्याय युक्तता (Fairness)
10. गतिशीलता (Speed)
11. व्यावहारिकता (Practicability)
12. प्रमाणीकरण (standardization)

1. **वैधता (Validity) -** परीक्षण की यह विशेषता बताती है कि कोई दिया गया परीक्षण मापन के उद्देश्यों को किसी सीमा तक पूरा करता है यदि परीक्षण उद्देश्यों को पूरा करता है तो वह वैध परीक्षण माना जायेगा।

2. **संतुलन (Balance) -** परीक्षण की यह विशेषता के अनुसार उसमें सम्मिलित किये गये प्रश्नों से संबंध रखती है परीक्षण में सम्मिलित समस्त प्रश्न पाठ्यवस्तु से लिए जाते है।

3. **सक्षमता (Efficiency) -** परीक्षण का यह गुण परीक्षण की रचना करने में प्रशासन करने में, परीक्षण का अंकन करने में तथा परीक्षार्थी के द्वारा परीक्षण का उत्तर देने में लगे समय से संबंधित होता है।

4. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity) -** परीक्षण की यह गुण उसके अंकन से संबंधित होता है। यदि परीक्षण में सम्मिलित किये गये प्रश्न स्पष्ट होते है तथा उसका एक ही निश्चित उत्तर होता है, तो परीक्षण का अंकन करना सरल तथा त्रुटिरहित होने के साथ-साथ परीक्षण की विषयनिष्ठता से मुक्त हो जाता है।

5. **विशिष्टता (Specification) -** परीक्षण की यह विशेषता वस्तुनिष्ठता की पूरक होती है। यदि परीक्षण इस प्रकार का है कि छात्र कम अंक पाते है जो इस परीक्षण से परिचित है और अन्य छात्र अधिक अंक पाते है जो इससे अपरिचित है तो परीक्षण को विशिष्ट परीक्षण कहा जाता है।

6. **कठिनता (Difficulty) -** कठिनाई स्तर के प्रश्न इस विशेषता की ओर संकेत करते है। परीक्षण न तो अधिक कठिन हो ओर न ही अधिक सरल।

7. **विभेदकता (Discrimination) -** श्रेष्ठ व कमजोर छात्रों में ठीक प्रकार से अंतर करना इस परीक्षण की विशेषता है। छात्रों की योग्यता एवं क्षमताओं का अंतर विभेदीकरण से ज्ञात किया जाता है।

8. **विश्वसनीयता (Reliability) -** परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों की विश्वसनीयता को बताती है। यदि परीक्षण किसी व्यक्ति को बार-बार एक ही प्राप्तांक प्रदान करता है तो परीक्षण को विश्वसनीय परीक्षण कहा जाता है।

9. **न्याययुक्तता (fairness) -** इस विशेषता के अनुसार छात्रों को अपनी सही योग्यता के प्रदर्शन करने के अवसरों के प्रदान करने से संबंधित होता हैं यदि परीक्षण के द्वारा सभी छात्रों को अपनी वास्तविक योग्यता के प्रदर्शन के उपयुक्त तथा समान अवसर प्राप्त होते हैं तो परीक्षण इस क्षेत्र में आता है।

10. **गतिशीलता (Speediness) -** इसमें सम्मिलित किये गये प्रश्नों की संख्या मुख्य होती है। यदि परीक्षण में प्रश्नों की संख्या इतनी है कि दिये गये समय में छात्र प्रश्नों की संख्या को पूरा कर लेते हैं तथा उनके काम करने की गति का कोई अवांछित प्रभाव नहीं पडता है तो उसे उचित परीक्षण माना जाएगा।

11. **व्यवहारिकता (Practicability) -** परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण की रचना व्यावहारिक पक्ष से संबंधित रखती है। इसके अंतर्गत प्रशासन में सुगमता, अंकन में सुगमता, व्याख्या में, विश्लेषण में सरलता का बोध होता है।

12. **मानकीकरण (Standardization) -** परीक्षण की यह विशेषता परीक्षण की रचना विधि से संबंधित है यदि परीक्षण की रचना पद विश्लेषण के आधार पर की गई है तथा परीक्षण के मानक उपलब्ध होते हैं तो परीक्षण को प्रमापीकृत (Standardize) परीक्षण कहते हैं। मानक के संदर्भ में वे बिन्दु होते हैं। जिनके आधार पर परीक्षण पर प्राप्त अंकों की व्याख्या की जाती हैं यह विशेषता प्राय: मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में पायी जाती है।

8.2.4 मापन एवं मूल्यांकन की तकनीकें)Technique of Measurement & Evaluation)- मापन एवं मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। जो निम्न है -:

8.2.4.1 अवलोकन तकनीक	Observation Techniques
8.2.4.2 स्व आख्या तकनीक	Self-Report Techniques
8.2.4.3 परीक्षण तकनीक	Testing Techniques
8.2.4.4 समाजमितीय तकनीक	Sociometric Techniques
8.2.4.5 प्रक्षेपीय तकनीक	Projective Techniques

8.2.4.1 अवलोकन तकनीक (Observations Technique) - अवलोकन तकनीक से अभिप्राय किसी व्यक्ति के व्यवहार को देखकर या अवलोकन तकनीक करके व्यवहार का मापन करने की प्रविधि है। इस हेतु अवलोकनकर्ता चेक लिस्ट, अवलोकन चार्ट, मापनी चार्ट, ऐनकडोटल अभिलेख आदि उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

8.2.4.2 स्व-आख्या तकनीक (Self-Report Techniques) - स्व-आख्या तकनीक में नापे जा रहे व्यक्ति से ही उसके व्यवहार के संबंध में जानकारी की जाती है। व्यक्ति अपने विषय में अपने व्यक्तित्व, विचारों, रूचियों आदि की सूचना देता है। इसके लिए प्रश्नावली, अभिवृत्ति मापनी, साक्षात्कार आदि उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

8.2.4.3 परीक्षण तकनीक (Testing Techniques) - परीक्षण तकनीक में व्यक्ति को किन्हीं ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है जो उसके वास्तविक व्यवहार या गुणों को प्रकट कर दें। इस परीक्षण हेतु सम्प्राप्ति परीक्षण, बुद्धि परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, अभिरूचि परीक्षण, मूल्य परीक्षण आदि उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

8.2.4.4 समाजमिति तकनीक (Sociometric Techniques) - समाजमिति तकनीक सामाजिक-संबंधों, समायोजन व अन्त:क्रिया के मापन में काम आती है। इस तकनीक में व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से कैसे संबंध रखता है या समाज के व्यक्ति उस व्यक्ति के विषय में किस प्रकार के विचार रखते हैं सामाजिक (Social Dynamics) गतिशीलता के मापन के लिए यह सर्वोत्तम तकनीक है।

8.2.4.5 प्रक्षेपीय तकनीक (Projective Techniques) - प्रक्षेपीय तकनीक में व्यक्ति के सम्मुख किसी असंरचित (unstructured) उद्दीपन को प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति उस पर अपनी प्रतिक्रिया देता है। व्यक्ति अपनी पसंद, नापसंद, विचार, दृष्टिकोण, आवश्यकता आदि को अपनी प्रतिक्रिया में आरोपित कर देता है।

शब्द साहचर्य परीक्षण, टी.ए.टी., वाक्य पूर्ति परीक्षण, रोगी टेस्ट आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

8.2.5 मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण (Tools of Measurement and Evaluation) - मापन एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में प्रयुक्त किये जाने वाले प्रमुख उपकरणों को निम्नवत सूचीबद्ध किया जा सकता है।

8.2.5.1 अवलोकन (Observation)

8.2.5.2 परीक्षण (Test)
8.2.5.3 साक्षात्कार (Interview)
8.2.5.4 अनुसूची (Schedule)
8.2.5.5 प्रश्नावली (Questionnaires)
8.2.5.8 निर्धारण मापनी (Rating Scale)
8.2.5.7 प्रक्षेपीय तकनीक (Projective Techniques)
8.2.5.8 समाजमिति (Sociometry)
8.2.5.9 संचयी अभिलेख (Cumulative Records)
8.2.5.10 ऐनकडोटल अभिलेख (Anecdotal Records)
8.2.5.11 परीक्षण बैटरी (Test Battery)

8.2.5.1 अवलोकन (Observation) - अवलोकन व्यक्ति के मापन की अत्यन्त प्राचीन विधि है। मापन के एक उदाहरण के रूप में अवलोकन का संबंध किसी व्यक्ति अथवा छात्र के बाहय व्यवहार को देखकर उसके व्यवहार का वर्णन करने से है। अवलोकन को अनेक प्रकार से नियोजित किया जा सकता.

- स्वअवलोकन (Auto-Observation)
- बाहरी अवलोकन (External Observation)
- नियोजित अवलोकन (Planned Observation)
- अनियोजित अवलोकन (Unplanned Observation)
- प्रत्यक्ष अवलोकन (Direct observation)
- अप्रत्यक्ष अवलोकन (Indirect Observation)

8.2.5.2 परीक्षण (Test) - परीक्षण वे उपक्रम हैं जो किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी समूह के व्यवहार का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करते हैं परीक्षण की प्रकृति के आधार पर परीक्षणों को मौखिक परीक्षण (Oral test) तथा प्रयोगात्मक परीक्षण (Practical Test) के रूप में बांटा जा सकता है। परीक्षण में प्रयुक्त सामग्री के प्रस्तुतीकरण के आधार पर भी परीक्षणों की रचना के आधार पर परीक्षणों को प्रमापीकृत (Standardized Test) तथा अप्रमापीकृत परीक्षण (Unstandardized test) या अध्यापक निर्मित (Teacher-made Test) में बांटा जा सकता हैं

प्रश्नों के उत्तर के फलांकन (Scoring) के आधार पर परीक्षणों को दो भागों-निबंधात्मक परीक्षण (Essay Type-Test) तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Objective Type test) में बांटा जा सकता हैं

इनके अतिरिक्त कुछ परीक्षण शिक्षा में प्रचलित है। जैसे - उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test) निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test) अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude test)बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test) रूचि परीक्षण (Interest Test) व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Test)

8.2.5.3 साक्षात्कार (Interview) - साक्षात्कार व्यक्तियों से सूचना संकलित करने का सर्वाधिक प्रचलित साधन हैं। साक्षात्कार में किसी व्यक्ति के सामने बैठकर विभिन्न प्रश्न पूछे जाते हैं। साक्षात्कार दो प्रकार के हो सकते हैं - प्रमापीकृत साक्षात्कार Standardized interview तथा अप्रमापीकृत साक्षात्कार Unstandardized interview

प्रमापीकृत साक्षात्कार पूर्ण तैयारी से निश्चित प्रश्नों के' आधार पर पूछे जाते हैं जबकि अप्रमापी साक्षात्कार लचीले (flexible) तथा खुले (Open) होते हैं और तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप पूछे जाते हैं।

इनके अलावा उद्देश्य के अनुरूप भी साक्षात्कार के प्रकार देखे जाते हैं । जैसे - सूचनात्मक साक्षात्कार (informational Interview) परामर्श साक्षात्कार (Counselling interview)निदानात्मक साक्षात्कार (Diagnostic Interview) उपचारात्मक साक्षात्कार (Remedial Interview)चयन साक्षात्कार (Selection Interview) अनुसंधान साक्षात्कार (Research Interview)आदि।

8.2.5.4 अनुसूची (Schedule) - अनुसूची का प्रयोग विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अनुसूचियाँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं जैसे - अवलोकन अनुसूची (Observation Schedule) मूल्यांकन अनुसूची (Evaluation Schedule) दस्तावेज अनुसूची (Document Schedule) निर्धारण अनुसूची (Rating Schedule)

8.2.5.5 प्रश्नावली (Questionnaire) - प्रश्नावली प्रश्नों का एक समूह है जिसे उत्तरदाता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। प्रश्नावली एक साथ अनेक व्यक्तियों को दी जा सकती है जिससे कम समय कम व्यय तथा कम श्रम में अनेक व्यक्तियों से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सकें। यह परीक्षण का सरल एवं अधिकतम प्रयोग में आने वाला उपकरण है।

8.2.5.6 निर्धारण मापनी (Rating Scale) - निर्धारण मापनी किसी व्यक्ति के गुणों का गुणात्मक विवरण प्रस्तुत करती हैं इसकी सहायता से व्यक्ति में उपस्थित गुणों की सीमा (Degree) अथवा गहनता (intensity) या आवृत्ति (Frequency) को मापने का प्रयास किया जाता है। निर्धारण मापनी अनेक प्रकार की हो सकती है जैसे - चेक लिस्ट (Check-list) आंकिक मापनी (numerical-scale) ग्राफिक्स मापनी (Graphic-Scale) क्रमिक मापनी (Ranking Scale) ब्राहम चयन मापनी (Forced choose Scale)

8.2.5.7 प्रक्षेपीय तकनीक (Projective technique) - एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है जिसमें अचेतन पक्ष का मापन होता हैं प्रक्षेपण से अभिप्राय उस अचेतन प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति अपने मूल्यों, दृष्टिकोणों, आवश्यकताओं, इच्छाओं, संवेगों आदि को अन्य वस्तुओं अथवा अन्य व्यक्तियों के माध्यम से अपरोक्ष ढंग से व्यक्त करता हैं प्रक्षेपीय तकनीक में प्रस्तुत किए जाने वाले उद्दीपक असंरचित (Unstructured) प्रकृति के होते हैं तथा इन पर व्यक्ति के द्वारा की गई क्रियाएं सही या गलत न होकर व्यक्ति की सहज व्याख्यायें होती है। प्रक्षेपीय तकनीकों में व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर इन्हें पांच भागों में निम्नानुसार बांटा जा सकता है-

1. साहचर्य तकनीकें (Association Technique)

2. रचना तकनीकें (Construction Technique)
3. पूर्ति तकनीकें (Completion Technique)
4. क्रम तकनीकें (Ordering Technique)
5. अभिव्यक्ति तकनीकें (Expressive Technique)

1. **साहचर्य तकनीक -** में व्यक्ति के सम्मुख कोई उद्दीपक प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति को उस उद्दीपक से संबंधित प्रतिक्रिया देनी होती है। ये तकनीक क्रमश: शब्दों, चित्रों पर वाक्यों पर प्रतिक्रिया जानने का प्रयास करती है।

2. **रचना तकनीक -** में व्यक्ति के सामने कोई उद्दीपक प्रस्तुत कर दिये जाते हैं फिर कोई रचना बनाने को आदेश दिया जाता हैं। व्यक्ति के द्वारा तैयार की गई रचना का विश्लेषण करके उसके व्यक्तित्व को जाना जाता है।

हेनरी मरे का प्रासंगिक अन्तर्बोध तथा बाल अन्तर्बोध इस तकनीक के उदाहरण है।

3. **पूर्ति तकनीक -** में किसी अधूरी रचना को उद्दीपन की तेरह प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति को उस अधूरी रचना को पूरा करना होता है। रोडे का वाक्यपूर्ति परीक्षण तथा रोटर का अपूर्ण वाक्य परीक्षण इसके तकनीक के उदाहरण हैं।

4. **क्रम तकनीक -** में व्यक्ति में समक्ष कुछ शब्द, कथन, भाव, विचार, चित्र वस्तुएं आदि रख दी जाती है तथा उससे उन्हें किसी क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहा जाता है। सजोन्दी इस तकनीक का एक उदाहरण है।

5. **अभिव्यक्ति तकनीक -** के अन्तर्गत व्यक्ति को प्रस्तुत किये गये उद्दीपन पर अपनी प्रतिक्रिया विस्तार से अभिव्यक्त करनी पड़ती है। व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त प्रतिक्रिया से उसके व्यक्तित्व का पता चलता है । हर्मन रोर्शा इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

समाजमिति - समाजमिति एक ऐसा व्यापक पद है जो किसी समूह में व्यक्ति में व्यक्ति की पसंद अन्त:क्रिया आदि एवं समूह के गठन आदि का मापन करने वाले उपकरणों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रविधि में व्यक्ति को दिये गये आधार पर एक या एक से अधिक व्यक्तियों का चयन करना होता है। जैसे आप कक्षा में किसके साथ बैठना पसंद करेंगे या किसके साथ खेलना पसंद करेंगे। इस प्रकार के समाजमिति प्रश्नों के लिये प्राप्त उत्तरों से तीन प्रकार का समाजमितीय विश्लेषण समाजमितीय मैट्रिक्स सोशियोग्राम तथा समाजमितीय गुणांक से किया जाता है।

संचयी अभिलेख : - विद्यालयों में प्राय: छात्रों से संबंधित विभिन्न सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में एकत्रित किया जाता है। इसमें छात्रों की उपस्थिति, प्रगति, योग्यता, प्रयोगात्मक कार्य, पाठ्यसहभागी क्रियाओं में सहभागिता, उनकी रूचियों, व्यक्तित्व आदि का विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया जाता है। छात्र की प्रगति को जानने तथा उसका मूल्यांकन करने में संचयी अभिलेख उपयोगी सिद्ध होते हैं।

ऐनकडोटल अभिलेख : - यह उपकरण छात्रों के शैक्षिक विकास से संबंधित महत्वपूर्ण तथा सार्थक घटनाओं का वस्तुनिष्ठ प्रस्तुतीकरण हैं। अध्यापक को इन घटनाओं का वर्णन घटना के घटित होने के बाद शीघ्रातिशीघ्र लिख देना चाहिए, ये घटना कब, कहीं घटी इसका समुचित विवरण लिखना चाहिए।

ऐनकडोटल अभिलेख प्रपत्र (Anecdotal Records form)

Name of Student.....................................Father's Name...............................

Class...Admission Order................................

Date place	घटना का विवरण	अध्यापक द्वारा	व्याख्या
Situation दिनांक स्थान परिस्थिति		घटना की व्याख्या	सुझाव

परीक्षण बैटरी - परीक्षण बैटरी वास्तव में कुछ संबंधित परीक्षणों अथवा उपपरीक्षणों का एक निर्देशित समूह होता है। परीक्षण बैटरी किसी गुण या विशेषता जैसे शैक्षिक सम्प्राप्ति, बुद्धि, व्यक्तित्व, रूचि आदि के मापन के लिए एक व्यापक आधार का प्रयोग करती है।

8.3 निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test)

निदान शब्द का प्रयोग सामान्यतया चिकित्सा-विज्ञान में किया जाता है। जब कोई रोगी डॉक्टर के पास चिकित्सा के लिए आता है तो सर्वप्रथम डॉक्टर उस रोगी के रोग का निदान करता है तत्पश्चात वह उसे उपयुक्त चिकित्सकीय परामर्श देता है। शिक्षा के क्षेत्र में निदान का वही अर्थ है जो चिकित्सा विज्ञान में। शिक्षक अपनी शैक्षिक दृष्टि से कमजोर छात्रों की कठिनाईयों एवं कमजोरियों का पता विशेष तकनीक विधियों द्वारा करता है। अध्यापक अपनी कक्षा के कमजोर छात्रों की कमियों को ज्ञात करते हैं, उनकी स्थिति को देखते हैं, उनके कारणों का गहनता से विश्लेषण करते है तथा उन कारणों को दूर करके उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करते हैं। निदानात्मक परीक्षण से पूर्व विद्यार्थियों की निष्पत्ति का परीक्षण भी किया जाता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. मापन एवं मूल्यांकन की दो विशेषताएँ बताइये।
2. मापन की तकनीकों का प्रयोग किस उद्देश्य हेतु किया जाता है।
3. प्रक्षेपण तकनीक मे किस तरह की सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
4. प्रमाणीकरण परीक्षण किसे कहते है।
5. मापन एवं मूल्यांकन हेतु किन -किन उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

सारांश (Summary) -

मापन एवं मूल्यांकन शिक्षा का अभिन्न अंग है। इस प्रक्रिया का प्रयोग उद्देश्यपूर्ण होता हैं। शिक्षक बालक के सीख हुए ज्ञान को विभिन्न तरीके से जाँचता हैं। शिक्षा में मूल्यांकन के अन्तर्गत ही मापन का प्रयोग किया जाता हैं। इसलिए मापन एवं मूल्यांकन समानार्थी शब्दों में - प्रयुक्त होते है। विद्यार्थी में मात्रात्मक गुणों एवं स्तर को जानने के लिए इनका पृथक -2 प्रयोग

किया जाता हैं। मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण तकनीक का प्रयोग आवश्यकतानुसार प्रयोग द्वारा प्रयोग में ली जाती हैं।

8.3.1 निदानात्मक परीक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and Definition of Diagnostic tests)

निदानात्मक परीक्षण एक ऐसा शैक्षिक उपादान है जिसके आधार पर पठित विषयवस्तु की सूक्ष्म से सूक्ष्म इकाई में बालक की विशिष्टता एवं कमियां परिलक्षित होती है। इस परीक्षण से यह पता चलता है कि पाठ्य विषय-वस्तु का कौन सा भाग किस मात्रा में सीखा गया है तथा कितना भाग छात्र सीखने में असमर्थ रहा हैं

अतएव निदानात्मक परीक्षणों का मुख्य उद्देश्य किसी विद्यालयी विषय के किसी विशेष पाठ में छात्र की कमियों (Weakness) हीनताओं (Defficulties) कठिनाईयों को ज्ञात करता है जिससे उनके कारणों का पता लगाकर सुधार संबंधी निर्देशन प्रदान किया जा सकें।

निदानात्मक परीक्षण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए योकम और सिम्पसन ने लिखा है।

निदानात्मक परीक्षण वह साधन है जो शिक्षा वैज्ञानिकों के द्वारा छात्रों की कठिनाइयों को ज्ञात करने और यथा संभव उन कठिनाइयों के कारणों को व्यक्त करने के लिए निर्मित किया गया है।

"The diagnostic test is the instrument development by educational scientists for the purpose of locating difficulties and if possible revealing their causes."

-Yokam and Simpson

मैजिल ने निदानात्मक परीक्षणों की परिभाषा देते हुए कहा कि निदानात्मक परीक्षण का कार्य छात्रों का उनकी योग्यता के अनुसार वर्गीकरण करना नहीं है, बल्कि यह किसी विद्यालयी विषय में कमजोर छात्र की कठिनाइयों का पता लगाता हैं जिससे उस छात्र के लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्याख्या की जा सकें।

The purpose of diagnostics test is not clarify the pupils according to ability but to inquire into the nature of difficulties which a weak pupils is having with his school subjects so that remedial instruction may be applied.

-Menzil

ग्रीन व अन्य (Green & other)

Diagnostic test yield measures of Hindi related abilities underlying achievement in a subject. They are designed to identify particular strength and weakness on the part of the individual child and within reasonable limits to reveal the underlying causes.

8.3.2 नैदानिक परीक्षण के प्रमुख उद्देश्य (Main objectives of Diagnostic Test)

1. विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाना।

2. किसी विषय में पिछड़े हुए बालकों को पहचानना, उसकी विशिष्ट कमजोरियों को जानकर उन्हें दूर करके उपचारात्मक सुझाव देना।
3. विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों के मौलिक तत्वों से विचलित अध्यापन पद्धतियों की कमियों का ढूंढना तथा उसमें सुधार हेतु दिशा निर्देश करना।
4. निदानात्मक परीक्षण उपलब्धि परीक्षण हेतु परीक्षण पदों के प्रकार निर्धारित करने में सहायता प्रदान करता हैं।
5. भाषा के विषयों में क्षेत्रीय व जातिगत विशिष्टताओं एवं उनकी कमियों को इंगित करना तथा क्षेत्रीय एवं जातीय दृष्टिकोण से आवश्यकतानुसार विशिष्ट जाति के छात्रों के लिए भाषा शिक्षण की व्यवस्था करना।
6. निदानात्मक परीक्षण द्वारा छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाईयों का ज्ञान हो जाता हैं इससे अध्यापक को दिशा मिलती है। वह छात्र की कठिनाईयों को ध्यान में रखकर अपनी शिक्षण विधि से सुधार लाता है।
7. निदानात्मक परीक्षण छात्र की किसी विशिष्ट कौशल की कमियों की ओर संकेत करता है। इसका मुख्य उद्देश्य उस विशिष्ट अधिगम के क्षेत्र को इंगित करना है, जहां पर कुछ विशिष्ट प्रकार के अनुदेशन की आवश्यकता होती है। जैसे - कोई छात्र भाषा के शब्दों का उच्चारण ठीक ढंग से नहीं कर पाता है तो उसके उच्चारण को ठीक करने के लिए विशिष्ट प्रकार के उच्चारण करने का अभ्यास कराना।
8. टीगस के अनुसार निदानात्मक परीक्षण का उद्देश्य सदैव विशिष्ट शिक्षण की युक्तियों को प्रदान करना है जिससे छात्र वांछित अधिगम की प्राप्ति कर सकें।

   The purpose of diagnostic test is to furnish continuous specific information in order that Learning activities may be most productive of desirable outcomes.
9. प्रमापीकृत निदानात्मक परीक्षण का प्रयोग कक्षा के छात्रों के लिए सत्रारंभ में एक खोज परीक्षण के रूप में किया जाना चाहिए तथा इस परीक्षण को पाठ के लिए आवश्यक कौशलों के विश्लेषण हेतु भी किया जा सकता है।

Bruckenr- "The essence of educational diagnostic in the identification of some of the causes of learning difficulty and some of the potential educational assets so that by giving proper attention of these factors, more effective learning may result."

स्पष्ट है कि निदानात्मक परीक्षण एक प्रकार से सम्प्राप्ति परीक्षण (Achievement Test)ही है पर इसका उद्देश्य सम्प्राप्ति से भिन्न तथा व्यापक है। निदानात्मक परीक्षणों का शिक्षा प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यापक इनका प्रयोग करके छात्रों की समस्याओं व कमियों को जान सकता है तथा आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) कर सकता हैं

यहां उपचार एवं निदानात्मक परीक्षण में आशिक अंतर को जानना भी जरूरी है। बालक की बौद्धिक उपलब्धि किस स्तर की है यह जानने के लिए निष्पत्ति परीक्षण और निदानात्मक परीक्षण दोनों की आवश्यकता होती है। यह एक दूसरे के पूरक है। शैक्षिक सुधार के लिए यह आधार है क्योंकि उपचारात्मक शिक्षा इसी पर निर्धारित होगी। यहां इन दोनों के अंतर को निम्नानुसार देखा जा सकता है।

Difference between Achievement and Diagnostic test

निदानात्मक परीक्षण एवं उपलब्धि परीक्षण में अंतर

	उपलब्धि परीक्षण		निदानात्मक परीक्षण
1.	उपलब्धि परीक्षण का क्षेत्र व्यापक		निदानात्मक परीक्षण का क्षेत्र सीमित
2.	उपलब्धि परीक्षण द्वारा किसी विषय या कई विषयों मे छात्र की सामान्य योग्यता का ज्ञान प्राप्त होता है।		निदानात्मक परीक्षणों के द्वारा उन कारण कई विषयों में छात्र को कक्षा में किसी विषयसामग्री को सीखने में कठिनाई हो रही - है।
3.	उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा छात्र द्वारा विषय सामग्री कितनी अर्जित की गई, इसका मापन किया जाता है।		निदानात्मक परीक्षणों मे एक विषय या अनेक विषयों के अर्जन मे छात्र की कठिनाइयों एवं कमियों को जानने का प्रयास किया जाता है।
4.	उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थी की किसी विषय में सापेक्षित स्थिति को एक प्राप्तांक द्वारा व्यक्त करता है।		निदानात्मक परीक्षण परख छात्र की विषय में कमजोरी या सीखने संबंधी कठिनाईयों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
5.	उपलब्धि परीक्षण का प्रशासन शिक्षणोपरान्त छात्र की उपलब्धि जांच के लिए किया जाता है।		निदानात्मक परख का प्रशासन शिक्षण के पूर्व, शिक्षण करते समय तथा अंत मे छात्र की स्थिति का पता लगाने के लिए किया जाता है।
6.	उपलब्धि परीक्षण ज्ञान के साथ कौशल के अर्जन की मात्रा का मापन करता है।		निदानात्मक परीक्षण का ज्ञान की अपेक्षा कौशल के विकास की दिशा की विशिष्ट रूप से परख करता है।
7.	उपलब्धि परीक्षण में कई प्रकार के प्रतिमान का निर्धारण राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है।		निदानात्मक परीक्षणों का उद्देश्य वैयक्तिक एवं स्थानीय होता है, इनका निर्धारण विद्यालयों स्तर तक होता है।
8.	उपलब्धि परीक्षण सभी स्तर छात्रों की उपलब्धि के मापन एवं उनके भेद करने के लिए निर्मित किए जाते है।		निदानात्मक परीक्षण केवल ठीक प्रकार से प्रगति न करने वाले कमजोर छात्रों की कमजोरी पता लगाने हेतु किये जाते हैं।

8.3.3 निदानात्मक परीक्षण के प्रकार (Types of Diagnostic Test)

निदानात्मक परीक्षण के दो प्रकार होते है (Types of Diagnostic Test) -

1. **अध्यापक निर्मित (Teacher made) -** शिक्षक निश्चित विषय पर उद्देश्यों के आधार पर निदानात्मक परीक्षण उपयुक्त विधि से तैयार किये जाते है। इनकी रचना सरल होती है और ये चलाउ परीक्षण (Adhoc Test) होते हैं।

2. **मानक परीक्षण (Standardized Test) -** ये वे परीक्षण हैं जिनमें सम्मिलित पदों या प्रश्नों का चयन उनकी विशेषताओं से संबंधित अनुभाविक प्रमाणों (Empirical evidences) के आधार पर किया जाता है। जिनके प्रशासन व अंकों जैसे की विधि स्पष्ट होती है। इनका निर्माण विशेषज्ञों के द्वारा औपचारिक ढंग से होता है। उदाहरण

1. **गणित के कौशल हेतु निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test of Mathematical Skill) -**कम्पास डायग्नोस्टिक टेस्ट इन अर्थमैटिक (Compass diagnostic Test in Arithmetic) इनमें

   1. जोड़ना - Addition
   2. घटाना - Substration
   3. गुणा करना - Multiplication
   4. भाग करना - Division

   इन परीक्षणों में प्रत्येक कौशल के उपकौशल पर प्रश्न किये गये है। इनको विद्यार्थियों को हल करने के लिये दिया जाता है।

2. **पठन (Reading) -** इसमें भी कई परीक्षण छात्रों को दिये जा सकते है जिनको छात्र पढ़ते है जैसे-

1. पढ़ते समय शुद्ध न बोलना।
2. पुस्तक ठीक से ने पकड़ना।
3. मात्राओं को समझने में त्रुटि करना।
4. शब्द उच्चारण ठीक न होने पर विषय वस्तु के अर्थ को न समझना।

इन कौशल पर निदान हेतु निम्न निदानात्मक उपलब्ध है-

1. स्टैन फार्ड डायग्नोस्टिक टैस्ट (The Stain Ford diagnostic test)
2. गेट्स एमसी. किलॉप निदानात्मक परीक्षण (Gates-M.C.killop Reading Diagnostic)इसमें Reading से जुड़े हुए 27 उपपरीक्षण उपलब्ध हैं।
3. अमोवा साइलेंट रीडिंग टेस्ट (Amowa silent Reading Subject) -उपरोक्त प्रत्येक उपपरीक्षण (Sub test) पर कार्य किया जाता है, जो त्रुटियाँ पाई जाती है उन पर ध्यान दिया जाता है और उपचारात्मक शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।
4. इतिहास विषय में निदानात्मक (Diagnostic in History Subject)
   - इसी तरह इतिहास शिक्षण में अध्यापकों को कक्षा में अध्यापन कार्य करते समय अनेक कमजोरियां छात्रों से अनुभव होती है। ये परीक्षा अध्यापक निर्मित होती है जो कक्षा कक्ष में शिक्षण अधिगम के समय अनुभव की जाती है।
   - छात्र इतिहास की घटनाओं में सन् (year) या तिथि को क्रमबद्ध रूप से याद नहीं कर पाते।

- विद्यार्थी इतिहास को तथ्यात्मक सामग्री स्त्रोत (Source) से नहीं जोड़ पाते।
- विद्यार्थी इतिहास में सीमा रेखा एवं मानचित्र व समय सारणी को क्रमानुसार नहीं समझ पाते न ही उनका प्रयोग कर पाते।
- विद्यार्थी तथ्यात्मक सामग्री को ग्रहण (Receive) करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

उपरोक्त कमजोरियों का पता लगाकर निदान अध्यापक छात्रों को उपचारात्मक परीक्षण प्रदान करेगा। ये कमियां अध्यापक छात्रों को निदानात्मक परीक्षणों से जो कक्षा-कक्ष शिक्षण मौखिक, लिखित, कक्षा कार्य, गृहकार्य या अन्य कोई प्रायोजनात्मक कार्य देते समय अनुभव की गई थी।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. निदानात्मक परीक्षण किस क्षेत्र की देन है।
2. निदानात्मक परीक्षण का प्रयोग शिक्षक किस उद्देश्य से करता है।
3. योकम ओर सिंपसन मे निदानात्मक की क्या परिभाषा दी है।
4. निदानात्मक परीक्षण के दो प्रमुख उद्देश्य स्पष्ट कीजिये।

सारांश (Summary) -

निदानात्मक परीक्षण शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों का पता लगाने की योजनाबद्ध परीक्षा हैं। जिसमें छात्रों की किसी भी विषय में क्या उपलब्धि रही हैं। इसको जाँचने का प्रयास किया जाता हैं। निदानात्मक परीक्षण का प्रयोग छात्रों के लिए, विद्यालयों की उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। यह व्यापक योजना हैं। जिसका उद्देश्य छात्रों की केवल कमजोरी का पता लगाना ही नहीं हैं अपितु उनको दूर करने के लिए प्रयास किया जाता हैं। यह विभिन्न विषयों में अलग-अलग तरीके से क्रियान्वित किया जाता हैं।

8.4 उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)

निदानात्मक परीक्षण से बालक की कमजोरियों का पता लग जाता है। इन कमजोरियों या अधिगम जटिलताओं को दूर करने के लिए विशिष्ट रूप से शिक्षण कार्य संचालित करना ही उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है। इस प्रकार का शिक्षण छात्रों की अधिगम स्थितियों में सुधार लाता है। जैसा कि हम जानते है शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना है, यह परिवर्तन विभिन्न तरीकों से लाया जाता है। इन्हीं तरीकों में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था भी की जाती है जो बालक के व्यवहार को परिभाषित करती है।

निदानात्मक परीक्षण से प्राप्त कठिनताओं को उपचारात्मक ढंग से छात्रों में दूर की जाती है। उपचारात्मक शिक्षण से अभिप्राय यही है कि छात्रों को सही दिशा में उपयुक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य किया जायें ताकि विषय वस्तु को समझने में छात्र किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि न करें। सामान्य रूप से किया गया शिक्षण यदि छात्रों में अपेक्षित सुधार नहीं ला पाता जो शिक्षक विभिन्न परीक्षणों से अधिगम त्रुटियों का पता लगाता है और उसी के अनुरूप

अग्रिम कक्षा में शिक्षण की व्यवस्था करना है। इस प्रकार का शिक्षण निश्चित दिशा और उत्तरोत्तर व्यवहार परिवर्तन का विशुद्ध रूप है।

उपचारात्मक शिक्षण के विषय में जी.एम.ब्लेयर ने कहा है -

उपचारात्मक शिक्षण वास्तव में अच्छा शिक्षण है जो विद्यार्थी को प्रेरणा की आंतरिक विधियों के माध्यम से उसके उस स्तर तक ले जाते है जो उसकी क्षमताओं को विकसित करता है। यह विद्यार्थियों की कमजोरियों को ध्यानपूर्वक किये गये निदान पर आधारित होता है तथा उनकी आवश्यकताओं एवं रूचियों की अनुकूल किया जाता है।

G.M.Blair:- Remedial teaching is essentially good teaching which takes the pupils at his own level and by intrinsic methods of motivation leads him to increased standards of competence. It is based upon a careful diagnostic of defects and is geared to the needs and interest of pupil.

एफ.एल.बिलोच के अनुसार - उपचारात्मक शिक्षण शिक्षार्थियों के नैतिक एवं रूचि निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है।

उपचारात्मक शिक्षण की परिभाषा (Definition of Remedial Teaching) -

F.L.Billows- Remedial teaching is moral building and an interst building enterprise of students.

उपचारात्मक शिक्षण के लिए शिक्षक को पूर्ण तैयारी की आवश्यकता रहती है। तैयारी करके उपचारात्मक शिक्षण देने से व्यवहार में अधिगम में त्रुटि की संभावना नहीं रहती। उदाहरण स्वरूप कक्षा में शिक्षक को निदान से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी मानचित्र पर सही देश एवं देश की सीमाओं का निर्धारण नहीं कर पाते तो अध्यापक कक्षा मे पूरे कालांश छात्रों को मानचित्र देखकर उसमें विभिन्न देशों के नाम एवं उनकी सीमाओं का प्रायोगिक ढंग से शिक्षण देता है। इसी प्रकार यदि कक्षा में छात्र शुद्ध उच्चारण नहीं कर रहे या उन्हें र, ण, श स, ष शब्द बोलने में कठिनाई हो रही है। तो वह कक्षा में अनेक बार इन शब्दों में भेद एवं उच्चारण करवायेगा। अध्यापक को यह ध्यान देना होगा कि विद्यार्थी ने किस प्रकार की त्रुटियाँ की है। जब तक अध्यापक व्यक्तिगत रूप से छात्रों से नहीं जुड़ेगा तब तक न तो इन त्रुटियों का पता चलेगा और न ही उसमें सुधार या उपचार हो सकेगा।

उपचारात्मक शिक्षण योजना की प्रक्रिया (Process of plan Remedial Teaching) - उपचारात्मक शिक्षण हेतु शिक्षक को निश्चित प्रक्रिया को अपनाना होगा-

निदान मूल्यांकन - प्रस्तुतीकरण - योजना तैयार - विषय का चयन - विश्लेषण -

Diagnostic-Analysis Selection of subject Matter Prepare Plan-Presentation-Evaluation.

उपरोक्त प्रक्रिया के अनुसार शिक्षक सर्वप्रथम निदानात्मक परीक्षण लेकर छात्रों की कमजोरियों का पता लगाते है कमजोरियों को विभिन्न मूल्यों से विश्लेषण करते है। विश्लेषण करते समय विधि प्रविधि या सहायक सामग्री का चयन करते है। फिर निश्चित त्रुटि पर पाठ की

तैयारी करते हैं और कक्षा में उस त्रुटि पर व्याख्या, विश्लेषण, प्रस्तुतीकरण करते है। अंत में पुन: मूल्यांकन किया जाता है जिससे छात्र में कितना सुधार हुआ इसका पता लगाया जाता है।

इस तरह उपचारात्मक शिक्षण एक प्रकार शोध पर किया गया शिक्षण है जिससे बालक के व्यवहार में परिवर्तन निश्चित रूप से होता है। कक्षा में कई बार ऐसा होता है कि विद्यार्थियों की कमजोरी निदान का पता लग जाता है कि छात्र विषय समझ नहीं रहा पर शिक्षक अपनी शिक्षण व्यवस्था में उपचारात्मक शिक्षण को प्रयोग में नहीं लाता क्योंकि इससे अन्य छात्र की पढ़ाई में कठिनाइयां आती है। धीरे-धीरे ये कमजोरी बालक के व्यवहार अधिगम का अंग बन जाती है जो उसकी उपलब्धि क्षमता को प्रभावित करती है। अत: शिक्षक को प्रारम्भ से छात्रों की कमियों या त्रुटियों को उपचारात्मक शिक्षण से दूर करना चाहिए।

सारांश (Summary) -

उपचारात्मक शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। यह परीक्षण एक प्रकार की अधिगम परिस्थिति हैं। जिसमें निदान द्वारा प्राप्त कमियों को उपचारात्मक ढंग से दूर किया जाता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. उपचारात्मक परीक्षण किसे कहते है।
2. उपचारात्मक परीक्षण हेतु निश्चित प्रक्रिया के सोपानों को स्पष्ट कीजिये।

8.5 बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple choice-Items)

बहुविकल्प प्रश्न को जानने से पूर्व वस्तुनिष्ठ प्रश्नों या परीक्षण की संक्षिप्त अवधारणा को जानना आवश्यक है। वस्तुनिष्ठ परीक्षण का प्रयोग 20 वीं सदी के आरम्भ में हुआ, इसलिए इन्हें नवीन प्रकार की परीक्षा भी कहा जाता है। ये परीक्षण तकनीकी दृष्टि से निबंधात्मक परीक्षण की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय व वैध होते हैं वस्तुनिष्ठ परीक्षण से अभिप्राय ऐसे परीक्षणों से है जिनमें सम्मिलित प्रत्येक प्रश्न का केवल एक ही उत्तर होता हैं यदि परीक्षार्थी उस उत्तर को देता है तो उसे प्रश्न पर पूर्ण अंक मिलते है। यदि उत्तर सही नहीं देता तो उस प्रश्न पर शून्य अंक मिलता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न पाठ्यक्रम से संबंधित उद्देश्यों पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न अध्यापक निर्मित या प्रमापीकृत परीक्षण किसी भी प्रकार के होते है। परीक्षा को वस्तुनिष्ठ व निष्पक्ष बनाने के लिये तथा विद्यार्थियों की तर्क क्षमता, बुद्धिलब्धि तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जांचने के लिये प्रतियोगी परीक्षाओं से वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को अधिक महत्व दिया गया है। यह परीक्षण रटने (Cramming) पर बल ना देकर ज्ञान के पूर्ण, व्यवस्थित व गहरे अध्ययन पर बल देता है। यह प्रश्न Understanding and Application Skill पर आधारित होते है तथा I.I.T. जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में Information Skill पर आधारित प्रश्नों को स्थान नहीं दिया जाता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न कई प्रकार के होते है। 1. रिक्त स्थान, 2. सही गलत 3. वे प्रश्न जिनमें चार विकल्प दिये जाते है 4. मिलान वाले प्रश्न।

उच्च अध्ययन तथा Competitive Exams विकल्पों वाले प्रश्नों को शामिल किया जाता है। कई परीक्षाओं जैसे Civil Services तथा P.M.T.,P.E.T. में प्रश्न पत्रों को Series में divide किया जाता है। प्रत्येक Series में प्रश्नों का क्रम बदला हुआ होता है तथा प्रत्येक पंक्ति में बैठे विद्यार्थियों को अलग-अलग Series प्रदान की जाती है ताकि नकल करने की संभावना न बन पाये। इस तरह की परीक्षाओं में यह बात ध्यान रखी जाती है कि प्रश्न पत्र व उत्तर पुस्तिकाओं का क्रम एक ही हो ताकि उत्तर पुस्तिकाओं को सही जांच हो पायें।

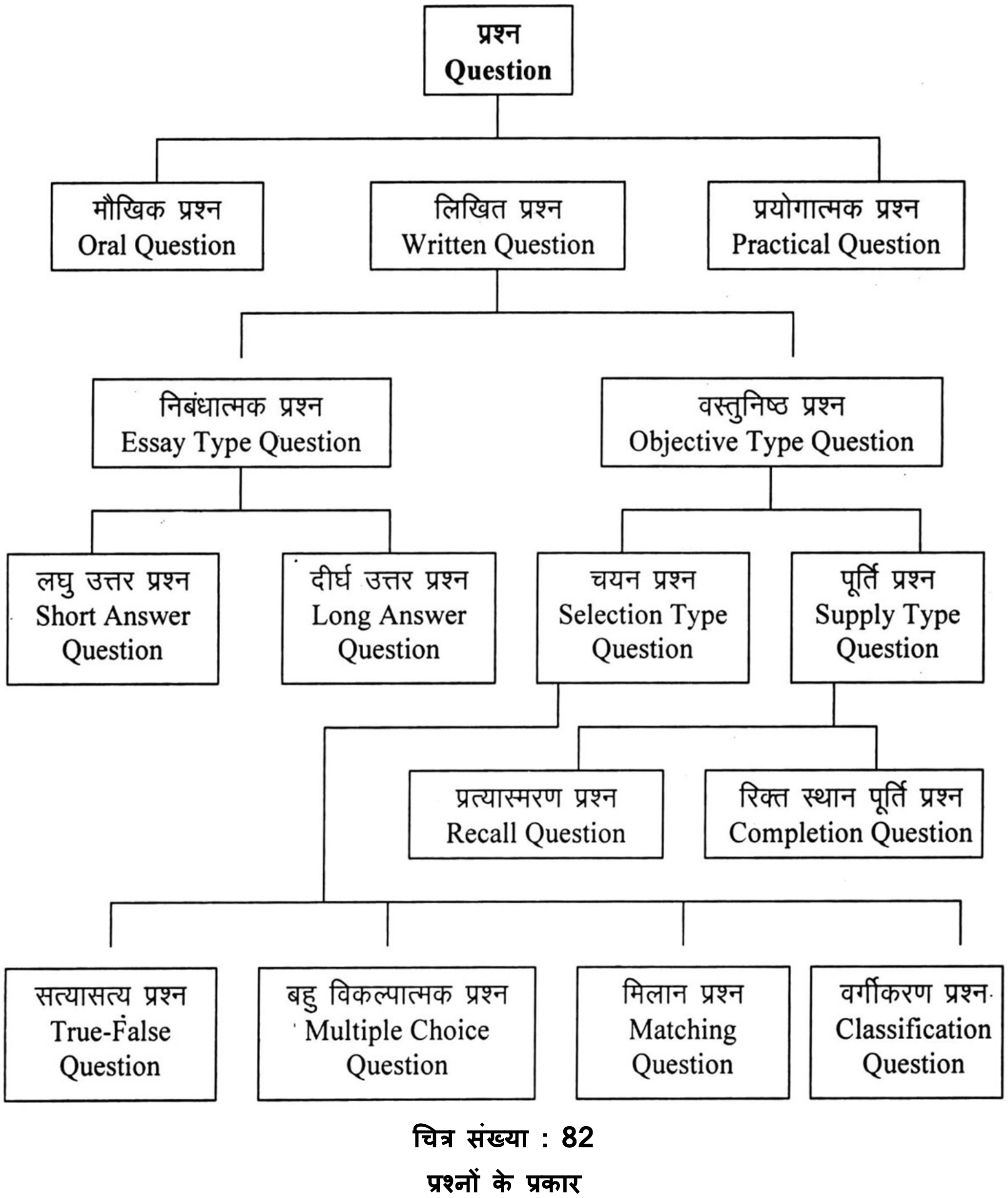

चित्र संख्या : 82

प्रश्नों के प्रकार

Types of Questions

मौखिक एवं प्रयोगात्मक प्रश्न बहुचयनात्मक परीक्षा में प्रयोग में नहीं लिए जाते। केवल लिखित प्रश्न का ही प्रयोग किया जाता है जो उपरोक्त चित्र द्वारा स्पष्ट है।

सारांश (Summary) -

Multiple Choice Question 20 वीं सदी में परीक्षण के क्षेत्र में नवीन विचार धारा हैं। जिसका प्रयोग वर्तमान समय में प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु किया जाता हैं। यह परीक्षण एक प्रकार का तकनीकी परीक्षण हैं। जो अन्य परीक्षाओं की अपेक्षा अधिक वैध एवं विश्वसनीय माना जाता हैं क्योंकि इसमें नकल की सम्भावना नहीं रहती। यह विद्यार्थी की तर्कक्षमता बुद्धि एवं योग्यता का प्रमाणीकृत परीक्षण हैं।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षण का प्रयोग किस सदी से आरंभ हुआ है।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षण किस प्रकार के परीक्षण दोषों को दूर करता हैं।
3. इस परीक्षण का प्रयोग किस प्रकार की परीक्षाओं के लिए किया जाता हैं।

उपरोक्त प्रश्नों के प्रकार से ज्ञात होता है कि बहुचयनात्मक प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का ही एक प्रकार है। इस प्रकार के प्रश्नों में एक ही प्रश्न के अनेक उत्तर दिये जाते है। इनमें केवल एक ही उत्तर सही होता है तथा शेष उत्तर गलत होते हैं। विकल्प या कुछ उदाहरण निम्नानुसार है।

कक्षा - VI

विषय - इतिहास

1. भारत में प्रथम राजवंश किस नाम से जाना जाता है।

   1. गुप्तवंश   2. मौर्य वंश

   3. कुषाण वंश   4. वर्धन वंश

2. भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम किस सन् में हुआ?

   1. 1857   2.1939

   3. 1947   4.1905

3. ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना किसके द्वारा की गई -

   1.क्लाइव द्वारा   2. डलहौजी द्वारा

   3. वैलेजली द्वारा   4. हेस्टिंग्स द्वारा

4. ब्रिटेन की महारानी द्वारा भारतीयों के अधिकारों की घोषणा की गई।

   1.1757   2.1850

   3.1657   4.1885

5. कांग्रेस की स्थापना किस सन् में हुई?

   1 1857   2.1650

   3.1885   4.1900

6. बंग भंग किस वर्ष में हुआ?

   1.1900.   2.1905

   3.1909   4.1919

7. असहयोग आंदोलन किस घटना से बंद कर दिया गया?

1.चौरी चौरा घटना | 2 जलियावाला बांग
3. दांडी यात्रा | 4. उपरोक्त में से कोई नहीं

8.6 इतिहास शिक्षण मे प्रश्न बैंक (Question bank in History Teaching

वर्तमान परीक्षा प्रणाली के प्रमुख दोषों में से एक दोष परीक्षा में पूछे जाने वाले विभिन्न ऐसे प्रश्नों से है। जो कक्षा-कक्ष अधिगम से तालमेल नहीं रखते है। प्रश्न पत्र का निर्माण करने वाले अपनी पसंद-नापसंद रूचि-अभिरूचि तथा प्रश्न निर्माण कौशल के आधार पर प्रश्नों की रचना करके प्रश्न पत्र तैयार करता है।

परीक्षाओं में प्रश्न पत्र इस प्रकार के होते है जिनका स्तर अति सामान्य एवं भाषायी एवं विषय वस्तु की दृष्टि से पुनरावृत्ति दिखायी देती है। कई बार यह भी देखने में आया है कि प्रश्न संपूर्ण पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते, न ही उद्देश्यों से कोई सामंजस्य बना पाते। कुल मिलाकर यह अनुभव किया जाता है कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली में प्रश्नों की दृष्टि से अनेक त्रुटियां निरन्तर देखने को मिल रही है। ये कमियां निम्नानुसार इंगित की जा सकती है।

1. प्रश्न पत्रों में उद्देश्यों की संपूर्णता का अभाव।
2. प्रश्नों की भाषा में अस्पष्टता एवं पुनरावृत्ति का होना।
3. प्रश्न संपूर्ण विषयवस्तु (Content) पर आधारित नहीं।
4. प्रश्न पत्र अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में परस्पर सामंजस्य नहीं बना पा रहे।
5. प्रश्न पत्र परम्परागत भाषा ज्ञान, शिक्षक केन्द्रित बन रहे है, वर्तमान आवश्यकताओं एवं नवीनता से परे है।

प्रश्न पत्र की उक्त कमियों के कारण कुछ शिक्षाविदों का ध्यान इस ओर गया कि प्रश्न बैंक (Question bank) का प्रस्ताव जो शिक्षार्थियों द्वारा ही प्रस्तुत किया गया है, स्वीकार किया जाये या प्रयोग में लाया जायें।

प्रश्न बैंक वस्तुतः तैयार प्रश्नों का एक समूह (Readymade Collection of Question) होता है। प्रश्न बैंक में किसी विषय वस्तु अथवा प्रकरण की विभिन्न इकाईयों पर अनेक प्रश्नों को छात्रों से तैयार करवाया जाता है। ये प्रश्न अध्यापकों, प्रश्न पत्र निर्माताओं व छात्रों तीनों वर्गो को लाभ पहुंचाते है। प्रश्न बैंक किसी प्रकरण विषय पर संभावित प्रश्नों का वह वृहद् समूह जो शिक्षण अधिगम व परीक्षा को शैक्षिक निर्देशन प्रदान कर सकता है।

प्रश्न बैंक में कई प्रकार के प्रश्न होते हैं-

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का बैंक (Bank of objective Type Question)
2. लघु-उत्तर प्रश्नों का बैंक (Bank of Short Answer Question)
3. विस्तृत-उत्तर प्रश्नों का बैंक (Bank of Detailed Question)
4. मिश्रित प्रश्नों का बैंक (Bank of Miscellaneous Question)

ये प्रश्न सभी विषयों में तथा सभी कक्षाओं के लिए तैयार किये जा सकते है। कुछ आवश्यक एवं महत्वपूर्ण निर्देश देकर इन्हें संकलित किया जा सकता है। ये प्रश्न विभिन्न विशेषज्ञों से प्रमाणित भी करवाये जा सकते है।

शिक्षा जगत में प्रश्न बैंक का सुझाव सराहनीय एवं उपयोगी बन सकता है। किन्तु इसके निर्माण में कुछ हानि होने की आशंका भी है जैसे - प्रश्न बैंक के प्रश्न बाजार में उपलब्ध हो सकते है, क्योंकि प्रश्न पर्याप्त चिंतन, उद्देश्य एवं सही दिशा पर निर्धारित हों सकेंगे। कक्षा-कक्ष में बालकों का सर्वांगीण विकास होने की दिशा शिथिल हो जायेगी क्योंकि कक्षा-कक्ष में इन्हीं प्रश्नों पर चर्चा होती रहेगी। प्रश्न बैंक में उपलब्ध प्रश्न धीरे- धीरे वनवीक सीरीज, गाईड में उपलब्ध होने लगेंगे। इन दोषों से बचने के लिए प्रश्न बैंक में समय-समय पर नवीन प्रश्नों को जोड़ना एवं पुराने प्रश्नों को हटाना होगा। प्रश्न बैंकों को गत्यात्मक रूप देने की जरूरत होगी। प्रश्नों का निर्माण एवं चयन तर्क संगत ढंग से करना इसके दोषों को दूर करेगा। अध्यापक वर्ग इन प्रश्नों को दृष्टिगत रखकर अपनी शिक्षण योजना को व्यवस्थित कर सकेंगे और छात्र इन प्रश्नों पर अपनी तैयारी कर सकेंगे। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रश्न बैंक छात्रों को क्या पढ़ाना है, अध्यापकों को क्या पढ़ाना है एवं परीक्षकों को क्या तथा कैसे पूछना है के संबंध में सार्थक दिशा निर्देश प्रदान करते है। निःसंदेह प्रश्न बैंक किसी प्रकरण या विषय पर संभावित प्रश्नों का एक वृहद् समूह है जो शिक्षण अधिगम व परीक्षा तीनों को शैक्षिक निर्देश प्रदान कर सकता है।

सारांश (Summary)

वर्तमान परीक्षा व्यवस्था में आये दोषों को दूर करने के लिए प्रश्न बैंक का नवीन विचार शिक्षाविदों के लिए उपयोगी बन रहा हैं। विगत वर्षों में परीक्षा प्रणाली में अनेक दोष उत्पन्न हो गये है। जिससे परीक्षा की उपयोगिता एवं समर्थता पर प्रश्न चिन्ह लग गया हैं। इन दोषों को प्रश्न बैंक के द्वारा दूर किया जा सकता हैं। प्रश्न बैंक प्रश्नों का एक समूह हैं जो विभिन्न विषयो,इकाइयों पर छात्रों से तैयार करवाया जाता हैं। इतिहास शिक्षण में प्रश्न बैंक का नमूना प्रस्तुत है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. वर्तमान परीक्षा प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए किस प्रकार के प्रश्न तैयार किए जाते हैं?
2. प्रश्न बैंक से आप क्या समझते हैं?
3. प्रश्न बैंक से कौन कौन सी हानियाँ हो सकती हैं?
4. प्रश्न बैंक मे प्रश्न किससे तैयार करवाए जाते हैं?

कक्षा -9

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -निम्न प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दीजिये -:

प्रश्न 1. प्राचीन चीनी स्थापत्य कला का विश्व प्रसिद्ध नमूना है -

अ ऐथना की दीवार ब. पेगोडा

स चीन की दीवार द. चीनी सम्राट का महल स.

प्रश्न 2. पंजाब के लोग बड़े आदर के साथ सिक्खों के किस गुरु को दशम पातशाह कहते है-

अ गुरु गोविन्द सिंह ब. गुरु रामदास

स गुरु नानक देव द. गुरू अमरदास अ.

प्रश्न 3. प्रथम विश्ब युद्ध का जन्म दाता माना जाता है -

अ विस्मार्क ब. क्लीमेन्शों

स विलियम कैसर द्वितीय द. निकोलस द्वितीय स.

प्रश्न 4. सती प्रथा को किसने अवैध घोषित किया था?

अ लार्ड विलियम बैंटिक ब. लार्ड मिन्टो

स लार्ड डलहौजी द. लार्ड हेस्टिंग्ज अ.

प्रश्न 5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ था -

अ. 28 दिसंबर 1885 ई. को ब. 28 दिसंबर 1888 ई. को

स. 28 दिसंबर 1890 ई. को द. 28 दिसंबर 1834 ई. को अ.

प्रश्न 6. थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना कहां हुई थी?

अ रूस में ब. न्यूयार्क में

स वाशिंगटन में द. लन्दन में ब.

प्रश्न 7. किसने भारत की स्वतंत्रता के लिए हेमरूल आंदोलन चलाया था?

अ श्रीमती एनीबिसेन्ट ब. लाला लाजपत राय

स मोहिनी सहगल द. स्वामी विवेकानन्द अ.

प्रश्न 8.चौरी-चौरा घटना कब घटित. हुई?

अ 5 फरवरी 1922 ब. 10 मार्च 1922

स 5 फरवरी 1921 द. 5 फरवरी 1923 अ.

प्रश्न 9.आजाद हिन्द फौज की महिला रेजीमेन्ट की कमाण्डर थी?

अ सरोजनी नायडू ब. सुचेता कृपलानी

स मोहिनी सहगल द. लक्ष्मी सहगल द.

प्रश्न 10. मारवाड़ हितकारिणी सभा का गठन किसने किया -

अ जयनारायण व्यास ने ब. मथुरादास माथुर ने

स. छगनराज चोपसनीवाला ने द. पन्नाराम चौधरी ने अ.

प्रश्न 11. चेतावणी रा चुग्टिया की रचना की -

अ राव गोपाल सिंह ने ब. बारहठ केसरी सिंह ने

स बारहठ प्रताप सिंह ने द. अर्जुन लाल सेठी ने ब.

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये-

प्रश्न1. यूनान के दो प्रसिद्ध गणितज्ञ कौन थे?

उत्तर 1. पाईथोगोरस 2. हिपोक्रेटिज

प्रश्न 2. बोल्शेविक क्रांति कब हुई और किसके नेतृत्व में हुई?

उत्तर 7 नवम्बर 1917 में, लेनिन के।

प्रश्न 3. अपनी बारीकी के लिए भारत में कौन सा वस्त्र संसार भर में प्रसिद्ध था?

उत्तर ढाका की मलमल।

प्रश्न 4. राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित दो शिक्षण संस्थाओं के नाम लिखिये।

उत्तर 1, हिन्द कॉलेज 2. वेदान्त कॉलेज

प्रश्न 5. महात्मा गांधी ने आमरण अनशन क्यों किया और कब किया?

उत्तर साम्प्रदायिक निर्णय के विरूद्ध 20 सितम्बर 1932 को किया था।

प्रश्न 6. लाग-बाग या लागतें किसे कहा जाता था?

उत्तर सामन्तों द्वारा किसानों से भूमिकर के अतिरिक्त जो कर लिये जाते थे, उन्हें लागतें या लाल-बाग कहा जाता था।

प्रश्न 7. ऑल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स का गठन कब किया गया था?

उत्तर सन् 1927 में

प्रश्न 8. मगरा या भोमट किसे कहा जाता था?

उत्तर मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम भाग को मगरा या भोमट कहा जाता था।

प्रश्न 9. खालसा भूमि किसे कहा जाता था?

उत्तर वह भूमि जो शासक के सीधे नियंत्रण में होती थी, उसे खालसा भूमि कहा जाता था।

प्रश्न 10. तलवार बंधाई की लाग का क्या अर्थ था?

उत्तर तलवार बंधाई की लाग का अर्थ था कि उदयपुर महाराणा को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क।

लघुत्तरात्मक प्रश्न - उत्तर या पांच पंक्तियों में दीजिये -

प्रश्न 1 वेद का अर्थ स्पष्ट कीजिये। वेद कितने प्रकार के हैं?

उत्तर - वेद शब्द संस्कृत की विद् धातु से बना होता है। जिसका अर्थ है, जानना अथवा ज्ञान प्राप्त करना। इस प्रकार वेद का अर्थ है ज्ञान। वेद चार प्रकार के होते है -

1 ऋग्वेद 2. सामवेद 3. यजुर्वेद 4. अथर्ववेद।

प्रश्न 2. हीनयान और महायान में मुख्य अंतर बताइये

उत्तर - हीनयान बौद्ध निर्वाण के लिए धर्मग्रन्थों और कर्म को आधार मानते है। जबकि महायान महात्मा बुद्ध को देवल मानकर उनकी मूर्ति की पूजा करते है।

प्रश्न 3. पापलबूल की व्याख्या कीजिये।

उत्तर - पापलबूल पोप द्वारा जारी किया गया एक आदेश था, जिसके अनुसार यूरोप के दो राज्यों स्पेन तथा पुर्तगाल को भारत पहुंचने के लिए समुद्री मार्ग की खोजने का अधिकार दिया गया।

प्रश्न 4. स्वदेशी आंदोलन का क्या अर्थ है?

उत्तर - स्वदेशी आंदोलन का अर्थ विदेशी वस्तुओं की होली जलाना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना तथा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना था।

प्रश्न 5. मुस्लिम लीग के क्या उद्देश्य थे?

उत्तर - (1) भारतीय मुसलमानों में अंग्रेजी सरकार के प्रति राजभक्ति को बढ़ाना।

(2) भारतीय मुसलमानों के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करना।

(3) दूसरे वर्गो के साथ मुसलमानों में विरोध न बढ़ने देना।

प्रश्न 6. थियोसोफीकल सोसायटी के दो सुधारों का उल्लेख कीजिये।

उत्तर -1.थियोसोफीकल सोसायटी में बाल विवाह, बहु विवाह वस्विक्रय तथा कछुआ-छूत जैसी बुराइयों को दूर दिया।

2.श्रीमती ऐनी बिसेन्ट ने व 1989 ई. में काशी में बनारस हिन्दू संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।

प्रश्न 7. रौलेट एक्ट क्या था? यह कब लागू किया गया?

उत्तर - रौलेट एक्ट के अनुसार किसी भी भारतीय को दो वर्ष तक नजरबन्द रखा जा सकता था तथा उसके नागरिक अधिकारों को नियंत्रित किया जा सकता था। यह 21 मार्च 1919 को लागू हुआ था।

प्रश्न 8. चवंरी कर से क्या अभिप्राय था?

उत्तर - चवंरी कर से यह अभिप्राय था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर पांच रुपये चवरी कर के रूप में सामन्त को देने पड़ते थे।

प्रश्न 9. सात बहनों के रूप में किन राज्यों - को जाना जाता है?

उत्तर - अरूणांचल प्रदेश, मेघालय, असम, मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड तथा मिजोरम राज्य सात बहनों के रूप में जाने जाते हैं।

प्रश्न 10. ऑपरेशन विजय की कार्यवाही कब और क्यों की गई?

उत्तर - भारत सरकार ने गोवा, दमन व दीव को पुर्तगाली अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए व 8 दिसम्बर 1961 को ऑपरेशन विजय नामक सैनिक कार्यवाही की।

8.7 खुली पुस्तक परीक्षा (Open Book Examination)

विगत 20 वर्षों से शिक्षा प्रक्रिया अनेक दोषों से युक्त बन गई है। जहां सदियों पूर्व शिक्षा को मूल्य धर्म नैतिकता, आध्यात्मिक ज्ञान का पुंज माना जाता था वही आज इसे इनके विपरीत बना दिया गया है। शिक्षा प्रक्रिया परीक्षा केन्द्रित हो गई है। छात्रों को परीक्षा में अनुचित साधनों से पास कराना शिक्षकों व अभिभावकों की मानसिकता बन गई है। शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन अध्यापन की प्रवृत्ति धीरे-धीरे गौण होती जा रही है। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना एवं कैरियर हेतु अनुचित साधनों का प्रयोग करना सामान्य कार्य बन गया है। इस हेतु अनेक अवांछित तरीके भी प्रयोग में लाये जाते है। और इनका प्रयोग करने से छात्र मानसिक रूप से पीड़ित नहीं होते। परीक्षा केन्द्रों पर सामूहिक नकल होने तथा चाकू पिस्तौल या अन्य प्रकार का भय दिखाकर निरीक्षकों को आतंकित करने का समाचार आम हो गया है। इस गलत प्रवृत्ति ने शिक्षा की नैतिकता एवं मौलिकता को समाप्त कर दिया है। नकल करने की प्रवृत्ति ने संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया को दूषित कर भयावह स्थिति में पहुंचा दिया है। इस स्थिति से बचने के लिए शिक्षाविदों ने अनेक सुधार के सुझाव दिये है। उन्हीं में खुली पुस्तक परीक्षा भी है।

खुली पुस्तक परीक्षा से आशय विद्यार्थियों को परीक्षा के समय पुस्तक देकर उत्तर लिखने से या परीक्षा देने से है। यह विचार शिक्षा में इसलिए आया क्योंकि कुछ वर्षों से शिक्षा प्रक्रिया परीक्षा केन्द्रित हो गई है, प्रश्न पत्र समय से पूर्व ही बाजार में उपलब्ध हो जाते है, अभिभावक भी अपने बच्चों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए दबाव डालते है। शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन स्तर गिरता जा रहा है। कोचिंग संस्थान अपना महत्व बढ़ाते जा रहे है। इन संस्थाओं से अध्यापन के बाद विद्यार्थियों का प्रतियोगी परीक्षा में चयन होना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। आज छात्र परीक्षा में अवांछित तरीके अपनाकर उत्तीर्ण होना चाहते है। शिक्षकों का नियंत्रण समाप्त होता जा रहा है, नैतिकता में भी कमी आई है।

परीक्षा में नकल करके प्रश्न पत्र में पूछे गये उत्तरों को लिखना एक ऐसी अवांछित प्रवृत्ति है, जिस पर यथा शीघ्र रोक लगाना आवश्यक है। नकल की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखकर ही उत्तर प्रदेश भाजपा सरकार को नकल विरोधी अध्यादेश पारित करने के लिए विवश होना पड़ा। जिसमें नकल को या परीक्षा में अवांछित सामग्री का प्रयोग करना अपराध घोषित करना पड़ा।

उपरोक्त पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है कि परीक्षा में इस अनैतिक कार्य के प्रति शिक्षा से जुड़े हुए लोग चिंतित है। ये प्रबुद्ध वर्ग परीक्षा में आई दूषित प्रवृत्ति को रोकना चाहते है। इस दिशा में सुधार हेतु अनेक सुझाव समय-समय पर मिलते रहे है। इन्हीं सुझावों में एक महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि खुली पुस्तक परीक्षा प्रणाली (Open Book Examination System) को लागू किया जावे। कुछ विद्वान गण इसे शिक्षा में नवाचार के रूप में मानते है जो अपनी अनेक कठिनाईयों व बाधाओं की मौजूदगी में नकल की समस्या का समाधान करने की दिशा में अत्यन्त उपादेय सिद्ध हो सकता है।

खुली पुस्तक परीक्षा में परीक्षा के समय छात्रों को पुस्तकें अपने साथ रखने तथा उन्हें देखने की अनुमति देने से है। इस प्रणाली में छात्र परीक्षा के समय पुस्तकों की सहायता ले सकेंगे। इस प्रणाली से निम्न लाभ प्राप्त हो सकेंगे।

1. नकल प्रवृत्ति से छुटकारा प्राप्त हो सकेगा।
2. छात्रों में रटने की प्रवृत्ति या आदत समाप्त हो सकेगी।
3. छात्रों को गहराई से अध्ययन करना होगा, क्योंकि प्रश्न कहीं भी पूछे जा सकते है।
4. परीक्षकों तथा कक्षा निरीक्षकों की भूमिका अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण हो सकेगी।
5. खुली पुस्तक परीक्षा में विद्यार्थियों की विषय गहराई को जानने एवं चिंतन स्तर को जानने का प्रयास किया जायेगा।
6. प्रश्न पत्र का ढांचा नवीन होगा क्योंकि पिछले दशकों में प्रश्न पत्र ज्ञान की सीमा में बंध गये है।
7. छात्र सत्र आरंभ (Session Start) से पाठ्यपुस्तकों को ध्यान पूर्वक पढ़ेंगे, जिससे उनमें अध्ययन आदतों का विकास होगा।
8. इस प्रणाली से व्यवस्था, प्रश्न पत्र निर्माण आदि व्यवस्थाओं में नवीनता दिखाई देगी।
9. पुस्तक बाजार में जो अवांछित पुस्तकें दिखाई दे रही है वे दिखाई नहीं देगी। साथ ही प्रकाशक भी सोच-विचार करके पुस्तकें वितरित करेंगे।

10. नैतिक वातावरण का भी विकास होगा क्योंकि परीक्षा कक्ष (Examination hall) में बैठकर छात्र गंभीरता से परीक्षा दे सकेंगे।
11. निरीक्षक भी परीक्षा कक्ष में भय मुक्त होकर अपने कार्य को सम्पादित कर सकेंगे।
12. शिक्षाविदों की दृष्टि से यह व्यवस्था शिक्षा जगत में सुखद वातावरण उत्पन्न करेगी, विद्यार्थी व्यावहारिक होकर सीखेंगे और पुस्तक का प्रत्येक पन्ना उनकी दृष्टि से सरोकार होगा।
13. छात्र स्तर की पुस्तकों एवं संदर्भित पुस्तकों का अध्ययन करेंगे साथ ही उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक Cognitive ज्ञान का विकास करेंगे।
14. यह प्रणाली शिक्षा में नवीनता लायेगी साथ ही शिक्षक एवं विद्यार्थी सुखद होकर शैक्षिक अभिवृत्ति का विकास करेंगे।

उपरोक्त बिन्दु परीक्षा प्रणाली में सुधार ला सकेंगे पर यहां यह भी ध्यान देना होगा कि इस प्रकार की परीक्षा प्रणाली में प्रश्न पत्रों का निर्माण करना जटिल होगा। सामान्य ज्ञान (Recall) पर प्रश्न न होकर बोध, अनुप्रयोग कौशल पर आधारित होगे। खुली पुस्तक प्रणाली में प्रश्नों का निर्माण गहराई में जाकर करना होगा। ताकि परीक्षार्थी सरलता से पुस्तकों में से उत्तर न लिख सकें। उन्हें उत्तर ढूंढने एवं लिखने में समय लगे प्रश्न पत्र प्रणाली को महत्व प्रदान कर सकेगा। उदाहरण स्वरूप यदि हम इतिहास विषय में मौर्यवंश इकाई में कुछ प्रश्न कक्षा 9 के लिए बनाते है तो प्रश्नों की प्रकृति इस प्रकार रहेगी। ये सभी विवरणात्मक रहेंगे ताकि छात्र उत्तर प्राप्त करने में मानसिक मंथन कर सकें।

- चन्द्रगुप्त को मौर्य वंश का संस्थापक बनाने में चाणक्य ने क्या नीति अपनायी?
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिंहासन प्राप्त करके क्या-क्या कार्य किये?
- चन्द्रगुप्त के बाद मौर्यवंश का महान सम्राट अशोक किन सिद्धान्तों पर महान बना?
- बौद्ध संगतियों का आयोजन किन उद्देश्यों को लेकर किया गया? ये संगतिया कब कहां और किसके नेतृत्व में आयोजित हुई?
- बौद्ध धर्म का विस्तार एवं विकास इस काल में जैन धर्म की अपेक्षा अधिक क्यों हुआ?
- बौद्ध धर्म और अशोक धर्म में क्या अंतर है?
- अशोक महान अहिंसक शासक के रूप में क्यों प्रसिद्ध हुआ?
- अशोक ने प्रजा के हित के लिए क्या-क्या कार्य किये जो आज तक आदर्श बने हुए हैं?

सारांश (Summary) -

मूल्यांकन एक सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। कक्षा में प्रतिदिन शिक्षण के दौरान, पाठ की समाप्ति पर सत्र के आरंभ, मध्य, अंत में छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। यह उद्देश्य केन्द्रित होता है और व्यापक स्तर पर प्रयोग में आता है।

मापन से तात्पर्य व्यक्तियों या वस्तुओं को किन्हीं गुणों का वर्णन करने से है। मापन गुणात्मक तथा मात्रात्मक मापन दोनों प्रकार का होता है। मापन एवं मूल्यांकन में अंतर होता है पर मूल्यांकन मापन की अपेक्षा व्यापक होता है। अनेक उपकरण एवं तकनीकी इस क्षेत्र में

कार्यरत है और समय-समय पर अध्यापक कक्षा में या छात्रों की उपलब्धि की जांच हेतु इन उपकरणों का प्रयोग करते हैं। ये अध्यापक निर्मित एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही होती है।

निदानात्मक परीक्षण वर्तमान शिक्षा में मापन मूल्यांकन से भी अधिक प्रभावी बन रहा है। इसके द्वारा कक्षा कक्ष में छात्रों की कमजोरियों का पता लगाया जाता है और तत्काल उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। जिससे अपेक्षित परिवर्तन बालक के सीखने में दिखाई देता है। निदानात्मक परीक्षण मेडिकल विज्ञान का शब्द है। पर इसका प्रयोग शिक्षा में पर्याप्त मात्रा में किया जा रहा है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न विषय वस्तु की नवीनता प्रदान करते है। ये परीक्षण अधिक विश्वसनीय व वैध होते है। ये अनेक प्रकार के होते हैं उन्हीं में बहुचयनात्मक प्रश्न भी है। जिसका उत्तर निश्चित रहता है। विगत कुछ दशकों में मापन तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में नवाचार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जैसे-सेमेस्टर प्रणाली, प्रश्न बैंक, खुली पुस्तक परीक्षा, परीक्षा में पारदर्शिता आदि। आशा है उनको अपनाने से मापन तथा मूल्यांकन के आयोजन में पुरानी परिपाटी समाप्त होगी और मूल्यांकन नई दिशा प्राप्त करेगा।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट कीजिये। मूल्यांकन की दो परिभाषए दीजिये।
   Explain the concept of Evaluation and write any two definition of Evalution.
2. मापन एवं मूल्यांकन मे क्या अंतर है?
   What is difference between measurement and evaluation.
3. मापन एवं मूल्यांकन की तकनीकी विवेचना कीजिये।
   Discuss the technique and methods of Evalution.
4. शैक्षिक निदान की अवधारणा एवं अर्थ को समझाइए।
   Explain the concept and meaning of Education Diagonosis.
5. उपलब्धि एवं निदानात्मक परीक्षणों मे अंतर स्पष्ट कीजिये।
   Mention the difference between achievement and diagnostic test.
6. उपचारात्मक शिक्षण से क्या समझते है?
   What do you mean by remedial teaching.
7. बहुचयनात्मक प्रश्नों से क्या आशय है। प्रत्येक प्रकार के प्रशनों के उदाहरण दीजिये।
   What is mean by multiple choice item? Give one example of each type of Question.
8. खुली पुस्तक परीक्षा से आप क्या समझते हैं?
   What do you mean by open book Examination?
9. प्रश्न बैंक पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Write short note on question bank.

10. अध्यापक निर्मित परीक्षा एवं मानक परीक्षण मे क्या अंतर है?

What is difference between teacher made test and standardized test.

11. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

1. समाजमिति 2. निर्धारण मापनी

3. अनुसूची 4. प्रक्षेपीय तकनीक

Write story notes on following.

1.Sociometry 2. Rating Scale

3.Schedule 4.Projective Techniques

8.8 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

1. Advance Educational Technology, Dr. R. A. Sharma,Loyal Book Depot,Meerut.
2. Educational Technology Management & Education, J.C. Agrwal, Vinod pustak mandir, Agra.
3. मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकीय, लाल साहब सिंह, साहित्य प्रकाशन, आगरा
4. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, डी. एस.पी. गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
5. शिक्षा तकनीकी, डी. एस.के.मंगल, डी. उमा मंगल, डॉ. शुभ्रा मंगल

इकाई-9

इतिहास शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री का विकास पाठ्य पुस्तक का निर्माण एवं मूल्यांकन

Development of Instructional material in History Teaching, Evaluation and Framing of text book

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

9.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

9.1 अनुदेशन का अर्थ एवं परिभाषा (Definition of Instruction and Meaning of Instruction)

9.2 अनुदेशन के प्रकार (Types of Instruction)

9.3 इतिहास शिक्षण के अनुदेशानात्मक सामग्री योजना (Instruction Plan in History Teaching)

9.4 इतिहास की पुस्तकें (History Books)

9.5 इतिहास की पाठ्य पुस्तक की परिभाषा (Definition of Test Book of History)

9.6 इतिहास की पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता (Need of History Text Books)

9.7 पाठ्य पुस्तक निर्माण के चरण (Steps of Planning of history Text books)

9.8 पाठ्य पुस्तकों के सुधार हेतु शिक्षा आयोग के विचार एवं सुझाव (Suggestions and views of Education Commission about the improvement of the Standard of text books)

9.9 इतिहास की पाठ्यपुस्तक के गुण-विशेषताएं (Merits/Characteristics of History teaching)

9.10 इतिहास पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन (Evaluation of History Text Book)

9.11 इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मापन (Scale of History Text Book)

9.12 सारांश (Summary)

9.13 संदर्भ ग्रन्थ (Reference)

9.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर आप -

1. अनुदेशन शब्द से परिचित हो सकेंगे।
2. अनुदेशन सामग्री के अर्थ को जान सकेंगे।

3. इतिहास विषय के अनुदेशन सामग्री के अर्थ को जान सकेंगे।
4. अनुदेशन सामग्री का निर्माण कर सकेंगे।
5. पाठ्यपुस्तकों के अर्थ को जान सकेंगे।
6. पाठ्यपुस्तकों के महत्व एवं निर्माण प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे।
7. पाठ्यपुस्तकों में नवाचार युक्त विचारों को सम्मिलित करने की प्रवृत्ति का विकास कर सकेंगे।
8. पाठ्यपुस्तक का मापदंड करने की प्रवृत्ति का विकास कर सकेंगे।

9.1 अनुदेशन का अर्थ एवं परिभाषा (Definition of Instruction and Meaning Instruction)

अनुदेशन शब्द का शाब्दिक का अर्थ है कक्षा-कक्ष में किसी विषय विशेष से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करने मात्र से है। यह केवल एक पक्षीय व्यवहार है इसलिए अनुदेशन शाब्दिक रूप में संकीर्ण अर्थ के रूप में प्रचलित है। अनुदेशन का उद्देश्य अधिगम कर्ता के ज्ञान को विकसित करना है। केवल कुछ परिस्थितियों में शिक्षण कराना हो अनुदेशन है इसलिए शिक्षण एवं अनुदेशन में पर्याप्त अंतर होता है। अनुदेशनात्मक व्यवहार का निर्माण करने के लिए शिक्षण अनुदेशनात्मक सामग्री का चयन करते है। ये सामग्री प्राय: हर विषय की एक ही होती है किंतु विषयवस्तु की प्रकृति के अनुसार इसके निर्माण में अंतर आ जाता है।

9.2 अनुदेशन के प्रकार (Types of Instruction)

रॉबर्ट गेने (Robert Ganne) ने नौ प्रकार की अनुदेशनात्मक घटनाओं (Events of Instruction) का उल्लेख किया है। गेने के अनुसार कक्षा में अनुदेशन देते समय शिक्षक या अनुदेशन को इन घटनाओं या तरीकों का ज्ञान होना आवश्यक है। ये अनुदेशनात्मक तरीके छात्रों के अवधान (Attention) को बनाये रखने, नियंत्रित करने छात्रों को कक्षा में मानसिक रूप से उपस्थित रखने तथा अधिगम के परिणामों की जानकारी प्राप्त करने में उपयोगी है। अत: शिक्षक जब अनुदेशानात्मक सामग्री का निर्माण करें तो निम्न तरीकों से अवगत हो जाये-

1. छात्रों के ध्यान को केन्द्रित करना एवं उसे नियंत्रित रखना।
2. अपेक्षित अधिगम परिणामों को स्पष्ट तथा विशिष्ट रूप से छात्रों को बताना।
3. छात्रों को आवश्यक क्षमताओं एवं सूचनाओं का पुनर्स्मरण करने हेतु उद्दीप्त करना।
4. अधिगम कार्य के लिए वांछित उद्दीपक प्रस्तुत करना।
5. छात्र अधिगम को निर्देशित करना।
6. पृष्ठपोषण देना।
7. अधिगम के हस्तान्तरण को संभावित बनाना।
8. छात्रों की धारण शक्ति को विकसित करना।
9. छात्रों की उपलब्धियों का अंकन करना।

अनुदेशनात्मक सामग्री के माध्यम से अध्यापक कक्षा में छात्रों के अनुदेशानात्मक व्यवहार का निर्माण करता है। यह वह व्यवहार है जो अधिगमकर्ता के व्यवहार में निर्दिष्ट उद्देश्यानुसार परिवर्तन लाने में सक्षम हैं ये वे नियोजित क्रियाएं हैं जो अधिगम एवं शिक्षण के कतिपय विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में अधिगमकर्ता की सहायता करती हैं। अनुदेशनात्मक व्यवहार को इस प्रक्रिया के माध्यम से भी समझा जा सकता है।

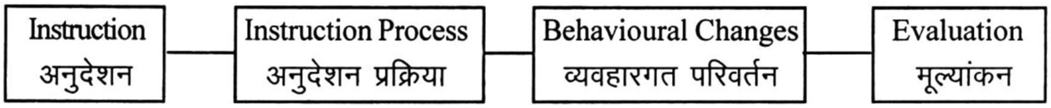

इस तरह अनुदेशन सामग्री, शिक्षण एवं अधिगम दोनों को प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षक इन्हें पूर्ण नियोजित तरीके के तैयार करता है क्योंकि ये केवल कक्षा कक्ष तक सीमित नहीं हैं अपितु मूल्यांकन जैसे महत्वपूर्ण तत्व के साथ जुड़कर उद्देश्यपूर्ण बन जाती है। अत: अनुदेशानात्मक सामग्री का निर्माण करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक बन जाता है।

1. अधिगमकर्ता सामग्री को सरलता एवं रूचिपूर्ण ढंग से ग्रहण कर सकें।
2. शिक्षक की अनुपस्थिति में शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की पूर्ति हो सकें।
3. अनुदेशन सामग्री में सम्प्रेषण की उचित व्यवस्था हो जैसे- टेलीफोन, रेडियों, प्रोजेक्टर, शिक्षण मशीन, सेटेलाइट आदि।
4. अनुदेशन सामग्री उद्देश्य आधारित तैयार की जाये ताकि उसका दूरगामी प्रभाव अधिगमकर्ता पर दिखाई देवे।
5. अनुदेशानात्मक सामग्री सम्प्रेषण से प्रेषित की जाती हैं अत: जितना सम्प्रेषण प्रभावी होगा अनुदेशन उतना ही रोचक एवं स्थायी होगा।
6. अनुदेशन चूंकि केवल सूचना देने से संबंध रखती है पर सूचना किन तरीकों से (Audio Visual) तैयार की गई है? यह महत्वपूर्ण तथ्य है।
7. सामग्री नियोजित (Planning) होनी चाहिए।
8. सामग्री का प्रयोग अधिकांश विद्‌यार्थी कर सकें अर्थात् इसकी प्रकृति व्यापक होनी चाहिए।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. अनुदेशन शब्द से क्या अर्थ है?
2. राबर्ट गेने द्वारा स्पष्ट अनुदेशनात्मक तत्वों को स्पष्ट कीजिये?
3. अनुदेशन की प्रक्रिया क्या है?
4. अनुदेशन सामग्री के प्रकारों की संख्या कितनी है?
5. दूरस्थ शिक्षा से क्या आशय है?
6. राबर्ट गेने ने कौन-कौन सी अनुदेशनात्मक प्रकारों को स्पष्ट किया है?

सारांश (Summary)

अनुदेशन का अर्थ कक्षा में विषय की सूचना देने से है। यह शिक्षण का संकुचित रूप है जिसमें केवल शिक्षण दिया जाता है व्यवहारगत परिवर्तन कितना होता है यह इस क्षेत्र में नहीं

आता। राबर्ट गेने नौ प्रकार की अनुदेशनात्मक घटनाओं तथा 6 प्रकार की अनुदेशनात्मक सामग्री का उल्लेख किया है। अनुदेशनात्मक शिक्षण के बाद बालक में जो परिवर्तन दिखायी देता है वह मूल्यांकन योग्य है। इसकी प्रकृति विषय एवं पढ़ाने वाले की इच्छा पर निर्भर करती है। इसलिए यह कक्षा एवं कक्षा से बाहर भी सम्पादित किया जा सकता है।

9.3 इतिहास शिक्षण के अनुदेशात्मक सामग्री योजना (Instruction Plan in History Teaching)

इतिहास विषय अपनी प्रकृति के अनुसार ऐसा विषय है जो अतीत की घटनाओं को तथ्यों या साक्ष्यों के आधार पर प्रस्तुत करता है। इस विषय की प्रकृति सरस नहीं है, इसलिए कक्षा में कक्षा से बाहर विषय की प्रस्तुति को प्रभावी रोचक बनाने के लिए, साथ ही छात्रों के अधिगम को सरल एवं अधिकतम ग्रहण करने के लिए अनेक प्रकार के तरीकों का प्रयोग होता है। ये तरीके विषय सामग्री में विधि-प्रविधि में सहायक सामग्री शिक्षा कौशल के रूप में भी प्रयुक्त होते है। किंतु प्रस्तुत इकाई में इनका उल्लेख अनुदेशनात्मक सामग्री के रूप में किया जा रहा है।

1. पाठ्य-पुस्तक (Text Book)
2. नाटकीकरण (Dramatization)
3. भूमिका निर्वाह (Role Play)
4. प्रदर्शन (Demonstration)
5. अनुवर्ग (Tutorials)
6. प्रश्नोत्तर (Questioning)
7. अन्वेषण (Discovery)
8. दल शिक्षण (Team Teaching)
9. अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed Instructions)
10. पुन: अवलोकन (Review)
11. कम्प्यूटर सहायक अनुदेश (Computer Assisted Instruction)

लेकिन इन सबसे प्रमुखत: पाठ्यपुस्तक है क्योंकि भारत एक विकासशील राष्ट्र है और इन्टरनेट व ये अन्य सामग्रियाँ मात्र एक प्रतिशत छात्रों को ही उपलब्ध है। पाठ्यपुस्तक के अभाव मे अधिगम व शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती है। समय के साथ साथ शैक्षिक विकास भी होता है व आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन व विकास होता है। पाठ्यक्रम राष्ट्रीय एवम् सामाजिक उद्देश्यों की तरफ बैठने का एक व्यवस्थित मार्ग निर्मित करता है। इसके आधार पर इतिहास आदि विषयों की पाठ्यवस्तु (Syllabus) निर्मित किये जाते है।

अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रकार (Types of Instruction Programme)

1. पृष्ठ पोषण पर आधारित — Based on Feedback
2. दूरस्थ शिक्षा पर आधारित — Based on Distance Education
3. कम्प्यूटर शिक्षण पर आधारित — Based on Computer Education
4. कक्षा कक्ष शिक्षण पर आधारित — Based on Class Rooms Teaching

5. शिक्षा तकनीकी पर आधारित Based on Educational Technology

9.4 इतिहास की पुस्तकें (History book)

एनसाइक्लोपिडिया ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च के अनुसार "आधुनिक तथा प्रचलित अर्थ में पाठ्य पुस्तक सीखने वाला साधन है जिसका प्रयोग विद्यालयों तथा कालेजों में अनुदेशन कार्यक्रमों को पूर्ति करने के लिये किया जाता है। सामान्य अर्थ में पाठ्यपुस्तक मुद्रित होती है, इसकी जिल्द मजबूत होती है, यह अनुदेशन अभिप्राय से प्रयुक्त की जाती है, और इसको सीखने वालों के हाथों में सौंपी जाती है।"

In the modem sense and commonly understood, the text book is a learning instrument usually employed in schools and colleges to support a programme of instruction. In ordinary sense, the textbook is printed. It is non consumable, it is hard bound. It serves for instructional purpose and it is the hand of learner.

हालक्वेस्ट (Hallquest) का कहना है कि पाठ्य-पुस्तक अनुदेशीय अभिप्रायों के लिये व्यवस्थित किया गया एक प्रजातीय चिन्तन का अभिलेख है। (Text book is a record of racial thinking organized for instructional purpose)

भारत में शिक्षा व्यवस्था का प्राचीन स्वरूप वैदिक काल से आरंभ होता है। प्राचीन काल में शिक्षक अपने शिष्यों को मौखिक रूप से शिक्षा प्रदान करते है। भारतीय शिक्षा में प्राचीन ग्रन्थ इस तथ्य के भी द्योतक है कि ज्ञान का एक कोना पुस्तकों में छिपा रहता था। वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद, ब्राह्मण आदि में ज्ञान का अखण्ड रूप प्राचीन काल में विद्यमान था। ये सत्य हमें स्वीकार करना होगा कि पुस्तकें सदैव शिक्षक एवं शिक्षार्थी को ज्ञान का संचार करने में सहायक रही है। यह बात भिन्न है कि साधनों के अभाव में शिक्षक मौखिक रूप से शिष्यों का ज्ञानवर्धन करते थे। आज जब ज्ञान का विस्फोट हो रहा है तो उसे संचित करने के लिए पाठ्यपुस्तकें व्यापक पैमाने पर तैयार हो रही है। ऐसी स्थिति में विषय-विशेषज्ञों एवं लेखकों का ध्यान पाठ्य पुस्तक के निर्माण पर रहना चाहिए ताकि समाज को देश के शिक्षकों को स्वस्थ्य संदेश प्राप्त-हो सके।

9.5 इतिहास की पाठ्य पुस्तक की परिभाषा (Definition of Text Book of History)

1. बेकन के अनुसार- पाठ्यपुस्तकें कक्षा-कक्ष के प्रयोग के लिए निर्धारित की गई पुस्तक है। (Text Book is a book designed for classroom use)
2. लेंग के अनुसार- पाठ्यपुस्तक किसी अध्ययन की प्रमुख शाखा के लिए एक मानक पुस्तक है।
   (''Text book is a standard book of any particular branch of study")

3. अमेरिकन पाठ्यपुस्तक प्रकाशन संस्थान के अनुसार- पाठ्यपुस्तक विद्यालय या कक्षा हेतु तथा शिक्षक के प्रयोग के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जिसमें एकाकी विषय अथवा घनिष्ठ रूप से संबंधित विषयों की पाठ्यपुस्तक को प्रस्तुत किया जाता है।

"A true text book is one specially prepared for the use of pupil and teacher in a school or a class presenting a course of study in a single subject or closely related subjects.''

उपरोक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि पाठ्यपुस्तकें चाहे वे किसी भी विषय की शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया में सेतु का काम करती है। आज कक्षा-कक्ष परिस्थितियों में अध्यापक एवं छात्र के मार्ग-दर्शन ज्ञानवर्धन, ज्ञान संचय एवं स्मृति हेतु पुस्तकों ने अपना अहम स्थान बना रखा है।

पाठ्यपुस्तकों का निर्माण कार्य (Formation of Text book) -

पाठ्यपुस्तकें लिखना किसी भी लेखक, विशेषज्ञ के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य के सम्पादन में उन्हें -एक लम्बी प्रक्रिया से जुड़ना पड़ता है। पाठ्यक्रम का स्तर, समाज की आवश्यकता, विद्यार्थियों का स्तर, राज्य सरकार का बजट, शिक्षण दिवस (Teaching day)शिक्षा विभाग की नियमावली, मूल्यांकन प्रणाली, परीक्षा का स्तर, नवाचार शिक्षण उद्देश्य, पाठ्य सहगामी क्रियायें आदि अनेक ऐसे सोपान है, जिन्हें समझ कर ही लेखन पुस्तकों का निर्माण कर सकते है। विषय की बारीकी, अथाह ज्ञान का भण्डार, सृजनात्मक क्षमताएँ भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण मानी जाती है।

9.6 इतिहास की पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता (Need of History Text Books)

1. शैक्षिक चित्र को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने के लिए।
2. पाठ्यपुस्तक शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य कड़ी (Chain) का काम करती है।
3. विद्यार्थियों की ज्ञान मीमांसा को बनाये रखने में सहायक।
4. अध्यापक के लिए मार्गदर्शन (Guideline) प्रदान करती है।
5. पाठ्यपुस्तकें स्वाध्याय (Self-Studies) में लाभदायक है।
6. शिक्षक को क्या पढ़ना है? कितना पढ़ना है? इन प्रश्नों हेतु पाठ्यपुस्तकें आवश्यक है।
7. ज्ञान स्तर का निर्धारण करने में शिक्षकों को सहायता प्रदान करती है।
8. छात्रों का शब्द भण्डार (Vocabulary) बढ़ाने के लिए।
9. विषयवस्तु को गहराई (Depth) तक पढ़ने हेतु।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद NCERT द्वारा एक अच्छी पाठ्यपुस्तक के मापदण्ड हेतु निम्नलिखित बिन्दु निर्धारित किये है।

9.7 पाठ्य पुस्तक निर्माण के चरण (Steps of Planning of History Text Books)

1. पाठ्यपुस्तक का नियोजन (Planning of Text Books)-

पाठ्यपुस्तक के निर्माण एवं प्रकाशन संबंधी सभी पक्ष सम्मिलित हो जाते है। जैसे-

1. शिक्षण संबंधी उद्देश्य (Instruction Objectives)
2. विषयवस्तु के प्रति उपक्रम (Approach of the Subject)
3. संगठनात्मक प्रतिरूप (Organization Pattern)
4. पाठ्यपुस्तक का आकार (Size of Book)

2. पाठ्यपुस्तक का चयन (Selection of Content Book)

इसके अन्तर्गत निम्न बिन्दु सम्मिलित होते है-

1. पाठ्यपुस्तक की शुद्धता (Accuracy of Text book)
2. पाठ्यपुस्तक की उपयुक्तता (Adequacy of Text Book)
3. आज तक की पाठ्यवस्तु (up to date Content)
4. पाठ्यक्रम की समाविष्टता (Coverage of syllabus)
5. विद्यालय में विषय के समग्र शिक्षाक्रम-पाठ्यचर्या का ग्रहण
   (Relevance of the total curriculum of the subject in the school)
6. राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव परिवेश का ग्रहण
   (Adoption of the perspective of national and international integration)
7. इतिहास शिक्षण के प्रति उचित अभिवृतियों का विकास
   (Development of proper attitudes towards History Teaching)
8. विभिन्न विषयों से सहसंबंध
   (Correlation with other subjects)

9.8 पाठ्य पुस्तकों के सुधार हेतु शिक्षा आयोग के विचार एवं सुझाव (Suggestions and views of Education commission about the improvement of the standard of text books)

भारत देश में पाठ्यपुस्तक लेखन तथा उत्पादन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। माध्यमिक स्तर पर अभी तक पुस्तकों का स्तर इतना उन्नत नहीं हो पाया है जितनी आवश्यकता आज के विद्यार्थी एवं शिक्षा जगत को है। इनके सुधार के लिए शिक्षा-आयोग के अग्रलिखित सुझाव उल्लेखनीय है-

1. देश मे उपलब्ध विद्वानों की सहायता से राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन के प्रयासों को प्रोत्साहन दिया है।
2. भारत सरकार पाठ्यपुस्तक उत्पादन के लिए सरकारी क्षेत्र में व्यापारिक ढंग पर कार्य करने वाले स्वायत्त संगठन की स्थापना करें।
3. शिक्षकों, विचारकों, चिन्तकों, दार्शनिकों के अनुभवों, विचारो-विद्वता का सम्मान किया जाये एवं उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया जावे।
4. प्रत्येक पाठ्यपुस्तक मे निरन्तर शोधन होते रहना चाहिये इस कार्य में निश्चित उद्देश्य एवं पारदर्शिता का होना जरूरी है।
5. विद्वानों को पुस्तक लेखन के कार्य में उचित मान देय दिया जाना चाहिये।
6. पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन के लिए राज्य शिक्षा विभाग के निकट काम करने वाले अभिकरण (Agency) की स्थापना की जाये।
7. पाठ्यपुस्तक समाज एवं राष्ट्र का दर्पण होती है, अतः हर स्तर से (गुणात्मक स्तर, विषयवस्तु लेखन-लेखक विविधता) पूर्ण होनी चाहिये।

आज के समय शिक्षा बाल केन्द्रित हो चुकी है अतः पुस्तकें भी शिक्षक केन्द्रित न बने अपितु उसमें छात्रों को सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें। पुस्तकें उत्पादक (Productive) होनी चाहिए।

पुस्तकें सत्र आरम्भ से ही पूर्व बाजार मे या विद्यालयों में उपलब्ध हो जानी चाहिए। कई बार देखा जाता है कि सत्र प्रारम्भ होने के 2-3 माह तक पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती।

9.9 इतिहास की पाठ्यपुस्तक के गुण-विशेषताएँ (Merits/Characteristics of History teaching)

1. पुस्तकें नैतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित होती है। अतः अच्छी पुस्तकों का निर्माण भी उक्त धरातल पर किया जाना चाहिये।
2. पाठ्यपुस्तकें तथ्यों का शुद्ध प्रस्तुतीकरण करने वाली होनी चाहिये। अच्छी पुस्तकों की शुद्धता लेखक पर निर्भर करती है लेखक पुस्तकों मे जो भी तथ्य प्रेषित करें वे उनके अनुभव एवं सन्दर्भ पुस्तकों से जुड़े होने चाहिये।
3. पुस्तकें छात्रों के ज्ञान एवं व्यवहार पर अर्थात उद्देश्यनिष्ठ होनी चहिए।
4. पुस्तक की भाषा शैली प्रभावशाली होनी चाहिये।
5. पुस्तकें शिक्षण सिद्धांत सूत्र सरल से कठिन की ओर ज्ञान से अज्ञान की ओर पर आधारित होनी चाहिये।
6. पुस्तकें अत्यधिक तथ्यों का संक्षिप्त सार होनी चाहिये।
7. पाठ्यपुस्तकें प्रेरणादायक होनी चाहिये जिससे विद्यार्थी अपने जीवन मे प्रेरित हो।
8. पुस्तकें छात्रों में वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टिकोण पैदा करने मे सक्षम (Capable) होनी चाहिये।

9. पाठ्यपुस्तकों में उदाहरण दृष्टांत, चित्र, मानचित्र, समय रेखा, वंशावली आदि व्यवस्थित एवं प्रभावशाली ढंग से दिये जाने चाहिये।
10. प्राथमिक स्तर पर पुस्तकें चित्रात्मक शैली से युक्त हो, राज्य स्तर पर जो पुस्तकें तैयार होती है उनमें चित्रात्मक शैली का अभाव रहता है। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर भी मानचित्र, वंशावली या सीमा रेखाओं का चित्रण अच्छी पाठ्यपुस्तकों की विशेषताओं में प्रमुख माना जाता है।
11. पाठ्यपुस्तकें आकर्षक (Attractive) होनी चाहिये इस विशेषता को बनाये रखने के लिए छपाई (printing) कागज, अक्षरों का आकार, मुख्य पृष्ठ (Main page) आदि रंगीन एवं सुन्दर होने चाहिये।
12. पाठ्यपुस्तकें ऐतिहासिक क्रम, तिथियों, युद्धों, शासकों के फरमानों, सन्धियों आदि का सत्य रूप से प्रस्तुतीकरण करने वाली होनी चाहिये।
13. इतिहास में अनेक ऐसे विवादास्पद मामले है, उनको सही दिशा में प्रस्तुत करने की क्षमता पुस्तकों की पहचान होनी चाहिये।
14. इतिहास की पुस्तकें चूँकि तथ्य पर आधारित होती है इसलिए इनका निर्माण अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक गम्भीर होना चाहिये। तथ्यों का संकलन प्रमाणिक होना चाहिये।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है कि पाठ्यपुस्तकें सदैव ही समाज एवं देश की आत्मा रही है। पुस्तकें किसी भी समाज का सृजन है, यह सृजन कार्य सरल नहीं है, आज समाज के किंचित लोगों ने इसे संकीर्ण बना रखा है किंतु हमें पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सत्य के साथ जुड़कर पुस्तकों का निर्माण करना चाहिए ताकि देश की गरिमा एवं पहचान को कायम रखा जा सकें।

9.10 इतिहास पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन (Evaluation of History Text Book)

इतिहास पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करने हेतु निम्न आधार या प्रश्न विचारणीय हो सकते है-

1. क्या पुस्तकें छात्रों के स्तर के अनुसार है?
2. क्या पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त सामग्री उपयोगी है?
3. क्या पुस्तकें मनोवैज्ञानिक ढंग से लिखी गयी है?
4. क्या भाषा शैली एवं शब्दावली उपयुक्त है?
5. क्या पर्याप्त उदाहरण सम्मिलित किये गये है?
6. क्या कथनों मे रोचकता एवं तारतम्यता है?
7. क्या पुस्तकों में लिखित सामग्री तथ्यों पर आधारित है?
8. क्या पुस्तकें उद्देश्यों व शिक्षण सूत्रों पर आधारित है?

उपरोक्त कुछ प्रश्न ऐसे है जो इतिहास की पुस्तकों का मूल्यांकन करने मे सहयोग प्रदान करते है। इन प्रश्नों का यदि उत्तर दिया जाये तो सभी उत्तर ही मे प्रेषित होंगे। किंतु यहाँ केवल लेखक या एक शिक्षक या व्यक्तिगत विचार लेकर मूल्यांकन कार्य नहीं करना है अपितु शिक्षकों का वर्ग, समाज का वर्ग, विद्यार्थियों का समूह जो इतिहास विषय से जुड़े हुए है उनके दृष्टिकोण को जानना आवश्यक है यदि दृष्टिकोण को जाने तो एक सर्वेक्षण कार्य होगा जिसमें कुछ लोगों की स्वीकृति सकारात्मक तो कुछ की नकारात्मक आयेगी।

वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में कुछ कमियाँ या दोष देखे जाते है जो सभी विचारो का प्रतिनिधित्व करते है। जैसे-

1. इतिहास की पाठ्यपुस्तकें रोचक ढंग से नहीं लिखी गई है।
2. पुस्तकें केवल ज्ञान का संचार करती है, शिक्षा के अन्य पहलू- भावात्मक क्रियात्मक- का अभाव है।
3. पुस्तकें रटने की ओर प्रेरित करती है।
4. पुस्तकें वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक नहीं है 20 वर्ष से वहीं भाषा, वही कथन चले आ रहे है।
5. पुस्तकें अनावश्यक विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है।
6. पुस्तकों की विषयवस्तु छात्रों को नीरस एवं विषय के प्रति अवहेलना वृत्ति विकसित कर रही है।
7. पुस्तकें नवीन सहायक सामग्री, चित्र मानचित्र आदि का समाविष्ट नहीं कर रही।
8. पुस्तकों को सन्दर्भ पुस्तकों से नहीं लिखा जा रहा।
9. पुस्तकें साज-सज्जा, रंगीन पृष्ठ, चित्रात्मक नहीं बन पा रही है।

उपरोक्त कमियों को ध्यान में रखते हुए कुछ सुझाव दिये जा रहे है या एक स्तर या मापन (Scale) दिया जा रहा है।

9.11 इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मापन (Scale of History Text book)

1. **प्रस्तुतीकरण (Presentation)**

   1. शैली 2. भाषा 3. निष्पक्षता

   4. स्थूलता 5. प्रचलित शब्द

2. **संगठन - (Organization)**

   1. पाठों की पूर्णता 2. पाठों की सामान्य योजना

   3. पाठों का उचित विभाजन

   सारांश यांत्रिक तत्व-

1. पुस्तक का आकार एवं साज-सज्जा

2. कागज की छपाई
3. जिल्द की सुदृढ़ता

उदाहरण-

1. उदाहरण की शुद्धता
2. उदाहरणों की पर्याप्तता
3. छात्रों के अनुकूल उदाहरण

चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, चार्ट तथा ग्राफ

1.संख्या 2. शुद्धता 3.स्थूलता
4.आकार 5.स्पष्टता 6.सुन्दरता

प्रश्न-

1. पाठ्यवस्तु से संबंध
2. उनकी विस्तृता
3. प्रश्नों के प्रकार
4. प्रश्नों की प्रेरणा

परिशिष्ट तथा अनुक्रमणिका-

1. विषयसूची 2. व्यवस्थापन 3. पृष्ठ संख्या
4. पूर्णता 5. स्पष्टता

उपरोक्त कुछ बिन्दु पुस्तकों के मापदण्ड है। इनमें से कुछ या सभी लेखकों, विषयविशेषज्ञों एवं पुस्तक निर्माण समिति द्वारा निश्चित किया जाना चाहिए। जैसा कि हम जानते है। पुस्तक निर्माण कार्य एक बौद्धिक प्रक्रिया का क्रियान्वित रूप है। पुस्तक साधारण तरीके से या शीघ्र मुद्रित प्रक्रिया से तैयार नहीं होनी चाहिये। इसके लिए निश्चित अभिकरणों की समय-समय पर बैठक आयोजित हो, तथा नवाचार एवं तकनीकी युक्त विचारों, आवश्यकताओं, उचित मार्गदर्शन एवं प्रेरणाप्रद रोचक संवाद हो। गहन अध्ययन के बाद ही पुस्तक निर्माण किया जाये क्योंकि ये हमे केवल ज्ञान ही नहीं देती अपितु समाज एवं देश काल या भावी विचार एवं उन्नति की दिशा भी प्रदान करती है।

सारांश (Summary) -

इतिहास विषय अतीत की घटनाओं का विवरणात्मक प्रस्तुतीकरण है जो लेखकों द्वारा तथ्यात्मक सामग्री के माध्यम से पुस्तकों में प्रस्तुत किया जाता है। पुस्तकें सदैव ही ज्ञान का पुंज रही हैं। पुस्तकों का निर्माण एवं इनका सौन्दर्य कई बिन्दुओं पर निर्भर करता है। पुस्तकें समाज एवं देश का दर्पण हैं इसलिए योग्य अनुभवी व बुद्धिमान लेखकों से इन्हें लिखवाना चाहिये। वर्तमान समय में पुस्तकों में अनेक दोष आ गये हैं इन्हें दूर करने के अनेक सुझाव समय-समय पर दिये जाते रहे हैं ताकि पुस्तक दोषों से दूर रहे। समय-समय पर शिक्षा आयोग भी इस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाते रहे है।

वर्तमान समय में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण हमारी अतीत की गहराइयों को स्पष्ट करने में सफल तभी हो सकेगा तब पुस्तकें बोधगम्य, सारबोधक भाषा प्रेरक, सुन्दर

आकर्षक तथा तथ्यात्मक सामग्री से युक्त होंगी। इस दिशा से प्रेरित होकर ही लेखक अपना कार्य करें।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इतिहास पुस्तक की कोई एक परिभाषा दीजिये।
2. इतिहास पुस्तकों की क्या आवश्यकता है?
3. अच्छी इतिहास पुस्तक की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं बताइये।
4. वर्तमान पुस्तक मे क्याहै क्या दोष-?
5. पाठ्यपुस्तक के निर्माण हेतु कौनकौन- से चरणों का प्रयोग करना चाहिए?
6. इतिहास पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु शिक्षा आयोग के किन्ही दो सुझावों का उल्लेख कीजिये।

9.12 सारांश (Summary)

अनुदेशन का शाब्दिक अर्थ सूचना देने से है जिसमें किसी विशेष पक्ष का उल्लेख रहता है। यह शब्द वर्तमान में शिक्षा में शिक्षण के साथ-साथ प्रयोग में लाया जाता हैं। राबर्ट गेने ने नौ प्रकार के अनुदेशनात्मक घटनाओं का उल्लेख किया है। अनुदेशनात्मक सामग्री को 5 प्रकारों मे विभक्त किया जा सकता है:-

1. पृष्ठपोषण पर आधारित
2. दूरस्थ शिक्षा पर आधारित
3. कम्प्यूटर पर आधारित
4. कक्षा कक्ष शिक्षण पर आधारित
5. शिक्षा तकनीकी पर आधारित

अनुदेशनात्मक सामग्री विषयानुसार निर्मित की जाती है क्योंकि हर विषय की प्रकृति पृथक-पृथक होती है। इतिहास में अनुदेशनात्मक सामग्री को 11 प्रकारों में विभाजित करने का प्रयास किया है। रॉबर्ट गेने ने भी 6 भागों में इस सामग्री का विभाजित किया है। कुछ अनुदेशनात्मक प्रकार विभिन्न विषयों में कॉमन है तो कुछ अनुदेशन के अपने पृथक प्रकार है।

इतिहास पाठ्य पुस्तकें शिक्षण अधिगम को दिशा प्रदान करती है। पाठ्य पुस्तकें अथाह ज्ञान एवं आचरण का स्त्रोत रही है और शिक्षक एवं शिक्षार्थी पुस्तकों से ही पाठ्यक्रम पूर्ण करते है। पाठ्य पुस्तकों के महत्व एवं आवश्यकता से विश्व के सभी चिंतक, शिक्षाविद् लेखक परिचित है और शायद अपने अनुभवों को उसमें लिखकर अभिव्यक्त करते है ताकि आने वाली पीढ़ी तक ज्ञान एवं अनुभव का वितरण होता रहे।

एन.सी.ई.आर.टी. ने भी अच्छी पाठ्य पुस्तकों के निर्माण हेतु पृथक विभाग कर विद्यार्थियों मे लाभ पहुंचाया है।

इतिहास विषय अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन है इसलिए पाठ्यपुस्तकों का महल बढ़ जाता है। इसके निर्माण हेतु लेखकों को कुछ तथ्यों से अवगत रहना चाहिए। ताकि पुस्तकें प्रभावी रोचक एवं तथ्यात्मक बन सके।

शिक्षा आयोगों ने पुस्तकों के निर्माण संबंधी कुछ सुझाव भारतीय शिक्षा को प्रस्तुत किया है। इन्हीं सुझावों के आधार पर इसका निर्माण किया जाना अपरिहार्य है। वर्तमान पाठ्य पुस्तकों का स्तर सुधारने हेतु समीक्षात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए ताकि लेखकों का प्रयास सफल रहे और विद्यार्थी तथ्यात्मक सूचनाएं प्राप्त कर सकें।

9.13 संदर्भ ग्रंथ (References)

1. अनुदेशन से क्या आशय है?
   What do you mean by Instruction?
2. अनुदेशन के प्रकारों का उल्लेख कीजिये।
   Write the types of instruction.
3. राबर्ट गेरने द्वारा प्रतिपादित अनुदेशनात्मक सामग्री की विवेचना कीजिए।
   Explain the Instructional material types by Robert Ganne.
4. पृष्ठपोषण एवं दूरस्थ शिक्षा पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
   Write short note on feedback and Distance Education.
5. इतिहास शिक्षण में अनुदेशनात्मक सामग्री का निर्माण किस प्रकार होता है?
   How do you prepare instruction Material in teaching of history?
6. इतिहास में नाटकीकरण एवं भूमिका निर्वाह का क्या महत्व है?
   What is importance of dramatization and role play in History teaching.
7. पाठ्य पुस्तकों की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।
   Explain the utility of text book.
8. इतिहास की अच्छी पाठ्य पुस्तकों का क्या मापदण्ड होना चाहिए? वर्णन कीजिए।
   What should be the criteria of a good History Text Book.
9. आपकी राय में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के क्या आधार है? विवेचना कीजिए।
   What should be the basis of evaluation of a History text books in your opinion? Discuss.

इकाई-10

इतिहास पाठ्यवस्तु संदर्भित शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं मूल्यांकन

(Context History teaching aids, its Preparation and Evaluation)

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

10.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

10.1 भूमिका (Introduction)

10.2 दृश्य-श्रव्य सामग्री का अर्थ (Meaning of Audio-Visual Aids)

10.3 दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्य (Function of Audio-Visual Aids)

10.4 इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री की आवश्यकता (Need of teaching Aids in History Teaching)

10.5 शिक्षण सामग्री का विकास (Development of Teaching Aids)

10.6 इतिहास में शिक्षण सामग्री के प्रकार (Types of Teaching Aids in History Teaching)

10.7 परम्परागत शिक्षण सहायक सामग्री (Traditional Teaching Aids)

10.8 दृश्य सहायक सामग्री (Visual material Aids)

10.9 श्रव्य सहायक सामग्री (Audio-Aids)

10.10 श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री (Audio-Visual-Aids)

10.11 अन्य सहायक सामग्री (Other-Material-Aids)

10.12 सहायक सामग्री का मूल्यांकन (Evaluation of Teaching Aids)

10.13 सारांश (Summary)

10.14 संदर्भ ग्रन्थ (Reference)

10.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की समाप्ति पर विद्यार्थी -

- इतिहास विषय में पाठ्यवस्तु के प्रत्यय को जान सकेंगे।
- इतिहास शिक्षण में पाठ्यवस्तु एवं सामग्री में अंतर कर सकेंगे।
- इतिहास पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करने हेतु शिक्षण सामग्री के महत्व को समझ सकेंगे।
- शिक्षण सामग्री या सहायक सामग्री (Teaching Aid) के महत्व को समझ सकेंगे।
- सहायक सामग्री को पाठ्यवस्तु के संदर्भ में पढ़ने की प्रवृत्ति को विकसित कर सकेंगे।

- सहायक सामग्रियों के निर्माण की प्रवृत्ति अध्यापकों में विकसित हो, ऐसा वातावरण विद्यालय में उत्पन्न कर सकेंगे।
- चित्र, मानचित्र, मॉडल, प्रोजेक्ट, फिल्म स्ट्रिप्स तैयार करवा सकेंगे।
- पाठ्यसामग्री की पृष्ठभूमि में ही शिक्षण सामग्री का उपयोग करने की कुशलता विकसित कर सकेंगे।
- सहायक सामग्री कितनी उपयोगी एवं सार्थक बन सकेगी इस विचार का मूल्यांकन कर सकेंगे।

10.1 भूमिका (Introduction)

प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षण अधिगम का केन्द्र बिन्दु पाठ्य पुस्तकें रही है। यद्यपि इसका प्रयोग आधुनिक काल में अधिक होने लगा है क्योंकि ज्ञान के विस्फोट एवं ज्ञान देने की प्रकृति ने पाठ्यपुस्तकों के महत्व को बढ़ा दिया है। प्रस्तुत इकाई में पाठ्यवस्तु के संदर्भ में शिक्षण सामग्री का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना है। इस नियोजन हेतु सर्वप्रथम पाठ्यवस्तु को समझा जाये। पाठ्यवस्तु शब्द से आशय उस विषय सामग्री से जो अध्यापक को पाठ्यक्रम के अनुसार कक्षा कक्ष में पाठ्यवस्तु के माध्यम से पढ़ानी है। अर्थात कक्षा में अध्यापक शिक्षण कार्य को सम्पादित करने हेतु जिस सेतु का सहारा लेता है उसे पाठ्यवस्तु या विषयवस्तु कहते है। पाठ्यवस्तु किसी भी कक्षा की एक निश्चित, योजनाबद्ध नियमानुसार शिक्षा विभाग या एन.सी.ई.आर.टी. या अन्य किसी शिक्षा निकाय द्वारा निर्धारित वह पाठ्यक्रम है जिसके दिशा निर्देशन में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया होती है। इस तरह पाठ्यवस्तु वह विषय सामग्री है जो पाठ्य पुस्तकों में उपलब्ध होती है और शिक्षक कक्षा कक्ष में विभिन्न तरीकों, सहायक सामग्री की सहायता से उसे प्रस्तुत करता है। पाठ्यवस्तु प्रस्तुत करने हेतु शिक्षण कौशल, शिक्षण विधियों प्रविधियों, व्यूह रचनाओं एवं सहायक सामग्री का प्रयोग करता है ताकि शिक्षण रोचक, सरल, उपयोगी, प्रभावशाली एवं मूल्यांकन प्रेरित बन सकें। शिक्षण सामग्री का अध्ययन पाठ्यवस्तु के संदर्भ में किया जाता है।

उपरोक्त पृष्ठभूमि के आधार पर यह विचार या प्रश्न उपस्थित होता है कि पाठ्यवस्तु में कौन-कौन सी पाठ्यसामग्री सार्थक, व्यवहारिक एवं लाभकारी बन सकेगी जिससे विषयवस्तु योजनाबद्ध तरीके से कक्षा कक्ष में तथा छात्रों के अध्ययन हेतु उपयोगी बन सके। इस संदर्भ में पाठ्यवस्तु संदर्भित सामग्री का उल्लेख किया जाना है। पाठ्यवस्तु में प्रदत्त वह सामग्री है जो शिक्षक को शिक्षण कार्य हेतु दिशा-निर्देश, नियोजन, व्यवस्थापन मूल्यांकन हेतु नियोजित की जाती है। पाठ्यवस्तु एक व्यापक अवधारणा है क्योंकि शिक्षण कार्य हेतु शिक्षक एक ही सामग्री से प्रेरित नहीं रहता अपितु वह अनेक शिक्षण नीतियों, रीतियों, कौशलों आदि का प्रयोग करता है। यह बिन्दु प्रस्तुत पुस्तक में अन्य इकाईयों से वर्णित है। यहां केवल पाठ्यवस्तु संदर्भित शिक्षण सामग्री अर्थात दृश्य सामग्री का उल्लेख किया जा रहा है।

10.2 दृश्य-श्रव्य सामग्री का अर्थ (Meaning of Audio Visual Aids)

श्रव्य-दृश्य सामग्री से तात्पर्य उन साधनों से है जिनके प्रयोग से शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही लाभान्वित होते है विद्यार्थियों की ज्ञानेन्द्रियां सक्रिय हो जाती है और वे विषयवस्तु की समग्रता को ग्रहण Receiving करने का प्रयास करते है। इसके प्रयोग से शिक्षण कार्य रोचक, सरल, प्रभावी बनता हैं। शिक्षण कार्य में प्राचीन काल से ही सहायक सामग्री का प्रयोग होता रहा है, चाहे उसका स्वरूप उदाहरण कहानी, दृष्टांत, मौखिक वृतान्त के रूप में प्रचलित रहा है। आज शिक्षा के आधुनिकीकरण, तकनीकी के विकास ने, मानव की क्षमताओं ने इन सहायक सामग्रियों को मशीनों पर या अन्य विकसित उपागमों पर आधारित कर दिया है। इसलिए सहायक सामग्री का दृश्य देखने श्रव्य सुनने सामग्री कहते है।

सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती है, साथ ही शब्द एवं वस्तु से संबंध स्थापित करती है। यह छात्र के समय में बचत करती हैं सरल एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती है, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं उसमें वृद्ध करती है । मनमोहक, मनोरंजन प्रदान करती है, जटिल प्रदत्तों को सरलतम दृष्टिकोण प्रदान करती है, कल्पना को उत्तेजित करती है तथा छात्रों की निरीक्षण शक्ति का विकास करती है ।

- एम.पी.मफात्

Material aids furnish experience, facilities, the association of object and word, save pupil's time, provide simple and authentic information, enrich and intend ones appreciation furnish pleasant entertainment, provide a simplified view of complicated data, stimulate ones imagination and develop pupil power of observation.

-M.P.Maffatt

10.3 दृश्य-श्रव्य सामग्री के कार्य (Function of Audio Visual Aids)

1. **प्रेरणा (Motivation) -** इस प्रकार की सहायक सामग्री जो विद्यार्थियों में सीखने के प्रति प्रेरणा पैदा करें। दृश्य-श्रव्य सामग्री के क्षेत्र में आती हैं पाठ्य सामग्री को यदि विद्यार्थी आसानी से नहीं समझ रहे तो शिक्षक शिक्षण के समय इस तरह के नमूने, चित्र, मॉडल आदि प्रस्तुत करता है जिससे विद्यार्थी सक्रिय होकर सीखने लगता है।
2. **सक्रियता (Activeness) -** दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालकों को भांति-भांति सक्रिय होने का अवसर मिलता है। पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करने के समय जो भी सामग्री प्रस्तुत की जाती है उसे छात्र देखकर, बनाकर, अपनी सक्रियता एवं प्रयोजनता का विकास करता है।

3. **स्पष्टीकरण (Clarification) -** दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालकों की कठिन विषय वस्तु को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है।

4. **सार्थक अनुभव (Meaningful Experience) -** दृश्य-श्रव्य सामग्री द्वारा बालकों को पाठ वास्तविक परिस्थितियों में पढ़ाया जाता है। सामग्री के द्वारा विद्यार्थी स्वयं प्रत्यक्ष रूप में पाठ्य सामग्री को देखकर, छूकर, बनाकर, पूछकर तैयार करते है। इस प्रक्रिया से उन्हें सार्थक रूप से सीखने का अनुभव होता है। यह अनुभव अधिगम को प्रभावी बनाता है।

5. **रटने को कम करना (Discouragement to Cramming) -** दृश्य-श्रव्य सामग्री का यह महत्वपूर्ण कार्य है कि यह छात्रों में विषयवस्तु को रटने की प्रवृति का विकास करता है। सहायक सामग्री से विद्यार्थी स्वयं क्रिया करता है और विषय ज्ञान को बोधात्मक शक्तियों के द्वारा विकसित करता है। इस कार्य को रटने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे कम होती जाती है।

6. **शब्दावली में वृद्धि करना (Increase in Vocabulary) -** सहायक सामग्री का प्रयोग छात्रों में नवीन प्रत्ययों, अवधारणाओं के विकास में भी सहायक बनता है। दृश्य सहायक सामग्री वर्तमान में तकनीकी पर आधारित हो गई है। तकनीकी विज्ञान के सिद्धान्तों का प्रयोग है। अत: विद्यार्थी कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, सी. डी., इन्टरनेट, ई-मेल आदि शब्दों से एवं उनके क्रियाकलापों से अवगत होता है तो इसके अधिगम मे नवीनता आती है

10.4 इतिहास शिक्षण मे सहायक सामग्री की आवश्यकता (Need of Teaching Aids in History Teaching)

1. विषय, सामग्री को रोचक प्रभावी,एवं प्रेरणादायक बनाने के लिए।
2. शैक्षिक- क्रियाओं को व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से संचालित करने के लिए।
3. छात्रों की कल्पना, चिंतन एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए।
4. छात्रों की रूचि एवं उत्साह बनाये रखने के लिए।
5. अमूर्त पाठ्यसामग्री को मूर्त रूप में प्रस्तुत करने के लिए।
6. छात्रों में प्रयोजनवाद प्रवृति विकास करने के लिए।
7. पाठ्य सामग्री को सरल बनाकर प्रस्तुत करने के लिए।
8. छात्रों की कलात्मक प्रकृति का विकास करने के लिए।

सारांश (Summary)

पाठ्यवस्तु को सरल स्पष्ट, बोधगम्य, रोचक बनाने के लिए करना आवश्यक हैं। पाठ्यवस्तु में आवश्यकतानुसार शिक्षण सामग्री का अर्थ उस सामग्री से जिनका प्रयोग शिक्षण कार्य में श्रव्य-दृश्य साधनों के रूप में किया जाता है। शिक्षण सामग्री के अनेक कार्य होते हैं। जिसके द्वारा पाठ्यवस्तु को सफल बनाया जा सकता है। इतिहास चूंकि नीरस विषय माना जाता हैं इसलिए शिक्षण सामग्री का महत्व इस विषय मे अधिक हो जाता हैं। इसकी आवश्यकता सदैव शिक्षण के लिए लाभकारी रही हैं। इस क्षेत्र मे एडगर डेल ने त्रिकोण शंकु (Triangle) स्पष्ट है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. श्रव्यसामग्री से क्या आशय हैं दृश्य-?
2. श्रव्यदृश्य सामग्री के क्या क्या कार्य हैं-?
3. शिक्षण सामग्री की शिक्षण आवश्यकता हैं?
4. एडगर डेल ने किस तरह शिक्षण सामग्री को स्पष्ट किया हैं?

10.5 शिक्षण सामग्री का विकास (Development of Teaching Aids)

शिक्षण सहायक सामग्री के क्षेत्र मे एडगर डेल का नाम उल्लेखनीय है। एडगर डेल ने पाठ्यसामग्री विषयवस्तु को अनुभव के आधार पर केन्द्रित किया जिसे अनुभव का त्रिकोण शंकु के द्वारा वर्गीकृत किया है जो इस प्रकार है।

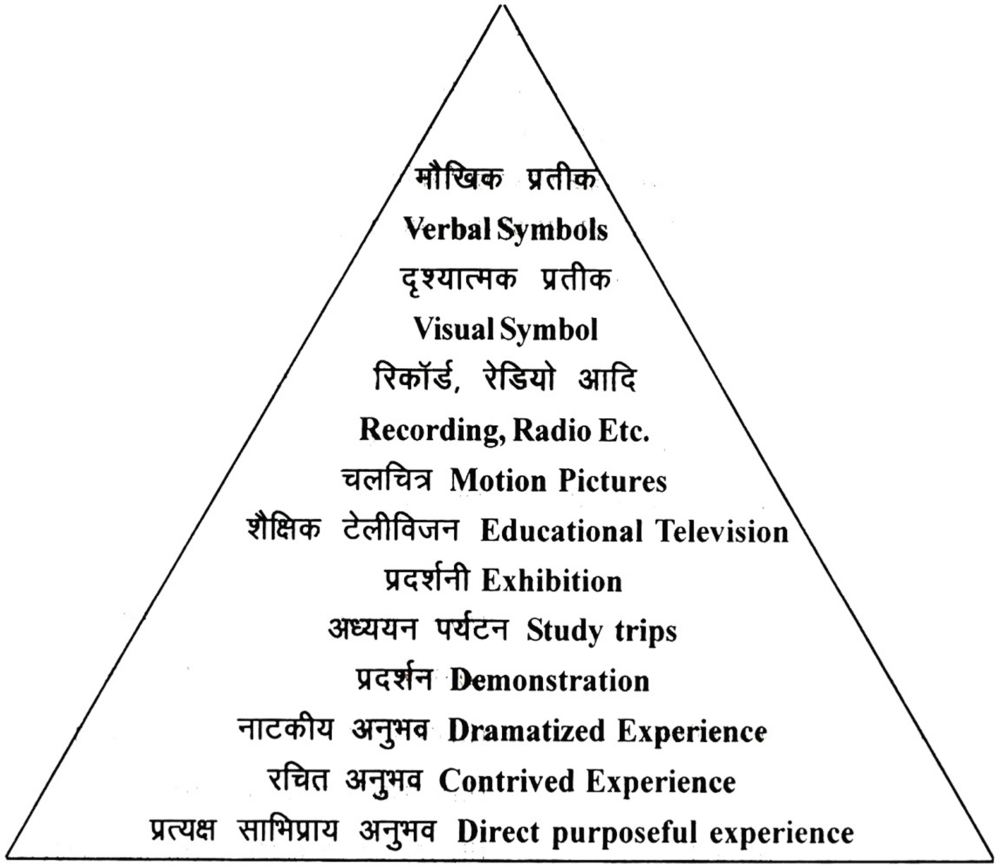

चित्र संख्या : 10.1

उपयुक्त त्रिकोण इस तथ्य को इंगित करता है कि शिक्षण का अनुभव धीरे-धीरे शिक्षक को अपनी पाठ्य सामग्री में सहायता प्रदान करता है और शिक्षक विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग करते हुए कक्षा कक्ष में शिक्षण को उपरोक्त तरीके से प्रभावी एवं रोचक बनाता है। इतिहास

शिक्षण में सहायक सामग्री पाठ्य सामग्री का ही एक रूप है या प्रकार है। पाठ्य सामग्री के अनुभव, मूर्त, प्रत्यय प्रदर्शन, नाटक, कृत्रिम एवं मूल स्त्रोत है जो शिक्षक को कक्षागत कार्य में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में सहायता करते है। यह सहायता अधिगम केन्द्रित होती है और विद्यार्थियों मे सीखने की गतिशीलता, तत्परता का विकास होता है।

10.6 इतिहास मे शिक्षण सामग्री के प्रकार (Types of Teaching Aids in History Teaching)

इतिहास विषय अपने आप मे एक नीरस विषय के रूप मे समझा जाता है। किन्तु शिक्षा मे आए परिवर्तन एवं नवाचार ने इस नीरसता को विभिन्न तरीकों से दूर करने का प्रयास किया है। इसी में सहायक सामग्री का नियोजन, प्रयोग एवं प्रस्तुतीकरण महत्वपूर्ण माना जाता है।

सहायक सामग्री विभिन्न विषयों में विभिन्न रूपों में दिखायी देती हैं ऐसा भी लगाता है कि विभिन्न चार्ट, मॉडल, चित्र, फिल्म स्ट्रिप्स आदि कक्षा मे प्रयोग करने से शिक्षक को विशेष तैयारी कि आवश्यकता होती है। यह सच है कि इनका प्रयोग करना एक कालांश मे विषयवस्तु को सही रूप मे पढ़ाएगा तो इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष दिखाई देगा जो शिक्षण के उद्दे को सार्थक कर सकेगा।

इतिहास विषय के आगे पृष्ठों मे इसका विस्तार से विवेचना किया जाएगा। ये सामग्री निम्न चित्र के अनुसार संक्षिप्त में समझी जा सकती है। अग्रिम पृष्ठों में इसका विस्तार से विवेचन किया जायेगा। इतिहास शिक्षक सहायक सामग्री का निर्माण स्वयं भी कर सकते है और उपलब्ध सामग्री को भी कक्षा-कक्षा में प्रस्तुत कर सकते है। सहायक सामग्री का निर्माण करना सरल अनुभव नहीं है क्योंकि शिक्षक विभिन्न दृष्टिकोण को केन्द्र में रखकर इसका निर्माण करते है। सहायक सामग्री पाठ्य वस्तु से जुड़ी हो इस तथ्य का ध्यान रखना इनकी उपयोगिता, महत्व, प्रासंगिकता, प्रेरणा, सरलता आदि सभी बिन्दु की सफलता पर निर्भर करता है।

शिक्षक सहायक सामग्री के प्रकार

(1)	(2)	(3)	(4)
परम्परागत शिक्षण सहायक सामग्री	दृश्य सहायक सामग्री	यांत्रिक सहायक सामग्री	अन्य सहायक सामग्री
A) श्यामपट्ट	A) वास्तविक पदार्थ	A) श्रव्य सहायक सामग्री	A) अन्य सहायक सामग्री
B) पाठ्यपुस्तक एवं पत्रिकाएं	B) चित्र	(i) रेडियो सामग्री	B) प्रदर्शनी
C) समाचार-पत्र	C) रेखाचित्र	(ii) टेपरिकॉर्डर	C) संग्रहालय
	D) चार्ट	(iii) लिंग्वाफोन एवं ग्रामोफोन	D) सिक्के
	E) पोस्टर	B) दृश्य सहायक सामग्री	E) युद्ध योजनाएँ
		(i) प्रोजेक्टर	

D) कठपुतली

F) मॉडल
G) ग्लोब
H) बुलेटिन बोर्ड
I) फ्लेनल बोर्ड
J) ग्राफ
K) समय रेखा

(ii) एपिडाइस्कोप
(iii) फिल्म-स्ट्रिप्स

C) श्रव्य सहायक सामग्री
(i) दूरदर्शन
(ii) वी. सी. आर.
(iii) नाटक
(iv) चलचित्र

10.7 परम्परागत शिक्षण सहायक सामग्री (Traditional Teaching Aids)

परम्परागत शिक्षण सहायक सामग्रियों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

A **श्यामपट्ट (Black-Board)-** श्यामपट्ट शिक्षण एवं शिक्षक का सर्वोत्तम साथी है। यह शिक्षा के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। विद्यालय भवन बनाते समय श्यामपट्ट के स्थान को निर्धारित नहीं किया जाता है। भारत में चॉक-बोर्डो का ही अधिक प्रयोग होता है। ये काले, हरे एवं पीले रंग के होते है। शिक्षक महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखते है। श्यामपट्ट कथन को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाता है। भारत में प्राथमिक स्तर के हजारों विद्यालय ऐसे है जहां श्यामपट्ट नाम की कोई चीज दिखाई नहीं पड़ता है। कोठारी आयोग ने श्यामपट्ट की प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्यता पर जोर दिया।

श्यामपट्ट एक ऐसा उपकरण है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है मैकल्सकी कहते है कि श्यामपट्ट को महत्वपूर्ण दृश्य उपकरण माना जाता है। यह विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले प्राय: प्रत्येक विषय को मानस पटल पर अंकित करने में सहायता दे सकता है। यह केवल साधन है, साध्य नहीं। इसका प्रमुख उद्देश्य शुद्ध मानसिक विचारों को विकसित करना है। ये तीन प्रकार के होते है -

1. सामान्य श्यामपट्ट 2. लपेट श्यामपट्ट 3. चुम्बकीय श्यामपट्ट।

श्यामपट्ट के प्रयोग में ध्यान देने योग्य बातें (Precautions for use of Black Board) -

1. बायें कोने से सीधी रेखा से लिखना शुरू करना चाहिए।
2. श्यामपट्ट पर मोटे एवं सुडौल अक्षरों में लिखना चाहिए ताकि सभी छात्र देख सकें।
3. श्यामपट्ट पर लिखने से पूर्व यह निर्धारित कर लेना चाहिए, कि कितना लिखना है।
4. श्यामपट्ट को प्रयोग के बाद साफ कर देना चाहिए तथा साफ करने में डस्टर का प्रयोग करना चाहिए।
5. श्यामपट्ट पर बोलते हुए लिखना चाहिए।

श्यामपट्ट रेखाकृतियों के महत्व को प्रदर्शित करते हुए दीक्षित एवं बघेला ने लिखा है रेखाकृति भी इतिहास-शिक्षण में कुछ तथ्यों के स्पष्टीकरण के लिए एक सरल ओर प्रभावी साधन है। यदि शिक्षक रेखाकृति अंकन में कुशल है तो वह प्रतिरूप अथवा अन्य सहायक सामग्री के अभाव में तथ्यों को सही रूप से प्रकट कर सकता है। प्राचीन ऐतिहासिक अवशेषों में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा, आभूषण, भवन, मंदिर, मस्जिद, अस्त्र-शस्त्र आदि की आकृतियां एवं विशेषताओं को श्यामपट्ट पर सरल रेखाकृतियो के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है। इस प्रकार श्यामपट्टीय रेखाकृतियों के माध्यम से शिक्षक इतिहास की पाठ्यवस्तु को छात्रों के समक्ष सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत कर प्रभावी बना सकता है। श्यामपट्ट का उपयोग करते समय शिक्षक का कर्तव्य है कि वह श्यामपट्ट के उपयोग के क्रम में बरती जाने वाली सावधानियों का भी ध्यान ताकि श्यामपट्ट का सही उपयोग हो सके।

B **पुस्तकें (Books) -** इतिहास शिक्षण में पुस्तकों का भी योगदान है। जहां शिक्षण होगा वहां पुस्तकें होगी। भारतीय विद्यालयों में इस प्रकरण का पर्याप्त - मात्रा में उपयोग हो रहा है। लेकिन रूसों, पेस्टालॉजी, फ्रॉबेल, जॉन ड्यूवी आदि के विचारों ने शिक्षा में भारी परिवर्तन किया है। इन्होंने परम्परागत शिक्षण विधियों के विरूद्ध आन्दोलन चलाया। क्रियात्मक पक्षों पर अधिक ध्यान दिया गया। अत: पुस्तकों को महत्वपूर्ण माना जाने लगा। अमेरिका में प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया गया कि पुस्तकों को शिक्षण-विधियों से पृथक नहीं किया जा सकता है। अत: इसके महत्व को स्वीकार किया है।

C **समाचार-पत्र-पत्रिकाएं (News-Paper and Magazines) -** इतिहास शिक्षण में समाचार-पत्र तथा जर्नल का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशील शिक्षा ने इसके महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। इतिहास के ज्ञान की प्राप्ति के लिए ये बहुत महत्वपूर्ण साधन है। इनसे छात्रों को तत्कालीन घटनाओं एवं सूचनाओं की प्राप्ति होती है। ये पाठ्यपुस्तकों में संचित ज्ञान राशि को नवीन एवं पूर्ण बनाते है। इसके अतिरिक्त ये छात्रों को विभिन्न समस्याओं का आलोचनात्मक अध्ययन कराती है। इसके प्रयोग से छात्रों के मानसिक पक्ष को व्यापक एवं वैज्ञानिक बनाया जाता है। सरकारी योजनाओं एवं नीतियों का पता भी हमें इन्हीं के माध्यम से होता है।

10.8 दृश्य सहायक सामग्री (Visual material Aids)

दृश्य सहायक सामग्री वह है जिसके द्वारा हमारी दृश्य इंद्रियों को सक्रिय केर। इनको निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

A **वास्तविक पदार्थ (Real Material) -** वास्तविक पदार्थ से तात्पर्य मूल वस्तुओं से है।

वास्तविक पदार्थ बालकों की इन्द्रियां को प्रेरणा देते है। वास्तविक पदार्थो से छात्रों मे रुचि एवं आनन्द उत्पन्न होता है। अत: जहां तक संभव हो सके वास्तविक पदार्थो को ही दृश्य सामग्री के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। कई बार कक्षा में पदार्थ का प्रदर्शन संभव नहीं होता है। उस स्थिति में वह सामग्री जो वास्तविक पदार्थ के समरूप है वही प्रस्तुत करनी चाहिये।

B **चित्र (Picture) -** चित्र भी इतिहास शिक्षण में उपयोगी सहायक सामग्री का कार्य करते है। जब वास्तविक पदार्थ एवं मॉडल्स, उपलब्ध न हो तब, चित्रों को प्रयोग किया जा सकता है। Introductory चित्र स्पष्ट तथा सुन्दर होने चाहिए। ये आकार में इतने छोटे न हो कि कक्षा में पीछे बैठे छात्रों को दिखाई न दें। छोटे बच्चों की कक्षा में रंगीन चित्र बच्चों को अधिक आकर्षित करते हैं। चित्र पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित हो तथा पूर्ण व शुद्ध होने चाहिए। चित्र अध्ययन के अमूल्य साधन है।

C **मानचित्र (Maps) -** मानचित्रों का प्रयोग ऐतिहासिक घटनाओं अथवा भौगोलिक तथ्यों के अध्ययन हेतु नितान्त आवश्यक है। यूं तो मानचित्र बने बनाये भी बाजार से मिल जाते है, अच्छा यही है कि शिक्षक मानचित्र को स्वयं भी बनाएं और उनमें केवल उन्हीं बातों को सुन्दर ढंग से अंकित जिनकी नितान्त आवश्यकता हो। शिक्षक को मानचित्रों के ऊपर उनका नाम शीर्षक,दिशा तथा संकेत आदि अवश्य लिखने चाहिए तथा उनमें रंगो का प्रयोग कल्पना अनुभव तथा कलात्मक भाव करना चाहिए अन्यथा भद्दे, मोटे तथा व्यर्थ हो जाएंगे।

D **रेखाचित्र (Diagrams) -** जब शिक्षक को वास्तविक पदार्थ, नमूने या चित्र उपलब्ध नहीं हों, तो ऐसी स्थिति में शिक्षक को रंगीन चौक से भाव प्रदर्शित करने हेतु रेखांकित या खांचे खींचने चाहिये। इन्हें बनाने में कोई अतिरिक्त खर्चा नहीं होता है, इसलिए विषयवस्तु को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक शिक्षक को सुन्दर तथा आकर्षक रेखाचित्र तथा खाके बनाने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

E **चार्ट (Chart) -** चार्ट शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करने वाला यंत्र है। चार्ट का प्रयोग भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र,नागरिक शास्त्र व गणित आदि विषयों मे उपयोगी है। अत: शिक्षक को पाठ की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक चार्ट स्वयं ही तैयार करके उचित प्रयोग करना चाहिए। चार्ट द्वारा प्रदर्शित विषयवस्तु सुन्दर, सुडौल एवं मोटी होनी चाहिए ताकि कक्षा का प्रत्येक छात्र आसानी से देख लें। तथा शिक्षक अपने प्रयोजन में सफल हो सकें। ये चार्ट कई प्रकार के होते हैं जैसे-

1. वर्गीकृत चार्ट (Classified Chart)
2. जैविकीय चार्ट (Genology Chart)
3. धारा चार्ट (Flow Chart)
4. सम्बन्ध चार्ट (Relationship Chart)
5. तालिका चार्ट (Table Chart)
6. समय चार्ट (Time Chart)
7. ग्राफिकल चार्ट (Graphical Chart)
8. संगठन चार्ट (Organization Chart)
9. चित्र सम्बन्धी चार्ट (Picture Chart)
10. ऑकड़ों सम्बन्धी चार्ट (Tabulation Chart)

F **पोस्टर (Poster) -** पोस्टर वस्तुओं, व्यक्तियों व स्थानों का ज्ञान प्रदान करने का एक उत्तम साधन हैं यह विचारों या भावों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति है। पोस्टर के माध्यम से हम विषय वस्तु को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करते है।

G **मॉडल (Model) -** मॉडल वास्तविक पदार्थो की प्रतिकृति होते 'है। इनका प्रयोग तभी होता है जब वास्तविक वस्तु कक्षा-कक्ष में न ले जायी जा सके एवं उपलब्ध न हो। कभी-कभी नमूने वास्तविक पदार्थो में भी होते है। वास्तविक वस्तु की अपेक्षा अच्छी आकृति के मॉडल बालक की कल्पना शक्ति का विकास भली प्रकार से कर सकते है। नमूनों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इनकी सहायता से बालकों की भली प्रकार से किसी भी वस्तु का ज्ञान सरलता से प्रदान किया जा सकता हैं नमूनों में लम्बाई, चौड़ाई तथा मोटाई तीनों स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते है। इसलिए ये चित्र से अधिक लाभदायक एवं प्रभावशाली होते है। इस दृष्टि से यदि शिक्षक को किसी कारण से बने बनाए नमूने न मिले, तो उसे उनका निर्माण स्वयं करना चाहिए।

H **ग्लोब (Globe)-** बहुत से प्रत्यय ऐसे है जिन्हें नक्शे से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। इसमें ग्लोब बहुत महत्वपूर्ण उपकरण हैं जैसे-पृथ्वी गोल है, सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण, नक्षत्र मण्डल, चन्द्रकलाएं दिन-रात का होना आदि प्रत्यय सरलता से ग्लोब द्वारा स्पष्टता के साथ प्रदर्शित किए जा सकते है। शिक्षक कागज की लुग्दी व घास आदि से ग्लोब बना सकता है फिर उन पर अखबार का या किसी अन्य कागज की कई परतें लगानी चाहिए फिर उसे सुखाकर उचित नक्शा बनाकर उचित स्केल के अनुसार रंग भरकर, ग्लोब पर चढ़ा देना चाहिए, ताकि मापन के अनुसार ग्लोब बन सके।

यांत्रिक सामग्री-यांत्रिक सहायक सामग्री भी इतिहास शिक्षण में बहुत उपयोगी होती हैं यांत्रिक सामग्री को तीन भागों में विभक्त किया गया है- (A) श्रव्य (B) दृश्य (C) श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री।

10.9 श्रव्य सहायक सामग्री (Audio Aids)

A) **रेडियो (Radio) -** रेडियो का जन्म 1775 में हुआ लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में इसका इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। रेडियो द्वारा दूर-दूर वाले बालकों को एक ही साथ आधुनिकतम घटनाओं तथा नवीनतम सूचनाओं से राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर वार्ताएं एवं भाषण सुनने को मिलते है। रेडियो द्वारा बालकों को संसार के प्रत्येक राष्ट्र तथा उसमें निवास करने वाले सभी लोगों की क्रियाओं में उत्पन्न हो जाती है। रेडियो का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व है।

B) **टेपरिकार्डर (Tape Recorder) -** यह उपकरण भी इतिहास शिक्षा में बहुत उपयोगी है। उसके अन्दर कोई भी व्यक्ति अपनी ध्वनि का किसी भी समय भरकर पुन: सुन सकता है। इस दृष्टि से टेपरिकार्डर का प्रयोग जहां एक और महापुरुषों के प्रवचन, नेताओं के भाषण तथा प्रसिद्ध कलाकारों की कविताएं संगीत आदि के सुनने में होता है वहीं दूसरी और बालक तथा शिक्षक भी इसमें अपनी ध्वनि को भरकर पुन: सुन सकते है। इससे उनके बोलने की गति में सुधार आश्चर्यजनक ढंग से होने लगता है।

C) **ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफोन (Gramophone and linguaphone) -** यह भी एक उपयोगी उपकरण हैं ग्रामोफोन द्वारा बालकों को भाषण तथा देशभक्ति के गानो की शिक्षा दी जाती है तथा लिंग्वाफोन द्वारा बालकों के उच्चारण आदि को शुद्ध कराने की शिक्षा दी जाती है। अत: शिक्षक को उक्त दोनों उपकरणों का शिक्षण के समय आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए। इन उपकरणों का प्रयोग करने के पश्चात् बालकों के सामने विषय का स्पष्टीकरण अवश्य कर दें। इससे वे ज्ञान को सफलतापूर्वक ग्रहण कर लेंगे।

10.10 दृश्य सहायक (Visual Aids)

A) **प्रोजेक्टर (Projector) -** इसके द्वारा किसी भी छोटी चीज को स्लाईड में बनाकर इस उपकरण के द्वारा प्रक्षेपित कर बड़े आकार में प्रस्तुत किया जाता है। इनके सहयोग द्वारा हम विभिन्न स्लाइड छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करके उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करते है। इससे पाठ रोचक बनता है, इसे कही भी प्रक्षेपित किया जा सकता है।

B) **एपिडॉयस्कोप (Epidiascope) -** इस उपकरण का भी शिक्षा जगत में प्रयोग होने लगा है। यह अपारदर्शी वस्तु पर प्रक्षेपित करता है। जिससे शिक्षक अपनी विषयवस्तु को आसानी से छात्रों के सम्मुख स्पष्ट कर सकता है। इसके लिए स्लाइड बनाने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। इसमें प्रक्षेपित सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। चित्र प्रस्तुतीकरण में छात्रों का सहयोग लेना चाहिए।

C) **फिल्म-स्ट्रिप (Film-Strip) -** फिल्म-स्ट्रिप्स भी इतिहास में एक उपयोगी उपकरण है। प्रकरण संबंधित फिल्म पट्टियों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है। इनका प्रस्तुतीकरण रूप में होना अधिक उपयुक्त है। इससे छात्रों की मानसिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है। यह पाठ के विकास में सहयोगी होनी चाहिए। यह ज्ञान प्रदान करने का सस्ता साधन है।

D) श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री (Audio-Visual Aids) -

1. **दूरदर्शन (Television)** - मेकोन व राबर्ट का कहना है कि "शिक्षक सहायक उपकरणों के प्रयोग द्वारा बालक की एक से अधिक इन्द्रियों को प्रयोग में लाकर पाठ्यवस्तु को सरल एवं रोचक तथा स्पष्ट व स्थायी बनाता है। "थट एवं गेरबरिच के अनुसार, "दूरदर्शन सबसे अधिक आशयपूर्ण श्रव्य-दृश्य उपकरण है क्योंकि सन्देशवाहन के इस यंत्र में रेडियों व फिल्म के गुण मिश्रित है।"

2. **वी.सी.आर. -** वीडियो केसेट-रिकार्डर भी शिक्षण की प्रतिक्रिया में अधिगम का एक उपयोगी साधन है। इसका विस्तार बहुत तीव्र गति से हो रहा है। बल्कि छात्रों को ज्ञान प्रदान करने का एक उपयोगी साधन भी है। इसे शिक्षक अपनी सुविधानुसार एवं विषयवस्तु के अनुसार प्रयोग में ला सकता है। क्लिष्ट विषयों की पुनरावृत्ति भी इसके माध्यम से सम्भव है।

3. **नाटक (Drama) -** इतिहास के शिक्षण में किसी भी घटना, चरित्र, विचारों व भावों पर नाटक विधि को अपनाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह बालकों के भावों व कल्पनाओं की सन्तुष्टि

करता है। इसके द्वारा समय व स्थान संबंधी तत्वों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

4. **चलचित्र (Motion Picture) -** क्रो एवं क्रो के अनुसार, "चलचित्र का शैक्षिक महत्व इसलिए है, क्योंकि यह गति को व्यक्त करते है विचार व कार्य के अन्दर निरन्तरता का विकास करते है। मानव क्षेत्र की सीमाओं की पूर्ति करते है और अपने प्रस्तुतीकरण में प्रारम्भ से अन्त तक एक से रहते है। यह शिक्षण का बहुत सशक्त माध्यम है। भारत में शैक्षिक समस्याओं से संबंधित फिल्म बनाई जा रही है जिससे शिक्षार्थी को समस्याओं से अवगत कराकर भावी जीवन हेतु तैयार किया जा सकता है। भारत में इस प्रकार की फिल्म विद्यालयी छात्रों को दिखाना शुरू किया है, जिससे विद्यालयों में छात्र संख्या बढ़ने में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

10.11 अन्य सहायक सामग्री (Other Material Aids)

A **भ्रमण (Excursion)-** विद्यालय की चार दीवारी से बाहर शिक्षण देना ही भ्रमण है। इसका उद्देश्य न केवल बालकों को विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करना होता है। बल्कि मनोरंजन भी होता है। इसके द्वारा छात्र जीवन उपयोगी ज्ञान प्राप्त करते है। कुछ लोग इसे विद्यालय की चार दीवारी का विस्तार कहते है। भ्रमण से बालक को प्रत्यक्ष ज्ञान का अनुभव होता है और प्रसन्न मुद्रा में रहकर आसानी से ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इतिहास में छात्रों को संसद, विधानसभा सत्र, पंचायत समिति की बैठक आदि का अवलोकन भ्रमण द्वारा कराया जाता है।

B **प्रदर्शनी (Exhibition)-** प्रदर्शनी भी इतिहास शिक्षण में एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं की ही प्रदर्शनियां लगाई जाना उपयुक्त हैं यह दो प्रकार से लगाई जाती है। कक्षा स्तर पर एवं विद्यालय स्तर पर।

C **संग्रहालय (Museum)-** वह स्थान विशेष जहां पर प्राचीन एवं वर्तमान काल की वस्तुओं का संग्रह प्रदर्शन हेतु किया जाता है, संग्रहालय कहा जाता है। संग्रहालय सार्वजनिक एवं निजी दोनों प्रकार के हो सकते है। सार्वजनिक संग्रहालय जनसाधारण के अवलोकन हेतु राजकीय नियमों के अनुसार निर्धारित समय एवं तिथियों को खुले रहते हैं। जबकि निजी संग्रहालय आज जनता के अवलोकन हेतु नहीं होते। वे निजी सम्पत्ति होते है। उन्हें निर्दिष्ट व्यक्ति दी देख सकते है। इतिहास शिक्षण में संग्रहालय का विशेष महत्व हैं। शिक्षक छात्रों को ले जाकर संग्रहालय में प्राचीन वस्तुओं को दिखा सकता है जिसमें भूतकाल की अनेक वस्तुएं साकार हो उठती हैं संग्रहालय छात्रों की शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होते है। इनके द्वारा छात्र वास्तविकताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

दीक्षित एवं बाघेला ने संग्रहालय के महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है कि

अध्यापक के मार्गदर्शन में संग्रहालय में उपलब्ध इतिहास पाठ्यक्रम से संबंध वस्तुओं का अध्ययन करना भी अतीत को सजीव बनाने का साधन है। इसका भी भ्रमण की भांति योजनाबद्ध तरीके से उपयोग किया जाए। इस प्रकार इतिहास शिक्षण में संग्रहालय का विशेष महत्व है।

संग्रहालय से तत्कालीन युग की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति की जानकारी की जा सकती है।

उदाहरणार्थ - जयपुर, दिल्ली नगर स्थित संग्रहालय को ही ले। जिसमें अनके काल से संबंधित वस्तुओं का अच्छा संग्रह है। मुगलकाल से संबंधित अनेक बादशाहों के चित्र, उर्दू फारसी भाषा की पुस्तकें, अस्त्र-शस्त्र निर्माण कला की सजीव जानकारी होती है। अत: संग्रहालय इतिहास शिक्षण की दृष्टि से अत्यन्त लाभदायक होता है, किन्तु इसका उपयोग योजनाबद्ध तरीके से किया जाना आवश्यक है।

संक्षेप में इतिहास शिक्षण में संग्रहालय के महत्व से संबंधित निम्नलिखित बिन्दु उल्लेखनीय है

1. स्थानीय एवं प्रान्तीय इतिहास से संबंधित शिक्षण सामग्री का परिचय प्राप्त होता है। संग्रहालयों में इनमें संबंधित सामग्री की अधिकता होती है।
2. छात्रों में ऐतिहासिक अन्वेषण एवं अनुसंधान की भावना जाग्रत होती है।.
3. संग्रहालयों में ऐतिहासिक महत्व की प्रदर्शित वस्तुओं के प्रतिरूप, चित्र आदि बनाने की रूचि एवं अभिरूचि का विकास होता है।
4. छात्रों में ऐतिहासिक वस्तुओं के संकलन की भावना का विकास होता है।

संग्रहालय के महत्व पर बल देते हुए के.नसीह् का कथन उल्लेखनीय है- यदि कोई सार्वजनिक संग्रहालय निकट में स्थित हो तो विद्यार्थियों को वहां समय-समय पर ले जाकर उसका मार्गदर्शन कराया जाना चाहिए। जहां विद्यार्थी अपने अध्ययन सम्बन्धी तथ्यों का सत्यापन कर सकते है तथा इसके साथ ही यह देख सकते है कि प्रदर्शित वस्तुयें किस प्रकार वर्गीकृत कर एक आधुनिक संग्रहालय में प्रदर्शित की जाती है।

D **सिक्के (Coins)-** इतिहास शिक्षण में सिक्कों के प्रयोग से भूतकालीन तथ्यों को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है। प्राचीन मध्य तथा वर्तमान युग के सिक्के के द्वारा तत्कालीन आर्थिक शासक, कला आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। सिक्कों द्वारा भूतकालीन अनेक घटनाएं स्पष्ट हो जाती है। प्राचीन-काल से अब तक व्यापार एवं दैनिक व्यवहार में विनिमय हेतु सिक्कों का प्रचलन रहा है। सिक्कों पर तत्कालीन शासक का नाम, तिथि चित्र, प्रशस्ति अंकित होती है। सिक्के वस्तुओं के बनते है। विभिन्न देशों प्रदेशों एवं काल में सिक्कों में तत्कालीन शासक एवं शासन-व्यवस्था के बारे में जानकारी मिलती है। सिक्के किसी विशेष समारोह, राज्योहण, विजया स्मृति आदि, के उपलक्ष्य में भी जारी किये जाते रहे, है। अत: अतीत के ज्ञान हेतु इनका विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है। सिक्कों पर अंकित चित्रों एवं तिथियों से तत्कालीन दशा का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

उदाहरणार्थ - गुप्तकालीन शासक समुद्रगुप्त के काल के सिक्कों को ही ले। एक सिक्के पर समुद्रगुप्त का चित्र वीणा बजाते हुये अंकित हैं इससे उसके संगीत प्रेम एवं वीणा वादन में निपूर्णता का भान होता हैं। इसी प्रकार वर्तमान, युगीन भारत-सरकार का पचास पैसे का ही सिक्का ले। इसमें पं. जवाहर लाल नेहरू का चित्र अंकित है तथा अंग्रेजी भाषा में नाम भी लिखा हुआ है। चित्र के नीचे 1889- 1964 अंकित है जिसमें पं. जवाहर लाल नेहरू के जन्म एवं मृत्यु

के वर्ष का पता लगता है। सिक्के के पिछले भाग में भारत का राष्ट्रीय चिन्ह है, सिक्के का मूल्य तथा अंग्रेजी एवं हिन्दी का सरलता से ज्ञान हो जाता है। अत: सिक्के से भारत की आर्थिक स्थिति, राजकीय भाषा पं. नेहरू के जन्म, एवं मृत्यु आदि का सरलता से ज्ञान हो सकता है। अत: सिक्के भूतकाल को स्पष्ट सशक्त साधन है।

इतिहास शिक्षण में सिक्कों का विशेष महत्व है। कारण यह है कि भारतीय इतिहास में लिखने की परम्परा नहीं रही। फलत: भारतीय इतिहास के अनेक काल की जानकारी केवल सिक्कों से ही उपलब्ध हो सकती है। उदाहरण स्वरूप यूनानी, शक, हूण आदिकालों की जानकारी केवल सिक्कों के आधार पर ही है क्योंकि इन शासकों के अन्य ऐतिहासिक स्त्रोत उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार ऐसे अज्ञात युगों 'का ज्ञान केवल सिक्कों से ही प्राप्त हो सकता है।

E **युद्ध योजनाएं (Battle Plan) -** इतिहास शिक्षण में इस प्रकार की योजनाओं के प्रयोग द्वारा किसी पक्ष की सेनाओं की स्थिति, उनकी रणनीति, कूटनीति, सैन्य संचालन आदि की विभिन्न शैलियों, सेना के विभिन्न भागों तथा हार अथवा विजयश्री के कारणों आदि के संबंध में आसानी से अवगत कराया जा सकता है। शिक्षक भारतीय इतिहास के प्रमुख युद्धों यथा-खानवा का युद्ध पानीपत के तीनों युद्ध, बक्सर, प्लासी एवं हल्दीघाटी का युद्ध आदि की युद्ध योजनाओं से छात्रों को अवगत कराया ज सकता हैं।

F **कठपुतली (Puppets) -** शैक्षिक सहायक सामग्री मे कठपुतली प्रदर्शन मे कार्यक्रमों का राजस्थान में अब प्रसार हो रहा है। वस्तुतः यह शिक्षण में एक प्रभावकारी माध्यम है; जो अधिकांश विषय वस्तु का अध्ययन नाटकीकरण की विधि प्रभावकारी ढंग से करती है। एक बार प्रशिक्षण प्राप्त कर इसका शिक्षण में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। राजस्थान में इसका प्रशिक्षण भारतीय लोक कला। मंडल उदयपुर के तत्वाधान गोविन्द शैक्षिक कठपुतली प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा -किया जाता है। ऐसे कठपुतली कार्यक्रमों के प्रदर्शन में विषय-वस्तु से संबंधित परिसंवाद बनाना कुछ कठिन अवश्य है, किन्तु अध्यापक गण आपस में सहयोग से इनकी रचना कर सकते है। आजकल दूरदर्शन पर कठपुतली के माध्यम से विद्यार्थी कार्यक्रम, परिवार, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विभिन्न कार्यक्रमों प्रदर्शन के माध्यम से छात्रों में सुनागरिकता राष्ट्रीयता, अन्तर्राष्ट्रीयता, पारस्परिक सद्भाव एवं सहयोग, दया, सहानुभूति, परोपकार आदि गुण का विकास किया जाता सकता हैं। कठपुतली प्रदर्शन शिक्षा जगत में वर्तमान समय की एक नवीन विद्या के रूप में सामने आया है, किन्तु भारतीय शिक्षाशास्त्री इस विद्या का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन समय मे भी करते थे। कठपुतली प्रदर्शन की सहायता से भारतीय देशभक्तों की जीवनियाँ, मानव का विश्व सभ्यता एवं संस्कृति में योगदान, अधिकार एवं कर्तव्य, संसद एवं विधान सभा अधिवेशन, न्यायालय से संबंधित प्रकरण आदि का सहज ही प्रदर्शन किया जा सकता है, जिसके माध्यम से छात्रों पर तदनुकूल प्रभाव पड़ेगा और उनमें इतिहास से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति की जावेगी।

कम्प्यूटर (Computer) - कम्प्यूटर आज एक ऐसी दृश्य सहायक सामग्री का रूप ले चुका है जो न केवल नवीन तकनीकी पर आधारित है अपितु सर्वाधिक रोचक एवं प्रभावी उपकरण है। यह बात भिन्न हैं कि भारत जैसे देश में यह विद्यालयों तक सीमित रूप में प्रयोग में लाया

जा रहा है पर आने वाले समय में इसका महत्व अधिक होगा इस उम्मीद के साथ भारतीय शिक्षा एवं शिक्षक आशान्वित है। इसका विस्तार से विवेचना अन्य इकाई- में किया गया है।

सारांश (Summary) -

इतिहास शिक्षण में पाठ्यसामग्री या शिक्षण सामग्री का प्रयोग विषय की आवश्यकता हैं। पाठ्यसामग्री को सहायक सामग्री? (Teaching Aids) कहा जाता हैं। सामग्री तीन प्रकार की होती हैं। (1) श्रव्य सामग्री, (2) दृश्य, सामग्री (3) श्रव्य-दृश्य सामग्री। इन सामग्री के अलावा भ्रमण एवं कम्प्यूटर सहायक शिक्षण का भी प्रयोग किया जाता हैं। इतिहास विषय में पाठ्य सन्दर्भित शिक्षण एवं सामग्री का प्रयोग शिक्षक विषय की आवश्यकता के अनुरूप करता हैं। पाठ्य सन्दर्भित शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते समय शिक्षक सजग रहना चाहिए ताकि इसका महत्व एवं प्रयोग सार्थक रहेगा।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. सहायक सामग्री कितने प्रकार की होती है?
2. परंपरागत शिक्षण सहायक के दो उदाहरण दीजिये।
3. दृश्य सहायक सामग्री किसे कहते है?
4. श्रव्य सामग्री के दो उदाहरण दीजिए।

10.12 शिक्षा सामग्री का मूल्यांकन (Evaluaution of Teaching Aids)

शिक्षण सामग्री पाठ्यवस्तु का अभिन्न अंग है। यह तथ्य सच है फिर भी यदि हम सहायक सामग्री का मूल्यांकन करें तो कुछ बिन्दु विचारणीय बनाये जा सकते है-

- शिक्षण सामग्री का प्रयोग वास्तविक परिस्थिति में ही हो। इसे दिखावे के रूप में प्रयुक्त न किया जावे।
- शिक्षण सामग्री विषय सामग्री से जुड़ी हो, कक्षा में विद्यार्थी ऐसा अनुभव करें कि शिक्षक जिस मानचित्र का प्रयोग कर रहा है, वह प्रकरण का महत्वपूर्ण पक्ष है।
- शिक्षण सामग्री आकार प्रकार में कक्षा वातावरण से तालमेल वाली होनी चाहिये। न तो सामग्री बहुत बड़ी हो और न ही बहुत छोटी।
- शिक्षण सामग्री को आकर्षित रूप में ही प्रस्तुत होना चाहिये। ताकि छात्र एकाग्रचित होकर ज्ञान अर्जन कर सके।
- शिक्षण सामग्री एवं विषयवस्तु ये दोनों बिन्दु एक सिक्के के दो पहलू है, दोनों ही पहलू महत्वपूर्ण है। जितनी प्रभावी पाठ्यवस्तु पढ़ायी जायेगी उतनी ही सहायक सामग्री सार्थक बनी रहेगी।
- सहायक सामग्री को कई बार शिक्षक कक्षा में पढ़ाये जाने से पूर्व देखते नहीं है, जब इसका प्रयोग करते है तो वह अस्पष्ट दिखायी देती है। अत: कुशल शिक्षक ही इसके उपयोग एवं महत्व को जान सकते है।

– सहायक सामग्री पाठ्यवस्तु का अंश होनी चाहिए, सम्पूर्ण नहीं क्योंकि इससे विषय को रोचक बनाते है न कि सम्पूर्ण। पाठ्यवस्तु के संदर्भ में ही इसका महत्व है।
– सहायक सामग्री का निर्माण करना एवं उसको प्रस्तुत करना दोनों अलग-अलग क्रियायें है । शिक्षक इन दोनों का अभ्यास करके ही प्रयोग करें।
– हमारे देश में उत्साही शिक्षकों का अभाव है। प्राय: कक्षा में हम केवल एक पुस्तक से पूरा सत्र समाप्त कर देते है पर यदि आवश्यकतानुसार शिक्षक विषयवस्तु की प्रकृति को ध्यान में रखकर इसका प्रयोग करें तो बालक के व्यवहार में परिवर्तन होगा।
– सहायक सामग्री मात्र युक्ति है साधन है, साध्य नहीं इस तथ्य से अवगत रहना चाहिये। सहायक सामग्री शिक्षक या पाठ्य सामग्री का स्थान नहीं ले सकती, इस पृष्ठभूमि का ध्यान रखते हुये ही इसका निर्माण एवं प्रयोग करना चाहिये।
– कई बार यह देखा गया है कि सहायक सामग्री मनोरंजनात्मक बन जाती है, अत: निर्माण एवं प्रयोग करते समय ऐसे तत्वों को दूर कर देना चाहिये।
– सहायक सामग्री उद्देश्यनिष्ठ (objective Based) होनी चाहिये ताकि कक्षा में छात्रों की जिज्ञासा शांत होती रहे।
– सहायक सामग्री से कक्षा में अन्त: क्रिया होनी चाहिये, केवल एक-दो सामग्रियों को प्रदर्शित करने तक सीमित नहीं होना चाहिये। सामग्री उद्दीपक के रूप में छात्रों में उत्साह एवं जिज्ञासा पैदा करने वाली होनी चाहिये।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन क्यों आवश्यक है?
2. शिक्षण सामग्री का निर्माण करते समय किन-किन बिन्दुओं पर विचार किया जाना चाहिए?

सारांश (Summary) -

शिक्षण सामग्री का निर्माण करते समय शिक्षण को अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार कर लेना चाहिए ताकि सामग्री आवश्यकता उद्देश्य, सार्थकता प्रयोगात्मक बन सकें। पाद्य सन्दर्भित शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन उद्देश्यनिष्ठ रहना चाहिए।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. श्रव्य-दृश्य सामग्री क्या है? अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
   What are the Audio-Visual aids? Explain the concept.
2. सहायक सामग्री के प्रकारों का उल्लेख कीजिये?
   Describe the types of Teaching Aids.
3. इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री की आवश्यकता का उल्लेख कीजिए?
   Describe the need of Teachings Aids in history teaching.
4. इतिहास शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का क्या स्थान है? कक्षा 10 को इतिहास पढ़ाने में आप किन-किन सामग्रियों का प्रयोग करेंगे?

What are the places of audio-visual teachings aids in History? What material Aids will be used in teaching History contents for class 10.

5. इतिहास विषय में भ्रमण का क्या महत्व है?

What is the Importance's of Excursion in History Subject.

6. किन्हीं दो दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री की विवेचना उदाहरण सहित कीजिए।

Explain any two Audio-Visual Aids with illustration.

7. प्रोजेक्टर एवं फिल्म स्ट्रिप पर संक्षिप्त टिप्पणी करिये ।

Write short note on Projector and film strips.

8. इतिहास शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री के महत्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Write short note on importance of Audio-Visual Aids in teaching of History.

9. ऐतिहासिक मानचित्रों के प्रयोग के चार लाभ लिखिए।

Write four merits of the use of History map.

10. अतीत को वास्तविक बनाने के लिए आप किन सामग्रियों के प्रयोग में लायेंगे और क्यों?

Mention the materials you would apply in the teaching of History in order to make the past 'Real' and why?

10.13 सारांश (Summary)

इतिहास पाठ्य वस्तु का निर्माण जटिल प्रक्रिया है। प्रत्येक विषय का अपना एक पाठ्यक्रम होता है। उसी के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु का निर्माण किया जाता है। पाठ्यक्रम से आशय उस विषयक सामग्री से होता है। सिक्के माध्यम से कक्षा-कक्ष में शिक्षण कार्य संचालित किया जाता है। यह पाठ्य सामग्री विषय विशेषज्ञों, शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित होती है।

पाठ्यवस्तु (Content) या विषयवस्तु का प्रयोग करते हुए शिक्षक अनेक प्रकार की पाठ्य सामग्री का निर्माण करती है जिसे प्रस्तुत इकाई में सहायक सामग्री या दृश्य श्रव्य सामग्री के रूप मे उल्लेखित किया गया हैं। सहायक सामग्री पाठ्य क्रमानुसार निश्चित की जाती हैं। इसलिए हर विषय में पाठ्य सामग्री अलग होती है। कुछ विषय एक दूसरे से समन्वय (Co-Relation) रखते है। इसलिए कुछ सामग्री कॉमन होती हैं। दृश्य सामग्री जो देखी जा सके, श्रव्य सामग्री जो सुनी जा सके। कुछ दृश्य दोनों प्रकार की भी होती है जैसे चलचित्र, टेलीविजन, प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर आदि।

इनका प्रयोग आवश्यकतानुसार एवं योजनानुसार किया जाता है। शिक्षक को प्रभावी, रोचक एवं प्रेरणास्पद बनाने हेतु भी शिक्षण पाठ्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

10.14 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

1. History Teaching Prof.M.P.Singh Tyagi, Dr. Vijendra Singh, Omkar Singh Tyagi, Arihant Prakashan, Jaipur.
2. V.D.Ghate,Teaching of History,Oxford University Press,London 1964.
3. Preparation & evaluation/Ch.7,8,9,10 of text book in History Ch-10.
4. Dale Adger-Audio-Visual methods in Teaching Ch-9.
5. गुरुशरण दास त्यागी, History Teaching, Vinod Pustak Mandir.
6. Teaching of Social Study D.D.Mehta,Tondon Publication,Ludhiyana.
7. Ahluwaliya S.V.-Audio Visual hand Book,NCERT Delhi1967, Ch-10.

इकाई-11

इतिहास अध्यापक की विशेषताऐं व शिक्षण मे आने वाली बाधाएं एवं उनका समाधान

Qualities of Good History Teacher, Problems and Solution

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

11.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

11.1 शिक्षक का महत्व (Importance of Teacher)

11.2 इतिहास शिक्षक का महत्व (Importance of History Teacher)

11.2.1 इतिहास शिक्षक के सामान्य गुण (General qualities of History Teacher)

11.2.2 शैक्षिक योग्यता (Academic Qualification)

11.2.3 इतिहास शिक्षण के व्यावसायिक गुण (Professional quality of History Teacher)

11.3 इतिहास शिक्षण की कठिनाइयों तथा उनका निराकरण (Hindrances of History Teacher and their solution)

11.4 सारांश (Summary)

11.5 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

11.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की संप्राप्ति पर विद्यार्थी-

- इतिहास शिक्षण का महत्व बता सकेंगे।
- इतिहास शिक्षण की विशेषताएँ बता सकेंगे।
- इतिहास शिक्षक की प्रशिक्षण व्यवस्था जान सकेंगे एवं
- इतिहास शिक्षण की प्रमुख समस्याओं एवं उनके निवारण के उपायों को बता सकेंगे।

11.1 शिक्षक का महत्व (Importance of Teacher)

शिक्षा जगत में शिक्षक स्थान सदैव सर्वोपरि रहा है। शिक्षक ही वस्तुतः राष्ट्र निर्माता है,जो अपने ज्ञान एवं कौशल एवं व्यक्ति से राष्ट्र के योग्य-भावी नागरिकों का निर्माण करता है।

राष्ट्रीय विकास के योग्य भावी नागरिकों का निर्माण करता है। राष्ट्रीय विकास के संदर्भ मे कोठारी शिक्षा आयोग ने इस तथ्य को इन शब्दों में स्वीकार किया है कि इसमे कोई संदेह नहीं कि शिक्षा के स्तर और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को जितनी भी बाते प्रभावित करती है, उनमें शिक्षण के गुण सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। योग्य शिक्षकों पर ही विद्यालय कि प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उनका प्रभाव निर्भर रहता है। आज बल केन्द्रित शिक्षा के युग मे शिक्षक का महत्व और भी बढ़ जाता है। वह शिक्षा प्रक्रिया की धुरी के समान है। एक योग्य शिक्षक अपने विषय को सजीव, रोचक एवं उपयोगी बना देता है। जबकि अयोग्य शिक्षक प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करता है। अत: प्रत्येक विषय के शिक्षक का योग्य एवं कुशल होना अत्यन्त आवश्यक है।

11.2 इतिहास शिक्षक का महत्व (Importance of History teacher)

अन्य विषयों की अपेक्षा इतिहास विषय की यह विशेषता है कि वह अतीत से सम्बन्धित है और उसका वर्णन विषय मानवीय है, शिक्षक से यह अपेक्षा रहती है कि वह विद्यार्थियों के समक्ष इसे सजीव एवं निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करें। इतिहास शिक्षक को भूतकाल के व्यक्तियों एवं घटनाओं की यथार्थ एवं सजीव रूप में व्याख्या करनी होती है। यह कार्य अत्यन्त श्रम साध्य एवं कौशलपूर्ण है जिसकी सफल क्रियान्विति शिक्षक की योग्यता एवं कुशलता पर निर्भर होती है। भूत एवं वर्तमान को जोड़ने के लिये शिक्षक एक कड़ी का कार्य करता है। इतिहास शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य वर्तमान को भूतकाल के प्रकाश में समझाना होता है। श्री घाटे ने इस तथ्य को प्रकट करते हुए लिखा है कि "वर्तमान को समझने के लिये इसमें अर्न्तनिहित भूतकाल को देखना है, यह एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।" भूत तथा वर्तमान को संबद्ध कर वर्तमान को भली-भांति समझने में इतिहास शिक्षक की प्रमुख भूमिका होती है। जिसे वह अपनी योग्यता एवं कुशलता से ही निभा सकता है।

इतिहास कला तथा विज्ञान दोनों का समन्वित रूप है। सत्य तथ्यों के अन्वेषण, निर्धारण, वर्गीकरण तथा व्यवस्था के रूप में इतिहास वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करता है किन्तु उन्हीं सत्य तथ्यों को रोचक एवं प्रभावी भाषा शैली में व्यक्त करते समय वह कला का अवलम्बन लेता है। इतिहास के लिये ये दोनों पक्ष आवश्यक है। अत: इतिहास शिक्षक को भी इन पक्षों का उचित सामंजस्य करना होता है। जिससे कि उसका शिक्षण उपयोगी व प्रभावी बन सकें। इस प्रकार इतिहास विषय की उक्त विशिष्टताएं के कारण इतिहास शिक्षक का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है जो शिक्षक में कुछ विशेष गुणों की अपेक्षा करता है। इतिहास शिक्षक में अपेक्षित गुणों को निम्नांकित वर्गो में विभक्त किया जा सकता है।

11.2.1 इतिहास शिक्षक के सामान्य गुण (General qualities of History Teacher) - अन्य विषयों के शिक्षकों की भांति इतिहास शिक्षक में भी निम्नलिखित वैयक्तिक गुणों की आवश्यकता-

1. **उत्तम स्वास्थ्य (Good Health) -** स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक में शैक्षिक तथा अन्य योग्यताओं के साथ यह भी आवश्यक है

कि वह स्वस्थ हो। स्वस्थ शिक्षक ही अपनी श्रमशीलता एवं आकर्षक व्यक्तित्व से शिक्षण को प्रभावी बना सकता है।

2. **संवेगात्मक संतुलन (Emotional Balance/Stability) -** शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य शिक्षक में संवेगात्मक संतुलन होना है। संवेगों पर उचित नियंत्रण एवं नियमन कर उनका उन्नयन किया जाना मानसिक स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। संवेगात्मक असंतुलन से शिक्षक में चिड़चिड़ापन, पूर्वाग्रह, दुराग्रह, पक्षपात आदि अनेक दोष आ जाते है। जिनका शिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इतिहास शिक्षक को तटस्थ, वैज्ञानिक, निष्पक्ष तथा सत्यान्वेषी दृष्टिकोण रखते हु ए अतीत के प्रति सहानुभूति, रूचि एवं निष्ठा का उचित सामंजस्य कर उसे सजीव एवं प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। यह तब ही संभव होता है जबकि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ हो।

3. **सामाजिक गुण (Social Quality) -** मनोशारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शिक्षक में सामाजिक गुणों का होना भी आवश्यक है। सद्भावना, सहयोग, साहस, सहानुभूति तर्क एवं निर्णय क्षमता जीवन के प्रति आशावादी विचारधारा आदि गुण सामाजिक गुणों में सम्मिलित किये जाते है एवं ये गुण शिक्षण कार्य में सहायक सिद्ध होते है। जिस शिक्षक में ये गुण पर्याप्त मात्रा में निहित होते है वह शिक्षक अपने इतिहास विषय के छात्रों में तथा सामान्य छात्रों में इतिहास के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न कर उन्हें अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे पाता है।

4. **उच्च चरित्रवान हो (High moral Character) -** एक आदर्श शिक्षक के लिये चरित्रवान होना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि अच्छे चरित्र वाला शिक्षक ही विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का संचरण कर सकता है। उसके आचरण एवं कार्य-प्रणाली का प्रभाव विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में पडता है। इतिहास शिक्षक अतीत के ज्ञान को अपने चरित्र की दृढ़ता द्वारा और उपयोगी बना देता है। ऐतिहासिक महापुरुषों का जीवन एवं कृतित्व चरित्रवान शिक्षक की व्याख्या द्वारा विद्यार्थियों को देश एवं मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देने में सहायक होते है।

5. **नेतृत्व गुण (Leadership Quality) -** आज का युग प्रजातंत्रात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसी व्यवस्था के अनुकूल बालकों में नेतृत्व गुणों का विकास करने के लिये शिक्षक में अपने व्यवहार से उनका नेतृत्व करने की क्षमता होनी चाहिये। इतिहास शिक्षक विद्यार्थियों का उचित नेतृत्व कर उनमें विषय के प्रति वांछित अभिरूचि एवं अभिवृत्तियां विकसित कर सकता है।

6. **सहानुभूति एवं स्नेह (Sympathetic and Affectionate)** - शिक्षक को सभी विद्यार्थियों के साथ स्नेह एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिये। इस प्रकार के व्यवहार करने एवं वातावरण बनाने में शिक्षण कार्य अत्यन्त सहज हो जाता है। इससे शिक्षक एवं छात्रों के संबंधों में भी मधुरता आती है।

11.2.2 विषय का ज्ञाता (Subject Expert) - वैयक्तिक गुणों के अतिरिक्त शिक्षक में विषय संबंधी योग्यता होना अनिवार्य है विषय के स्वामित्व के अभाव में वह शिक्षक की भूमिका का पूर्णत: निर्वाह नहीं कर सकता। विषय की पूर्ण एवं गहन जानकारी, नवीन अनुच्छेद

नवाचारों का ज्ञान सतत् अध्ययन करना एक शिक्षक हेतु अत्यन्त आवश्यक है। विषय में वास्तविक अभिरूचि एवं पूर्ण निष्ठा एक कुशल शिक्षक के लिये अनिवार्य गुण है। इतिहास शिक्षक में जिन विषयगत गुणों की अपेक्षा की जाती है वे निम्नलिखित है -

1. शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualification)

इतिहास शिक्षक का कार्य उन्हीं शिक्षकों को सौंपा जाए जिन्होंने इतिहास विषय लेकर न्यूनतम निर्धारित योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण की हो तथा उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापन करने के लिये शिक्षक की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता इतिहास विषय के साथ क्रमश: उच्च माध्यमिक, स्नातक तथा अधिस्नातक परीक्षा उत्तीर्ण होनी चाहिए।

2. **विश्व एवं स्थानीय इतिहास का ज्ञान (Knowledge of world and Local History) -** इतिहास शिक्षक को विश्व एवं भारत के इतिहास तथा स्थानीय क्षेत्र के इतिहास की स्पष्ट जानकारी होना आवश्यक हैं विश्व इतिहास में स्पष्ट एवं पर्याप्त ज्ञान के द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के समन्वय एवं अंतर्राष्ट्रीय सदभावना की दृष्टि से उनका महत्व निर्धारित करने में सहायता मिलती है। स्थानीय इतिहास के ज्ञान के आधार शिक्षक द्वारा छात्रों में अपने प्रदेश, प्रान्त तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना का विकास कर सकता है।

3. **तत्कालीन घटनाओं का ज्ञान (Knowledge of Current Events) -** इतिहास एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। समय के साथ-साथ इसके परिणाम की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। देश-विदेश में होने वाली घटनाएं रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार पत्रों के माध्यम से जन-मानस को आन्दोलित करती रहती है क्योंकि उनका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। किन्तु वर्तमान भूतकाल से ही उद्भूत हुआ है। कार्य-कारक की इस अनवरत श्रृंखला से वर्तमान भूतकाल से सम्बन्ध रखता है। वर्तमान को समझने के लिये ही भूतकाल अथवा इतिहास की उपयोगिता है। भूत एवं वर्तमान का यह सहसम्बन्ध ध्यान में रखते हुए इतिहास शिक्षक को ज्वलन्त घटनाओं की जानकारी रखना चाहिये जिससे छात्रों को बताकर उनमें इतिहास विषय के अध्ययन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता है।

4. **अन्य सम्बद्ध विषयों का ज्ञान (Knowledge of other related subjects) -** इतिहास शिक्षक को इतिहास के अलावा नागरिक शास्त्र, भूगोल, पुरातत्व शास्त्र मुद्रा विज्ञान, अभिलेख विज्ञान, मानव शास्त्र आदि ऐसे प्रमुख विषय है जिनका सामान्य ज्ञान होना इतिहास शिक्षक की कुशलता एवं निपुणता में वृद्धि करता है। इन सभी विषयों कें आधार पर भूत एवं वर्तमान की तुलना एवं समन्वय का अध्ययन किया जा सकता है।

5. **स्वाध्याय की प्रवृति (Tendency of self-study) -** शैक्षिक योग्यता की निर्धारित न्यूनतम अनिवार्यता पूर्ण कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। वरन् इतिहास शिक्षक का सतत् अध्यवसायी होना आवश्यक है। शिक्षक को अपने विषय का निरन्तर अध्ययन एवं स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित रखनी चाहिये। "जर्विस" के अनुसार "केवल विशद ऐतिहासिक ज्ञान तथा पर्याप्त शिक्षण-अनुभव का अध्यापक ही अपने विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति स्थायी वास्तविक अभिरूचि उत्पन्न कर सकता है।"

6. **विषय के प्रति निष्ठा (Devotion towards the subject) -** किसी भी कार्य को सफलतम अंजाम देने के लिये उसमें निष्ठा होना आवश्यक है। यही बात इतिहास शिक्षक के लिये

भी लागू होती है। निष्ठा के अभाव में विषय के प्रति वह लगन और उत्साह नहीं रहता जो उसे सजीव एवं उपयोगी बनाने में सहायक होते हैं।

7. **ऐतिहासिक भ्रमण एवं पर्यटन का अनुभव, ज्ञान (Experience and Knowledge of Historical Tours & Excursion) -** इतिहास के अध्ययन से अपने देश, प्रान्त एवं प्रदेश के उन स्थलों के दर्शन की जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है जो ऐतिहासिक महत्व के रहे हों, इसके अतिरिक्त ऐसे स्थलों, भवनों, भग्नावशेषों एवं संग्रहालय में संग्रहित अवशेषों के देखने से तत्कालीन ऐतिहासिक ज्ञान को जीवन्त किया जा सकता है।

11.2.3 इतिहास शिक्षक के व्यावसायिक गुण (Professional Quality) - शिक्षण को व्यवसाय कहा गया है, अत: बतौर व्यवसाय इतिहास शिक्षक में भी प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक गुणों का होना आवश्यक है, जिनका विवेचन निम्नलिखित हैं -

1. **प्रशिक्षण योग्यता (Training qualification) -** प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर एस.टी.सी. तथा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर बी.एड., बी.टी. तथा एल.टी. न्यूनतम प्रशैक्षिक योग्यताएं निर्धारित की गई है। अत: इतिहास शिक्षक को तदनुकूल प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य है। प्रशिक्षित अध्यापक को शिक्षण के सिद्धान्त एवं सामान्य सूत्रों का ज्ञान होता है जिनका प्रयोग वह कक्षा-अध्यापन में प्रयोग कर सकता है। किस प्रकरण के लिये किस प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा विषय का प्रस्तुतीकरण सरल एवं बोधगम्य करने के लिये क्या करना होता है, किस प्रकरण के लिये कौन सी तकनीक एवं पद्धति काम में लेनी है, एक प्रशिक्षित अध्यापक को भलीभांति पता होता है। प्रशिक्षण दृष्टि से एक प्रशिक्षित अध्यापक में निम्नांकित योजनाएं स्पष्ट परिलक्षित होती है -

(क) **योजनाबद्ध कार्य करने की प्रवृति (Tendency of Planned work) -** पाठ्यक्रम के अनुसार, कक्षा स्तर विद्यालय में उपलब्ध साधन एवं समुचित समयानुसार एक प्रशिक्षित शिक्षक को वार्षिक योजना, इकाई योजना एवं पाठ योजना का निर्माण करने का ज्ञान होना चाहिये। योजना में उद्देश्यों के अतिरिक्त, विषय-वस्तु अध्यापन-ज्ञानार्जन स्थितियों, शिक्षण सामग्री मूल्यांकन एवं गृहकार्य आदि की विस्तृत रूपरेखा देना आवश्यक होता है। जो एक कुशल शिक्षक को आना वांछनीय है।

(ख) **योजना का क्रियान्वयन (Implementation of planning) -** निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्ति के लिये इतिहास शिक्षक को योजना का क्रियान्वयन भी तदनुकूल ही करना पड़ता है इसके लिये उसे शिक्षण की विशेष विधियों जैसे स्त्रोत-संदर्भो, प्रश्नोत्तर कथन, नाट्यीकरण परिविक्षित अध्ययन, विचार-विमर्श आदि का सम्यक ज्ञान एवं अभ्यास होना आवश्यक है। छात्रों में स्व-क्रिया एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने के लिये प्रत्येक विधि एवं परिस्थिति के अनुकूल शिक्षण उपकरणों का समुचित प्रयोग करना आना चाहिये।

मूल्यांकन (Evaluation) - छात्रों ने कितना सीखा है इसकी जानकारी के लिये मूल्यांकन किया जाता है। प्रशिक्षित अध्यापक को ब्लू-प्रिन्ट, विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का निर्माण, विभिन्न मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग, मौखिक एवं लिखित परीक्षा का निर्माण, निदानात्मक

परीक्षा तथा उपचारात्मक शिक्षा की व्यवस्था करने का उचित ज्ञान होना चाहिए तथा मूल्यांकन के अन्य उपकरणों का ज्ञान व प्रभावी बनाने में मदद कर सकेगा।

2. **पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों में रूचि (Interest in Co-Curricular activities) -** छात्रों में स्वक्रिया के विकास एवं क्रियाशीलता के सिद्धान्त की अनुपालना के लिये विभिन्न नवीन विधियों को शिक्षण में अनुसरण किया जाता हैं। विचार-विमर्श, वाद-विवाद, पैनल चर्चा, परिचर्चा, जयन्ती समारोह राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्व, भ्रमण, चल-चित्र प्रदर्शन के आयोजन, मानचित्र, समय-रेखा, मॉडल, युद्ध-योजना आदि का निर्माण एवं मौलिक स्त्रोत संदर्भ अध्ययन आदि विधियों का ज्ञान होता आवश्यक है।

3. **अनुसंधान व प्रयोग (Research and Experience) -** प्रशिक्षित अध्यापक में नवीन विधियों एवं प्रविधियों के प्रयोग, विषयगत समस्याओं के समाधान हेतु क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) तथा विकासात्मक प्रायोजना (Development Project) की क्रियान्वित कर शिक्षण को प्रभावी बनाने में अभिरूचि होनी आवश्यक है।

4. **विषय प्रस्तुतीकरण की प्रभावोत्पादकता एवं वस्तुनिष्ठता (Effectiveness and objectivity of Subject presentation) -** इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों का समन्वित रूप है। हम भूतकाल को सजीव बनाना चाहते है। यह वैज्ञानिक पक्ष है तथा इतिहास को सरस एवं प्रभावी रूप में जानने को उत्सुक रहते है जो इतिहास का कला पक्ष है। इतिहास में ये दोनों अपेक्षित है। अत: इतिहास शिक्षक को प्रशिक्षण द्वारा विषय के प्रस्तुतीकरण को प्रभावोत्पादकता एवं वस्तुनिष्ठता को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित विशेषताएं वांछनीय है

(क) **वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Attitude) -** इतिहास शिक्षक ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास उच्च स्तर पर होना आवश्यक है। निष्पक्ष रूप से इतिहास शिक्षक द्वारा स्त्रोत संदर्भ विधि का प्रयोग कर विद्यार्थियों को सत्य तथ्यों से अवगत करवाया जावे।

(ख) **प्रस्तुतीकरण की प्रभावोत्पादकता (Effectiveness of Presentation) -** अध्यापक को एक कुशल कलाकार होना आवश्यक है। उसे ऐतिहासिक तथ्यों को सजीव रूप में प्रस्तुत करने की तकनीक का ज्ञान होना चाहिये। प्रस्तुतीकरण सही अर्थों में सरल, बोधगम्य हो सके इसके लिए शिक्षक को ऐतिहासिक तथ्यों का भावानुकूल आरोह-अवरोह युक्त प्रभाव-पूर्ण भाषा शैली तथा अनुकूल उपयुक्त स्वरों में किया जाना चाहिये।

(ग) **व्यावसायिक निष्ठा (Professional Devotion) -** व्यवसाय के प्रति निष्ठावान होना आवश्यक है। शिक्षक एक व्यवसायी एवं शिक्षण-कार्य व्यवसाय माना गया है। इसलिये शिक्षक को भी अध्यवसाय, परिश्रम एवं कुशलता द्वारा अपने व्यावसायिक स्तर को उच्चतर बनाने का प्रयास करना चाहिए।

11.3 इतिहास-शिक्षक कि कठिनाइयों तथा उनका निराकरण (Hindrance of History Teacher and Their Solution)

इतिहास शिक्षक में जब हम उपरोक्त गुणों की अपेक्षा रखते है तो हम उसके मार्ग में आने वाली कठिनाईयों की अवहेलना नहीं कर सकते। सामान्यत: इतिहास-शिक्षक की कठिनाइयों का निम्नांकित विभाजन कर अध्ययन किया जा सकता है -

1. **भूतकाल का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Past)** - इतिहास विषय भूतकाल के धुंधले आवरण में सिमटे होने के कारण विद्यार्थियों के समक्ष उसे प्रस्तुत करने की समस्या इतिहास शिक्षक की सबसे बड़ी कठिनाई है। उसे एक निर्जीव भूतकाल को सजीव रूप में प्रस्तुत करना होता है। अध्यापन को यह कार्य बड़ी कुशलता से करना चाहिए।

2. **भूत को वर्तमान से सम्बन्धित करना (To relate Present to past)** - ब्रिटेन की इतिहास शिक्षक समिति के अनुसार "इतिहास शिक्षक को अपने विषय-ज्ञान के साथ वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं तथा उनसे भूतकाल का सहज संबंध अवश्य ध्यान में रखना चाहिये जिससे कि विद्यार्थियों में उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हो सके। इसके लिए लिये शिक्षक को अपने सामान्य ज्ञान की निरन्तर वृद्धि करते रहना चाहिये।"

3. **विषय वस्तु के चयन एवं प्रस्तुतीकरण की समस्या (Problem of selection and presentation of content)** - ब्रिटिश इतिहास समिति ने इतिहास शिक्षक का प्रमुख कार्य एक ऐसे विषय को बालकों के समक्ष प्रस्तुत करना बतलाया है जो कि प्रौढ़ विकसित लोगों के अध्ययन का विषय है। "इसके लिये शिक्षक में उच्चस्तरीय कुशलता की अपेक्षा करता है।

4. **निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Impartial Scientific Attitude)** - विवादास्पद प्रसंग, कपोलकल्पित कहानियों एवं तथ्यों को निष्पक्ष रूप से बालकों के समक्ष प्रस्तुत करना एक कठिन कार्य है।

5. **विद्यालय में इतिहास कक्ष एवं उपकरणों का अभाव (Scarcity of History room and tools)-** प्राय: विद्यालयों में इतिहास कक्ष एवं उपकरणों का पूर्णतया अभाव मिलता हैं जिससे इतिहास शिक्षकों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। लेकिन शिक्षक द्वारा तथ्यों को जानने में पर्याप्त उत्साह, लगन एवं परिश्रम से उनका निराकरण किया जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953) के अनुसार "जो शिक्षक अपने विषय में अभिरूचि तथा उसे उचित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता हो उनसे संपर्क करने के अतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु अधिक प्रेरणास्पद नहीं हो सकती।

11.4 सारांश (Summary)

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता हैं कि हमारे पास पाठ्य कम पाठशाला भवन, फर्नीचर, प्रयोगशाला, सहायक सामग्री मूल्यांकन एवं निर्देशन कार्यक्रम आदि कितने ही अच्छे क्यों नहीं हों, वह तब तक निरर्थक हैं, जब तक एक अच्छे शिक्षक द्वारा उनसे अवगत नहीं करवाया जायें। अत: शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं। शिक्षा की प्रकिया में शिक्षक धुरी के सदृश्य कार्य करता हैं। शिक्षक का व्यक्तित्व, प्रस्तुतीकरण, शिक्षक का आदर्श सीखने वाले नवयुवकों में अभिरूचि एवं अभिवृत्ति का विकास करते हैं। सीखने के लिए प्रेरणा भी देते हैं।

शिक्षक बालकों में सही दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए उत्तरदायी हैं। इतिहास शिक्षक बालकों में स्वदेश प्रेम, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास, देश की प्रगति के लिए सुयोग्य

नागरिकों का विकास करता है। शिक्षक का अन्तिम लक्ष्य 'मानवता' का विकास करना हैं जिसमें इतिहास शिक्षक ही महत्वपूर्ण योगदान दे सकता हैं।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निबंधात्मक प्रश्न (Essay type Question)

1. Write a short Essay on an ideal History Teacher?
   आदर्श इतिहास शिक्षक पीआर एक संछिप्त निबंध लिखिए?
2. What should be the qualities of History Teacher?
   इतिहास शिक्षक के क्या गुण होने चाहिए?
3. What do you understand by "Professional Growth?" How can a History Teacher acheieve professional growth?
   व्यावसायिक अभिवृद्धि से आप क्या समझते हो? इतिहास शिक्षक अपनी व्यावसायिक अभिवृद्धि किस प्रकार कर सकता है।
4. What are the pitfalls in the path of History Teacher?
   इतिहास शिक्षक के मार्ग मे आने वाली प्रमुख बाधाएं कौनकौन सी है-?

लघुत्तरात्मक प्रश्न)Short Answer Type Question)

1. विद्यालयी शिक्षा मे इतिहास शिक्षक का महत्व स्पष्ट कीजिये?
   Mention the importance of History Teacher in School education?
2. इतिहास शिक्षण के प्रशिक्षण की विवेचना करते हुए उसे निखारने के कुछ सुझाव दीजिये।
3. Disscusing the traininig of History Teacher and give some suggestion for improvement of it.

11.5 संदर्भ ग्रंथ (Reference)

1. कोठारी शिक्षा आयोग - (1966) पृष्ठ 52
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग - (1953) पृष्ठ 155
3. क्रोचर एस.के. दि टोपिंग ऑफ हिस्ट्री - (वही संस्करण) पृष्ठ 115
4. घाटे वी.डी. : दि टीचिंग ऑफ हिस्ट्री - (वही संस्करण) पृष्ठ 13
5. जर्विस: दि टीचिंग ऑफ हिस्ट्री (आक्सफोर्ड वर्सिटी प्रेस, लन्दन 1932) - पृष्ठ 226
6. कैम्बिज यूनिवर्सिटी प्रेस. दि टीचिंग ऑफ हिस्ट्री - (वही संस्करण) पृष्ठ 5
7. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस: (वही संस्करण) पृष्ठ 6

8. (वही) पृष्ठ 3
9. माध्यमिक शिक्षा आयोग 1956 पृष्ठ 113
10. उपेन्द्र नाथ, बघेला हेत सिंह, इतिहास शिक्षण - पृष्ठ 146.
11. बाईनिंग एवं बाईनिंग : टीचिंग द सोशल स्टडीज इन सैकेण्डरी स्कूल मेकग्रोहिल, न्यूयार्क।

इकाई-12

इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त संसाधन-कक्षा-कक्ष,प्रयोगशाला, संग्रहालय, वातावरण, पुस्तकालय एवं अन्य संसाधन (Resources, Class room, Laboratory, Museum, Community Environment Library used in History)

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

12.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

12.1 इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त संसाधन
(Resources used in History teaching)

12.2 प्रयोगशाला (Laboratory)

12.3 संग्रहालय (Museum)

12.4 सामुदायिक वातावरण (Community Environment)

12.5 पुस्तकालय एवं अन्य संसाधन (Library and other Resources)

12.6 संदर्भ ग्रन्थ (References)

12.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)

इस इकाई की सम्प्राप्ति पर विद्यार्थी -

1. इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों को समझ सकेंगे।
2. इतिहास में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों का उपयोग कर सकेंगे।
3. इतिहास में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों के महत्व को समझ सकेंगे।
4. इतिहास में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों के रख-रखाव के लिए प्रेरित होंगे।
5. इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों की व्यवस्था अपने महाविद्यालय में करवाने में शिक्षक का सहयोग कर सकेंगे।
6. इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों के लिए विभिन्न प्रकार के मॉडल चार्ट, चित्र आदि बनाने का अभ्यास कर सकेंगे।
7. इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त किये जा सकने योग्य सामग्री का संग्रह कर सकेंगे यथा सिक्के, डाक टिकट आदि।
8. इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों की व्यवस्था, उपयोग एवं रख-रखाव में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।

12.1 इतिहास कक्ष
(History Room)

प्रत्येक विषय की प्रकृति भिन्न होती है और विषय की प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त वातावरण तैयार करने में उस विषय का कक्ष महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इतिहास शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए इतिहास-कक्ष की आवश्यकता लगभग सभी इतिहास शिक्षक अनुभव करने लगे है। इतिहास-कक्ष वह स्थान या कक्ष होता है जहां ऐतिहासिक वातावरण में छात्रों को अध्ययन-अध्यापन का अवसर मिलता है। इससे शिक्षण रोचक, सुगम तथा प्रभावशाली बनता है।

इतिहास कक्ष की आवश्यकता (Need of History Room) - इतिहास कक्ष की आवश्यकता निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट की जा सकती है -

1. इतिहास को नीरस विषय कहा जाता है। इतिहास कक्ष छात्रों में विषय के प्रति सकारात्मक एवं स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकता है। इस विषय में वी.डी. घाटे ने कहा है - "इतिहास का अपना एक कक्ष होना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि इतिहास के विद्यार्थी अपने विषय का सम्मान करें तथा वे और उनका शिक्षक उसका गंभीरता से अध्ययन करें। एक सुसज्जित इतिहास कक्ष विद्यार्थियों में ऐतिहासिक अभिवृति को जागृत करने में सहायक होगा।"
2. इतिहास कक्ष द्वारा एक विशेष प्रकार का वातावरण प्रस्तुत किया जा सकता है जो कि प्रभावी एवं कुशल शिक्षण के लिए आवश्यक होता है।
3. इतिहास कक्ष में इतिहास शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न शिक्षण सामग्रियों को रखा जा सकता है जिससे अध्यापक आवश्यकतानुसार इनका प्रयोग कर सकता है।
4. इतिहास से सम्बन्धित उपकरणों के रख-रखाव की समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है। इधर-उधर लाने ले जाने के इनको होने वाली क्षति को रोका जा सकता है।
5. किसी भी पाठ से सम्बन्धित अन्य संदर्भ स्त्रोतों की आवश्यकता हो तो अध्यापक के मार्ग-दर्शन में छात्र उसी समय उनका अध्ययन कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर सकते है।
6. छात्रों को एक ही कक्ष में सुबह से लगातार पढ़ाते रहने से वे थकान महसूस करने लगते है, परिणाम स्वरूप शिक्षण में रूचि नहीं लेते इतिहास कक्ष उनकी इस समस्या का समाधान भी करता है।
7. इतिहास कक्ष में लगे मानचित्र चार्ट चित्र समय-सारणी आदि को छात्र बार-बार देखता है और पढ़ता है जिससे अनेक ऐतिहासिक तथ्य उसे आसानी से याद हो जाते हैं उन्हें रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती है जिससे छात्र विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृति विकसित करने में सक्षम होते है।
8. इतिहास कक्ष में रखी ऐतिहासिक सामग्री को देख कर छात्र के मन में अनेक प्रश्न उठते है और वह उनका उत्तर खोजने के लिए अधिक रूचि के साथ विषय का अध्ययन करता है। इस प्रकार इतिहास कक्ष छात्रों मे स्वाध्याय की आदत का विकास करता है।

9. इतिहास कक्ष में रखे उपकरणों को देख कर छात्रों में प्रेरणा का संचार होता है और के भी चार्ट चित्र मॉडल आदि का निर्माण करने का प्रयास करते है और इससे उनमें विभिन्न कौशलों का विकास आसानी से हो जाता है।
10. इतिहास कक्ष में बैठकर अध्यापक अपने विषय से सम्बन्धित योजनाओं का निर्माण कर उन्हीं के अनुसार कार्य कर एक प्रभावी वातावरण के साथ ही साथ छात्रों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।
11. इतिहास से सम्बन्धित चार्ट, चित्र, मानचित्र, मॉडल आदि उपलब्ध होने पर भी अध्यापक इन्हें प्रत्येक कक्षा में बार-बार ले जाने एवं लाने मे आलस्य करते है और वे इनके बिना ही शिक्षण करते है इतिहास कक्ष होने से वे इनका प्रयोग करेंगे इससे छात्रों के अनुभवों में विविधता लाई जा सकती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इतिहास के प्रभावी शिक्षण के लिए इतिहास कक्ष आवश्यक है। इसके अभाव में इतिहास विषय अपने वास्तविक उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो सकता है।

इतिहास कक्ष (History Room) - इतिहास कक्ष की बनावट कैसी हो, उसका आकार क्या हो तथा आंतरिक साज-सज्जा किस प्रकार की हों। यह विद्यालय के पास उपलब्ध संसाधनों एवं इतिहास के छात्रों की संख्या के आधार पर ही निश्चित किया जा सकता है। इतिहास कक्ष के लिए एक बड़ा एवं हवादार कक्ष होना चाहिए। इसके साथ एक भंडार गृह भी होना चाहिए। सामान्यत इतिहास कक्ष के लिए 60'□40' एवं भंडारगृह के लिए 80'□12' का आकार उपयुक्त माना जाता है। इतिहास कक्ष इस आकार से बडा या छोटा भी बनाया जा सकता है। उपयुक्त आकार के कक्ष में ही संपूर्ण व्यवस्थायें की जा सकती है। आवश्यक उपकरणों को सुव्यवस्थित ढंग से रख कर इसे आकर्षक बनाया जा सकता है।

इतिहास कक्ष के उपकरण (Equipment of History Room) - इतिहास-कक्ष में निम्न सामग्री का होना आवश्यक है -

1. **सूचना-पट्ट (Notice Board) -** इतिहास कक्ष के बाहर अथवा दरवाजे पर सूचनाओं समाचारों तथा निर्देशों के लिए सूचना पट्ट लगाया जाना चाहिए।
2. **फर्नीचर (Furniture) -** इतिहास कक्ष में पर्याप्त मात्रा में उपर्युक्त आकार का फर्नीचर आवश्यक है। छात्रों को इतिहास कक्ष में बैठकर कार्य करना होता है। इसलिए मेजें, कुर्सियाँ, मानचित्र स्टैण्ड, अलमारियां शो-केस रोलर-बोर्ड, डिक्ले बोर्ड, आदि होने चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार उपकरणों को रखा जा सकें तथा इसका प्रयोग किया जा सकें।
3. **श्याम-पट्ट (Black-Board) -** इतिहास कक्ष में एक बड़े आकार का श्याम पट्ट होना चाहिए। सुविधा के लिए इसके तीन भाग किये जा सकते है। एक भाग पर भारत का मानचित्र दूसरे भाग पर राजस्थान का मानचित्र अथवा भारत के राष्ट्रीय इतिहास की समय सारणी बनाई जा सकती है तथा तीसरे भाग का शिक्षण के समय श्याम पट्ट सार के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
4. **मानचित्र (Maps) -** मानचित्र इतिहास को धरातल प्रदान करता है। इसलिए इतिहास कक्ष में मानचित्रों का होना आवश्यक है। कक्ष की दीवारों को पेन्ट करवा कर उन पर

मानचित्र बनवायें जा सकते है। इसके अतिरिक्त फ्रेम किये हुए मानचित्र टांग सकते है। मानचित्र स्टैण्ड में भी इन्हें रखा जा सकता है। आवश्यकता के अनुसार मानचित्र का प्रयोग करके इतिहास शिक्षक अपने विषय के रोचक एवं प्रभावी ढंग से पढ़ा सकता है।

5. **चित्र (Picture) -** इतिहास कक्ष में ऐतिहासिक व्यक्तियों, भवनों, शिला लेखों, संग्रहालयों, किलों आदि के चित्र भी होने चाहिए। चित्र बड़े अथवा छोटे आकार के हो सकते है जिन्हें कक्ष की दीवारों पर काल क्रमानुसार लगाया जा सकता है। इससे कक्ष को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के अतिरिक्त छात्रों के ज्ञान में वृद्धि भी की जा सकेगी।
6. **चार्ट एवं रेखाचित्र (Charts and Line Chart) -** इतिहास कक्ष में युद्ध योजनाएं, युद्ध स्थलों, युद्ध मार्गों, वंशावली आदि से संबंधित चार्ट होने चाहिए। इनके अतिरिक्त रेखाचित्रों के माध्यम से ऐतिहासिक विषय वस्तु को स्पष्ट करना चाहिए तथा इन्हें इतिहास कक्ष की दीवारों पर टांग दिया जाना चाहिए। इससे न केवल ऐतिहासिक वातावरण निर्मित किया जा सकता है अपितु छात्रों में चार्ट एवं रेखाचित्र बनाने का कौशल भी विकसित किया जा सकता है।
7. **अनुलेखन मेज (Tracing Table) -** इतिहास कक्ष में छात्रों को ऐतिहासिक मानचित्र, चित्र, रेखाचित्र, समय रेख आदि बनाने का अभ्यास करवाया जाता है। इसके लिए अनुरेखन मेजों की आवश्यकता होती है। इससे छात्रों में इन कौशलों का विकास किया जा सकता है।
8. **अलमारियां (Amirah's) -** इतिहास कक्ष में अनेक महत्वपूर्ण वस्तुएं रखी होती है जो मूल्यवान तथा दुर्लभ होती है जैसे संदर्भ ग्रन्थ, मॉडल, साहित्य, स्त्रोत आदि इन्हें सुरक्षित रखने के लिए अलमारियों का होना आवश्यक है। अलमारियां लोहे की अथवा दीवार में बनी हुई जिन पर दरवाजे लगे हुए होनी चाहिए। इससे महत्वपूर्ण सामग्री को सुरक्षित रखा जा सकता है।
9. **शो-केस (Show Case) -** इतिहास कक्ष में शीशे लगे शो केस भी होने चाहिए। इनमें विभिन्न राजाओं के चित्र किसी काल में प्रयुक्त अस्त्र-शस्त्र, सिक्के आदि को प्रदर्शित किया जा सकता है। इनका विवरण जैसे काल, धातु विशेषताएं किस शासक के काल की है आदि भी साथ में दिया जा सकता है। शो-केस की वस्तुओं की सुन्दरता में वृद्धि के लिए इनमें रोशनी की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
10. **पानी की टंकी (Water Tank) -** इतिहास कक्ष में पानी की टंकी जिसमें नल लगा हुआ हो अवश्य होनी चाहिए क्योंकि ऐतिहासिक सामग्री जैसे मॉडल आदि का निर्माण करने के लिए छात्रों को बार-बार पानी की आवश्यकता पड़ती है तथा अपना काम समाप्त करके हाथ धोने के लिए बाहर जाते है। इसमें अधिक समय व्यर्थ चला जाता है। छात्रों को होने वाली असुविधा तथा समय की बचत के लिए यह आवश्यक है।
11. **प्रतिरूप (Model) -** इतिहास को सजीव बनाने के लिए शिक्षण करते समय विभिन्न ऐतिहासिक शिक्षण सामग्रियों के प्रतिरूप प्रस्तुत करने चाहिए। इतिहास कक्ष में इन प्रतिरूपों को सजा कर इसके आकर्षण में भी वृद्धि की जा सकती है। इतिहास कक्ष में

कुछ महत्वपूर्ण प्रतिरूप जैसे ऐतिहासिक भवनों, दुर्गों, स्तम्भों, सिक्कों आदि के प्रतिरूप अवश्य रखे जाने चाहिए।

12. **प्रक्षेपण सामग्री (Projective Material) -** इतिहास से संबंधित स्लाइड, चलचित्र, चित्र आदि को बड़े आकार में प्रदर्शन के लिए वहां प्रक्षेपण यंत्र जैसे जादू की लालटेन, ओवर हैड प्रोजेक्टर फिल्म प्रोजेक्टर, वीडियो, कम्प्यूटर आदि का होना आवश्यक है। प्रोजेक्ट के लिए पोर्टेबल ट्राली तथा एक सफेद पर्दा होना चाहिए। इतिहास कक्ष में इसे उपर्युक्त स्थान पर लगाया जाना चाहिए। जहां से कक्षा के हर कोने से स्पष्ट दिखाई दें। फिल्म तथा स्लाइड आदि के प्रदर्शन के लिए कक्ष में अंधेरा होना चाहिए। इसके लिए कक्ष की खिड़कियों एवं दरवाजों पर गहरे रंग के पर्दे लगे। होने चाहिए ताकि प्रदर्शित की जाने वाली फिल्म स्पष्ट रूप से दिखाई जा सकें।

उपर्युक्त सभी सामग्रियों को संग्रह कर एक उपर्युक्त इतिहास कक्ष को व्यवस्था करना प्रत्येक विद्यालय के लिए कोई सरल कार्य नहीं है। क्योंकि सीमित संसाधनों से इन सब वस्तुओं की व्यवस्था असंभव नहीं तो कठिन कार्य अवश्य है। इसके लिए इतिहास शिक्षक का उत्साही तथा श्रमशील होना आवश्यक है। वह अपने प्रयासों से एक उपयुक्तता कक्ष की व्यवस्था कर सकता है। इतिहास शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए। वह कक्ष में उन्हीं वस्तुओं का संग्रह करें जिनका छात्र उपयोग कर सकें और उनकी क्रियाशील में वृद्धि करने में सहायक हों।

सुझाव (Suggestion) -

1. इतिहास कक्ष में स्थानीय इतिहास से संबंधित सामग्री को महत्व दिया जाना चाहिए जैसे स्थानीय इमारतों के चित्र, मानचित्र, टिकटों, चित्रकला शैलियों आदि का प्रदर्शन छात्रों में स्थानीय इतिहास के प्रति रूचि जागृत करने में सहायक हो सकते है।
2. चित्र, चार्ट, प्रतिरूप, मानचित्र आदि को तैयार करने में छात्रों का सहयोग लिया जायें।
3. इतिहास कक्ष में रखे गये संसाधनों की उचित देख रेख का दायित्व इतिहास शिक्षक को ही सौंपा जाना चाहिए।
4. इतिहास कक्ष के लिए सामग्री का चयन एवं प्रदर्शन इतिहास शिक्षक की रूचि के अनुसार होना चाहिए।
5. सभी उपकरण एक साथ क्रय नहीं करके प्रति वर्ष कुछ चित्र, चार्ट, मानचित्र आदि का संग्रह किया जाना चाहिए। इससे बजट की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।
6. इतिहास कक्ष में अभिनय के लिए स्टेज एवं प्रक्षेपण सामग्री भी रखी जानी चाहिए।
7. इतिहास कक्ष के निर्माण के लिए सेवा प्रसार विभाग अथवा आर.टी.सी की सहायता ली जा सकती है।

सारांश (Summary) -

इतिहास कक्ष के द्वारा छात्रों में इतिहास के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता हैं इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय में इतिहास कक्ष अवश्य हो जहां चित्र चार्ट, मॉडल, मानचित्र, उपयुक्त तथा पर्याप्त फर्नीचर हों। रेखाचित्र, प्रतिरूप आदि को शो-केस अथवा अलमारियों में सुरक्षित रखा जाना चाहिए तथा आवश्यकता के समय उन्हें इतिहास शिक्षण को

प्रभावी तथा रोचक बनाने के लिए प्रयुक्त किया जायें। इनके प्रयोग से छात्रों को सीखने के अधिक अवसर प्राप्त होते है और वे स्वयं क्रिया करके सीख सकते है। जिससे शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति आसानी से की जा सकती है। साथ ही विद्यार्थियों की पूर्ति आसानी से की जा सकती है और विद्यार्थियों को इतिहास की पाठ्यवस्तु को रटने से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निर्देश - नीचे दिये गये प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

1. इतिहास कक्ष में कौन-कौन सी सामग्री होनी चाहिए।
2. इतिहास कक्ष की व्यवस्था पर टिप्पणी लिखिए।
3. इतिहास कक्ष को सजीव बना देता है, कोई दो चरण बताइये।
4. इतिहास कक्ष की व्यवस्था मे किन संसाधनों का सहयोग लिया जा सकता है।

12.2 इतिहास-प्रयोगशाला (History-Laboratory)

आज के वैज्ञानिक युग में यदि कोई भी विषय अपने आप को कायम रखना चाहता है तो उसे स्वयं को वस्तुनिष्ठ व प्रयोगों पर आधारित करना होगा। यही कारण है कि आज प्रत्येक विषय के बारे में यही कहा जाता है कि वह विज्ञान एवं कला दोनों है। इतिहास भी सामाजिक विज्ञान का एक विषय है जो भूतकालीन घटनाओं का क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष विवेचन करता है। अत: यह विज्ञान की श्रेणी में आता है। अन्य विषयों की भांति इतिहास को रोचक, सजीव तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि इसके लिए भी एक प्रयोगशाला का निर्माण किया जायें।

आज साधन सम्पन्न एवं प्रगतिशील विचारों वाले विद्यालय न केवल भौतिक विज्ञानों के अपितु सामाजिक विज्ञानों के लिए भी उपयुक्त प्रयोगशालाओं की व्यवस्था करने लगें है परन्तु यह कार्य आसन कार्य नहीं है। इसलिए विद्यालय में जिस विषय की प्रयोगशाला स्थापित की जायें। उस विषय के शिक्षकों की राय लेकर प्रयोगशाला के रख रखाव भी उपयुक्त व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

प्रयोगशाला की व्यवस्था (Organization of Laboratory) -

1. सीमित संसाधनों के कारण सभी विषयों की पृथक-पृथक प्रयोगशाला नहीं बना कर सभी सामाजिक विज्ञानों के लिए एक संयुक्त प्रयोगशाला बनाई जा सकती है।
2. छात्रों को प्रयोगशाला में कार्य करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। परन्तु विषय अध्यापक का मार्ग दर्शन लेकर ही कार्य केर इसके लिए उन्हें पहले से ही निर्देशित किया जाना चाहिए।
3. प्रत्येक प्रयोगशाला का प्रभारी विषय से संबंधित अध्यापक ही होना चाहिए।
4. प्रयोगशाला के लिए बड़े आकार का कक्ष होना चाहिए जहां आवश्यक उपकरणों को आसानी से रखा जा सकें।

5. प्रयोगशाला के पास ही एक भंडार गृह भी होना चाहिए जहां अतिरिक्त सामान को सुरक्षित रखा जा सकें।
6. प्रयोगशाला में छात्रों की संख्या के अनुपात में पर्याप्त उपकरण व सुविधाएं होनी चाहिए।
7. प्रयोगशाला में विषय से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए।
8. प्रयोगशाला में बैठने के लिए स्कूल एवं कार्य करने के लिए बड़े आकार की मेजें पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए।
9. प्रयोगशाला में पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
10. प्रयोगशाला में एक बड़ा श्यामपट्ट भी होना चाहिए जिसे आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग किया जा सकें।

विभिन्न विषयों की प्रयोगशालायें

(Laboratory of Different Subjects)

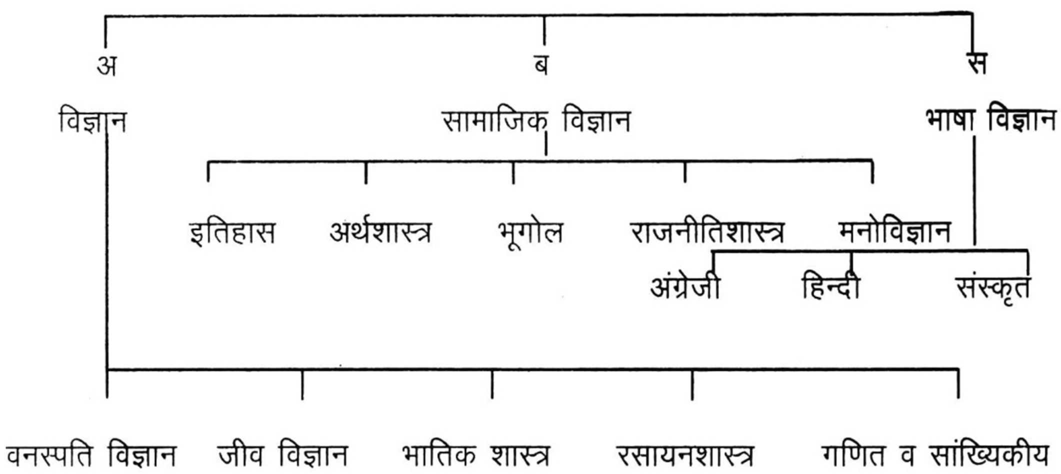

चित्र संख्या : 12.1

भिन्न-भिन्न विषयों की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न होती है। इसलिए प्रत्येक विषय की प्रयोगशाला के लिए उसी के अनुसार उपकरणों की आवश्यकता होती है। जे.बी.बीचमैन तथा जे.बी.वाल्डविन ने सामाजिक विज्ञानों की प्रयोगशाला में निम्न वस्तुओं को अनिवार्य बतलाया है -

1. एक बड़ा स्वच्छ एवं हवादार कक्ष।
2. पर्याप्त संख्या में मेज व कुर्सी की व्यवस्था हों।
3. श्यामपट्ट एवं बुलेटिन बोर्ड की उपर्युक्त व्यवस्था हो।
4. अलमारियां
5. प्रक्षेपण यंत्र (ओवरहेड तथा स्लाइड प्रोजेक्टर)
6. आवश्यक शिक्षण सामग्री जैसे इतिहास की प्रयोगशाला में ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्र, चार्ट, ग्राम, समय-रेखा, फिल्म, स्लाइड्स आदि होनी चाहिए।

7. विषय से संबंधित संदर्भ ग्रन्थ, शब्दकोष, समाचार पत्र, पत्रिकायें आदि इतिहास की प्रयोगशाला में ये सभी इतिहास से संबंधित होनी चाहिए।
8. रेडियो, टेलीविजन, वी.सी.आर एवं टेपरिकार्डर।
9. विषय से संबंधित मॉडल।
10. अध्यापक का कक्ष।

प्रयोगशाला के लाभ (Advantages of Laboratory) - इतिहास की एक अच्छी प्रयोगशाला न केवल छात्रों का अध्ययन के लिए प्रेरित करती है। बल्कि उनके ज्ञान को स्थायित्व भी प्रदान करती है। छात्रों में विभिन्न कौशलों का विकास होता है। प्रयोगशाला के निम्नलिखित लाभ है -

1. **व्यावहारिक शिक्षा (Practical Education)** - प्रयोगशाला की स्थापना से छात्रों को पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के स्थान पर वास्तविक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

2. **शिक्षण में रोचकता (Interest in Teaching)** - प्रयोगशाला में छात्र शिक्षक के मार्ग दर्शन में विभिन्न प्रायोजनाओं पर कार्य करते हुए ज्ञानार्जन करते है। इससे शिक्षण में नवीनता एवं रोचकता आती है।

3. **प्रत्यक्ष अनुभव (Direct Experience) -** प्रयोगशाला में विद्यार्थी कार्य करके सीखता है जिससे उसे प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होते हैं। छात्र जिस ज्ञान को क्रिया करके सीखता है वह स्थाई तथा जीवनोपयोगी होता है।

4. **नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग (Use of New Teaching methods)** - परम्परागत कक्षा शिक्षण में जहाँ अध्यापक एक ही विधि द्वारा शिक्षा करता है। प्रयोगशाला में अनेक नवीन शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण कर सकता है। जैसे प्रयोगशाला विधि, समस्या समाधान विधि, डाल्टन विधि, खेल विधि आदि। इनसे अधिगम सरलता से हो जाता है।

5. **बालक का सर्वांगीण विकास (All-round Development of a child) -** प्रयोगशाला बालकों में अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तिगत गुण विकसित करने में सक्षम है जैसे अवलोकन, धैर्य, तर्क, चिन्तन, निष्कर्ष निकालना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कार्य के प्रति निष्ठा एवं सकारात्मक दृष्टिकोण आदि। इन गुणों के विकास से बालक का सर्वांगीण विकास संभव है।

6. **विभिन्न कौशलों का विकास (Development of Social feeling) -** प्रयोगशाला में कार्य करने से बालक की ज्ञानेन्द्रियां लिप्त होती है। वह स्वयं कार्य करना सीखता है जिससे विभिन्न कौशलों का विकास स्वाभाविक रूप से बिना अतिरिक्त श्रम के हो जाता है।

7. **श्रम एवं धन की बचत (Saving of Labour and money)** - प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले उपकरण वहीं रखे होते है जिससे बार-बार कक्षा कक्ष में ले जाने में लगने वाले श्रम को बचाया जा सकता है तथा इधर-उधर ले जाने एवं लाने में होने वाली क्षति को रोका जा सकता है जिससे अप्रत्यक्ष रूप से धन की भी बचत होती है।

8. **सामाजिकता की भावना का विकास (Development of social feeling) -** प्रयोगशाला में सभी छात्र एक साथ बैठकर कार्य करते है जिससे उनमें सामाजिकता की भावना का विकास होता है

9. **उपयुक्त वातावरण (Proper Environment) -** विषय की प्रयोगशाला छात्रों को उस विषय की प्रकृति के अनुसार वातावरण प्रदान करने में सक्षम होती है। जिससे छात्रों में विषय के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास होता है। इस प्रकार छात्रों में उस विषय के बारे में अधिक से अधिक जानने की रूचि जागृत की जा सकती है।

सारांश (Summary)

विज्ञान की भांति वर्तमान युग में भाषा तथा सामाजिक विज्ञान के लिए भी प्रयोगशाला की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। इससे बालकों को प्रत्यक्ष अनुभवों के द्वारा सीखने के अवसर उपलब्ध होते है। परिणामस्वरूप ज्ञान स्थाई तथा व्यवहारिक बनता है। प्रयोगशाला में मिलजुल कर एक साथ कार्य करने के कारण छात्रों में सामाजिक गुणों का विकास किया जा सकता है। उपयुक्त वातावरण प्रदान कर छात्रों में अनेक कौशलों का विकास किया जा सकता 'है। इतिहास शिक्षक विद्यालय में इतिहास की प्रयोगशाला की व्यवस्था कर अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। इसके लिए उसका उत्साही, सृजनशील तथा श्रमशील होना आवश्यक है। इतिहास के प्रति सकारात्मक अभिव्यक्ति तथा ऐतिहासिक तथ्यों में विश्वास से ही वह ऐसा करने में सक्षम हो सकता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निर्देश- नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति मे दीजिये।

1. प्रयोगशाला के लिए आवश्यक पाँच उपकरणों के नाम बताइये।
2. प्रयोगशाला सीखने के किस सिद्धान्त पर आधारित होती है।
3. इतिहास की प्रयोगशाला से धन एवं श्रम की बचत कैसे होती है।
4. विद्यालय मे सभी विषयों की प्रयोगशालाएँ क्यों नहीं बनाई जात है। कोई दो कारण लिखिए।

12.3 संग्रहालय (Museum)

संग्रहालय बालक को शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन है। यह वह स्थान है जहां कला, साहित्य, विज्ञान तथा इतिहास से संबंधित सामग्री का संग्रह होता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए माध्यमिक शिक्षा में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखते है। इतिहास शिक्षण में स्त्रोत विधि की सफलता के लिए संग्रहालय का विशेष महत्व है। अत: इतिहास शिक्षक को चाहिए कि वह जहां तक संभव हो विद्यार्थियों को संग्रहालय दिखा कर लाये तथा शिक्षण करते समय उन वस्तुओं से संबंध स्थापित करें जो छात्रों ने संग्रहालय में देखी हों।

संग्रहालय का महत्व (Importance of Museum) - संग्रहालय के महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

1. संग्रहालय में इतिहास से संबंधित सामग्री को देखने से छात्रों के सामान्य ज्ञान एवं विषय ज्ञान में वृद्धि होती है।
2. ऐतिहासिक सामग्री को देखकर छात्रों में यह विश्वास दृढ़ होता है कि इतिहास काल्पनिक नहीं है और इस प्रकार विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जा सकता है।
3. छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है जैसे अवलोकन, तर्क, कल्पना तथा निर्णय आदि।
4. छात्र संग्रहालय में ऐतिहासिक तथ्यों से संबंधित सामग्री को देख कर उन्हें स्वाभाविक रूप से समय लेते है जिससे उन्हें रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
5. इतिहास को पढ़ने के लिए प्रेरणा मिलती है तथा इसमें रूचि उत्पन्न होती है।
6. संग्रहालय में रखी सामग्री को देख कर छात्र अतीत की घटनाओं को लिखता है। जिससे उसमें विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होता है।
7. संग्रहालय जैसी राष्ट्रीय विरासतों के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास होता है। इनके द्वारा राष्ट्रीय विरासतों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

विद्यालय में इतिहास संग्रहालय की व्यवस्था हेतु सुझाव (Suggestion for the arrangement of History museum in School) - विद्यालय में इतिहास संग्रहालय की व्यवस्था करते समय निम्न तथ्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिए -

1. संग्रहालय की मूल्यवान एवं दुर्लभ वस्तुओं को शो-केस में रखना चाहिए।
2. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों की कटिंग एलबम में रखनी चाहिए ताकि वे अधिक समय तक सुरक्षित रखी जा सके।
3. महान शासकों एवं ऐतिहासिक महापुरुषों के चित्र को फ्रेम करवा कर दीवार पर लगाने चाहिए।
4. प्राचीन चित्रकला, शिल्पकला आदि से संबंधित वस्तुओं को शीशे की अलमारियों में रखा जाना चाहिए। इनके साथ इनका संक्षिप्त विवरण भी होना चाहिए।
5. चित्र, चार्ट, रेखाचित्र, प्रतिरूप, मानचित्र, समय-सारणी आदि छात्रों से बनवाई जा सकती है।
6. विश्व इतिहास का ज्ञान कराने के लिए विद्यालय संग्रहालय में विदेशी मुद्रा, वहाँ का ध्वज स्टामप्स आदि भी रखे जाने चाहिए।
7. महत्वपूर्ण शिला लेख, किलो, ऐतिहासिक, इमारतें आदि के प्रतिरूप बनवा कर अथवा यदि उपलब्ध हो तो बाजार से खरीद कर रखे जाने चाहिए जैसे दिल्ली का लाल किला, आगरे का ताजमहल आदि।
8. इतिहास से संबंधित संदर्भग्रंथ, जीवनियां, पुस्तकें, यात्रा वृतान्त, आत्म कथाएं आदि भी संग्रहालय में रखी जानी चाहिए।

9. छात्रों को भी संग्रहालय के लिए उपयोगी वस्तुओं के संग्रह के लिए प्रेरित किया जायें। ऐसा करने वाले छात्र को पुरस्कृत किया जायें तथा उसके द्वारा लाई गई वस्तु पर उसका नाम अंकित किया जाना चाहिए ताकि अन्य छात्रों को भी प्रेरित किया जा सकें।

सारांश (Summary) -

संग्रहालय इतिहास शिक्षण को रोचक तथा प्रभावी बनाने का एक सशक्त माध्यम है। संग्रहालय में छात्र ऐतिहासिक वस्तुओं का अवलोकन करता है तथा अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा विषय वस्तु से उनका संबंध स्थापित करता है। इससे उसके सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है। विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है। छात्रों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के संग्रह की आदत विकसित होती है। राष्ट्रीय महत्व के स्थलों तथा वस्तुओं के संरक्षण की प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इसलिए विद्यालय में इतिहास शिक्षक को विद्यालय के अन्य शिक्षकों, छात्रों तथा अभिभावकों के सहयोग से एक संग्रहालय की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि इतिहास को रोचक बनाया जा सकें।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निर्देश- निम्न प्रश्नों के उत्तर हां अथवा नहीं में दीजिए -

1. संग्रहालय छात्रों के विषय ज्ञान में वृद्धि करता है।..................
2. संग्रहालय छात्रों को विश्वास दिलाता है कि इतिहास सच्ची घटनाओं पर आधारित होता है।
3. संग्रहालय बालकों की मानसिक कुशलताओं के विकास में सहायक है।..............
4. राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण में संग्रहालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।..............

12.4 सामुदायिक वातावरण (Community Environment)

विद्यालय एवं समुदाय शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक साधन है जिन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। विद्यालय की स्थापना समुदाय के परिक्षेत्र में होती है और समुदाय विद्यालय की स्थापना अपने विकास के लिए करता है। इसलिए विद्यालय का सदैव ही यह प्रयास होना चाहिए कि वह समुदाय की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुसार कार्य करें। इसके लिए उसे समुदाय से संपर्क बनाये रखना होगा। बालक को सकारात्मक दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का कार्य विद्यालय करता है तो समुदाय का वातावरण भी सकारात्मक गतिविधियों को प्रेरित करेगा ।इसलिए कहा जाता है कि विद्यालय समाज का प्रतिबिम्ब होते है। जॉन ड्यूबी ने विद्यालय को एक सामाजिक संस्था स्वीकार करते हुए कहा है - जिस प्रकार शरीर को कायम रखने हेतु भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार समुदाय के अस्तित्व के लिए शिक्षा आवश्यक होती है और इसके लिए शिक्षा के महत्वपूर्ण साधन के रूप में विद्यालय की आवश्यकता होती है। यह संस्था बालकों को उन सामाजिक क्रियाओं का प्रशिक्षण प्रदान करती है जो वर्तमान सामाजिक जीवन में प्रचलित है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा बालक को समाजोपयोगी नागरिक बनाने में सहयोग करती है।

वैश्वीकरण के इस युग में प्रत्येक समुदाय अपना विकास तीव्र गति से करना चाहता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि विद्यालय एवं समुदाय के संबंध प्रगाढ़ हो तथा दोनों एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करें। विद्यालय तथा समुदाय के संबंध सशक्त होने चाहिए इस तथ्य को स्वीकार करते हुए डॉ. जे.पी. सैय्यदन ने कहा है - "स्कूल और समुदाय का सहयोग माता-पिता, अध्यापक या विद्यार्थी और समुदाय के परस्पर संबंध से भी अधिक बुनियादी वस्तु है। स्कूल के लक्ष्य और उद्देश्य, उसकी शिक्षण विधियां और अनुशासन-सभी अन्ततः उस समुदाय के लिये जाते है जिसमें स्कूल स्थित है। यदि दोनों में सजीव और गतिशील संबंध नहीं है तो शिक्षा निर्जीव और अवास्तविक होगी तथा उसका बच्चों के मन और चरित्र पर कोई प्रभाव नहीं होगा।"

विद्यालय तथा समुदाय के संबंधों को सक्षम बनाने के उपाय (Measures to make school and community relationship more strengthened) - विद्यालय तथा समुदाय के संबंधों को और अधिक सशक्त बनाने के लिए निम्न तथ्यों को मध्यन्तर रखना आवश्यक है -

1. विद्यालय में शिक्षक अभिभावक संघ स्थापित किये जायें विद्यालय में विभिन्न आयोजनों में अभिभावकों को आमंत्रित किया जायें। सत्र पर्यन्त एक निश्चित अन्तराल के पश्चात् शिक्षक अभिभावक दिवस आयोजित किये जाये जिसमें अभिभावकों को आवश्यक रूप से बुलाया जायें।
2. छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का विशेष ध्यान रखा जायें ताकि उसी के अनुरूप शिक्षण की व्यवस्था की जायें। यदि किसी छात्र की कोई विशेष समस्या हो तो अभिभावकों के सहयोग से उसका निदान किया जायें।
3. विद्यालय में एक परामर्श समिति गठित की जायें जिसका कार्य शिक्षा संबंधी समस्याओं का समाधान करना है।
4. समाज में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में विद्यालय का सहयोग लिया जाये जैसे किसी रोग के प्रति जागरूकता के लिए रैली आदि निकालना किसी समस्या के प्रति जन जागृति पैदा करना। इन कार्यों में विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक समाज का सहयोग कर सकते है।
5. प्रत्येक विद्यालय की एक प्रबंध समिति हो जिसमें समुदाय के सदस्य भी हों। यह प्रबंध समिति जन सहयोग से विद्यालय की समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी लें। जैसे विद्यालय में स्वच्छ जल, शौचालय आदि की व्यवस्था समुदाय के सहयोग से की जा सकती है।
6. विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रम जैसे वार्षिकोत्सव, राष्ट्रीय पर्व आदि पर समुदाय के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित किया जायें, उन्हें विद्यालय को प्रगति से अवगत कराया जायें तथा विद्यालय की प्रगति के लिए उनके सुझाव आमंत्रित किये जायें।
7. विद्यालय में समुदाय के कुछ विशेषज्ञों के भाषण आयोजित किये जायें तथा इनके विद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों को भी अपने विचार अभिव्यक्ति करने का अवसर दिया जायें। इससे दोनों में वैचारिक आदान-प्रदान होगा।

8. सामुदायिक कल्याण से संबंधित गतिविधियों का आयोजन विद्यालय भवन में किया जायें जैसे प्रौढ़ शिक्षा, सेमीनार आदि के आयोजन में विद्यालय भवन का उपयोग कर दोनों के संबंधों को प्रगाढ़ बनाया जा सकता है।
9. समुदाय में आयोजित विभिन्न समारोह जैसे मेले, उत्सव आदि में छात्रों को स्वयं सेवक की भूमिका का निर्वाह करने के लिए भेजा जाना चाहिए।
10. विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक सामग्री का उपयोग सामुदायिक शिक्षा हेतु किया जायें।
11. विद्यालय पुस्तकालय का उपयोग समुदाय के व्यक्ति भी कर सके। इसके लिए उपयुक्त समय निर्धारित किया जा सकता है।
12. विद्यालय में आयोजित खेल कूद संबंधी क्रियाओं के आयोजन में निर्णायक के रूप में समुदाय के व्यक्तियों को आमंत्रित किया जा सकता है जिनका इस क्षेत्र में निजी अनुभव है।
13. विद्यालय में उपलब्ध निर्देशन सेवाओं का लाभ समुदाय के सदस्य भी उठा सकें। विद्यालय द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए।
14. विद्यालय में अच्छा शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जायें जिससे अनुशासन की समस्या उत्पन्न नहीं हो और यदि उत्पन्न हो भी जायें तो उसका उपचार समुदाय के सहयोग से किया जाना चाहिए।

इस प्रकार विद्यालय एवं समुदाय को एक दूसरे के समीप लाकर शिक्षण एवं अधिगम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया जा सकता है। वर्तमान में हुए विभिन्न शोध अध्ययन से पता चलता है कि कक्षा कक्ष तथा विद्यालय का सामाजिक वातावरण छात्रों के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धियों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है। अत: अध्यापकों का परम कर्तव्य है कि वे विद्यालय के वातावरण को अधिगोन्मुखी बनायें। छात्रों में संकीर्ण विचारधारा का विकास न होने से अनुशासनहीनता को न पनपने दें, उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें व संपूर्ण वातावरण को सौहार्दपूर्ण बनायें।

12.5 पुस्तकालय एवं अन्य संसाधन (Library and other Resources)

विद्यालय में पुस्तकालय का महत्वपूर्ण स्थान होता है कुछ शिक्षाविदों ने इसे विद्यालय का हृदय कहा है। विद्यालय वह स्थान है जहां व्यक्ति अपना बौद्धिक विकास तथा साहित्यिक ज्ञान में वृद्धि कर सकता है। पुस्तकालय में छात्र पुस्तकों के अतिरिक्त संदर्भ ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं आदि का अध्ययन कर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि कर सकते है। बी.आर. एफ कैली के मतानुसार - "पुस्तकालय ज्ञान को सुरक्षित रखते है ताकि कुछ भी खो न जायें ज्ञान को संगठित रखते है ताकि कुछ भी उससे वंचित न रहें।" पुस्तकालय के महत्व को स्पष्ट करते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है - "व्यक्तिगत कार्य समूह प्रयोजन कार्य, शैक्षणिक व मनोरंजक कार्य तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के लिए अच्छे तथा दक्ष पुस्तकालय का होना आवश्यक है। छात्रों की

रूचियों का विकास उनके शब्द भंडार का वर्धन तथा कक्ष में अर्जित ज्ञान की वृद्धि करना - यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि छात्रों को पुस्तकालय में कितने साधन उपलब्ध है।"

Individual work, the persuit of group projects, many academics hobbies and co-curricular activities postulate the existence of a good, efficiently managed library. To broaden interest of students to increase vocabulary of students and to know more about the topic discussed in the class or text book, students depend upon the resources available in the library.

-Secondary Education Commission

पुस्तकालय का महत्व (importance of Library) - अग्रलिखित बिन्दुओं के द्वारा पुस्तकालय के महत्व को समझा जा सकता है -

1. बालकों के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।
2. छात्रों के स्वाध्याय की आदत का विकास किया जा सकता है।
3. छात्रों में आत्मानुशासन एवं उत्तर दायित्व की भावना का विकास किया जा सकता है।
4. छात्रों को पुस्तकों के उचित प्रयोग का प्रशिक्षण मिलता है।
5. पुस्तकालय से छात्रों को आधुनिकतम साहित्य का परिचय प्राप्त होता है।
6. छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है।
7. छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया जा सकता है।
8. पुस्तकालय का प्रयोग छात्रों को समय का पाबंद बना देता है क्योंकि पुस्तकालय की पुस्तकें उसे समय पर लौटानी होती है।
9. पुस्तकालय में छात्र सदैव अध्ययनरत रहता है अत: वह अप्रत्यक्ष माध्यमों द्वारा जीवन के नये-नये अनुभवों को प्राप्त करता है।
10. छात्रों में मौन-पाठन की आदतों का विकास होता है।

पुस्तकालय के प्रकार (Types of Library)

इतिहास पुस्तकालय (History Library) -

विद्यालय में इतिहास का पुस्तकालय अवश्य होना चाहिए। इतिहास भिन्न प्रकृति का विषय है जिसे शुष्क विषय माना जाता है। इतिहास का पृथक पुस्तकालय होने से छात्रों को ऐतिहासिक पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएं पढने का अवसर मिलेगा। इसे छात्रों में इतिहास के प्रति रूचि विकसित करने के साथ ही विषय के प्रति उनके दृष्टिकोण को भी धनात्मक बनाने में मदद मिलेगी। विद्यालय में इतिहास पुस्तकालय की व्यवस्था इस प्रकार से की जानी चाहिए ताकि छात्र सरलता से यहां उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का अवलोकन एवं अध्ययन कर अपने ज्ञान भंडार को व्यापक बना सकें।

इतिहास के पुस्तकालय में अच्छी ऐतिहासिक पुस्तकों का संकलन किया जाना चाहिए। पुस्तकें जो मंगवाई जायें वे शिक्षक एवं छात्रों के लिए उपयोगी हों। अच्छे लेखकों की पुस्तकें ही खरीदी जानी चाहिये। पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त सामान्य ज्ञान, संदर्भ गन्ध, स्रोतों ऐतिहासिक

व्यक्तियों की जीवनियां आदि भी पुस्तकालय में होनी चाहिए। छोटी कक्षा के बच्चों में इतिहास के प्रति रूचि विकसित करने के लिए चित्रात्मक पुस्तकें तथा ऐतिहासिक कहानियों की पुस्तकें रखी जा सकती है। कक्षा अध्यापन के समय अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों को उस पाठ्यवस्तु से संबंधित अन्य पुस्तकों की जानकारी प्रदान करें तथा उनका अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें। अध्यापक गह कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करें। अध्यापक गह कार्य को पूरा करने के लिए सहायक पुस्तकों से मदद लेने के लिए भी छात्र को प्रेरित कर सकता है। इतिहास विषय को रोचक बनाने के लिए अध्यापक विचार-विमर्श, वाद-विवाद तथा प्रायोजना आदि विधियों का प्रयोग करें तथा छात्रों को इनकी तैयारी के लिए पुस्तकालय में इसे संदर्भ संदर्भ ग्रन्थों की जानकारी प्रदान करें ताकि अन्य सहायक पुस्तकों से छात्र अच्छी तैयारी कर सकें। इस प्रकार इतिहास का शिक्षण तैयारी कर सकें। इस प्रकार इतिहास शिक्षण में रोचकता उत्पन्न हो सकेगी तथा छात्र इस विषय का गहनता के साथ अध्ययन कर सकेंगे। नवीन शिक्षण विधियों की सफलता के लिए भी विषय पुस्तकालय का होना आवश्यक है।

सारांश (Summary) -

विद्यालय में अच्छा पुस्तकालय छात्रों के ज्ञान भंडार में वृद्धि करने, स्वाध्याय की आदत का विकास आत्मविश्वास में वृद्धि, पुस्तकों के उचित प्रयोग तथा रख रखाव का प्रशिक्षण प्रदान करने में सहायक होता है। विषय पुस्तकालय छात्रों में उस विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास के साथ हो सकता है। इतिहास पुस्तकालय की स्थापना करके छात्रों में इतिहास के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति तथा रूचि को विकसित किया जा सकता है। अध्यापक अपने व्यक्तिगत प्रयासों, प्रधानाध्यापक, अन्य अध्यापकों, छात्रों तथा अभिभावकों से सहयोग प्राप्त कर विद्यालय में एक पुस्तकालय की व्यवस्था कर सकता है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निर्देश -नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर हाँ अथवा नहीं मे दीजिये।

1. पुस्तकालय ज्ञान को सब के लिए प्राप्य बनाते है।..................
2. पुस्तकालय छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है।................
3. पुस्तकालय का प्रयोग करने से छात्रों मे सामाजिक गुणों का होता है।...............
4. केन्द्रीय पुस्तकालय मे पुस्तकालयाध्यक्ष का होना आवश्यक है।................
5. पुस्तकालय आत्म.................विश्वास मे वृद्धि करते है।-

पुस्तकालय के प्रकार (Types of Library) -

1. **केन्द्रीय पुस्तकालय (Central Library)**
2. **कक्षा पुस्तकालय (Class Library)**
3. **विषय पुस्तकालय (Subject Library)**

1. **केन्द्रीय पुस्तकालय (Central Library) -** केन्द्रीय पुस्तकालय में सभी कक्षाओं तथा सभी विषयों की पुस्तकें रखी जाती है। इसमें पत्र पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि रखे जाते है। इसकी व्यवस्था के लिए पुस्तकालय अध्यक्ष होता है।

2. **कक्षा पुस्तकालय (Class Library) -** कक्षा पुस्तकालय प्रत्येक कक्षा में होता है। इसमें उस कक्षा की पुस्तकें रखी जाती है। इसका अध्यक्ष कक्षा अध्यापक होता है। इसके लिए कक्षा-कक्ष में ही एक अलमारी की व्यवस्था करनी होती है। छात्रों को पुस्तकालय प्रयोग का प्रशिक्षण देने का यह एक अच्छा माध्यम है।

3. **विषय पुस्तकालय (Subject Library) -** प्रत्येक विषय की पुस्तकें अलग-अलग रखने की व्यवस्था विषय पुस्तकालय कहलाती है। इसमें अनुभवी तथा रूचि रखने वाले अध्यापक अपने विषय को प्रिय बनाने तथा उसके विषय के छात्रों की उपलब्धियों का उच्च रखने के लिए विषय पुस्तकालय बनाते है। प्रत्येक प्रकार के पुस्तकालय के गुण तथा सीमा है। किसी भी एक व्यवस्था को सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार सर्वोत्तम व्यवस्था केन्द्रीय पुस्तकालय तथा विषय पुस्तकालय का मिला जुला रूप है। इसमें एक केन्द्रीय पुस्तकालय होता है। तथा प्रत्येक विषयाध्यापक की देखरेख में एक एक विषय पुस्तकालय होता है। पत्र पत्रिकाएं तथा सामान्य पुस्तक केन्द्रीय पुस्तकालय में रखी जायें तथा प्रत्येक विषय की पुस्तकें उस विषय के पुस्तकालय में रखी जाती है। प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियां खरीदी जायें। एक प्रति केन्द्रीय पुस्तकालय में तथा दूसरी प्रति को विषय पुस्तकालय में रखा जा सकता है। इतिहास पुस्तकालय भी विषय पुस्तकालय की श्रेणी में आता है।

अन्य संसाधन (Other Resources) -

इतिहास शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कुछ अन्य संसाधनों का प्रयोग भी किया जा सकता है। जिसमें से कुछ पर्यटन, नाटकीकरण, सामाजिक उत्सव, मेले, शोभायात्रायें, संगोष्ठियां तथा इतिहास क्लब इत्यादि है। विद्यालय द्वारा इनसैट की सुविधा भी प्रदान की जा सकती है।

- **पर्यटन (Excursion) -** इतिहास एक ऐसा विषय है। जिसका सैद्धान्तिक ज्ञान पर्याप्त नहीं होता है। इतिहास शिक्षण को प्रभावी रोचक तथा बोधगम्य बनाने के लिए छात्रों को ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन कराने के लिए वहां ले जाना चाहिए। जिससे छात्र का मनोरंजन तो होता है ही साथ ही प्राप्त ज्ञान व्यावहारिक तथा अधिगम स्थाई होता है। पर्यटन के समय छात्र द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होता है। स्थानीय इतिहास को पढ़ाने का यह सबसे सुगम प्रभावी माध्यम है।
- **नाटकीकरण (Dramatization) -** इतिहास शिक्षण में रोचकता उत्पन्न करने के लिए नाटकीकरण का प्रयोग किया जा सकता है। इतिहास के विभिन्न प्रकरणों को अभिनय के माध्यम से बहुत ही कम समय में सरलता से समझाया जा सकता है। इसके द्वारा छात्रों में संवेग, कल्पना, स्मृति आदि का विकास किया जा सकता है। इतिहास में वृद्ध का जीवन, चरित्र, चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य अशोक की युद्ध त्याग की नीति, पृथ्वीराज तथा संयोगिता महाराणा प्रताप के जीवन की घटनाओं जैसे अनेक शीर्षकों का शिक्षण नाटकीकरण के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जा सकता है।
- **सामाजिक उत्सव (Festival) -** सामाजिक उत्सवों के माध्यम से छात्र उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में जान सकेंगे। किसी भी उत्सव को मनाने की परम्परा किस शासक के शासन काल से प्रारम्भ हुई तथा किस-किस में इन्हें संरक्षण प्रदान किया आदि की जानकारी भी इनसे वाक्यों को मिलती है।

- **मेले (Fair) -** मेले हमारे गौरवशाली अतीत की पहचान है। इनसे न केवल मनोरंजन होता है बल्कि हम भावी पीढ़ी को उसके अतीत के बारे में जानकारी भी प्रदान कर सकते है। इससे वे अपने अतीत पर गौरव कर सके तथा इसके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर सकेंगे। राजस्थान का मरूमेला, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।
- **शोभायात्राएं** - विभिन्न अवसरों पर निकाली जाने वाली शोभायात्राओं के माध्यम से भी हम स्थानीय इतिहास का शिक्षण कर सकते है। ये शोभा यात्राएं क्यों निकाली जाती है? किस समय प्रारम्भ हुई? इनका महत्व क्या है? इनका आयोजन कौन करता है आदि प्रश्नों का उत्तर जानने की प्रक्रिया में छात्र को ज्ञानार्जन होता है।
- **संगोष्ठियां (Seminar) -** कक्षा-कक्ष के वातावरण से भिन्न वातावरण में छात्र के ज्ञान में वृद्धि करने का एम प्रभावी माध्यम है संगोष्ठी। संगोष्ठी में विशेषज्ञों के विचारों को सुनने का अवसर छात्रों को मिलता है। इससे उनके ज्ञान में वृद्धि तो होती ही है। साथ ही अनेक प्रत्यक्ष अनुभव भी प्राप्त होते है। विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन करके भी इतिहास शिक्षण को रोचक बनाया जा सकता है।
- **इतिहास क्लब (History Club) -** विद्यालय में इतिहास क्लब का गठन कर समय-समय पर वार्ता, वाद-विवाद, कार्य गोष्ठी, परिचर्चा आदि का आयोजन कर छात्र के ज्ञान तथा अधिगम दोनों में वृद्धि के साथ ही इतिहास में रूचि उत्पन्न की जा सकती है।
- **इन्टरनेट (Internet) -** विद्यालय में छात्रों को इन्टरनेट की सुविधा प्रदान कर भी हम उसकी रूचि विकसित कर सकते है। इन्टरनेट के माध्यम से छात्र विषय से संबंधित नवीनतम सूचनाएं तुरन्त प्राप्त कर सकता है तथा अपनी ज्ञान पिपासा को शांत कर सकता है।

सारांश (Summary) -

भारत में प्राचीन काल से ही इतिहास जानने के इन साधनों का प्रयोग किया जाता रहा है। ऐतिहासिक पर्यटन, शोभायात्राएं, मेले, उत्सव, संगोष्ठियां, आदि आज भी इतिहास शिक्षण के प्रभावी संसाधनों में गिने जाते है। प्राचीन समाज में चारण, भाट आदि जातियों के लोगों द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को गायन के माध्यम से रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता था। कठपुतलियों के शो तथा नाट्यों के द्वारा भी राजा-रानियों की कहानियां का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। आज भी हम इन सभी साधनों का प्रयोग इतिहास को रोचक, सजीव, सरल तथा बोधगम्य बनाने के लिए कर सकते है।

स्वमूल्यांकन प्रश्न

निर्देश- नीचे दिये प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति मे दीजिए-

1. इतिहास मे नाटकीकरण प्रयोग से क्या लाभ है।
2. स्थानीय इतिहास का ज्ञान छात्रों क किन किन साधनो से-प्राप्त हो सकता है।
3. स्थानीय इतिहास को जानने की क्या आवश्यकता है।
4. इतिहास क्लब के माध्यम से कौनकौन से कार्य किए जा सकते है।-

स्वमूल्यांकन प्रश्न

1. इतिहास कक्ष ऐतिहासिक अध्ययन को अधिक प्रभावी एवं महत्वपूर्ण बनाता है कैसे?

   History room makes study of History more effective? How?

2. इतिहास की प्रयोगशाला इतिहास का अध्ययन को अधिक महत्व प्रदान करती है। इस कथन को मद्देनजर रखते हुए स्पष्ट कीजिए कि आप इतिहास प्रयोगशाला को किस प्रकार सुसज्जित करेंगे?

   "History laboratory brings more efficiency in learning History." Keeping the statement in view discuss how will equip the history laboratory?

3. इतिहास के संग्रहालय का क्या महत्व है? विद्यालय मे इसकी व्यवस्था हेतु सुझाव दीजिये।

   What is importance of History museum? Suggest process to establish it in school.

4. इतिहास शिक्षक किस प्रकार विद्यालय एवं समुदाय के सम्बन्धों को प्रगाढ़ बना सकता है। स्पष्ट कीजिये।

   How can History teacher make healthy and close relations between school and community?

5. इतिहास की प्रयोगशाला के लिए आवश्यक उपकरणों के नाम बताइये। इसे अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव दीजिये।

   Write names of essential equipment required for History laboratory? Give suggestions to make is more useful.

12.6 संदर्भ ग्रन्थ (References)

1. गुरसदन दास त्यागी – इतिहास शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. डा. आर. ए. शर्मा – इतिहास शिक्षण, लायल बुक डिपो मेरठ
3. भाई योगेन्द्रजीत – इतिहास शिक्षण की रूपरेखा, विनोद, पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. दीक्षित उपेन्द्रनाथ तथा बघेला हेत सिंह – इतिहास शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
5. डॉ. रामपाल सिंह – इतिहास शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो
6. एच.सी. पांचाल – इतिहास का अर्थ एवं पद्धति, रिसर्च पब्लिकेशन्स
7. S. K. Kochar – The teaching of History
8. Sharma G. R. – Teaching of History.

इकाई-13

इतिहास शिक्षण में नवाचार एवं उनका भविष्य
(Innovations is History teaching and its future)

इकाई की संरचना (Structure of Unit)

13.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims and Objectives)
13.1 दल शिक्षण (Team Teaching)
13.2 अभिक्रमिक अधिगम (Programme Learning)
13.3 सूक्ष्म-शिक्षण (Micro Teaching)
13.4 दूरदर्शन (Television)
13.5 भूमिका निर्वाह (Role Playing)
13.6 मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming)
13.7 संदर्भ ग्रंथ (References)

13.0 लक्ष्य एवं उद्देश्य
(Aims and Objectives)

इस उद्देश्य की सम्प्राप्ति पर विद्यार्थी -

1. इतिहास में विभिन्न नवाचारों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
2. दल-शिक्षण की आवश्यकता का अवबोधन कर सकेंगे।
3. अभिक्रमित अधिगम के सिद्धान्तों का निरूपण कर सकेंगे।
4. सूक्ष्म-शिक्षण के अर्थ एवं परिभाषा का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
5. दूरदर्शन की उपयोगिता की व्याख्या कर सकेंगे।
6. भूमिका-निर्वाह की उपयोगिता की व्याख्या कर सकेंगे।
7. मस्तिष्क-उद्वेलन की परिभाषा का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।

इतिहास शिक्षण में नवाचार (Innovative practices in Teaching of History) - विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार अत्यन्त तीव्र गति से हुआ है। परन्तु शिक्षण की गुणवत्ता (Quality) में दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। परिणामस्वरूप शिक्षण प्रक्रिया को अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने के लिये परम्परागत शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों के अलावा प्रभावशाली विधियों एवं प्रविधियों के विकास पर बल दिया जाने लगा। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये जिन युक्तियों (Tactics), आव्यूह रचनाओं (Strategies) तथा प्रविधियों का विकास किया गया उन्हें शिक्षा में नवाचार कहते है। नवाचार (Innovative practices or innovations) एक ऐसा शब्द हैं जिसमें नवीनता का

आभास होता है तथा इसमें शिक्षण अधिगम की गुणवत्ता एवं विशिष्टता के गुण निहित रहते है। नवाचार का मुख्य उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाना है।

नवाचार का अर्थ (Meaning of Innovation) -

नवाचार का शाब्दिक अर्थ है- नव+आचार अर्थात् नया आचरण व व्यवहार। नवाचार वह नवीन आचरण एवं परिवर्तन है जो पूर्व की स्थिति में नवीनता लायें। नवाचार का अंग्रेजी शब्द innovation है जिसका अर्थ है

1. नवीनता लाना (To introduce novelties)
2. परिवर्तन करना (To make Changes)

नवाचार वह है जो परिवर्तन लाये। शिक्षा एवं शिक्षा देने वाले शिक्षक तथा शिक्षा लेने वाले शिक्षार्थी में जो नये विचार, अवधारणायें, प्रयोग आदि विकसित किये जाते है वे नवाचार की श्रेणी में आते है। नवाचार केवल परिवर्तन नहीं है, यह एक ऐसा विचार है, जिसके लिए खोज एवं अभ्यास किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किये जाते है। नवाचार और उनका प्रयोग, परीक्षण व प्रयोग की कसौटी पर खरा उतरने के बाद प्रभावित निष्कर्ष देता है, अत: इसे विज्ञान भी कहा जाता है।

इस तरह शिक्षा में नवाचारों का अर्थ है, कोई नवीन कार्यक्रम, संघटनात्मक परिवर्तन (organizational Changes) पाठ्यचर्या में परिवर्तन, शिक्षण-अधिगम प्रविधि में रूपान्तरण, शिक्षक प्रशिक्षण प्रविधि में परिवर्तन तथा मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन जो वर्तमान अभ्यास से अलग हट कर हो। शोध उपलब्धियों प्रयोग, दार्शनिकों तथा विचारकों के नवीन विचार नवीन प्रौद्योगिकी तथा प्रचलित अभ्यास से जब मन भर जाता है या असंतोष होने लगता है तो नवाचार उत्पन्न होते हैं। कभी-कभी नवीन शैक्षिक सिद्धान्त व विचारधारायें भी नवाचारों को विकसित करते है।

यद्यपि बिना परिवर्तन के कोई नवाचार नहीं होते है किन्तु अधिकतर परिवर्तन नवाचार नहीं होते है। एक नवाचार जिसे किसी कारण विशेष उद्देश्य से मानव द्वारा आयोजित किया जाता है यह एक सुव्यवस्थित व सुविचारित शोध आधारित प्रक्रिया है। किन्तु यह कितनी नवीन है, जिससे इसे नवाचार कहा जा सके यह कहना बड़ा मुश्किल है इसको निश्चित करना होगा। कुछ नवाचारों को अभ्यास में लाने से पूर्व उनकी शैक्षिक क्षमता को देखना आवश्यक होता है। क्योंकि समस्त नवाचार शैक्षिक उपलब्धियों की प्राप्ति में सहायक होने चाहिये। किसी भी नवाचार की सफलता अध्यापकों के सकारात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। नवाचार को क्रियान्वित करने के लिये चिन्तन, समय, इच्छा शक्ति तथा अर्थ की आवश्यकता प्रमुख है। प्रत्येक नवाचार, नवीन शोध, अधिगम सिद्धान्त, शिक्षा नीति पहल तथा सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, पर्यावरणीय आवश्यकताओं का अनुभव करने के लिये हुआ है। सामान्यत: कक्षा में अध्यापक व्याख्यान द्वारा अधिगम की आशा करता है। वास्तव में यह क्रिया बोध और अनुप्रयोग पर बल नहीं देती है। छात्र की प्रकृति है कि वह बाह्य वातावरण के अनुभव द्वारा अर्थ निकालता है तथा पूर्व ज्ञान से नवीन अनुभवों को जोड़ता है। ये अर्थ निकालना ही अधिगम है। अत: छात्र केन्द्रित क्रिया आधारित अन्तःक्रियात्मक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रभावित शिक्षा आवश्यक है। जिसमें संवाद, विचार

विमर्श, प्रश्न पूछना, समस्या समाधान विधि का प्रयोग, खोज विधि पर बल तथ्यात्मक कार्यो पर बल देना आदि, छात्रों में विवेक व चिन्तन व इतिहास का वास्तविक ज्ञान विकसित करने में सहायक है।

जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली बन सकें। अन्य विषयों के भांति इतिहास शिक्षण में मुख्य रूप से निम्नलिखित नवाचारों का प्रयोग किया जा सकता है-

13.1 दल शिक्षण (Team Teaching)

दल प्रविधि का विकास सर्वप्रथम सन् 1955 में हावर्ड विश्वविद्यालय में हुआ था। इसके बाद यह प्रत्यय सन् 1960 में ब्रिटेन पहुँचा । ब्रिटेन में इसका विकास जे.फ्रिमैन ने किया। धीरे धीरे इसका उपयोग स्कूलों और कालेजों में किया जाने लगा। शिकागो विश्वविद्यालय के फासिज चेज ने दल शिक्षण का प्रभावशाली प्रयोग शिक्षण के लिये किया।

1. **दल शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning & Definition of Team Teaching)**

डेविड वारविक के शब्दों में दल शिक्षण संगठन का एक स्वरूप है जिसमें कई शिक्षक अपने साधनों रूचियों तथा दक्षताओं को इकट्ठा कर लेते है तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षकों की एक टोली द्वारा उन्हें प्रस्तुत किया जाता है और स्कूल की सुविधाओं के अनुसार प्रयोग किया जाता है।

"Team Teaching is a form of organization in which individual teachers decide to pool resources, interests and expertise in order to devise and implement the scheme of work suitable to the needs of their pupils and facilities of their schools. "

अर्थात् दल शिक्षण एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें दो या अधिक अध्यापक सहायक सामग्री के साथ या उसके बिना मिलकर योजना बनाते है, एक या अधिक कक्षा समूहों को उपयुक्त अनुदेशात्मक स्थान और अवधि के अनुसार निर्देश देते है और मूल्यांकन करते है जिससे दल के सदस्यों की विशिष्ट योग्यताओं का लाभ उठाया जा सकें।

2. **दल शिक्षण की विशेषताएं (Salient features of team Teaching) -**
   1. ये शिक्षण विधि मानी जाती है।
   2. इस प्रकार के शिल्प में दो या दो से अधिक शिक्षक शिक्षण कार्य में भाग लेते है।
   3. यह सहकारिता पर आधारित है। इसमें भाग लेने वाले शिक्षक अपने-अपने साधनों, योग्यताओं तथा अनुभवों को इकट्ठा करने का प्रयास करते हैं।
   4. इसमें स्कूल तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा उपलब्ध साधनों को ध्यान में अवश्य रखा जाता है।

5. इसमें लगे शिक्षण की योजना मिलकर बनाते है तथा उसके लागू भी मिलकर ही करते है। मूल्यांकन कार्य भी मिलकर ही किया जाता है।
6. इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रभावी बनाना होता है।
7. इसके दौरान एक विषय में किसी एक प्रकरण के विभिन्न पक्षों को एक-एक करके क्रम में दो से अधिक शिक्षक पढ़ाते है।
8. इसकी योजना लचीली होती है।
9. यह अनुदेशन परिस्थितियों को उत्पन्न करने की एक प्रविधि है।
10. इसमें शिक्षक अपनी क्रियाओं को स्वयं निर्धारित करते है।
11. इसमें शिक्षक की दूरी दूसरे शिक्षकों की दूरी से दूर हो जाती है।

3. दल शिक्षण के उद्देश्य (Purpose of Team Teaching) -

1. शिक्षक वर्ग में आकर्षक योग्यताओं, दक्षताओं और उनकी रूचियों का सर्वोत्तम उपयोग करना।
2. विद्यार्थियों की रूचियों तथा क्षमताओं के अनुसार कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाना।
3. अनुदेशन की गुणवत्ता में वृद्धि करना।
4. विद्यार्थियों के समूहीकरण में लचीलेपन को बढ़ाना।

4. दल शिक्षण की प्रक्रिया के सोपान (Steps of the process of the Team Teaching)-

1. **योजना बनाना (Planning) -** इसके अन्तर्गत दल शिक्षण की योजना तैयार की जाती है।
2. **व्यवस्था करना (Organization)** - इसके अन्तर्गत दल शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।
3. **परिणामों का मूल्यांकन करना (Evaluation of the results) -** इस चरण में विद्यार्थियों की उपलब्धियों के आधार पर उद्देश्यों की प्राप्ति के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है अर्थात् यह देखा जाता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति हुई अथवा नहीं।

5. दल शिक्षण के लाभ (Advantage of Team Teaching) -

1. **अनुदेशन की गुणवत्ता (Quality of Instruction) -** इससे अनुदेशन की गुणवत्ता में सुधार किया जाता है।
2. **आर्थिक दृष्टि से लाभदायक (Economical) -** इससे समय व शक्ति की बचत होती है तथा साथ ही कक्षा में अनुशासन स्थापित करने में भी सहायता मिलती है।
3. **समूहों का अनेक विशेषज्ञों से समझना (Exposures of Groups to more specialist) -** विद्यार्थी को अधिक विशेषज्ञों का सामना करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार विद्यार्थियों को विभिन्न शिक्षकों के विशिष्ट ज्ञान का लाभ मिल जाता हैं।

4. **शिक्षक के व्यावसायिक स्तर का विकास (Development of Professional Status of the Teacher) -** शिक्षकों का व्यावसायिक स्तर विकसित होता है क्योंकि इसमें शिक्षकों को नया साहित्य पढ़ने का अवसर मिलता है। वह दल शिक्षण में स्वयं भी बहु त परिश्रम करता है।
5. **मानव संबंधों का विकास (Development of Human Relations) -** दल शिक्षण में मानव संबंधों के विकास का अवसर मिलता है।
6. **स्वतंत्र चर्चा के अवसर (Opportunity for free discussion) -** इससे दल के सभी सदस्य विद्यार्थियों को चर्चा में भाग लेने के कई अवसर मिलते है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में विचारों को उद्दीपन प्रदान किया जा सकता है। विद्यार्थियों और शिक्षकों में भाग लेने की शक्तिशाली इच्छा और उत्तरदायित्व का विकास होता है।
7. **लचीलापन (Flexibility) -** इसके द्वारा स्कूल भवन, स्कूल स्टाफ तथा स्कूल के अन्य साधनों को बड़े ही लचीले ढंग से उपयोग किया जा सकता है, साथ ही समय सारणी से छुटकारा मिलता है।
8. **मूल्यांकन (Evaluation) -** इसका परिलाभ मूल्यांकन के चरण में बहु त उठाया जा सकता है। इसमें सभी शिक्षकों को एक-दूसरे शिक्षण के कार्य का मूल्यांकन करने का अवसर मिल जाता है तथा आवश्यक सुझाव दिये जा सकते है ताकि शिक्षण में आवश्यक सुधार किये जा सकें। दल शिक्षण द्वारा सभी शिक्षकों को एकत्रित किया जा सकता है और उन्हें उनके शिक्षण के बारे में बताया जा सकता है।

6. दल शिक्षण की सीमाएं (Limitation of Team Teaching) -

1. **खर्चीली विधि (Costly Method)** - पारस्परिक शिक्षण की तुलना में दल शिक्षण का खर्चा प्रति विद्यार्थी के हिसाब से बहु त अधिक पड़ता है।
2. **भवन का अभाव (Lack of accommodation) -** परम्परागत शिक्षण की अपेक्षा दल शिक्षण में अधिक कमरे तथा फर्नीचर आदि की आवश्यकता होती है। अधिक कमरों के अलावा कमरे बड़े भी होने चाहिए। दल शिक्षण के लिये पर्याप्त स्थान तथा भवन के होने के कारण दल शिक्षण की प्रभावशीलता संदेह शील हो जाती है।
3. **सहयोग का अभाव (Lack of Co-operation) -** दल शिक्षण का आधार ही सहयोग है। लेकिन कई बार शिक्षक दूसरे शिक्षकों को सहयोग प्रदान करने से कुछ हिचकिचाते है।
4. **शक्ति और उत्तरदायित्वों का विभाजन (Delegation of Power and responsibilities) -** दल शिक्षण में जो शक्तियों और उत्तरदायित्वों के विभाजन की आवश्यकता होती है वह वर्तमान स्कूल व्यवस्था में नहीं है क्योंकि कोई भी व्यवस्थापक अपनी शक्तियों को दूसरे को प्रदान करना पसंद नहीं करेगा।
5. **छोटे समूह की गतिशीलता की अवहेलना (Disregard to the dynamic of small group)-** दल शिक्षण के दौरान स्कूल स्टाफ एक टीम की तरह कार्य नहीं कर सकता।

13.2 अभिक्रमित अधिगम
(Programme Learning)

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र के बीच अन्त:क्रिया अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। समुचित रूप से अन्त:क्रिया न होने पर शिक्षक अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रहता है। समुचित अन्त:क्रिया हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने छात्रों पर भली-भांति ध्यान दें किन्तु आज निरन्तर बढ़ती जनसंख्या तथा ज्ञान के विविध क्षेत्रों में तेज गति से हुए विकास के कारण प्रत्येक छात्र पर शिक्षक ध्यान देने पर स्वयं को असमर्थ अनुभव कर रहा है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षण को ऐसी नवीनतम विधियों की खोज की उन्हीं नवीनतम शिक्षण पद्धतियों में से एक है -

अभिक्रमित अनुदेशन। अभिक्रमित अनुदेशन तथा अभिक्रमित अधिगम को एक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, क्योंकि अधिगम की सफलता अनुदेशन पर भी आधारित होती है। शिक्षण की दृष्टि से जब तक अनुदेशों पर ध्यान दिया जाता है, जब तक यह अभिक्रमित अनुदेशन का रूप होता है और जब अनुदेशों के आधार पर छात्र कुछ सीखने का प्रयास करता है तो यह अभिक्रमित अधिगम कहलाता है।

1. **अभिक्रमित अधिगम का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and definition of programmed learning) -** अभिक्रमित शब्द का अर्थ है-क्रमबद्ध अथवा योजनाबद्ध। इस प्रकार योजनाबद्ध अधिगम या अभिक्रमित अधिगम में छात्रों के समक्ष विषयवस्तु को अनेक छोटे-छोटे एवं नियोजित किये गये खण्डों एवं सोपानों में प्रस्तुत किया जाता है। इनकी संरचना में शिक्षण सूत्रों का अनुसरण किया जाता है। इसके द्वारा छात्र स्वयं ज्ञान अर्जित करता हुआ ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ता है। इस प्रयास में छात्र को उसके द्वारा किये गये कार्य की तुरन्त पुष्टि भी करा दी जाती है। अभिक्रमित अध्ययन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने हेतु विद्वानों द्वारा दी गयी कुछ परिभाषाएं यहां प्रस्तुत की जा रही है।

"Programmed Learning is a term sometimes used synonymously to refer to the broader concept of auto instructional methods."

-D.L.Cook

डी. एल. कूक के शब्दों में अभिक्रमित अधिगम आत्म अनुदेशन विधियों की विस्तृत अवधारणा को स्पष्ट करने के लिये प्रयुक्त एक पर्याय है।

"Programmed learning as a popularly understood is method of giving individualized instruction in which the student is active and proceeds at his own pace and is provided with immediate knowledge of results."

सुसन मारकिल, अभिक्रमित अधिगम वैयक्तिक अनुदेशन की एक विधि है जिसमें छात्र को स्वयं को सक्रिय रखते हुए अपनी गति से आगे बढ़ाता है और परिणामों की जानकारी भी तत्काल प्राप्त करता जाता है।

2. अभिक्रमित अधिगम की विशेषताएं (Characteristics of programmed learning) -

1. कठिन बात को छोटे-छोटे भागों में बांटकर छात्रों के लिए सरल बनाना।
2. यह स्व-शिक्षण की पद्धति है। जिसमे पाठ्यपुस्तक कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर की जाती है।
3. यह छात्रों में त्रुटियों, क्षमताओं एवं योग्यताओं का अध्ययन कर मूल्यांकन के अवसर प्रदान करती है।
4. इसमें शिक्षक की अनुपस्थिति में पाठ्य वस्तु अधिक तार्किक एवं नियंत्रित छोटे खण्डों में बांटकर छात्रों के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं
5. यह दृश्य साधनों का प्रयोग न होकर अनुदेशन तकनीकी का अंग है।
6. इसमें छात्र -के समक्ष श्रृंखलाबद्ध विषयवस्तु प्रस्तुत की जाती है।

3. अभिक्रमित अधिगम के सिद्धान्त (Principles of programmed learning) -

1. **लघुपदों का सिद्धान्त -** सर्वप्रथम विषयवस्तु छोटे-छोटे पदों में विभाजित कर दिया जाता है। यह पद अर्थपूर्ण होते है तथा यह प्रयत्न रहता है कि कक्षा कमजोर छात्र भी एक बार में प्रस्तुत विषय वस्तु को आसानी से समझ सकें। विषयवस्तु की छोटे से अंश या पद को फ्रेम कहते है।
2. **सक्रिय सहयोग का सिद्धान्त -** इस चरण में छात्र को कुछ क्रियात्मक कार्य जैसे रिक्त स्थानों की पूर्ति करना, एक लघु प्रश्न का उत्तर लिखना अथवा वाक्य बनाना इत्यादि। इस प्रकार छात्र स्वयं करके सीखने का प्रयत्न करता है तथा उसे प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है।
3. **प्रति-पुष्टि का सिद्धान्त -** अधिगम तथा अभिप्रेरणा एक-दूसरे से संबंधित है। छात्र जितना अधिक अभिप्रेरित होगा सीखना उतना ही तेज गति से वह स्थायी होगा। अभिक्रमित अनुदेशन में छात्र को प्रत्येक पद में प्रश्न के उत्तर देने पड़ते हु ए यह उत्तर सही है या गलत है इसका ज्ञान उसे तत्काल हो जाता है।
4. **स्वगति का सिद्धान्त -** अभिक्रमित अधिगम में प्रत्येक छात्र को अपनी गति से सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है। सभी के पास अपनी-अपनी अनुदेशन पुस्तिका होती है।
5. **स्व-मूल्यांकन का सिद्धान्त -** इसमें छात्र अपने अधिगम का स्वयं ही मूल्यांकन कर सकता है। छात्र को इसमें न केवल अपनी उपलब्धियों को ही पता चलता है वरन् वह अपनी उपलब्धियों का साथ -साथ मूल्यांकन करता चलता है।
6. **तार्किक-क्रम का सिद्धान्त -** इसमें छात्र स्वयं अध्ययन करता है और अध्यापक उसका मार्गदर्शक होता है। विषयवस्तु को छात्रों के समक्ष किस क्रम में प्रस्तुत किया, जिससे छात्र उसे आसानी से समझ सकें। विषयवस्तु को कितनी लघु इकाईयों में बांटा जाए और उसके फ्रेम कैसे तैयार किये जाये ताकि अभिक्रमित अधिगम अपने उद्देश्य की प्राप्ति हो सकें। इन सब प्रश्नों के समाधान हेतु तर्को का सहारा लिया जाता है।

एडवर्ड एफ.ओ.डे. ने अभिक्रमित अधिगम के सिद्धान्तों को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया

अभिक्रमित अधिगम सिद्धान्त

Principles of Progammed Learning

प्रमुख सिद्धान्त Main Principal

1. उद्‌देश्यों के स्पष्टीकरण का सिद्धान्त
2. अनुभाविक मूल्यांकन का सिद्धान्त
3. व्यक्तिगत प्रयत्न का सिद्धान्त
4. लघु पद प्रयत्न का सिद्धान्त
5. क्षेत्रीय अनुभव का सिद्धान्त
6. स्वगति का सिद्धान्त

गौण सिद्धान्त Secondary Principal

1. बाह्म प्रतिउत्तर का सिद्धान्त
2. आशु पृष्ठ–पोषण का सिद्धान्त
3. लघु सोपानों का सिद्धान्त
4. क्रमबद्धता का सिद्धान्त
5. पृष्ठ–पोषण का सिद्धान्त

4. अभिक्रमित अधिगम वस्तु का निर्माण (Preparation of Programme Learning Material)-

1. **तैयारी -** इकाई अथवा प्रकरण का चयन, विषय सामग्री की रूपरेखा का निर्माण, उद्देश्य लेखन, व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में उद्देश्य निर्धारण, व्यवहार का परीक्षण, उद्देश्यों का स्पष्टीकरण, परीक्षण तैयार करना एवं लेखन।
2. **अभिक्रमिक लेखन -** फ्रेम निर्धारण तथा अनुदेशन कौशल का निर्धारण।
3. **परीक्षण तथा मूल्यांकन -** अपने अभिक्रम का अवलोकन, विद्‌वानों के सुझावों हेतु अभिक्रम भेजना अथवा थोड़े छात्रों को अपने अभिक्रम देकर उनसे अनुक्रिया प्राप्त कर उसका मूल्यांकन करना।

5. अभिक्रमित अधिगम के गुण (Advantage of Programmed learning) -

1. इससे छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास होता है।
2. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखकर प्रत्येक छात्र को उसकी गति, क्षमता व योग्यता के अनुसार पढ़ने के अवसर मिलते है।
3. इसके छात्रों को मूल्यांकन सरल ढंग से किया जाता है।
4. शिक्षक को कक्षा का बहुमूल्य समय छात्रों की त्रुटियों का पता लगाने में नष्ट नहीं करना पड़ता।
5. इसके द्‌वारा छात्र को सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है।
6. इसमें विद्‌यार्थी उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण नहीं किये जाते अपितु वे स्वयं आत्म मूल्यांकन कर अपना विकास करते है।

6. अभिक्रमित अधिगम की सीमाएं (Limitations of Programmed Learning) -

1. इसकी सामग्री तैयार करने की सुविधाएं अधिकांश विद्यालय में उपलब्ध नहीं है।
2. इसकी सामग्री तैयार करना श्रम-साध्य है तथा इसमें निपुणता की आवश्यकता है जो सामान्य शिक्षक से अपेक्षित नहीं है।
3. इसका प्रयोग केवल व्याख्यात्मक पाठ्य वस्तु के लिये किया जाता है तथ्यात्मक पाठ्य वस्तु के लिये नहीं।
4. छात्रों को अनुक्रिया की स्वतंत्रता नहीं मिलती क्योंकि छात्र व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करते है ।
5. इससे सामाजिक प्रेरणा नहीं मिलती है।

13.3 सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)

वर्तमान काल में यह धारणा बन रही है कि शिक्षक केवल जन्मजात ही नहीं होते बल्कि बनाये भी जा सकते है। शिक्षक तैयार करने का उत्तरदायित्व प्रशिक्षण संस्थाओं का है। इस कार्य में शैक्षिक तकनीकी की प्रमुख भूमिका रही है। इसी धारणा के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवहार में सुधार करना संभव है। शिक्षक व्यवहार में सुधार के लिये तथा प्रभावशाली शिक्षक तैयार करने के लिये जिस विधि का आविष्कार किया गया है उसे सूक्ष्म शिक्षण का नाम दिया गया है। सूक्ष्म शिक्षण का विकास ऐलन ने सन् 1983 में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा व्यवहारों, शैक्षणिक क्रियाओं के विकास के लिए किया। इन शिक्षण व्यवहारों या शिक्षण क्रियाओं को शिक्षण कौशलों का नाम दिया गया है। सूक्ष्म शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्र अध्यापक को सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण देना है।

13.3.1. सूक्ष्म-शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएं (Meaning and definitions of Micro-Teaching) -

1. **डी ऐलन के शब्दों में -** 'सूक्ष्म शिक्षण समस्त को लघु क्रियाओं में बांटना है।"

   "Micro-Teaching is the scaled down teaching encounter."

   – **D. Allen**

2. **ऐलन और ईव -** "यह वो नियंत्रित अभ्यास की प्रणाली है जो विशिष्ट व्यवहार पर केन्द्रित होना और शिक्षण को नियंत्रित परिस्थितियों में संभव बनाती है।"

“A system of controlled practice that makes it possible to concentrate on specific teaching behavior and to practice teaching under controlled conditions.”

– Allen & Eve

13.3.2. सूक्ष्म-शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएं (Assumption of Micro-Teaching) -

1. सूक्ष्म-शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।
2. इस विधि द्वारा शिक्षण कौशलों का विकास किया जाता है।
3. सूक्ष्म-शिक्षण द्वारा शिक्षा की जटिलताओं को कम किया जाता है।
4. सूक्ष्म-शिक्षण पूर्ण रूप से व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम है।
5. इसमें पृष्ठपोषण द्वारा अभ्यास को नियंत्रित किया जाता है।
6. सूक्ष्म-शिक्षण की इस विधि में प्रतिपुष्टि विभिन्न साधनों के द्वारा की जाती है।

13.3.3. सूक्ष्म-शिक्षण प्रविधि के घटक (Components of Micro-Teaching) - इस प्रविधि में निम्नलिखित घटकों का भाग देना अनिवार्य होता है । किसी भी घटक की अनुपस्थिति में इस प्रविधि की सफलता संदिग्ध हो जाती है।

1. **सूक्ष्म-शिक्षण की परिस्थिति (Micro-Teaching Situations) -** इस घटक में कक्षा का आकार, पाठ्य वस्तु की लंबाई तथा शिक्षण अवधि आदि शामिल है। कक्षा में 5 से 10 तक विद्यार्थी होते है तथा शिक्षण अवधि 6 मिनट तक की होती है।
2. **शिक्षण कौशल (Teaching Skill) -** प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्र-अध्यापक के शिक्षण कौशलों के विकास की ओर उचित ध्यान दिया जाता है।
3. **छात्र-अध्यापक (Student-Teacher) -** अध्यापक का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को छात्र-अध्यापक कहा जाता है। प्रशिक्षण के दौरान इनमें विभिन्न योग्यताओं का विकास किया जाता है। जैसे कक्षा प्रबंध की क्षमता, अनुशासन स्थापित करने की क्षमता इत्यादि।
4. **प्रति-पुष्टि के साधन (Feed Back Devices) -** छात्र-अध्यापकों के व्यवहारों में परिवर्तन लाने के लिये उन्हें प्रति-पुष्टि प्रदान करनी आवश्यक होती है। वे प्रति-पुष्टि वीडियो, ऑडियो टेप तथा प्रति-पुष्टि प्रश्नावली द्वारा की जा सकती है।
5. **स्व शिक्षण प्रयोगशाला (Micro-Teaching Laboratory) -** सूक्ष्म-शिक्षण के लिये प्रयोगशाला को होना भी आवश्यक है। इनमें प्रति-पुष्टि की आवश्यक सुविधाएं संचित की जा सकती है।

13.3.4. सूक्ष्म-शिक्षण के पद (Steps of Micro-Teaching) - सूक्ष्म-शिक्षण प्रक्रिया के कुछ विशिष्ट प्रकार के पद होते है जो कि निम्नांकित है।

1. **विशिष्ट कौशलों को परिभाषित करना (Defining a specific skill)-** कौशल को शिक्षण व्यवहार के रूप में परिभाषित करना तथा इस परिभाषित कौशल ज्ञान छात्र-अध्यापक को कराया जाता है। कौशल के साथ-साथ उन उद्देश्यों को निर्धारित करना भी शामिल है जिनको उस कौशल के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
2. **कौशल का प्रदर्शन (Demonstration of the skill) -** इस पद के अन्तर्गत सूक्ष्म-शिक्षण पाठों के माध्यम से कौशल प्रदर्शन किया जाता है। यह प्रदर्शन प्रशिक्षक स्वयं करता है या उस कौशल के बारे में वीडियों फिल्म दिखाकर करता है।

3. **लघु-पाठ योजनाएं (Micro-Lesson Plans) -** इस पद के अन्तर्गत छात्र-अध्यापक किसी विशिष्ट कौशल का प्रयोग करते हुए संबंधित लघु-पाठ योजनाएं तैयार करता है। ये पाठ योजनाएं 6 मिनट की अवधि के लिये होती है।
4. **लघु-समूह को पढ़ाना (Teaching a small group) -** इस पद में छात्र-अध्यापक विद्यार्थियों के छोटे समूह को पढ़ाता हैं। इसमें अध्यापक के अलावा छात्र-अध्यापक के अन्य साथी भी शिक्षण कार्य का निरीक्षण कर सकता है। पढ़ाने वाले छात्र-अध्यापक के शिक्षण कार्य समाप्त होने पर ही उसके पाठ के बारे में विचार-विमर्श किया जाता है।
5. **प्रति-पुष्टि का पृष्ठपोषण (Feed-Back) -** उपरोक्त पद के बाद तथा छात्र-अध्यापक की समीक्षा के विश्लेषण के पश्चात् जो भी सूचनाएं या सुझाव छात्र-अध्यापक को दिये जाते हैं उन्हें प्रति-पुष्टि या पृष्ठपोषण कहा जाता है।
6. **पुन:नियोजन पुन:शिक्षण और पुन:मूल्यांकन करना (Re-Planning, Re-teaching,Re-Evaluation) -** पृष्ठपोषण के आधार पर छात्र-अध्यापक पाठ की पुन: योजना बनाता है, फिर पुन: नियोजित पाठ का पुन: शिक्षण करता है और तत्पश्चात पुन: शिक्षण मूल्यांकन किया जाता है।

इस प्रकार बार-बार पाठ को नियोजित करने, बार-बार शिक्षण करने तथा बार-बार मूल्यांकन करने प्रति-पुष्टि प्रदान करने का चक्र तब तक चलता रहता है जब तक वह छात्र अध्यापक उस शिक्षण कौशल का विकास नहीं कर लेता।

13.3.5. सूक्ष्म-शिक्षण के गुण (Merits of Micro-Teaching) -

1. इस प्रविधि का सबसे बड़ा गुण यह है कि इसे महाविद्यालय में ही प्रयोग किया जा सकता है न कि स्कूलों में जाने की आवश्यकता।
2. इस प्रविधि के अन्तर्गत छात्रों की संख्या कम होती है तथा शिक्षण अवधि भी कम होती है।
3. विषयवस्तु को छोटी-छोटी इकाईयों में बांटा जाता है जिनका शिक्षण सरल हो जाता है।
4. इसके द्वारा अनुशासनहीनता की समस्या पर भी नियंत्रण रखा जाता है।
5. इस प्रविधि में एक समय में एक ही शिक्षण कौशल पर ध्यान दिया जाता है।
6. इस प्रविधि में तात्कालिक प्रति-पुष्टि की व्यवस्था होती है।
7. सूक्ष्म-शिक्षण चक्र में पुन: नियोजन, पुन: शिक्षण तथा पुन: मूल्यांकन की सुविधा भी होती है।
8. इस प्रविधि एक ही छात्र-अध्यापक को दो या दो से अधिक शिक्षण व्यवहारों की तुलना करने का अवसर मिलता है।

13.3.6. सूक्ष्म-शिक्षण की कमियां (Demerits of Micro-Teaching) -

1. छोटे-छोटे प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रयोगशाला की व्यवस्था करना महंगा पड़ता है।
2. सूक्ष्म-शिक्षण प्रविधि में प्रशिक्षण के लिये पर्याप्त समय की आवश्यकता रहती है।
3. सूक्ष्म-शिक्षण में प्रयोग करने के लिये उपकरणों का प्रबंध करना सभी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिये संभव नहीं होता है।

4. यह विधि स्वयं में संपूर्ण विधि नहीं है। यह विधि तभी लाभदायक सिद्ध हो सकती है यदि इस विधि का प्रयोग अन्य विधियों कें साथ किया जायें।
5. प्रशिक्षकों को भी इस विधि के प्रयोग का उचित प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक होता है जिसकी सदा कमी रहती है।

13.3.7. सूक्ष्म-शिक्षण प्रणाली में सावधानियां (Precaution in Micro-Teaching)-

1. इस प्रणाली में उद्देश्यों की स्पष्टता का होना अति-आवश्यक है।
2. सूक्ष्म-शिक्षण में एक बार में केवल एक ही कौशल से संबंधित पाठ योजना तैयार की जानी चाहिये।
3. अभ्यास करने से पहले छात्र-अध्यापक को अपनी पाठ योजना अवश्य तैयार कर लेनी चाहिये।
4. सूक्ष्म-शिक्षण प्रणाली में आदर्श पाठ प्रस्तुत करने अति आवश्यक होते हैं।
5. इसमें केवल आलोचना ही नहीं करनी चाहिये बल्कि छात्र-अध्यापक को अपने शिक्षण कौशल को सुधारने के लिये ठोस सुझाव देने चाहिये।

13.4 दूरदर्शन द्वारा इतिहास शिक्षण (History teaching through Television)

वर्तमान युग में दूरदर्शन का इतिहास शिक्षण के क्षेत्र में व्यापक तथा अत्यन्त ही सफल प्रयोग हो रहा है । इतिहास शिक्षण के लिये दूरदर्शन का प्रयोग बड़ी सरलता, सफलता तथा प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है । दूरदर्शन पर रामायण, महाभारत, चाणक्य जैसे सीरियलों ने हमें इतिहास की अच्छी एवं वास्तविक जानकारी दी है । भारत एक खोज इतिहास विषय पर अमूल्य जानकारी दे रहा है । इसके अलावा और भी अनेक सीरियल जैसे टीपू सुल्तान की तलवार, श्रीकृष्ण, विद्रोह इतिहास की अच्छी जानकारी देते है । इसके अलावा यू.जी.सी, कार्यक्रमों में भी उल्लेखन, दस्तावेजों की सुरक्षा, संग्रहालय, इतिहास के स्त्रोत आदि पर कार्यक्रम समय-समय पर देखे जा सकते हैं । समय-समय पर इतिहासकारों की इतिहासपरक वार्ताएं भी दूरदर्शन पर प्रस्तुत की जाती है, जो इतिहास की अच्छी जानकारी हमें देती है ।

13.4.1. इतिहास शिक्षण में दूरदर्शन का उपयोग (Uses of Television in History Teaching)- इतिहास शिक्षण के लिए दूरदर्शन का उपयोग करते समय कुछ आवश्यक बातें ध्यान में रखनी चाहिये जो कि निम्नांकित है -

1. **कार्यक्रमों का चयन (Selections of the Programs)** - इतिहास शिक्षण के लिए दूरदर्शन कार्यक्रम का चयन बड़ी सावधानी तथा सतर्कता के साथ किया जाना चाहिए। इसके लिए निम्नांकित तथ्यों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए -

अ. कार्यक्रम छात्रों के पाठ्यक्रम से संबंधित हो।

ब. कार्यक्रम की व्यापक योजना बनायी जायें।

स. कार्यक्रम के लिये विद्वानों की सूची बनायी जायें।

द. कार्यक्रम को प्रसारित करने का निश्चित तथा सुविधाजनक समय निश्चित होना चाहिए।

2. **कार्यक्रमों की तैयारी (Preparations of Programs) -** इतिहास शिक्षण के लिए दूरदर्शन कार्यक्रम प्रसारण के लिए आवश्यक है कि सभी प्रकार की आवश्यक तैयारी पूर्व में ही कर ली जाए।

3. **कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण (Presentations of Programs) -**

अ. कार्यक्रमों में सम्मिलित विषयवस्तु छात्रों के स्तर तथा उनके पाठ्यक्रमानुसार हो।

ब. अधिक लम्बे कार्यक्रम प्रस्तुत न किये जाए।

स. कार्यक्रम को संगीत आदि के माध्यम से आकर्षक बनाया जाए।

द. दूरदर्शन के सामने छात्रों के बैठने की समुचित व्यवस्था हों।

य. दूरदर्शन जिस कमरे में रखा हो उस कमरे में मध्यम प्रकाश की व्यवस्था हों।

र. आवाज पर्याप्त होनी चाहिए।

ल. प्रसारण के समय इतिहास शिक्षक को कमरे में ही रहना चाहिए, ताकि छात्रों की शंकाओं का
समाधान कर सकें ।

4. **कार्यक्रमों का मूल्यांकन (Evaluation of programs) -** दूरदर्शन के कार्यक्रमों के मूल्यांकन को भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे इन कार्यक्रमों की सफलता का पता चल सके तथा भविष्य में उन्हें और अधिक उपयोगी बनाने के प्रयास किये जा सकें।

13.4.2. दूरदर्शन शिक्षण से लाभ (Merits through Television Teaching) -

1. इनमें इतिहास शिक्षण सरस, प्रभावी तथा मनोरंजक बनता है।
2. इतिहास शिक्षण के लिए छात्रों को प्रेरणा मिलती हैं।
3. दूरदर्शन कार्यक्रम उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा तैयार किये जाते है।
4. इनसे विषय संबंधी विस्तृत जानकारी मिलती है।
5. दूरदर्शन से विषय से संबंधित नवीनतम, अन्वेषण तथा खोजों के परिणाम सहज ही छात्रों तक पहुंचाये जा सकते है।
6. इससे एक ही समय में बहुत बड़ी संख्या में छात्रों को इतिहास विषय की जानकारी दी जा सकती है। इससे समय, साधन, श्रम की बचत होती है।

13.5 भूमिका निर्वाह
(Role Playing)

यह अनुरूपीकृत शिक्षण का एक रूप है इसका प्रयोग दो रूपों में किया जाता है जो कि निम्नांकित है-

1. शिक्षण कौशलों के विकास के लिए।
2. शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए।

जब हम भूमिका निर्वाह का प्रयोग शिक्षण कौशलों के विकास के लिए करते है तो एक छात्राध्यापक अपने साथी अन्य छात्राध्यापकों को किसी छोटी कक्षा का छात्र मानकर कोई विषय पढ़ाता है। यहां पर एक छात्राध्यापक अध्यापक की भूमिका निभाता है और अन्य साथी छात्राध्यापक किसी छोटी कक्षा के छात्रों की भूमिका निभाते है और अध्यापक की भूमिका निभाने वाला छात्राध्यापक पढ़ाता है तथा बाद में उसके शिक्षण की समीक्षा की जाती है। इस तरह से उसमें शिक्षण का विकास किया जाता है।

दूसरे रूप में यह लघु नाटक का एक रूप है, जिसमें वास्तविक कक्षा शिक्षण के समय कोई एक या दो तीन छात्र संबंधित विषय को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करते है। इसे नाटक नहीं कह सकते, क्योंकि इसमें किसी छोटी घटना, तथ्य आदि का प्रदर्शन किया जाता है। उदाहरणार्थ किसी छात्र को शिवाजी की वेशभूषा में कक्षा के सामने प्रस्तुत करना या प्लासी के युद्ध की व्यूह रचना में छात्रों को खड़ा कर देना या सिकन्दर व पोरस के संवादों को कक्षा के सामने दो छात्रों से बुलवाना।

13.5.1 भूमिका निर्वाह का सिद्धान्त (Principle of Role Playing) - भूमिका निर्वाह निम्नांकित सिद्धान्तों पर आधारित है।

अ. यह प्रेरणा के सिद्धान्त पर आधारित है।

ब. छात्र स्वयं करके अधिक सीखता है।

स. छात्रों को सीखने के अधिक अवसर दिये जाते है।

द. इसमें पृष्ठ पोषण का प्रयोग किया जाता है।

13.5.2 भूमिका निर्वाह के सोपान (Steps of Role Playing) - भूमिका निर्वाह के प्रमुख पांच सोपान है जो कि निम्नांकित है -

अ. कार्यक्रम की रूपरेखा बनाना।

ब. पूर्व तैयारी।

स. कक्षा की तैयारी।

द. प्रस्तुतीकरण।

य. समीक्षा का मूल्यांकन।

13.5.3 भूमिका निर्वाह के लाभ (Demerits of role playing) - इतिहास शिक्षण में भूमिका निर्वाह के अनेक लाभ हैं । जिनमें प्रमुखत: निम्नांकित है -

अ. शिक्षण कार्य वास्तविकता के निकट होता है।

ब. शिक्षण की व्यूह रचना क्रिया प्रदान है तथा स्वयं करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है।

स. यह एक नवाचार का रूप है, जो शिक्षण को आकर्षक तथा सरल बनाता है।

द. यह शिक्षण में नवीनता लाता है।

य. इसमें छात्रों को अधिक से अधिक तैयारी करने के अवसर मिलते है।

13.5.4 भूमिका निर्वाह की सीमाएं (Precautions of role Playing) -

अ. इसमें संपूर्ण वातावरण बनावटी होती है। इसलिए वास्तविक शिक्षण की कल्पना व्यर्थ है।

ब. शिक्षण में अधिक समय लगता है।

स. कभी-कभी अनुशासनहीनता की समस्या आने की संभावना बनी रहती है।

13.5.5 भूमिका निर्वाह में सावधानियां -

अ. इसमें विषय का चयन छात्रों की मनो-शारीरिक अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।

ब. इसमें हमेशा कुछ ही छात्रों को कार्य नहीं दिया जाना चाहिए।

स. इसमें कक्षा व्यवस्था की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

द. अनुशासन भंग न हो इसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

य. शिक्षण के उद्देश्यों को सदा ध्यान में रखा जाना चाहिए।

13.6 मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming)

यह शिक्षण आव्यूह रचना एक प्रजातांत्रिक है। इस विधि की अवधारणा यह है कि एक व्यक्ति या बालक की अपेक्षा उन बालकों का समूह अधिक उत्तम विचार प्रस्तुत कर सकता है। इस शिक्षण प्रविधि का प्रारूप समस्या-केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत बालकों को सामूहिक रूप से एक समस्या दे दी जाती है. और उनसे उस समस्या पर वाद-विवाद करने को कहा जाता है। वाद-विवाद के दौरान जो विचार उनके मस्तिष्क में आए उनको स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास करें। यह आवश्यक नहीं है कि बालकों द्वारा प्रस्तुत सभी विचार पूर्णतया से सार्थक हो। इस प्रकार इस प्रविधि में समूह की गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जाता है। इस समूह के द्वारा उस समस्या का विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मस्तिष्क उद्वेलन इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बालकों को अन्तःक्रिया द्वारा अधिक से अधिक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। अत: इस प्रविधि का उपयोग करते समय ऐसे साधनों का उपयोग किया जाता है कि बालकों के मस्तिष्क को सामूहिक रूप से विचार-विमर्श के लिए गति प्रदान कर सकें ।

यह आव्यूह रचना बालक के संज्ञानात्मक पक्ष के विकास में अधिक सहायक सिद्ध होती है। इसमें बालक का मस्तिष्क पूर्णरूप में सक्रिय रहता है जिससे उसे अपनी मानसिक शक्तियों को विकसित करने का अवसर मिलता है।

इसके द्वारा बालक के भावात्मक पक्ष का भी विकास संभव होता है। क्योंकि इसमें बालक एक समूह में रहकर समस्या के विचार-विमर्श करते है। इसमें बालकों में आत्मविश्वास, वास्तविकता तथा सृजनात्मकता आदि अच्छे गुणों का विकास करने में सहायता मिलती है। अत: अध्यापक को इस प्रविधि का कक्षा में समय-समय पर प्रयोग करना चाहिए जिससे बालकों में विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क तथा सृजनात्मक क्षमताओं का अधिक से अधिक विकास हो सकें। इसके द्वारा छात्रों में सामूहिक रूप से सीखने तथा कार्य करने की आदत करने का विकास होता है। इस प्रकार इतिहास शिक्षा में इस प्रविधि का अपना एक विशेष महत्व है।

प्रगति का स्वमूल्यांकन

बहुवैकल्पिक प्रश्न -

निम्नांकित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए -

1. दल-शिक्षण में सदस्यों की संख्या होती है -

(अ) एक (ब) दो (स) दो या दो से अधिक (द) इनमें से कोई नहीं

2. भूमिका-निर्वाह का प्रयोग कितने रूपों में किया जाता है -

(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पाँच

अतिलघुत्तरीय प्रश्न -

1. दल-शिक्षण के कोई दो उद्देश्य लिखिए।
2. अभिक्रमित अधिगम की परिभाषा लिखिए।
3. भूमिका निर्वाह का प्रयोग किन दो रूपों में किया जाता है।
4. सूक्ष्म-शिक्षण की परिभाषा देकर समझाइये।

लघुत्तरीय प्रश्न–

1. इतिहास शिक्षण में दल शिक्षण की क्या आवश्यकता है ।
2. अभिक्रमित अधिगम की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।
3. सूक्ष्म–शिक्षण के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए ।
4. मस्तिष्क उद्वेलन से आप क्या समझते हैं ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. इतिहास शिक्षण को सफल बनानेके लिए दल शिक्षण की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
2. अभिक्रमित अधिगम का अर्थ बताते हुये उसके प्रमुख सिद्धान्तोका वर्णन कीजिए।
3. इतिहास शिक्षण में दूरदर्शन की उपयोगिता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. भूमिका निर्वाह किसे कहते है? इतिहास शिक्षण में उसकी उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

13.7 संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Binning & Binning — Teaching the Social studies in Secondary Schools, McGraw Hill Book Co., New York,Toronto.
2. Govt. of India — The Contents of History in Indian Schools, Ministry of Education, Pamphlet No.9. New Delhi

3. Hill,C.P. — Suggestion of the Teaching of History, U.N.E.S.C.O. Printed in France.

4. त्यागी गुरू शरणदास — इतिहास शिक्षण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

5. अरोड़ा, के एल — टीचिंग ऑफ हिस्ट्री, प्रकाश ब्रदर्स, एज्यूकेशनल पब्लिकेशर्स, लुधियाना।

इकाई-14

शिक्षा की शब्द सूची
Glossary of Education

'अ'

1. **अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव (International Understanding) -** राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता हेतु अच्छे विचार।

2. **अवबोध (Understanding) -** प्राप्त ज्ञान का स्पष्टीकरण, वर्गीकरण, उदाहरण, कारण, परिणाम आदि मानसिक क्रियाएँ।

3. **अभिवृत्ति (Attitude) -** किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक दृष्टिकोण।

4. **अभिरुचि (Interest) -** विद्यार्थी में विषय के प्रति रुचि जागृत करना।

5. **अमेरिकन उपागम (American Approach) -** उद्देश्यों की प्रमुखता, छात्र केन्द्रित शिक्षण।

6. **अनौपचारिक रूप(Informal Approach)-** शिक्षा प्राप्ति के लिए व्यक्ति, स्थान, समय, साधन आदि की स्वतंत्रता।

7. **अनुदेशन (Instruction) -** कक्षा-कक्ष में किसी विषय के ज्ञान हेतु सूचनाएँ प्रदान करना, यह केवल एक पक्षीय व्यवहार है।

8. **अनुदेशनात्मक सामग्री (Instructional Material) -** पाठ्यपुस्तक, नाटकीकरण, भूमिका निर्वाह, प्रदर्शन, अनुवर्ग, प्रश्नोत्तर अन्वेषण, दल शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, समीक्षा कम्प्यूटर।

"आ"

1. **आलोचनात्मकता (Criticism)** - ऐतिहासिक तथ्यों की निष्पक्ष भाव से समझने व व्याख्या करने की योग्यता।

2. **आकस्मिक सहसंबंध (Incidental Correlation) -** किसी एक प्रकरण के किसी शिक्षण बिन्दु के अन्तर्गत अन्य विषयों से सहसंबंध।

3. **आभासी विश्वविद्यालय (Virtual University) -** वेब आधारित शिक्षण जिसमें परीक्षा, पाठ्यक्रम, अनुदेशन सामग्री आदि की स्वतंत्रता है।

'इ'

1. **इतिहास (History) -** 1. जानना, ज्ञात करना या सत्यान्वेषण करना।
   2. इति + ह + आस = ऐसा ही हुआ।

2. **इतिहास का सार्वभौमिक रूप**-अतीत के अध्ययन के साथ वर्तमान के इतिहास का ज्ञान।

3. **इकाई योजना (Unit Plan) -** सत्रीय योजना को विभिन्न अंशों अथवा इकाईयों की सम्पूर्ण शिक्षण योजना।

4. **ई-मेल (E-Mail) -** इन्टरनेट के माध्यम से आस-पास व दूर-दराज की नवीनतम जानकारी का साधन।

5. इकाई विधि (Unit Method) - किसी विषय-वस्तु को उसके छोटे-छोटे अंशों में बांटना।

6. **इतिहास कक्ष (History Room) -** इतिहास से जुड़ी सामग्री से युक्त कक्ष जिससे विद्यार्थियों में इतिहास के प्रति रुचि व सम्मान विकसित हो ।

'उ'

---

1. **उद्देश्य (Objectives) -** वे अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन जो कि शिक्षक अपने शिक्षार्थी में देखना चाहता है।

2. **उपयोगिता (Utility) -** पाठ्यक्रम का जीवन में उपयोगी होना।

3. **उपयुक्त समय (Appropriate time) -** पाठ्यक्रम सही समय पर तैयार किया जाना।

4. **उद्दीपन परिवर्तन कौशल (Stimulus Variation Skill) -** किसी तथ्य को विभिन्न भावनाओं तथा मुद्राओं के द्वारा ज्ञानार्जन।

5. **उदाहरण तकनीक (Illustration Technique) -** उदाहरण के माध्यम से छात्रों का ध्यान व रुचि बढ़ाने की क्रिया अथवा शैली।

6. **उद्देश्य कथन (Statement of aim) -** पढ़ायी जाने वाली विषय-वस्तु के लिए पाठोस्थापना व्यक्तव्य।

'ए'

---

1. **एक समान केन्द्र विधि (Concentric Method) -** समस्त स्तरों पर समान रूपरेखा द्वारा समान पीठिका द्वारा अध्ययन।

2. **एजुसैट (Educational Satellite) -** शैक्षिक सूचनाओं को उपग्रह द्वारा प्रसारित करना।

'औ'

---

1. **औपचारिक रूप (Formal Form) -** किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, समय व साधन द्वारा शिक्षा देने के लिए अपनाये जाने वाले साधन।

'क'

---

1. **क्रियात्मक पक्ष (Cognitive Domain/Bychomotar Domain) -** सीखे हुए ज्ञान से संबंधित तथ्यों को व्यवहारिक प्रयोग।

2. **कौशल (Skill)** - आंगिक गति का संचालन।

3. **क्रियाशीलता (Activity) - स्वयं करके सीखने हेतु सक्रियता।**

4. **कालक्रम विधि (Chronological Method) -** निश्चित काल व क्रम के अनुसार शिक्षण, विद्यार्थी की प्रकृति के अनुरूप।

5. **कहानी कौशल (Story Telling Skill) -** तथ्यों को रोचक एवं मनोवैज्ञानिक तरीके से कहने का कौशल।

6. **क्रियात्मक मीडिया (Creative Media) -** नाटक, रोल प्लेइंग आदि।

'ग'

---

1. **गतिशीलता (Speediness)** - निर्धारित समय में प्रश्नों को हल करने की गति।

2. **ग्राफिक मीडिया (Graphic Media) -** चित्र, चार्टस, पोस्टर, ग्राफ, मानचित्र आदि।

'ज'

---

1. **जीवन गाथा (Biographical) -** महापुरुषों के जीवन वृतान्त का अध्ययन।

''ट''

---

1. **टेलीटीचिंग (Tele Teaching) -** टेलीकांफ्रेन्सिंग के माध्यम से एक शिक्षक द्वारा विभिन्न स्थानों पर छात्रों को पढ़ाना।

'त'

---

1. **तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Basis of the Selection of Facts)** पाठ्यक्रम का बालकों की रुचि, आवश्यकता व क्षमता के अनुकूल चयन।

2. **तकनीकी ज्ञान (Technical Knowledge) -** ज्ञान की प्राप्ति में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का प्रयोग।

'थ'

---

1. **थ्री डाइमेन्शन मीडिया -** मॉडल, प्रत्यक्ष वस्तु कठपुतली प्रतिमूर्ति आदि।

'द'

---

1. **दृष्टान्त उदाहरण कौशल (Illustration with Examples) -** इतिहास विषय से संबंधित तथ्यों के उदाहरणों का चित्रों द्वारा रोचकता व सजीव वर्णन करने की शैली।

2. **द्विकालांश योजना (The Double Period Plan) -** एक ही विषय वस्तु के लिए दो समय चक्र में विभाजन/पहले चक्र में शिक्षण दूसरे में निरीक्षण एवं निर्देशन।

3. **दूरस्थ शिक्षण (Distance Education) -** पत्राचार द्वारा स्वतंत्र रूप से सुविधापूर्वक शिक्षा।

4. **दार्शनिक आधार (Philosophical Base) -** दर्शन अर्थात् समाज को देखने के दृष्टिकोण से लिखी जाने वाली पुस्तकें।

'ध'

---

1. **धरोहर (Heritage) -** पुरानी विरासत तथा उपयोग में आने वाली वस्तुएँ।

'न'

1. **निरीक्षित अध्ययन विधि (Supervised Study Method) -** पाठ्य वस्तु की सूक्ष्म विवेचना के पश्चात् छात्रों के कार्य का निरीक्षण व निर्देशन।

2. **नाट्यीकरण (Dramatization) -** अभिनय के माध्यम से शिक्षण।

'प'

1. **प्रत्याभिज्ञान (Recognization) -** तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं को पुन: पहचानना।

2. **प्रत्यास्मरण (Recall) -** तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं को पुन: कथन अथवा पुन: स्मरण।

3. **प्रयोग (Application) -** सीखे हुए ज्ञान का उपयोग, निष्कर्ष, समस्या समाधान, भविष्यवाणी, अन्य मानसिक क्रियाएँ।

4. **पाठ्यक्रम (Syllabus) -** विषयवस्तु तथा उससे जुड़े समस्त पाठ्यक्रम तथा पाठ्येत्तर सहगामी क्रियाओं के अनुभव।

5. **पाठ्यवस्तु (Curriculum) -** वह विषयवस्तु के रूप में शिक्षण सामग्री तथा उसे सीखने की क्रियाएँ।

6. **प्रेरणा (Inspiration) -** बालकों की सीखने के लिए उनकी इच्छा, क्षमता, योग्यता आदि द्वारा प्रेरित करना।

7. **पाठ्यक्रम में नवाचार (Innovation in Curriculum) -** पाठ्यक्रम से जुड़े नवीन तथ्यों यथा-राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम का निर्माण, विषयवस्तु का चयन अवधारणा योजना के आधार पर, चयन विशेषज्ञों व अन्वेषकों द्वारा, प्रयोगशाला का प्रयोग आदि।

8. **परावर्तन विधि (Regressive Method) -** वर्तमान को समझने के लिए कुछ समय पूर्व के भूतकाल के इतिहास के साथ अध्ययन।

9. **प्रकरण विधि (Topical Method) -** समस्त इतिहास को विभिन्न काल तथा इन कालों को छोटे-छोटे भाग में बांटना प्रकरण विधि।

10. **पूर्व व्यवस्थित सहसंबंध (Pre-planned correlation) -** एक विज्ञष्य का अन्य विषयों से संबंध स्थापित करने हेतु पूर्व में नियोजन।

11. **प्रविधि (Technique) -** किसी विधि के साथ प्रयुक्त होकर उस विधि को रोचक एवं बोधगम्य बनाने की कला अथवा शैली।

12. **पाठ्य पुस्तक विधि (Text Book Method) -** पाठ्यपुस्तक के द्वारा ज्ञान को सीखने वाले तक पहुँचाना।

13. **प्रश्न कौशल (Questioning Skill)** - विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के प्रयोग से ज्ञान प्रदान

14. करने की शैली, जिससे शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन हो।

15. **पुनर्बलन कौशल (Reinforcement Skill) -** किसी कार्य अथवा ज्ञानार्जन में निरन्तर रुचि व सक्रियता बनाये रखने को दिये जाने वाले प्रेरक का कौशल।

16. **प्रायोजना विधि (Project Method) -** वास्तविक कार्य को सामाजिक वातावरण में क्रमश: विद्यालय में सम्पन्न करने की क्रिया।

17. **परिचयात्मक प्रश्न (Introductory Questions) -** मुख्य पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों का विषय के प्रति जागरूक करने तथा नवीन ज्ञान से जोड़ने वाले प्रेरक।

18. **पुनरावृत्ति प्रश्न (Recapitulative Questions) -** पढ़ायी गयी विषय वस्तु का प्रबलीकरण एवं दृढ़ीकरण करने हेतु मुख्य बिन्दु दोहराना।

19. **परीक्षात्मक प्रश्न (Testing Questions) -** उद्देश्यों की प्राप्ति का पता लगाने के लिए किए जाने वाले प्रश्न।

20. **पाठ योजना (Lesson Plan) -** दैनिक शिक्षण पूर्व योजना।

21. **प्रस्तुतीकरण (Presentation) -** पाठ को प्रस्तुत करने के सोपान तथा अपेक्षित सामग्री व उपकरण।

22. **प्रयोग (Application) -** शिक्षक-शिक्षार्थी प्रक्रिया द्वारा ज्ञान का प्रयोग।

23. **प्रमाणीकरण (Standardization) -** परीक्षण की रचना पद विश्लेषण के आधार पर तथा परीद्वाण के मानक उपलब्ध।

24. **परीक्षण तकनीक (Testing Techniques) -** व्यक्ति के लिए सम्प्राप्ति, बुद्धि, निदानात्मक, अभिरुचि, मूल्य परीक्षण द्वारा परिस्थिति बनाना।

25. **प्रक्षेपीय तकनीक (Projective Technique) -** व्यक्ति के सम्मुख असंरचित (Instructed) उद्दीपन द्वारा पसंद, रुचि, आवश्यकता, दृष्टिकोण का पता बनाना।

26. **पाठ्यक्रमीय तत्त्व (Curricular Element) -** शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, विषयवस्तु तथा कक्षा शिक्षण के समस्त अनुभवों के स्त्रोत।

27. **प्रदर्शन बोर्ड (Bulletin Board) -** जिनके द्वारा सूचनाएँ प्रदर्शित की जाये।

28. **प्रोजेक्टर मीडिया (Projector Media) -** स्लाईड फिल्म, ट्रान्सपेरेन्सिज, वीडियो, टेप, आदि। **पाठ्य पुस्तक (Textbook) -** कक्षा-कक्ष के प्रयोग के लिए निर्धारित मुद्रित सामग्री।

29. **प्रयोगशाला (Laboratory)** - प्रयोगों के आधार पर निष्कर्ष व सत्यापन करना।

'ब'

---

1. **ब्रिटिश उपागम (British Approach) -** शिक्षक प्रधान शिक्षण, निष्पत्ति परीक्षण, शिक्षक क्रियाएँ।

"भ"

---

1. **भारतीय जीवन (Indian Life) -** भारतीय मूल्यों, संस्कृति, मान्यताओं के अनुसार जीवन जीने की शैली।

2. **भारतीय उपागम (Indian Approach) -** शिक्षण उद्देश्यों व सीखने के अनुभवों पर बल, त्रिकोणीय शिक्षण योजना व प्रक्रिया।

'म'

1. **मूल्यांकन (Evaluation) -** विद्यालय में हुए विद्यार्थी की व्यवहार परिवर्तन की साक्षियों का संकलन, मूल्यांकन है।

2. **मानसिक शक्ति (Mental Power) -** तर्क शक्ति, कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति, चिन्तन शक्ति, विवेचन शक्ति, अभिव्यंजन शक्ति, विश्लेषण शक्ति आदि मानसिक क्रियाएँ।

3. **मानसिक क्षैतिज (Mental Axis) -** मानसिक शक्तियों का विकास।

4. **मापन (Measurement) -** किसी व्यक्ति के गुण अथवा व्यवहार अथवा वस्तु के गुण व संख्यात्मक विवरण।

5. **मीडिया (Media) -** वे साधन जिनसे सम्पर्क स्थापित किया जाये।

'र'

1. **राष्ट्रीयता (Nationality) -** जाति, धर्म, भाषा, वर्ग से ऊपर राष्ट्र की सर्वोपरि।

2. **रुचि (Interest)** - किसी कार्य, वस्तु अथवा तथ्य के प्रति लगाव अथवा आकर्षण।

3. **रेडियो पाठ (Radio Lesson) -** रेडियों द्वारा पाठों का प्रस्तुतिकरण।

'ल'

1. **लक्ष्य (Aims) -** वे दिशा-निर्देश एवं व्यवस्था जिनके द्वारा जिनके लिए कार्य किया जाए।

2. **लोकतांत्रिक (Democratic) -** सबके द्वारा, सबके लिए, सबकी जीवन शैली के मूल्यों को प्रधानता।

"व"

1. **वैयक्तिक भिन्नता (Individual Difference) -** आयु लिंग, योग्यता, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर बालकों मे भिन्नता।

2. **विविधता एवं लचीलापन (Versatile and Flexible) -** समय व आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम में अनावश्यक तथ्यों को हटाना व नया जोड़ना।

3. **व्यवहारिक जीवन से सहसंबंध (Correlation with Practical life) -** कक्षा में अध्ययन किये जाने वाले विषयों का दैनिक जीवन के अनुभवों से सहसंबंध।

4. **विधि (Method) -** ज्ञानार्जन का वह सशक्त माध्यम जिसके द्वारा ज्ञान एक से दूसरे तक पहुँचाया जाता है।

5. **व्याख्यान कौशल (Lecture Skill) -** पढ़ाने का परम्परागत तरीका।

6. **व्याख्या कौशल (Explanation Skill) -** इतिहास में जो कुछ घटित हो चुका है उसकी जानकारी देने के लिए स्पष्टीकरण।

7. **विचार-विमर्श (Discussion Method) -** शिक्षक तथा छात्रों द्वारा सामूहिक ढंग से स्वतंत्रतापूर्वक वैचारिक आदान-प्रदान।

8. **विशिष्ट शिक्षक योजना (Special Teacher Plan) -** शिक्षण के लिए अतिरिक्त विशिष्ट शिक्षकों की व्यवस्था द्वारा अतिरिक्त सहायता व निर्देशन।

9. **विभाजित कालांश योजना (The Divided Period Plan) -** अनेक शिक्षकों को एक कालांश में शिक्षण के अलग-अलग दायित्व सौंपना।

10. **विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक विधि (Analytical and Synthetic method) -** विश्लेषण के लिए पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित करना, संश्लेषण के लिए विषयवस्तु के छोटे छोटे खण्डों को पुन: जोड़ना।

11. **विकासात्मक प्रश्न (Developing Question) -** विषय-वस्तु तक लाने के लिए संधित तथ्यों अथवा उदाहरणों द्वारा पाठ के विकास हेतु किए जाने वाले प्रश्न।

12. **विचारोत्तेजक प्रश्न (Thought Provoking Question) -** शिक्षण उपरान्त छात्रों की मानसिक क्षमता बढ़ाने के लिए किये जाने वाले प्रश्न।

13. **वार्षिक योजना (Annual/Yearly Plan) -** पूरे सत्र की शिक्षण योजना।

14. **वैद्यता(Validity)** उद्देश्यों पर आधारित परीक्षण।

15. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity) -** निश्चित उत्तर तथा समान अंक प्राप्ति से संबंधित परीक्षण।

16. **विभेदकता (Discrimination) -** दो या दो से अधिक के बीच भेद का पता लगाना।

17. **विशिष्टता (Specification) -** कम अंक प्राप्तकर्ता परीक्षण से अपरिचित तथा अधिक अंक प्राप्तकर्ता से परिचित।

18. **व्यावहारिकता (Practicability) -** परीक्षण, प्रशासन, अंकन, व्याख्या व विश्लेषण से सुगम व सरल।

'श'

---

1. **शैक्षिक सिद्धान्त (Educational Principle) -** विषय के मूल्यों की शिक्षा देने के सिद्धान्तों को आचरण में लाना।

2. **शीर्षात्मक सहसंबंध (Vertical Correlation) -** एक ही विषय के विभिन्न अंशों तथा खण्डों में सहसंबंध।

3. **श्यामपट्ट लेखन कौशल (Black-Board Writing Skill) -** श्यामपट्ट पर सूचनाओं, घटनाओं, तिथियों, समय सारणी आदि तथ्यों को अंकित करने का कौशल।

'स/ष'

---

1. **सूक्ष्म विज्ञान (Abstract Science) -** तर्कशास्त्र व गणित के अध्ययन द्वारा विषय का गहन अध्ययन।

2. **सूक्ष्म स्थूल (Abstract-Concrete Science) -** इसमें भौतिक तथा रसायन विज्ञान का अध्ययन किया जाता है।

3. **स्थूल विज्ञान (Concrete Science) -** इसमें जीवन विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र का अध्ययन किया जाता है। इतिहास समाज शास्त्र के अन्तर्गत आता है।

4. **समय-ज्ञान का विकास (Knowledge of time)** - स्थूल साधनों के साथ ही अमूर्त साधनों द्वारा इतिहास का ज्ञान करना।

5. **संस्कृति (Cultured) -** सीखे हुए ज्ञान का व्यवहार में प्रयोग।

6. **समन्वय (Co-Ordination) -** विभिन्न विषयों का एक-दूसरे से समन्वय करके जोड़ना।

7. **सांस्कृतिक युग (Culture Epoch)** - मानव जीवन का प्रारम्भिक काल से वर्तमान काल तक क्रमिक विकास का अध्ययन।

8. **सहसंबंध (Correlation) -** विभिन्न विषयों को परस्पर संबंधित करके पढ़ाना।

9. **समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method) -** किसी समस्या के समाधान हेतु की जाने वाली मानसिक क्रियाएँ।

10. **सामयिक योजना (Periodical plan) -** दैनिक कार्य के स्थान पर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि आधार पर कार्य का निरीक्षण व निर्देशन।

11. **स्रोत विधि (Source Method) -** इतिहास को जानने के साधनों से साक्षात्कार करवाना।

12. **समस्यात्मक प्रश्न (Problematic Question) -** पाठ के प्रारम्भ अथवा मध्य में चिन्तन करने वाले प्रश्न।

13. **स्पष्टीकरण (Explanation) -** व्याख्या द्वारा तथ्यों को स्पष्ट करना।

14. **सामान्यीकरण (Generalization) -** विभिन्न सिद्धान्तों अथवा उदाहरणों से सामान्य नियम व निष्कर्ष निकालना।

15. **सक्षमता (Efficiency) -** परीक्षण की रचना, प्रशासन, अंकन तथा समय की सक्षमता का परीक्षण।

16. **समाजमितीय (Sociometric) -** सामाजिक संबंधों व अन्त:क्रिया का पता लगाना।

17. **स्व-आस्था तकनीक (Self-Report Technique) -** व्यक्ति के स्वयं के द्वारा अपने व्यवहार की जानकारी देना।

18. **संकल्पना (Concept) -** किसी समूह अथवा वर्ग के विचार, घटना अथवा वस्तु की धारणा का प्रतिनिधित्व।

19. **संकल्पना मानचित्रण (Concept Mapping) -** यह एक द्विआयामी लेखाचित्र होता है जो विभिन्न संप्रत्ययों के सहसंबंधों को चित्रात्मक रूप में दर्शाया जाता है।

20. **संचार साधन (Media) -** ज्ञानार्जन प्रक्रिया को सरल, रोचक एवं गतिशील बनाने वाले साधन यथा-रेडियो, टीवी., इंटरनेट, सम्मेलन आदि।

21. **संप्रेषण (Communication) -** विचारों का आदान-प्रदान।

22. **संग्रहालय (Museum) -** दुर्लभ-वस्तुओं का संग्रह स्थल।